रमल नौरत्न

رمل نورتن

जिसमें

पासों के बनाने की विधि और सर्व प्रकार की
शकलों में सम्पूर्ण प्रश्न भेद शुद्धिक ज्ञान वर्ष
क्रिया पहिले घर से सोलह घर तक के हुक्म
वर्षाचक्र और अनुभूत के रमलमत आदि
पद्य में रचित हैं

सम्पूर्ण गणकों के लाभ के लिये

पहली बार

लखनऊ
मुन्शी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छापा गया
फ़रवरी सन् १८८२ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात फ़रवरी सन् १८८२ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको ख़रीदारी की इच्छा हो वह छापेख़ाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
ज्योतिष भाषा	४-चौथे हिस्से में	मव मोक्ष धर्म्म व	रामायण शब्दार्थ को
जातकचन्द्रिका	शान्तिपर्व्व दानध-	दान धर्म्म	रामायण का इतिहास
जातकालंकार	र्म्म अश्वमेध आश्र-	११-अश्वमेध आ	रामायण मानसदीपिका
देवज्ञ भरण	मवासिक पर्व्व व	श्रमवासिक मुशल	रामायण कवितावली
ज्ञानस्वरोदय	मौसल पर्व्व महा-	पर्व्व महाप्रस्थान	रामायण गीतावली
रमलसार	प्रस्थान स्वर्गा-	स्वर्गारोहण	सटीक
इन्द्रजाल	रोहण पर्व्व हरिवं-	१२-हरिवंश पर्व्व	विनय पत्रिका बा.मो.
भाषा (इतिहास)	श पर्व्व	रामायण रामविलास	विनय पत्रिका बाशि-
महाभारत	महाभारत पर्व्व	रामायण तुलसीकृत	नाटक
१-पहिले हिस्सा	अलग भी है	रामायण सटीक मय	प्रबोध चन्द्रोदय
में आदि पर्व्व सभा	१-आदि पर्व्व	मानस दीपिका कोष	रामाभिषेक
पर्व्व वन पर्व्व	२-सभा पर्व्व	आदि	आनन्द रघुनन्दन
२-दूसरे हिस्से में	३-वन पर्व्व	तथा जिल्द बंधी	वेदान्त
विराट पर्व्व उद्योग	४-विराट पर्व्व	तथा मोटे अक्षरों की	योग वाशिष्ठ
पर्व्व भीष्म पर्व्व	५-उद्योग पर्व्व	मय तसवीर व क्षेपक	आनन्दामृतवर्षिणी
द्रोण पर्व्व	६-भीष्म पर्व्व	रामायण तुलसीकृ-	सांख्य तत्त्वकौमुदी
३-तीसरे हिस्से में	७-द्रोण पर्व्व	सातों काण्ड	काव्य
कर्ण पर्व्व शल्यप-	८-कर्ण पर्व्व	१-बालकाण्ड	सूरसागर
र्व्व गदा पर्व्व सौप्ति-	९-शल्य पर्व्व गदा	२-अयोध्याकाण्ड	कृष्णसागर
क पर्व्व ऐषिक प-	पर्व्व सौप्तिक पर्व्व	३-आरण्य काण्ड	विश्राम सागर
र्व्व विशोक पर्व्व	मय ऐषिक व वि-	४-किष्किन्धाका	प्रेमसागर
स्त्री पर्व्व शान्तिपर्व्व	शोक व स्त्री पर्व्व	५-सुन्दरकाण्ड	व्रजविलास बड़ा व छोटा
में राजधर्म्म आपद	१०-शान्ति पर्व्व रा-	६-लंकाकाण्ड	कृष्णप्रिया
धर्म्म मोक्षधर्म्म	जधर्म्म व आपद ध-	७-उत्तरकाण्ड	विजयमुक्तावली

लावनी

तरह तरह के प्रश्न इसीमें होवरातिहै विस्तारा ॥ रमल शास्त्र प्रत्यक्ष कलीमें इसका भेद सबसे न्यारा ॥१॥ एक ग्रंथयो पढ़के जिन्हर ध्यान दाव घूमोसारा ॥ धन दौलत नित संग रहेगा निश्चय तुम जानों प्यारा ॥२॥ बड़े बड़े राजों महा राजों में चमत्कार होवे भारा ॥ पढ़ो ग्रंथ यो चित्त लगाके यही वचन मानो म्हारा ॥३॥ जो तू चाहे माल खजाना दुनीका पढ़कर ले सहारा ॥ रमल शास्त्र प्रत्यक्ष कलीमें इसका भेद सबसे न्यारा ॥४॥

नाम तरीक कहि पुरुष बताया। मारग और गोप सत्त काया॥
याही तुल्य वेद नभ दीजे। भाग देय जमाल पुन कीजे॥
मात पिता प्रगटे थामैं हीं। चौदह पुत्र धन्वन्तर करें हीं॥
तासों सप्तम पुत्र बनावो। पुन कन्या ही अवजन वावो॥
एक ही शाकल नपुंसक कीजे। अह अरु मास शाशि अ-
रदीजे॥ अंतहि उत्तर धन्वंतर दीना। तुमहीं आप अनुग्रह कीना॥
जो तुम आपहि मोहि बताया। सो सब रूप हिये निज आ-
या॥ तुम प्रताप हिय माहीं धरो। तम को नष्ट दिनकर में क-
रो॥ बुद्धि प्रकाश करो हिय माहीं। जग को संकट काटो जाहीं॥

दोहा

वाह काल नभ में गयो प्रगटाया जो रूप।
धन्वंतर बुद्धि विचारके षोड़श किये सरूप॥
सरस्वती हिय में धरयो ब्रह्मा विष्णु महेश।
जगत हेतु विचारची नहीं मोह निज लेश॥

चौपाई

प्रथम तरीक शकल जो आई। तहै निकट और सत्त
लाई॥ ताको जरब देवो कबिलोई। नाम जमात क-
हो तुम सोई॥ त्रिय सुख चार रेख जहँ देखो।
नाम जमात कबीश्वर पेखो॥ मात पिता तब प्रगटे आई।

चौपाई

निज दिज भवन कहूं चित लाई। निज घर बैठ सहाव लपाई॥ दैहीयान भवन तन जानो। कबजुल दाखिल धन घर सानो॥ कबजुल खारज सहजही लेहो। आ कालजमात सुहृद घर देहो॥ सुत घर फरहा कावल लीजे॥ शत्रु भवन उकला को दीजे॥ जाया भवन कहे ईकीसा। ऋौर मृत्यु घर हमरा दीसा॥ धर्म भवन सें ब्याज बसावो। नसतुल खारज राजहि पावो॥ नसतुल दाखल आयु घर दीजे। उतबेतुल खारज ब्यय में लीजे॥ त्रयोदश भवन नको पहिचानो। चौदहवों घर उतबेतुल जानो॥ तिथ घर इंजतमाकूं लीजे। षोडश भवन तरीकहि दीजे॥ ग्यारशाकल जानबलवाना। ऋौर भवनसें हीन नदाना॥ ५॥

दोहा

दिये भवन सुरका बने निज निज दिये टेराय।
याके मह हियसें धरो कोविद कवि सरसाय २२॥
शाहीयंत्र बिचार के निज घर बैठे आय।
पैजबांय फल भायहो वृथा कछू नहिं जाय २३
द्वादस भवन लहियातले षोड़श लों परयंत।

द्विय जोई ॥ दोनों पाँसे देहु मिलाई । एकइ रेख जहांलों आई ॥ प्रथम शकल का उर्द्ध लगावो । पुन द्वितिय के तीचे पावो ॥ तीजे लोक शकल का लेहो । चौथे वेद श-कल का लेहो ॥ याहि प्रकार पंचम कर लीजे । षष्ठम स-प्तम अष्टम कीजे ॥ प्रथम द्वितीय कु भाग लगावे । ता-नीचे हि नवम घर पावे ॥ वेद लोक कू जवन जो दीजे । तानीचे हि दशम पुनकीजे ॥ पंचम षष्ठ म भाग लगा-वो । ताहि अधस्त एकादश पावो ॥ सप्त अष्ट भागहि कर दीजे । तानीचे द्वादश कर लीजे ॥ नवम दशम को भाग लगावो । तेरह शकल महा शुभ पावो ॥ द्वाद श और एकादश लीजो । सकल चतुर्दश नीचे कीजो ॥ त्रयोदश और चतुर्दश लेहो । शकल पंद्रवीं तासों क-हवो ॥ तिथि अरु प्रथम को भाग लगावे । शकल सो-लवीं तासों पावे । याहि क्रियासों जायचा कीजे । शु-भ अशुभ फल तुरत हि कहि दीजे ॥ शुभ वा अशुभ प्रश्न ब-तलावे । जा घर प्रश्न सोई फल पावे ॥ नेष्ट श्रेष्ठ शा-कल जो होई । वा सम कहो न राखो गोई ॥ ७ ॥

इतिश्री कविगरापति शिष्य धीरज गिर बिरचितायां रमल विषय ज्योतिषिं चिंता मणि प्रथम प्रभाषोऽयं ॥

अथ षोड़श शकल प्रकृति
लिख्यते
चौपाई

तहियान शकल प्रथमहीं सुनिये। जाको ईश बृहस्पति गिनिये॥ शीलस्वभाव पुरुष फल देई। उ-ष्ण प्रकृति राशि धन देई॥ दूजी राशि मीन पहि चानों। बार बृहस्पति कादिलु सजानों॥ आश्रि दसजान उदय जब होई। सेहीयान मास जो सोई॥ ८॥

दोहा

तलावान चित कहत है दिशा पूर्व पहिचान
ऐमरु फै दो वर्ण ले कादिलू आप बखान २६

चौपाई

कबजुल दारवल शकल बनाओ। शीलस्वभाव स्त्री फल पाओ॥ भूमि प्रकृति यमन गुण गावे। स्त्रिरिइस राशि सिंह जो पावे॥ दिनकर बार इसी का जानो। कह सुर कादि गुरु बार हि मानो॥ मासजसाद ल-बल पावे। दक्खन दिशा प्रश्न बतलावे॥ इस्थिर कारज उस्का पावे। के और जै दो वर्ण मिलावे॥ चर इस्थिर संज्ञा दो लेई। तत्व काट इस्का फल कहई॥

∴ कबजुल खारज नष्ट बतावे। पुरुषस्वभाव पावक हियलावे॥ मेषराशि वाकी अबलेई। मंगलवार पूर्वदिशि देई॥ नाशका हालजो चाँदबतावे। कबजुलख्वारज उस्कायावे॥ और अक्षर इसकाही लेहो। और लकार सी मिलके देहो॥ ८॥

दोहा

यहि प्रकार विचारही दीजे वर्ण मिलाय॥
कविकोविद चितधारके प्रश्नशकलमुखगाय॥९

चौपाई

☰ नासजमात शकल सुनलीजे। बुधहै ईश गुराहि चितदीजे॥ सबसों ताह मित्रता राखे। स्त्री रूप रमल कहि साखे॥ चित्त प्रकृति सौम्यशुभ मानो। कन्या राशि दिवस बुधजानो॥ खीलोंवलका मासजो लेई। एक ओर चित इस्थिर लेई॥ दक्षिण दिशा अंक में लेही। वादिक्षि नास तुरत कहि देही॥ अंकके नाम शोचके लीजे। नासजान शीघ्रहि कहि दीजे॥ ∵ फरहा नाम पुरुष सब कहहीं। बातप्रकृति रमल सब लहहीं॥ शीतल जानस्वभावहि लीजे। भृगु है ईश शुक्र दिन कीजे॥ वृषहि लग्न दिशि पश्चिम जानो।

रवी अरु सानी भास पिछानो ॥ मार्ग नीत प्रति उख्‌ला क हिये । लें औरजो दो वर्ग हि लहिये ॥ २० ॥

दोहा

उकला का दिवो बीरहे खोटा चित्त अति जान ।
सुमिप्रकृति ईअशनि मकर कुम्भ घरमान २१ ॥

चौपाई

दिवस शनैश्चर अरु बुध कीजे । शशि रजुल अरु मारग लीजे ॥ इस्थिर जय सुभाव जो लहिये । हसिरादिशा बात उरकहिये ॥ अंक नकार थाहि के लाख्यो । धूलनास जब कवि जन गावो ॥ चित्त प्रकृति उकला की कैसी । साबित रहै रदक सी जैसी ॥ सप्त शकल कवि कोविद गावै । नास इनकीस मुरकाव बतावै ॥ नष्ट शकल सब कविहि बतावै । स्त्रीरूप ईश शनि गावै ॥ सुम्भि सिज़ाज बार शनि लेई । मकर कुम्भ राशि दो अर्द्ध ॥ रज्जब इन्दु इसी का जानो । हसिरादि शि ग्रह इस्थित मानो ॥ वर्ग सकार बकार मिलावो । तासो नाम उसी का पावो ॥ जो विधि नसवारा मोह आई । सो अब शकल शिष्य मैं गाई ॥ २१ ॥

दोहा

३ अव्वल हुमरा कहत है कद कोविद चितलाय
नेष्टपुरुष अति चित्त है बात प्रकृति हिय पाय २९

चौपाई

सौसर्ईं भ्रा मंगल दिन कहिये। मेष राशि पश्चिम दि-
शि लहिये॥ अवध मास जो बात बतावे। जे अरु के दो
वर्ण सिखावे॥ नवम शाकल व्याज शिष्य सुनिये। शी-
लस्वभाव सूक्ष्म वपु गुनिये॥ नारि प्रकृति ईश्वा शशि
जानो। कर्कहि राशि सोमदिन मानो॥ मास मुहर्रम
का कह दीजे। उत्तर दिशा प्रश्न की लीजे॥ कहकर।
बात करे विपरीता। अक्षर देरे लहे विनीता॥ ३ दश-
वीं नस्रतुल खारज जानो। शीलस्वभाव पुरुष वपु-
मानो॥ अथ प्रकृति कहे कबसारे। राशि है दूसरा को वि-
दकाह भारे॥ आदित्य वार राशि सिंह जानो। और ह-
हस्पति दी कवि मानो॥ मास सफर पूरब दिशि कहि-
ये। खारज अक्षर देते लहिये॥ ३ शाकल ग्यारवीं।
अबमें कह हूं। नस्रतुल दाखिल सुन शिशु लहूं॥ शी-
ल स्वभाव दूसि वयजानो। बार प्रकृति मीन घर
मानो॥१२॥

दोहा

ईशा बृहस्पति सोमदिन और बृहस्पति जान।
साह्रजीका इस्थिरसदन उत्तर है अनुमान॥१०॥

चौपाई

शकल बारवीं अब तुम सुनिये। ⁝ उतबेतुल खारज
नाम जो गनिये॥ नरु शकल कवि पुरुष हि जानो।
अग्नि प्रकृति कहै कवि गानो॥ भौम ग्रही मंगल दिन
जानो॥ मेष राशि रज्जब शशि मानो॥ दिशा पूर्व कवि
कोविद कहही। कै अरु जै दो अक्षर लहही॥ ⁝ त्रियो-
दश नकी कहै तिब लोई। खोटा चित्त दुष्ट वपु सोई॥
चित्त प्रकृति जलकी सम मानो। भौम दूसे वृश्चिक घ-
र जानो॥ मंगलवार उत्तर दिशि लहिये। माहर मास ब-
लो बल कहिये॥ कहै कुछ और करै विपरीता। अक्षर
ये जो होय विनीता॥ ⁝ चतुर्दश उतबेतुल दाखिल।
जानो। शील स्वभाव स्त्री फल मानो॥ भुक्ता प्रकृति ई-
शा भृगु कहिये। वृष है राशि शुक्र दिन लहिये॥ रबि-
लों बल का मास बतावो। दक्खिन दिशि का निज घर।
पावो॥ वर्ण विचार नाम कह दीजे। दे अरु से दो अक्ष
र लीजे॥ ⁝ इज्ज़तमाय शकल अब कहहूं। नारा

दिशा घर उस्का लेहूं ॥ जात नपुंसक इस्की गाऊं । काही पुरुष काहिं स्त्री पाऊं ॥ वायु प्रकृति बुद्धि गुरु जानो ॥ मिथुन राशि तुल कुम्भ समानो ॥ बुद्धवार इस्को दी कहिये । रवि लों चन्द्र का भोम जो लहिये ॥ पश्चिम दिशि उस्का पहिचानो । बचन मुखसे अक्षर जानो ॥ भाविश्य शकल ज्ञान उरधरिये । प्रश्नोत्तर तबहीं कुछ कहिये ॥ २३ ॥

दोहा

जासों उतपति सब भई सो तरीका कू जान ।
शील स्वभाव ईशीकहें ईश चंद हियमान ॥ २४ ॥

चौपाई

कर्क राशि जल प्रकृति स्वामी । सोहे सिम भाप सोम दिनमानो ॥ उत्तर दिशा सादित सब ताहीं । ऐ अक्षर इसका बालेही ॥ षोडश शकल लक्षण जब आवे । तब दो रंग रूप सब पावे ॥ अधसतरीक को शब्द हि पाया । तासों षोड़श नाम बताया ॥ जोये भेद गुरोंसे पानो । अनमन काल शीघ्र बतलावो ॥ मूक प्रश्न शिष्य प्रश्नसजो कहियो । विद्या सीख विचरते रहियो ॥ शकल विचारो अपने मनसे । रूप रंग सब लेहो

दोहा

सबसों प्रीतहि दो करै कामकरै छल त्याग।
अतिहि प्रतिष्ठा पावहीनष्ट करै चित लाग॥४६॥
अतिहुलास चितमें रहै करै मेल की बात।
भवै रंगगोहूं कहो करै अधिक का साथ॥४७॥

चौपाई

डाढ़ी मुंह पै अति नर सोहै। जो देखै वाका चित मोहै॥ उलबेतुलखारज आगे जानो। द्वादश घर वाका पहिचानो॥ १ राखै माल सौदागरि काजा। औरहु अश्व रहै घर साजा॥ जप तप ईश्वर को अति सेवै। शील स्वभाव श्रेष्ठ बहु सोहै॥ बाग बगीचे मन अति लागे। अथवा उसी क्रियामें पागे॥ औरश्वानसों प्रीति बढ़ावै। भारी शब्द अति मुंहको पावै॥ पक्षी सुवेसों अति हित राखै। नीचे अधर कवीश्वर ताकै॥ जैसे होंठ वृद्ध के रहहीं। तैसे इसजन के कवि कहहीं॥ दीरघ शिर अस्थूल बतावै। ये लक्षण रमलहि कवि गावै॥ मुंह अति खुला कहै कवि सोई। ये लक्षण सब बहुविधि जोई॥

दोहा

२ त्रियोदश घरकी शकल है नामनकी सु जान।

चौपाई

सकलंकाजअपनेदारकरही। अनिदनुराइहियेमेंधरही॥ कहूंपंदुहवींशकलजताऊं। इकजतसाहैनामबताऊं॥ शीलस्वभाविहतुकहिये। मंत्रयंत्रविद्यादहुलहिये॥ ऐसीसकलचतुष्पदलहिहौ। अतिबुधवंतपसारीकहिहौ॥ वृद्धअवस्थासबकोइजाने। राजकाजआगीरहिमाने॥ अबमैंशकलसोलहवींकहहूं। लछराजाकेचितसोंलइहूं॥ बलगमसौरमिजाजबतावै। मेवाहसमोंअतिहितलावै॥ दीरघतनुभारदमरकहिये। बादशाहदर्बारीलहिये॥ राजाहेतइसीउपदावे। हर्षहुलासबच्चसुखपावे॥ सारीनीतिउदयोगेजाई। दीरघतनुसकलदिखाई॥ २३॥

दोहा

ओछीशिक्षासुखकहैं रंगहिश्वेतबखान।
आननरूपअधिककहैपतलीरांगसोजान॥ ८८
पालेआननकोसदा राखैस्वघरबनाव।
राजसभामेंअतिनिपुणआलीअधिकस्वभाव॥
योइशाशकलनिहारिकेकरियोशिष्यविचार।

प्रश्नरूप अवभाखहौं विद्याके अनुसार ५०॥

इतिश्रीकालिकाराघवति विरचितायां रमल विषयज्योतिषचिंतामणि

मध्ये षोडशशकल प्रकृत

अथ शाखी खवराड लिख्यते

दोहा

तनकी नाशा अकविंशवहै धनकी सुनि मनुजान

सहजभवन लिखि अस्यहै सुहद सोलवीं मान ५१

दासा भवन दीनवसहै अष्टमको दिगजान।

सुतसदीशादादश अष्टम द्वादशजान ५२।

चौपाई

धर्मभवनकी शाखाहि लीजे। कर्मभुवन कीतनधरकी ले।। लाभभवन आशयहि दानों। द्वादशकी अष्टम घरसानों।। त्रयोदश कातन धरलीजे। औरचतुर्दश कासुनि दीजे।। तिथिघर सहज भवनको देखो। षो-डश घरको तत घर पेखो।। जाघर प्रश्न शकल लख-दि देखे। ताघर शाखी निश्चय पेखे।। नेष्ट श्रेष्ठ ताही कूं जाने। जैसा हो तैसा पहचाने।। शाखी चक्र। खेंच दिखलाऊं। लिखिकर अंक सकल सु-नाऊं।। २४॥

अथ शाखीचक्र

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
८ १३	७ १४	६ १५	१६	९	१०	११	१२	५	१	१	८	६	७	३	२

दोहा

प्रथमभवनसेदेखिये जीवकुसुखदुखहोय
खेचजायवादीजिये उत्तरदक्षिणेसोय ४३।
नेत्रभवनसेदेखिये द्रव्य लाभ अरु हान।
पैजबांधफलसारहो क्रियाशाकलउरआन ४४
लोकभवनसेलीजिये कुलजनरवलरसोंप्रीत
वेदबाराहीदोश्राकीखबरजतावेनीत ४५॥
वेदसदनचितधारकै कीजेकाज अकाज।
बागतड़ागजमीनसब भवनग्रामसुखसाज४६
बाराभवनसेलीजिये कीजे पुत्र विचार।
मित्रकोइहहितकारनौ ताकूबीनिरधार ४७।
जादूचोरबिमारही चौथा लेहो गुनास।
झगड़ाषष्ठमभवनसे देखोसुन्दर तास ४८।
भवनसातवेंमों कहो गोपपदारथ होय।
तकरारझगड़ा इस्तरी इनकाहै घरसोय ४९॥

शकल अंक करतह धरदेई॥ प्रथम चक्र की उम्हत लावो। द्वादश शकल सकल तुम पावो॥२७॥

दोहा

प्रथम शकल के अंक जो रतन खराड में देय।
जो संख्या आवे भवन दश दिवस कर लेय ६६॥
प्रथम क्रिया के जायचे प्रथम खराड में देय।
द्वितिये पुन तृतिये करो तीन खराड कर लेय ६७
प्रथम जायचे को उम्हत प्रथम भवन में लाव।
चक्र दूसरा लीजिये पर आद वेद अभाव ६८॥
यापांसा कूं जानले वर्ष पत्र कर लेय ॥
जो संख्या हो शकल की मास दिवस धर देय ६९

अथ सूक्ष्म वर्ष फलम

चौपाई

शक बारसें साबित होई। लाभ अधिक सुख पावे सोई॥ मंगल कर्म्म वर्ष में कहही। यज्ञ पुराय बहु बिधि के लहही॥ द्वितिये धन की वृद्ध बतावे। सर्व हुलास बहुल का बिगावे॥ तृतिये यात्रा सों हद कहिये। तीर्थ देव को दर्शन लहिये॥ चौथे मध्यम शकल कवि गावे। पंचम नष्ट कलेश बतावे॥ जो षष्ठम से साबि-

अथ प्रथम घरका हुकुम लिख्यते

दोहा

लह्यान नसरतुलखारजै पड़ै प्रथम घर आय
तालाअजबूत है कोविद कहैं सरसाय॥७२॥
कब्जुलदाखलखेतुलखारजै इज्जत माहजोहोय।
काम करे जिससाहको सरंजाम सबहोय७३॥

चौपाई

नसरतुल दाखिल प्रथम जो आवे। कार्ज विचार देर हो लावे॥ जोई क्रिया प्रथम घर पावे। तो सब कार्ज हरकत लावे॥ ÷ फरहा याकल महा शुभहोई। कुछ होय कुछ हरकत होई॥ तरीक न दीजो तन घर देखे। आधा काज कही मखर पेखे ÷ ज्याज आकल प्रथम महिं घर आवे। चिंता अधिक देर वो पावे ÷ हुसरा प्रथम जो आवे। कारज बीच हरकत लावे॥ तनहीं सब कर्ता फल मैं पाया। महत कविन ने जो मत गाया२७

अथ द्वितीय घरका हुकुम

चौपाई

धनघर जो लहिया नहिं आवे। नसरतुल खारज दूजी

पावे॥धनकी प्राप्ती शीघ्र बतावे।ग्यावी संग उसी के लावे॥ ∴ उतबेतुल खवारजनकीजेहोई।फाकाकहै फ़कीरीजोई॥ देश देशमेंफिरिकै श्रावे।धनकी ला-भकहीं नहिं पावे॥ ∴ कावजुल दाखिल खेघरथावे ∴ उतबेतुल दाखिलजो आवे॥ द्रव्य अधिक सो शी-घ्रबतावे।चिंता शोच हिये नहिं लावे॥ इनकी शक-लजोतनघरदेखे।धनकी हानि महा जोपेखे॥ जो कुछ हाथ कहींसे आवे।शत्रु क्लेशहिं संग लगावे॥ ∴ फरहान कीजो उकलाहोई।आधा माल हाथ लगे सोई॥ ∴ व्याजशाकलथा हुमरा लावे। ∴ काहू जन से शराधनपावे॥ ३०

दोहा

करेसवालजोआनके भेजासैं एक मास।
आवेगा लेके कछू याछोड़ू मन आस ७४॥

इतिद्वितीय

अथतृतिय घरका हुकुम लिख्यते

दोहा

भाई बस्तु जवाँई का करे प्रश्न जो कोय।

इहज जो घरमेकविकहो गोपशांक तोहोय ७५

चौपाई

इत्तिलनेक तीसरे आवे। काज सकल वो श्रेष्ठ बतावे॥ कुन कलीव शाकल जो पेखै। काजबीचवो हरकत देखै॥ नस शाकल जो कविहीं आवे। हरकत करके काजको पावे॥ ⁝ ☰ ⁝ ⁝ ⁝ जोये शाकल तीसरे आवे। भाई वस्तु खुशी से पावे॥ कावेस वा इत्तिला कोई। नेक शाकल से नेक जो होई॥ कवजुलखारज जो कवि पेखे ⁝ खसरा नष्ट पुरुष वो देखे॥३१॥

इतितृतीय

अथ चतुर्थ घर का हुकुम

लिख्यते

दोहा

चिवका खारज जो रेत कूं पूंछे तुम से आय ।

दूजे का है मकान कूं तो कहिये समझाय ७६

चौपाई

⁝ ⁝ जो ये शाकल सुहद घर आवे। ताला नेक उसी का पावे॥ कुल्ह रक कहो नुकसान उसी का। अंत-

के शुभ पावे ॥ कारे ख़्याल माशूक़ का कोई। प्रीति करे या तोड़े सोई॥ ⁞ ⁞ ⁞ ⁞ जो ये शकल पंचम जद आवे। सोय प्रीति ताही की पावे॥ ⁞ ⁞ ⁞ ⁞ जु नये शकल जाता घर देखै। मन में प्रीति की ख़बर पेखै॥ ⁞ ⁞ ⁞ ⁞ जो ये शकल पंचम घर होई। प्रगटै प्रीति ताही कहि सोई। पूछे मुलाक़ात को कोई। दाख़िल नेक जो पंचम होई॥ नहुस सभी पंचम घर आवे। मुलाक़ात कबहूं नहिं पावे॥ ख़बर गांव की जो कवि देखे। पंचम नेक दाख़िल कू पेखे। जो सादिल पंचम घर आवे। तौवह ख़बर ख़ुशी की पावे॥ नहुस शकल जो आवे कोई। खोटी ख़बर कहै कवि सोई॥ ख़बर झूंठ या सच कह कोई। ताकी निर्णय पूंछे जोई॥ ⁞ ⁞ ⁞ जो ये शकल वाता घर आवे। ख़बर सच्च ही वाकी पावे ॥ दाख़िल नेक यही फल देई। ख़ारिज नहस विपरीत फल देई॥ ३३॥

दोहा

सिन्न पै भेजा आदमी वस्तु कछू एक लैन
देगा या ना देयगा तुम कहियो सुत बैन ७८

चौपाई

दाख़िल नेक शकल जहं आवे। देगा वस्तु कवी ख़बर

पावे। पूंछे प्रश्न अपनं जो कोई। पंचम अक्षर नारव दार।
होई॥ पुनि पंद्रह सहस को दीजे। दाखिल नेक जो प्र-
श्न कह दीजे॥ यासों जीत शकल दहिं आवे। फरहा दू-
ष जो आप दिखावे॥ प्रश्न होय गा निश्चय कहिये। शो-
च विचार कछू नहिं सहिये॥ ३४॥

इति पंचम

अथ अष्टम घर को हुक्म

लिख्यते

दोहा

कैसे जावे रोगयों कहियो तुम सतनाथ।
कष्ट जाय या जीवते कहो सकल सब बात ७९॥
अष्टम घर सों देखिये खारिज नेक जो होय।
रोग जाय जीता बही कहत सकल कवि लोय ८०

चौपाई

दाखिल नेक जो बैठे आई। खारिज नस्र शकल या
पाई॥ रोग जाय कुछ बिलम लगावे। जीव आराम
सुध कर पावे॥ मुनकलैब शकल जो आवे। व्याध
जाय या दूजे पावे॥ साबित शकल अष्टम में होई।
व्याध न जाय महा दुख जोई॥ जो अष्टम में हुमरा आवे।

चौपाई

तन घर शकल नेक जो आवे। या चौथे घर दाखिल पावे ॥ सो अति प्रीति हेत से होई। महत ग्रंथ यथ कहैं सब कोई ॥ गउ बच्छा का मर्म बिचारै। तो सप्तम घर यों ही पुकारै ॥ पावक तन है शून्य मिल लीजे। आबी खाकी न्यारे कीजे ॥ अनिल अग्नि शून्य मद आवे। तो जीवत अच्छत हि बतावे ॥ आबी खाकी अधिक जो होई। निश्चल मरे कहैं कवि सोई ॥ जो सासे को पूछे कोई। सुन घर देख कहैं कवि लोई ॥ साबित नेक दाखिल यदि होई। सो होय नफ़े का सोई ॥ नेस शकल कोई यहँ आवे। दाखिल खारिज कोई पावे ॥ सुन दलील शकल जो होई। तो भी नष्ट कहैं कवि सोई ॥ जो कहे आजउं सबके पासा। करे प्रीति या होय निरासा ॥ ते सप्तम अष्टम घर देखे। नेक शकल आवे शुभ पेखे ॥ जो दूजे घर नेक हि पावे। अष्टम नेक शकल जो धावे ॥ जाहर करे प्रीति बहु तेरी। देना कछु न करे कबि हेरी ॥ सुन घर नेक शकल जो आवे। अष्ट श्रेष्ठ कोई जो पावे ॥ प्रीति करे नुकसान जो पावे। महत कबीश्वर यों मत गावे ॥ जो कछु लेय किसी पै जाई। द्वितिय नेक दाखिल

जोपाई॥ खारिज नेक अष्ट जो आवे। जो मांगे सोई वो पावे॥ जो कसौ द्वितिये खारिज होई। अष्ट म दाखिल पुनि जो जोई॥ तो दुख देय नहीं सुन मीता। हारा आवे जाय जो जीता॥ खुल कलीव शकल जहं आवे। खारिज की आज्ञा वो पावे॥ साबित शकल जहां तुम देखो। दाखिल नेक उसी को पेखो॥ ३६॥

इतिसप्तम

अथ अष्टम घरका हुकुम

लिख्यते

चौपाई

अष्टम खारिज नेक जो आवे। तो डर कहै महा दुख पावे॥ जो कोइ पूंछे यम डर होई। ताका कहो अविराम जो सोई॥ जो खारिज अंका नाश हि देखो। आनंद स्फूर्ति कहीं नहिं पेखो॥ दाखिल नक्स साबित जो होई। वह दुख कहै महा दुख ओई॥ मरण दुख देह को जानो। सहत कवियों का यों मत मानो॥ ३७॥

दोहा

जो कोइ पूंछे आयके याकी मृत्यु जो होय
सौ कहियो यों नहिं मरे जो पूंछहुं सोय॥ ८३॥

संकट अतिपावे ॥ ३ जो हराकसी नवें जो होई । नि-
श्चय फाँसी लगकी होई ॥ जो कोइ पूँछे विद्या आवन ।
अर्सजो घर वाको है पावन ॥ जो दाखिल सुभ शकल ।
जो देखे । विद्या बहुत उसी को पेखे ॥ खारिज नेक का-
सी जो आवे । विद्या पढ़त नहीं मन लावे ॥ साबित नहस
दाखिल कसी आवे । अर्स अति होय विद्या घर पावे ॥
खण्डन परीक्षा जो कोइ चहही । नवें भवन से वाको क-
हही ॥ अेस्र शकल कोई जो होई । अच्छा रखना कहे
कवि सोई । नहस शकल कोई जो आवे । खोटा वाको
पढ़तावे ॥ ३६ ॥

इति नवमघरफल

अथ दसवें घरका हुकुम

लिख्यते

दोहा

बादशाह अरु राजका करै कोई रुजगार ।
वाको दिशा घर से कहो अेसत ग्रंथ विचार ॥ ८६ ॥
दाखिल नेक आवे कसी दसवें घर में आय ।
कार होयगा शीघ्रही पंडित देहु बताय ॥ ८७ ॥

चौपाई

तब घर शकल कभी शुभ पावे। राजा प्रीति वाही
सों लावे ॥ खारिज नेक कभी जो होई। कबूल न
करे घर स्थर सोई ॥ मुनकलीब कभी ह्वां पावे। ता-
ही सम फल उसका गावे ॥ ऐसा भी ये शकल बता-
वे। हेत फिरि अपने घर आवे ॥ दाखिल नेस यार खार-
ज दारी। नहिं रु जमा रखड़ है भारी॥ कौन दशा सें
होय रजमारा। वासे कहै कवी सवर भारा॥
जो द्वि भवन शकल ये आवे। आगम बात सबहि
कवि गावे ॥ पूर्व दिशा वाद्दूं कहि दीजे। मतलब कविये
कायों सर लीजे॥ राज भवन
मरदैटी पावे उत्तर दिशा कवी सवर गावे ॥ जो ये श-
कल दार कइ आवे। पश्चिम दिशा वाकी कवि गावे॥
जो द्वि भवन शकल ये होई। दक्षिण
दिशा कहै कवि लोई॥ बादशाह होना कोइ कहहीं।
दिशा घर वा काशी कवि लहहीं॥ जो द्वि
भवन शकल ये आवे। निश्चय तरकत शाहका पावे॥
जो ताला पूछे कवि कोई। जो ये शकल कहूं सो जो-
ई। जो द्वि भवन शकल मे आवे। ताले नेक शाह

के पावे। रहे न रहै शाहको पेखे। ⚍ ⚎ येदो शाकल दशौं घरदेखे॥ दाखिल नेक विरख घर होई। सहीणा-ट कहही कवि लोई॥ बादशाह या राजा कहै। मे-हरवान हम पै भी रहे॥ दाखिल नेक शाकल क-भि आवे। मेहरवान राजा को पावे॥ बादशाह के क्या है मनमें। दाखिल नेष्ट पड़ी किस घरमें॥ वलकी भरी शाकल जहँ देखे। दशावें नेक दाखिल ही पेखे॥ बढ़े राजयों निश्चय जानों। येष्ट कविन का यह मत मानों॥ पड़ै नेस घर जोये आई। तौ तिय दुष्ट मंत्रि पुनि पाई॥ जो सवाल कोई ये कहै। अधिप गवन या इ-स्थिर रहे॥ ⚍ ⚎ ⚏ ⚌ दशावें शाकल कभी ये आवे। राजा इस्थिर गद्दी पावे॥ ⚎ ⚍ ⚏ ⚌ जो ये शाकल कभी दिग आवे। साबित रहै हवज कुछ लावे॥ ४०॥

इतिदशम

अथ ग्यारहवें घरका हुकुम

लिख्यते

दोहा

जो पूंछे प्रच्छक कोई मनमें लाभ उम्मैद।
आवे हाथ या ना मिले कहो शाकल सब भेद॥ ४८॥

कैरकूं पेरवे॥ सुनकलीव नेस कभी होई। कोड़े खेत खायगा सोई॥ दाखिल्ल नेक मांजित कभी आवे। बंधपड़े वोह सार जो खावे। बंध सध्य मरजावे सोई। रमलाचार्य्य मतज्ञ जो कोई। चतुष्पद हु कू कोई लावे। सौदा हो याती बनावे॥ दाखिल नेक द्वादश में होई। आवे हाथ मुबारिक सोई॥ जो कहिं नस दाखिल तुम देखो। आवे हाथ न मुबारिक पेखो॥ ⠖ जो कभी शकल द्वादश में होई। खारज नेह समुन्कलीव या कोई। हाथ ना आवे सब कवि कहई॥ ५२॥

इति द्वादश

अथ त्रयोदश और चतुर्दश घर का हुक्म लिख्यते

दोहा

मातेनिस्बत जो कहै त्रयो दश घर पहचान।
दाखिल नेक जो देखही इच्छा पूरी जान ६२॥
पावक तत्व प्रकाति की विस्च घर आवे भोय।
शीघ्र काज वो होयगा कहै कवी इवरजोय ६३॥

चौपाई

जल पृथ्वी की जो कभि आवे। कारज बीच देर वो

थोड़श घरहै मेसका और प्रश्न माहि जान।
मूकप्रश्न यासों कहै थोड़श फल येमान ॥ ८८॥

इति षोड़श फलम्

चौपाई

वर्षमध्यकेतक जल होई। पूछे आय जन्नुक जोको-
ई ॥ पांसा फेंक जायचा देखे। जोये श-
कल प्रथम अतिपेखे॥ अतिघनवर्ष कहै कवितो-
ई। थोड़ी पड़े तो थोड़ी होई॥ लहियाने दूजे घरहो-
ई। वर्षे वर्फ कहै कवि लोई॥ आवे यंत्र मेष का
हूं। ताको नसरा चित सों लेहूं। यंत्र लिखूं सों
निश्चय जानो। दूजे घरका प्रश्न बखानो॥ जोय इञ्च
कल घनहि घर होई। ताका फल जानो कवि लोई॥
लहियाने खेती अति सूकै। कबजुल दाखि-
लजल अति हूकै॥ कबजुल खारिज जल अति
होई। खेती थोड़ी कहै कवि लोई॥ थोड़ा जेथ जमात
बखाने। अकरा नाज कवीश्वर माने॥ फरहा
सभ सब्ज बतावे। उकला निपट यही कवि गावे॥
वर्षा खराड़ कहै इन कीसा। खेती बहुत नाज बिस्व
बीसा॥ हुमरा कम वर्षे कवि लोई। ब्यान होय।

वर्षा अतिसोई। नखुत खारिज बर्षै थोड़ा। नखुत दाखिल जल अति जोड़ा॥ अतिवे खारिज सूक्षम बरसै। होय खुशी पर रहता डरसै॥ ः नकी होय तो जल अति साने। खेती डूब जाय कवि जाने॥ ः अ-तवेदा खिल दूजी होई। मेघ खेती अति हो कवि लोई॥ इज्जत साह जो अन घर पेखे। जल बहु होय शीत सं-पालेखे। होय तरीक कहैं सब लोगा। राज प्रजा स-ह सुख संयोगा॥ ४५

दोहा

ग्रंथांतर को और मत सो मैं लिखूं बनाय।
दूजे घर से देखिये और प्रगट हो जाय ॥८॥

अथ वर्षा चक्र

लिख्यते

उदाहरण

☰	☰	☰	☰	☰	☰	☰	☰
वर्फ पड़े वृक्ष जले	गर्मी बहल होय के फिर मेह वर्षे	गर्मी से हसे	मेह बर्षै गरमी धूप पड़े	धूप भी तपड़े	शीत धूप पड़े	पवन गर्मी होय	पवन गर्मी होय

••••	धूपसेयहोय	
|••|	शीतहोयसेघवर्षै	
|•••	सेघहोयकेवर्षै	
•|••	बादलरहेशांतहोय	
•••|	धूपपवनसेघथोड़ा	
||••	बादलघनसेरहै	
••||	धूपसेगर्मीहोय	
||•|	श्रौरवस्तीहोय	

येचक्रमहाबरूनकाहै

अथ मुष्टिका प्रश्न

लिख्यते

दोहा

जोकोइ पूंछे आयके मुट्ठीबंद महराज ।
भला हमारे हाथमें कौनचीज है आज १००॥
शाकवेद घरसे कहो तिनको जरब लगाय।
धातमूलयाजीवहो तासों फल बतलाय १०१

चौपाई

चारों शाकल प्रथम जो आवे। तामें जो बलवंत हिं। पावे॥ वाही शाकल रंग कह दीजे। और प्रकृति। वाही सों कीजे॥ ग्रंथांतर का बीमा लेहू। दूजे घरसे

दंवारीलेहु ॥ पुनि सक कहूं प्रथम धरलीजे । कोउ
कहै चतुर्थ जो कीजे ॥ इन शकलों से वस्तु जो कहि-
ये । अतिहि का प्रश्न कवीश्वर लहिये ॥ क्या है वस्तु ह-
मारे सेरे । जो पूंछे कोइ आय के नेरे ॥ आदि शकल
अरु पंचम ताहीं । देखाज होय कहो कुछ नाहीं ॥ दा-
खिल शाबित सो कहि आवे । तो मुट्ठी में वस्तु जो पा-
वे ॥ उन्नकालीद कली ह्वां लहिये । कई वस्तु हाथ में
कहिये ॥ जो दिर करै वाही के फलमें । आगे देखु
अधाल के दल से ॥ तब से नर्द काहो कबि लोई ।
और चकोर सहज धर सोई ॥ पंचम घर से जन्दा ख-
खाने । अकलबदा है सो पहचाने ॥ छठि घर का-
दुआसल देखे । और आठ दें सोई पेखे ॥ नवम भव-
न सो जै जो पावे । छोटी गोल या जवलतावे ॥ छुक-
ते शकल गिराओं कवि लोई । मावल काही के सब
खोई ॥ और बड़ी आदी के लीजे । जो दलवान सोई
कहदीजे । जो बादी के जादे आवे । अकल जीव सफ तब
दिखावे ॥ जो आतश के जादे आवे । नाम जंदा हर
गारे पावे ॥ आबी के नरवते बलवाना । फल पाल-
यों कहो निदाना ॥ जो खाकी के जादे होई । रीत खाने

अथजमीरप्रश्नलिख्यते

दोहा

प्रथमशकलकाआतशी दूजेकाहो बात ।
तीजेजलकालीजिये चौथेपृथ्वीजात १०२॥

चौपाई

शकलबनाय कहैं कवि लोई। जैसी प्रकृति सो वैसी होई ॥ जहांजहां बैठैवहजाई। तहां तहां जमीर जोपाई॥ प्रथमहिं शकलजहां जो आवे। वा घर सेजो प्रश्न बतावे॥ लहियानजहां तहां होई। वा जमीर कहो कवि लोई॥ पुनिएकऔरजमीरजो लिये। उस्तुत तुरवतेही गिन लहिये। घरपीछे वो वाट लगावे। जहांजोठीकजमीरवतावे॥ प्रथम शकल अरु पंद्रह ताई। तुके गिने कवीश्वरणई॥ द्वादश कादविभागलगावे। बाकीरहै सो शकलहि पावे॥ वा घरसे जमीर कहदीजे। तकरारकरे तोवहभी लीजे॥ पुनिघरतो अरु पंद्रह ताई। नुक्ते महत कहतकदिगाई॥ वासैं नौकाभाग लगावे। रहै शकल जोप्रश्न बतावे॥ पुनिजमीर एक औरहि कहिये। नुक्ता वला पंद्रहवाँ लहिये॥ जहांदीके वासों कह

दीजे। शाकल एक रूप कर दीजे॥ जहँ पंद्रहवीं शाकल जो आवे। वहां सो नुक्ता आय बतावे॥ जहां दिये व हँ सो कह दीजे। शोच समझ कर प्रश्नहि लीजे॥ प्रश्न भाव में शाकल जो आवे। वाके घरे कौन सी पावे॥ पुनि वाको तकरार जो देखे। ये घर देख प्रश्न को विशेखे॥ कहै रमल सो हुक्महि दीजे। शोच समझ कर अनुभव कीजे॥ ७७॥

दोहा
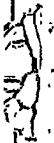
प्रश्न उमहत आगले दूजे बात सिलाव।
तीजे जल को लीजिये चौथे खाकहि पाव॥ ७८॥

चौपाई

एक शाकल अब वाकी लावो। कविया विधि से शाकल बनावो॥ दोनों कूं कवि भाग लगावें। शाकल निकाल जमीर बतावे॥ पंचम भरा षष्ठ जल कीजे। सप्तम वाय अष्टम आग लीजे॥ एक शाकल वाकी कर लेहो। उमहत सो एक कर देहो॥ दोनों को कवि भाग लगावे। निकसे सो जमीर बतलावे॥ जो ये शाकल कहीं नहिं आवे। ताको प्रश्न कवी बरणावे॥ ७८॥

दोहा

उसहृत संज्ञा कहत है तनधन सहज सुहृद्‌।
सुत शत्रू मुनि नाग ही नाम बनात सु सिद्ध १०४
बाकी शाकल अवतार हैं सुनहो कवी सुजान।
सहृत कवों का मत यही सत्य हिये करमान १०५

अथ नाम काढ़ने की विधि

लिख्यते

दोहा

शून्य गिने सब चक्र के षोड़श भाग लगाय।
शाकल जौनसी पाइये तासों नाम बताय १०६

चौपाई

जो पुन रत्ना कहिंजा देदेवे। वा घर का अक्षर वो पेखे।। केचित मत यक और बतावे। सहृत गुणी सब का दिजनपावे।।४८।।

दोहा

नाम बवस दिग रुद्र पर द्वादशावीं कवि लेय।
सासब अक्षर लीजिये नाम होय कह देय १०७।।

चौपाई

जोयह शाकल बली कहिं होई। तो अक्षर निश्चय

करजोई॥ जो कमजोर शकल कहि आवे। सो अक्षर वाका नहिं पावे॥ ५०॥

अथ नाम निकालने का चक्र लिख्यते

अफ	कज	अल	मा	तज	न	शव	जक
ह	हत	रुस	जक	पेज	दश	स	अ

दोहा

याही यंत्र को देखके अक्षर लेहु निकाल।
शकल जौन बलवन्त जो ताको लीजे हाल॥ ५१॥

चौपाई

चौके चित एक और बताऊं। अब्द रमल चार्यो को गाऊं॥ कहें प्रमारा शकल कवि सारे। जो को-

विद्ज्योतिष कविभारे ॥ प्रथम शकल से षोड़श ॥
लाई। त्यारे अक्षर सब घरमाई ॥ ताही अक्षर लिखूं
कबिलोई। जाके समझ नाम कहो सोई ॥ जाघर श-
कलजानबलवाना। वाघर अक्षर लेय निदाना ॥
विद्या रमल शरीरात की जानो। एक ध्यान कर इसको
छानो। जिनते एक चित्त होजावे। पुनि अशुद्ध कस्हू न-
हिं पावे ॥ विद्या रमल अती परवीना। पढ़कर किस्हू।
न होय अधीना ॥ आगे चक्र लिखूं चित लावो। अ-
क्षर शुद्ध काढ़ समझावो ॥ ५१ ॥

दोहा

चतुराई अरु ज्ञानसे अक्षर लेव निकाल ।
एतही यंत्र विचार के लिक्खा शकल हवाल ॥ ७९

अक्षरनिकालनेकायंत्र

अफ	अवे	अजीत	अदा	अहे	अवा	अन	अहे
अवे	अजी	दाल	अहे	अवा	अजे	अहे	अतो
अजी	अदा	अहे	अवा	अजे	अहे	अतो	अये
अदा	अहे	अवा	अजे	अहे	अतो	अये	अका
अहे	अवा	अजे	अहे	अतो	अये	अका	अला
अवा	अजे	अहे	अतो	अये	अका	अला	अमी
जे	अहे	अतो	अये	अका	अला	अमी	अनू
	अतो	अये	अका	अला	अमी	अनू	असी
अतो	अये	काफ	अला	अमी	अनू	असी	अन
अये	अका	लाम	अमी	अनू	असी	अन	अहे
अका	अलाम	मीस	अनू	असी	अन	अफे	असू
अला	असीम	नून	असी	अन	अफे	असा	अका
अमी	नून	असी	अन	अफे	असा	अका	अरे
अनू	सीन	अन	अफे	अस्क	अका	अरे	असी
असी	अन	अफे	अस्क	अका	अरे	असी	अते
अन	अफे	अस्क	अका	अरे	असी	अते	असे

अथ शकलों की संख्या का चक्र लिख्यते

।·।।	बलरहिततरुणा	····	हुँ [illegible]
।।।·	स्त्री	।··।	नपुंसक है
·।।·	स्त्री है नपुंसक या गर्भ	।···	पुरुष है पर हद्द है
··।·	लड़का है मासूक	·।··	स्त्री है बालयौवन है
।।।।	नपुंसक स्वरूप है	···।	पुरुष यौवन
·।·।	स्त्री वैरी है	।।··	पुरुष यौवन
।·।·	पुरुष अधवुढ़ प्रशान्त	··।।	पुरुष यौवन
·।।।	पुरुष यौवन जवान	।।·।	स्त्री अधवुढ़ है

दोहा

आगे प्रश्न के जो कहे अवस्था केती होय ।
वर्ष मास दिन हीं कहो समझ पड़े तुम जोय १२२

चौपाई

पांसा गेर जायचा कीजे। तुके शकल जफर के दी-
जे।। तिनमें षोड़श भाग लगावे। बाकी रहै घर पीछे पा-
वे।। जहां टिकै वह शकल विचारो। जाके अदद देख

पमावे ॥ जेते अस्द प्राकालके आवें । तेतेअब्द अव-स्थापावें ॥ कसरे वर्ष अब्द बतलावे । आयल वर्ष सा-सहितलावे ॥ आयल अब्द दाहोदिनरैना । अहल कबोंकायोहै कहना ॥ ५३ ॥

दोहा

याविधि बुद्धि विचारिके निश्चय कालजोहोय
हरसुमिरणहियमेंधरो मुक्तपदारथसोय ११३

चक्रम

		☰													
८९	६०	८६	१२	१८	५८	५०	३६	६०	६०	८२		३६	४१	१९	८१
४८	४५	६२	३६	४३	४३	४४	४०	३०	८५	३५	शून्य	४०	६१	३८	८०
२८	१२	८२	१९	३०	३०	३०	१५	११	२०	१०		१०	८	३०	१२

दोहा

चोरीको पूछे कोई उठे जो घरमें देख ।
चोररूपकांसेकहो सप्तम से धन पेख ११४ ॥
पुनि पूछे कोई आयके चीजजो आवे हाथ ।
कहो कृपाकरनाथतुम जासेहोय सनाथ ११५

चौपाई

अष्टम द्वितिये शाकल जो आवे। दाखिल नेक क-
भी व्हां पावे॥ तो घर आवे खेघर मिंता। किसी बात
की करो न चिंता॥ खारिज नसु शाकल व्हां पेखो। वर्थ
चोर दाखीखबर देखो॥ जो पूंछे अच्छुक कब कोई। मा
ल धरा या खर्च किय सोई॥ साबित शाकल अष्ट-
म घर आवे। माल ससूचा कवि शुरा पावे॥ जो खा
रिज व्हां पड़े या आई। माल खरच उन किया गुसाँई॥
इस प्रकार के घर कूं कवि कहिये। दशवीं शाकल क
छिन लहिये॥ शाकल ग्यारहवीं को उर आनो। दू-
सर कियो सा कहिय सानो॥ स्व घर माह चोर कह देई।
शकाहि डार गयो जो लेई॥ चौथे सप्तम दाखिल आ
वे। दास सथ चोर आप घर पावे॥ शाहर मध्य चोर अब
कहहो। या कहीं बाहर कूं अब रहहो॥ दशवें चौथे दा-
खिल आवे। चोर शाहर में बार न पावे॥ जो खारिज।
लौ शाकल कूं देखे। चोर शाहर से बाहर पेखे॥ सप्तम
शाकल करे सकरारा। चोर शाहर में कहो कविसारा॥
चोर पास ते कहो धन आवे। या कहि तसकर खर्च में
लावे॥ द्वितिये अष्टम को कवि देखे। दाखिल नेक।

शाकलकूं पेखे ॥ तो धन चोर पासते आवे । खारिज न-
हस होसू लगावे ॥ ५४ ॥

अथ प्रश्न सम्बन्ध का
लिख्यते

दोहा

मिले श्रेष्ट सम्बन्ध मस या कोइ नीचो होय ।
कहो विधी से शाकल तुम मैं पूछूं हूं तोय ॥ १२ ॥

चौपाई

श्रेष्ठ सनेक शाकल कोइ आवे । दाखिल होय अधि-
कल पावे ॥ मिले श्रेष्ट सम्बन्ध जो वाकूं । अति सु-
न्दर वर कहो जो ताकूं ॥ खारिज नहस शाकल कभी
आवे । रूप देखि कुरूप हि पावे ॥ मुन्कलीब नेहस ।
करि देखो । वाहि समय फल वाका पेखो ॥ मुन्कली
ब नेक कवि होई । शील स्वभाव श्रेष्ट कहो सोई ॥ खा-
रिज मुन्कलीब कोइ आवे । देख बहुत भक्के वर पावे ।
जो घर धनके कवि सब गावे । वो घर इस प्रश्न में ।
लावे ॥ ५५ ॥

दोहा

सम्बन्ध मिले ताको नहीं नीके करो विचार ।

के गिनलावे। शून्यरहै तोसत्य बतावे।। अक्करहै तो अ-
सत बतावे। शोच समझ कर के समझावे।। ५६।।

दोहा

बसै पुर्व जो विदेश में प्रच्छक पूँछे आय।।
मारग में दरियाव है संज्ञा दोय बताय।।११६।।

चौपाई

शकल प्रथम जो घर में आवे। पुनि वैरे संकार जो पा-
वे।। जेते घर पानी के त्यागो। तेती संज्ञा कवि चित आ-
[illegible] नहिं करे कहीं तकरारी। वैरे भवन उलंट हिर
[illegible] भवन उलंघे लीजे। संज्ञा करके कवि कह दीजे।।५७।।

पांचसात दिनकी अवधि

दोहा

पंचसात जो कोस को गया विदेश मीत।।
कौन समय आवे वहीं शकल दिना कहो मीत ।।१२०।।

चौपाई

∴ कबजुल दाखिल पंचम होई। याका फल समझो
कवि लोई।। चार घड़ी दिन रहे सो आवे। संध्या तक क-
वि अवधि बतावे।। नस्र तुल खारिज जो कबि आवे।
∴ पहर रहे दिन चार घड़ी पावे।। ∴ जो कबी फरहा आवे

दोहा

याप्रकारसेरोगके निश्चय दिनकर लेय ।
पांसा फेंक बिचारके अवधि शकल कहदेय १२३

अथ अवधि बिचारणायंत्र लिख्यते

१	३	६	१०
१५	२१	२८	३६
४५	५५	६६	७८
९१	१०५	१२०	१३६

गुप्तयानीगड़े हुयेधनका मिलना न मिलना

दोहा

द्रव्यगड़ोहै भुम्मसें जानत हैं हम नाह ।
प्रगट होयकोइ यत्न से कहिये अवधशाह १२४

चौपाई

अतस अथ्यस ग्रह दोदेखे । दाखिलजेक शकलहां

औरकुवाँ घरकेमध्य कहियेपानी मीठावाको लहि-
ये॥ जोतकरार आतिस घरकरे। पनियां खाराबाको
भरे॥ जोतकरार अष्टम घरकरे। आवेबास पानी अ-
तिसरे॥ जोअष्टममें करे तकरारी। पानीपीवे होय
बिमारी॥ ः लोकभवन में जोये आवे। नंगे पड़े दो-
रैनकू पावे॥ जोइनकी सबेद घर होई। घरमें सांपका
होवे बिलोई॥ द्वादश घरोंकाहे तकरारा। मारासांप
कहै कवि सारा॥ जोउकला हि बेद घरहोई। चूहे घर-
में रहे कवि लोई॥ मुसल्मान ढूंढे कवि मिन्ना। घर-
में काबर कहो निशिचिन्ना॥ ः ः जोये आकल बेद घ-
र आवे। लालूतर या मुर्गी पावे॥ ः ः जोये आकल
बेदघर आवे। फूल पड़े वा घरमें पावे॥ याकहि बुध-
अजाँधकार राखे। याबुलबुल कौ शौक जो राखे॥
ः ः जोये सदन देह में आवे। बकरी घरमें निश्चय
पावे॥ या महाल घरमें कोइ होई। यमना चार्य्य कहै
मत सोई॥ ः ः ः इत घरमेंये आकल जो आवे। या
साबित कहिं नेक जो पावे॥ शाखिल काज़ दहुक्न जो
राखै। नालर खारिज का कवि भाखै॥ यामें लिखा
सांच कर जानो। महत्त किताब का यो मत मानो॥

आगे अक्षर लिखूं बनाई। जासे प्रगट नाम होजाई॥ ६१

दोहा

अक्षर लिखूं सो सुनिये यामें झूठ न होय।
जो आवे सो समझमें नाम कहो तुम सोय॥२६

चौपाई

त्रियाकहूं सो उरसे लीजे। दुसरी पांचवीं को कवि लीजे॥ तीसरी चौथी को पुनि लेहो। दशवीं पांचवीं को कवि देहो॥ छटीं सोलहवींको अब लेहो। सातवीं और आठवीं देहो॥ और आठवींको तुम माने। और बारहवीं नवीं बखानो॥ पुनि एकादश द्वादश लेहो। त्रयोदश और चतुर्दश देहो॥ पंद्रह और सोलहवीं जानों। या-का भेद इसी में मानों॥ अक्षर काढ नाम कहदीजे। बड़े ग्रंथका यों मत लीजे॥ ६२॥

दोहा

विद्या रमल अनूप है को कर सकत बखान।
हानि लाभ जीवन मरण यामें लीजो जान॥२७॥
जो चित हित सेती पढ़े ज्योतिष रमल बिचार।
धन दौलत बहुती बढ़े फेंके पासा सार॥२८॥

अथ त्रयोदशादिषोड़शापर्य्यन्तनिर्णय लिख्यते

दोहा

अथ सभवन से चिह्न लो फल देखो सो होय।
पिछले चारों भुवन हीं मिले आदि सें सोय॥२८॥

सोरठ

३ त्रिलास ११ दृष्टी स्तवीत संज्ञा। ९ नवसें शुद्ध दृष्टी तसलीस संज्ञा॥ दृशा १० छ ५ दृष्टी तरबीस संज्ञा मुकाबला ७ सप्तम दृष्टि दक्षा॥१॥

अथ दृष्टिचक्र लिख्यते

शुभ दृष्टि ३	शुभ ५	शुभ ९	शुभ ११
ऽर्ध शत्रु ४	ऽर्ध शत्रु	पूर्ण शत्रु	..
नजीक दृष्ट २	नजीक दृष्ट ६	दूर दृष्ट	..
शत्रु अ	स्थान	जाणो	..

दोहा

प्रश्नभवन सों देखिये द्वादशघरकोभाव।
पिछलाबीनासबकहो कहे रमलयोस्वसाव ३०
तातमातु अरु पुत्रको निज आत्माको देख।
लाभहानि अरु रोगकूं भिन्नभवनसे पेख ३१
सकलभवन वल देखिये सो मैं लिखा विचार
यंत्रदेख निश्चयकरो कूवतसदननिहार ३२

अथकूवतयंत्र

१	१	३	४	१	६	७	८	२	१	१४	९	१०	१४	१५	२
२	२	६	३	२	५	५	१०	५	५	११	८	५	१२	६	३
४	१५	८	६	३	१०	८	३	३	९	६	६	७	३	१	४
६	८	१२	१६	९	१२	१३	७	..	६	५	१२	६	५	११	१६
९	४	..	१३	..	११	२	६	..	१०	१२	..	१३	२	..	..
..	११		१	..	१४	१२	१	.	..	..	..	..	..	..	..
.	.	.	.	.	.	.	१	.	.	.	.	.	.	.	.

अथ नाम संज्ञा लिख्यते

दोहा

प्रथमभवन उत्ताद है दूजे मायल जान ॥

तीजेआयललुही कही याकूस शाकल बखान१२३
तामाहिं संज्ञा यंत्र्यो लिकहूं स्तद विचार।
आगे सब पद हेरिकै दूसरे हूँ अचार॥१२४॥

यंत्र लिख्यते

उम्हात	सायल	आयल	[illegible]
१	२	३	[illegible]
४	५	६	[illegible]
१०	११	१२	[illegible]

दोहा

तन धन सहज सुहृद कूं नाम कहे उम्हात।
सुत रिपु जाया मृत्यु को आयल सकल बनात१२५
नवम दशम एकादशो द्वादश घर पहिचान
सुत्वाल्लरात संज्ञा कहै कवित आप बखान१२६
त्रयोदश और चतुर्दशो तिथि षोड़श घर लाय

संज्ञानामबतातहैं रमलाचार्य्यकोभाय ९३७॥

अथ आतसीबादीआबीखाकी

प्रकृतिलिख्यते

चौपाई

जहां आतसी शकल विचारो। आतरूप हियमहं ठहि धारो॥ जोबादी पावेकविमीना। कहोबनासपतीम-नचीता॥ जोबादीपावोतुमलोई। संज्ञाजीवबतावो सोई॥ खाकीशकलकहींजोआवे। पृथ्वीकीसव जिन सबतावे॥ ९३॥

दोहा

इनको निश्चयजोकरे मूकप्रश्नकाविभाव।
रमलाचार्य्यकोसवकहे सुनउरधरोकावितार्थ ९३८

अथ रमलाचार्य्यसतवर्गीकेयाप्रतकेला
कलाचुहुहेत

दोहा

रमलसमय आवे तभी पांसाफेंकसुजान।
मूलजायचामारिक्षे जाकोसवैविधान ९३९॥

चौपाई

दलभद्र विप्रकसकलकोविलेहो।जासोंशकलनिकाहि

लकै देहो॥ वेदचतुर्दशकूं तुम लीजे। तासों शकल निकालकै कीजे॥ पुनि सप्तम और तिथ कूं लेहो। दिग अरु षोड़श में पुनि देहो॥ याहि क्रिया सों शकल ये लेही। चारों प्रथम याह करदेही॥ ६४॥

दोहा

चारों प्रथम बनायके नाम धरो उम्हात।
जासों कीजे जायचा पहर कहो दिन रात॥ ५०॥

चौपाई

जासों सकल हवाल बतावो। जोहो रूप प्रकृति जतलावो॥ इसी क्रियासे पुनि पुनि कीजे। पंद्रह दिन गिनकर कहि दीजे॥ अरु जायचा तासे होई। योंवी महतक बोंसत लोई॥ ६५॥

८ अष्टम घरसों देखे दूसरे में चर होय आठवें में थिर होय तो करजसे छुट जायगा सम और चर दूसरे में थिर होय तो चौथे में चर होय तो नहीं छूटेगा जो यों पूछे मैं करज दूं मुझको नफा होगा या नहीं तब दूसरे आठवें को जरब करे शकल निकाले जो शुभ स्थिर होय तो नफा होयगा जो स्थिर अशुभ होय तो जमा जायगी

जो स्थिर होय तो थोड़ा मिले कुस्वभाव होय तो द्विविधा कहिये॥ मंत्र॥ ओंनमो भगवती कूष्मांडनी सर्वनिमित्त प्रकाशनी एह्यहि त्वरस्व देवरे हिलहिल मातंगिनि सत्यं ब्रूहि ब्रूहि स्वाहा॥

अथ केवल प्रश्नविद्या

लिख्यते

भूतं भविष्यति प्रश्नं विज्ञानं ज्योतिषां मतं। आयुःप्रश्नं निरंयंथं किंचित्तु सत सात परं॥१॥ उच्चरितं फलं नामस्वाद्यक्षर वसेनतु। स्वर्गो धूम्रकं तेध्यासाया प्राज्ञो विचिन्तयेत॥२॥ प्रश्नाक्षरं तिथियुत। तारकावार मिश्रतं। वन्हिभिश्च हरेद्भागं शेषं सत्व रजस्तमः॥३॥ सत्वे सिद्धिर्भवत्कार्य्यं रजसा रज पूजितं। तामसा निष्फलं कार्य्यं इत्येवं प्रश्न लक्षणं॥४॥ तेभ्यः फलं कल्पनीयं ध्वजे धूम्रश्च सिंहश्च श्वानेन्द्रूयखरो हस्ती ध्वांक्षे चैवाष्टकं तथा शुभाशुभ मिहस्फुटं॥५॥

अथ प्रश्ननिर्णय

ध्वजकुंजरसिंहेषु वृषेचास्तीति निश्चितं। धूम्रश्वानेखरेध्वांक्षे नास्ति प्रश्नस्तु निश्चितं॥६॥

अथलाभप्रश्न:

ध्वजेगजेहयेसिंहे पीसलाभोभवेद्ध्रुवं। ध्वांक्षेश्वानेखरेवृषे लाभस्तकलहध्रुवं॥७॥

अथधातुमूलजीवप्रश्नं

ध्वजेधूम्रेधातुचिंता गजेसिंहेचमूलकं। श्वानेवृषेखरे ध्वांक्षे जीवचिंताभवेद्ध्रुवं॥८॥

अथमुष्टिज्ञानमाह

ध्वजेपत्रेतुविज्ञेयं धूम्रपुष्पतथैवचः। सिंहेफलंच। विज्ञेयं श्वानेकाष्टादिकंस्मृतं॥९॥हयेधान्यंत-था प्रोक्तं खरेरत्नानिगद्यते। गजेजीवंचविज्ञेयंध्वां-क्षेपुष्पतथास्मृतं॥१०॥

अथधान्यानि

गोधूमान्नंध्वजेदद्यात धूम्रेचैवतिलस्तथा। पील-वर्ण्चसिंहेचश्वानेचैवतुवालकं॥११॥हयेचतंदुलंप्रोक्तं खरेचचणकंतथा। गजेगुड़घृतंज्ञेयं ध्वांक्षेच य-वनंतथा॥१२॥

अथप्रवासीप्रश्न

सिंहेहयेध्वजेचैव गजेचकुशलंवदेत्। ध्वांक्षेश्वा-नेखरेवृषे नास्तीतिकुशलंवदेत॥१३॥

अथ प्रवासीचरस्थिरप्रश्न

ध्वजेगजेस्थिरंचैव ध्वाने सिंहेच चंचलं । वृषेधूम्रेप्र थागस्यात् खरेध्वांक्षेच कष्टकं ॥१४॥

अथ प्रवासीआगमनागमनप्रश्नः

ध्वजेधूम्रेसमीपस्थं दूरस्थं गजसिंहयो । वृषेखरेच मार्गस्थं ध्वांक्षेश्वाने पुनर्गतिः ॥१५॥

अथ प्रवासी निर्णयः

ध्वांक्षेध्वजेस्वल्पदिनंप्रोक्तं धूम्रे सप्तदिनं तथा । एकविंशतिसिंहेच श्वाने मासं तथैवच ॥१६॥ वृषेतु सार्द्धमासंच खरेमास द्वयं तथा । निगदितंपरिड ताद्यैश्च ध्वांक्षेच मथनं तथा ॥१७॥

अथ मुष्टिवर्ण ज्ञानं

कौसुंभेच ध्वजेज्ञेयं धूम्रे श्वेतं तथैवच । लोहितांगंच सिंहेच श्वानेपांडुनीलकं श्यामीतवर्णं वृषेज्ञेयं खरे च कृ- ष्णवर्णकं । गजेश्यामंच वर्णस्यात् ध्वांक्षेच मिश्र व- र्णकं ॥१८॥

अथ धातुज्ञानम्

ध्वजेसुवर्णकं ज्ञेयं धूम्रेरूप्यं तथैवच । सिंहे ताम्रंच विज्ञेयं श्वाने लोहं तथैवच ॥२०॥ वृषेकांस्यं खरे नागं

कथितंच गजे स्मृतं । ध्वांक्षे पित्तल विज्ञेयं कथितं गर्ग कोत्तमैः ॥ २१ ॥

अथ मूषका ज्ञानम्

ध्वजे श्वामूषकां धुम्रे सुखे मूषका धूम्रके । कपोतस्य मूषकां सिंहे श्वाने कर्णाथोस्तथा ॥ २२ ॥ वृषे हस्तस्य विज्ञेया अंगुलीमूषकां करे । गजे चक्रादि स्वरंच ध्वांक्षे पादादिकं तथा ॥ २३ ॥

अथ नष्ट लाभ

ध्वजे गजे वृषे सिंहे गतलाभं सुनिश्चितं । ध्वांक्षे धूम्रे खरे श्वाने नष्ट हानि सुनिश्चितं ॥ २४ ॥

अथ दिक्षु नष्ट वस्तु ज्ञानम्

ध्वजे पूर्वगतंचैव सिंहेच दक्षिणोवच । श्वाने नैर्ऋत्यमेवाक्षु पश्चिमे वृषसंतथा २५ ॥ वायव्यां खरभे । तप्रोक्तं उत्तरे कुञ्जरे ज्ञेयः ईशाने ध्वांक्षमेवच ॥ २६ ॥

अथ चौरजातिमाह

ध्वजे च ब्राह्मणाश्चैव धूम्रे क्षत्रीतथैवच । सिंहे वैश्यस्तु विज्ञेयं श्वाने शूद्र तथैवच ॥ २७ ॥ वृषे धाराक विज्ञेयं खरेच सेवकं तथा । गजे दासीतु विज्ञेयं ध्वांक्षे नायिकरं जिको ॥ २८ ॥

विंसतिप्रोक्तं गजेव्योम यतिस्तथा। धूम्रे वर्षमिदं ज्ञे-
यं मित्याशुभ्रच विचिन्तयेत॥२५॥

अथ शत्रु गमागमप्रश्न

ध्वजे गजे वृषे सिंहे शत्रूणां शीघ्र मागमः। श्वाने
खरे तथा धूम्रे ध्वांक्षेरपुनरागमः॥३६॥

स्थायिजायजयप्रश्न

गजे ध्वजे वृषे सिंहे स्थायि नो जय संभवः। खरेश्वा-
ने तथा धूम्रे ध्वांक्षे च जय जादुनः॥३७॥

अथ वृष्टी प्रश्नः

धूम्रे गजे वृषे श्वाने वृष्टिरभवति चोत्तमा। सिंहे
ध्वजे विलम्बेन ध्वांक्षे खरेन वृष्टियः॥३८॥

अथ दिनानि

धूम्रे सप्तदिन प्रोक्तं वृषे दश तथैवचः। श्वानेच
विंशति ज्ञेया ध्वजेच सप्तविंशति॥३९॥ सिंहे गा-
जेच व्योमाब्दि खरे ध्वांक्षे रितस्तथा। वर्षा कालाच
विज्ञेयं कथितं गणकोत्तमैः॥४०॥

अथ गर्भ नक्षत्र

अश्वनी आदि एकं नक्षत्रं गर्भसंज्ञकं। तस्मा
त्पंच नक्षत्रं गर्भपातस्य चिंत्ययेत॥४१॥ गर्भ

घातेयथा वृद्धि हानिर्भवति निश्चितं । गर्भवृद्धितथा
वृद्धितथा भवति चोत्तमा ॥५२॥

अथ स्त्रीलाभप्रश्नः

ध्वजे गजे सिंह वृषे च लाभो जयासुशीला च सुरू-
पिता च । श्वाने खरे ध्वांक्षे च धूम्रकेत्र कार्यस्यहा :
कलहस्तथैव ॥५३॥

अथ व्यवहारप्रश्नः

ध्वजे गजे वृषे सिंहे व्यवहारः शुभप्रदः । ध्वांक्षे श्वा-
ने खरे धूम्रे कलहस्त्वशुभप्रदः ॥५४॥

अथ नौकाप्रश्नः

ध्वजे कुंजरे सिंह वृषे च कलहप्रदा । ध्वांक्षे धूम्रे ।
खरे श्वाने नौका बूडत निश्चितं ॥५५॥

अथ जाराज्यप्राप्तिप्रश्नः

गजे ध्वजे निरः प्राप्ति वृषे सिंहे च शीघ्रताः । श्वाने
खरे तरः प्राति कलहं ध्वांक्षैः सहः ॥ भोरा वि
चारेण कथित सूक्ष्म दृष्टिभिः सहः ॥५६॥

अथ अंधकारप्रश्नः

ध्वजे गजे चिरः प्राप्ति वृषे सिंहे च शीघ्रता । काल

हस्वखरे श्वाने नास्तीभि ध्वांक्ष धूम्रके ॥ ४७॥

अथ ग्रामप्राप्तिप्रश्नः

ध्वजे गजे वृषे सिंहे ग्राम प्राप्तिश्च निश्चितं । श्वाने । खरे तथा ध्वांक्षे धूम्रे नास्तीति निश्चितं ॥ ४८॥

अथ बन्दीमोक्षप्रश्नः

धूम्रे श्वाने खरे ध्वांक्षे बन्दि शीघ्रं प्रमुच्यते । वृषे । ध्वजे गजे सिंहे बन्दी कष्टेन मुच्यते ॥ ४९॥

अथ कालनिर्णयः

गजे ध्वजे स्थिरं कार्यं त्वरितं वृषसिंहयोः दीर्घकालं खरे श्वाने ध्वांक्षे धूम्रे प्रसिद्धतः ॥ ५०॥ पुनः ध्वजे सप्तदिनं कार्यं । सिंहे पक्ष तथैव च । वृषे मासश्च विज्ञेया गजे मासत्रियं तथा ॥ ५१॥ श्वाने खरे त्वयनमासे धूम्रे ध्वांक्षे च वर्षकं । एवं कालं वदेत् प्रश्ने सर्वकर्माणि चिंतयेत् ॥ ५२॥ प्रश्न अक्षर सिदं ग्रंथं विप्रराजेन निर्मितं । चांगदेव मिसां भक्त्या स्त्वत्प्रसादात्करोम्यहं ॥ ५३॥

अथ केरलका चक्र लिख्यते

सू	मं	शु	बु	बृ	श	चं	चं	स्वामी
ध्व	धू	सिं	श्वा	वृ	ख	ग	ध्वां	आयु

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
शीघ्रबोध सटीक	भाषालघुव्याकरण	सुन्दरकाण्ड	लगान १८ सन
लघुजातक	१ भाग तथा २	लंकाकाण्ड	१८६७ ईसवी
षट्पञ्चाशिका	भाषातत्त्वदीपिका	उत्तरकाण्ड	पुरलादारी २६ सन
सामुद्रिक	भाषा चन्द्रोदय	गुटका १भा-२व३	१८६६ ईसवी
गरुड़ पुराण	भूगोलतत्त्व	हिदायतनामा गुर्दैसान	ऐक्ट स्टाम्प दस्ता-
राम विवाहोत्सव	भूगोलदर्पण	पशुचिकित्सा	वेज़ात सन १८६९
सरिश्ते तालीम	इतिहासतिमिरनाश-	गड़ावरन कैथी	ईसवी
पुस्तकें	क १भाग २व३भा-	तथा क़बूलियत	ऐक्ट ताल्लुक़दारान
संस्कृत	अवधदेशीयभूगोल	रजिस्टर दाखिल खा-	मुल्क अवध २४
ऋजुपाठ १भा-२व३	इंग्लिस्तान का इतिहास	रिज मुख़्तलिफ़ दरसी	सन १८७० ई०
धात्वर्णव	हितोपत्रिका	रजिस्टर हाज़िरी पाठशा-	ऐक्ट चौपायों का
नागरी कैथी	बालाभूषण	क़ानून कैथी	नदाखल बेजा १
वर्णमाला कैथी १भा-	पद्यसंग्रह	पटवारियों के क़ायदे	सन १८७१ ई०
व २भाग	भाषाकाव्यसंग्रह	उर्दू कैथी महाजनी	ऐक्ट मजमूआ ज़ा-
तथा कैथी फ़ारसी	कवित्त रत्नाकर १भा	टिकट के महसूल	बिता फ़ौजदारी १०
नागरी	तथा २भाग	का ऐक्ट २सन १८७८	सन १८७२ ई०
सल्फ़ सुफ़दात	मंगलकोष	ईसवी	ऐक्ट माल गुज़ारी
अक्षराभ्यास	अंकप्रकाश	नागरी	मग़रबी व शिमा-
वर्णप्रकाशिका १भा-	गणितप्रकाश १भा	ऐक्ट लगान मग़रबी	ली १९ सन १८७३
तथा २भाग	तथा २भाग ३व४	व शिमाली २० सन	ईसवी
सूर्य्यपुर की कहानी	गणितक्रिया	१८५९ ई०	तरमीम मजमूआ
धर्मसिंह का वृत्तांत	क्षेत्रप्रकाश	इंडियन पिनलकोड	ज़ाबिता फ़ौजदारी
शिक्षावली	क्षेत्रचन्द्रिका २भा	मजमूआ ज़ाबिता फ़ौ-	११ सन १८७४ ई-
शिशुबोध	सकीलदायरा	जदारी ऐक्ट २५ सन	सवी
पत्रहितैषिणी	सवागणित १भाग	१८६१ ई०	तक़ावी के क़ायदे
पत्रदीपिका	तथा २भाग	ऐक्ट रजिस्टरी २० स-	सवाल व जवाब
विद्याचक्र	बीजगणित १भाग	न १८६६ ई०	पुलिस
विद्यांकुर	रामायण तुलसीकृ-	ऐक्ट स्टाम्प १ सन	अवध रुहेलखं-
पदार्थविद्यासार	बालकाण्ड	१८६२ ई०	ड रेलवे का दस्तू-
पदार्थज्ञानविटप	अयोध्याकाण्ड	ऐक्ट स्टाम्प अदालत	रुल अमल
भोजप्रबन्धसार	आरण्यकाण्ड	२६ सन १८६७ ई०	इति
राजनीति	किष्किन्धाकाण्ड	मजमूआ ऐक्ट अवध	

छंद॥भाषा छंद निबद्ध सुनि सुकवि होत
सानंद॥५॥मेरे पिंगल ग्रंथमें समुझौ छंद
विचार॥रीति सुभाषा कवित की बरनत बुध
अनुसार॥६॥सगुना लंकारन सहित दोष
रहित जो होइ॥शब्द अर्थ ताको कवित कहत
विबुध सब कोइ॥७॥जो रस आगेके धरम
ते गुन बरने जात॥आतप कैज्यौं सूरता दि
क निहचल अवदात॥८॥सबै अर्थ तनु ब
रिये जीवित रस जिय जानि॥अलंकार
हारादि ते उपमादिक मन आनि॥९॥श्लेषा
दि गन सूरता दिक से मानो चित्त॥बरनौ री-
ति सुभाव ज्यौं वृत्ति वृत्ति सी मित्त॥१०॥प
द अनगुन विश्रामसों सज्जा सज्जा जानि
रस आस्वादन भेद जे पाक पाक से मानि
११॥कवित पुरुषकी साजु सब समुझ लोक
की रीति॥गुन विचार अब करत हौं सुनो
सुकवि करि प्रीति॥१२॥प्रथम कहत माधु
र्ये पुनि ओज प्रसाद बखानि त्रिविधै गुन
तिनमें सबै सुकवि लेत मनमानि॥१३॥जो
संयोग सिंगारमें सुखद द्रवावै चित्त॥सो-
माधुर्य बखानियें यहही तत्व कवित्त॥१४॥

की ओजउदारता होइ॥ओज सहित जो सिथि
ल पद बंध प्रसाद जु कोइ॥२४॥पद आ
रोहारोहसो जोरा समाधि प्रकार॥ऐसेंवो
जहि गनत सब संमत बुद्धि बिचार॥अथ
श्लेष॥कबित्त॥राम भुज दंडको दंड मंड
लिनि काटि हिये उदंड सर दंड छोडे॥स
काल लोहितवरन को बुंद ऐसो हृत्यो प्रब-
ल घन आनिल जानु घन निलोडे॥आंतर
घ आवरन संगमहि यौं गिरे हुतें बहु स
र सदासे निचोडे॥गिरे घन घरन के दावा
न समान सहि छुल्पटन संग जानु बूट तोडे
२६॥उदारता कोल॰॥दोहा॥जहाँ ग्राम्यसों
बाहर पद सो उदारता जानि॥अर्थ चारु ता
सहित सो अर्थ संकुल पहिचानि॥२७॥
उदारता कोउ॰॥सवैया॥ग्वालनि कुंज कालिं
दीकै कूलनि कान्ह मिले बछरानि चरा
वैं॥हेरनि हंसनि मंडित दै फल फूल प्र
वालन की छबि छावैं॥मंजुल मूरति ताप
न गावत कूदत बेनु बिषान बजावैं॥सांवरे
सुंदर नंद कुमारहि या बिधि गोप कुमारि रि
झावैं॥२८॥आरोहा अवरोहा समाधि कोउ॰

कोदू॥ हमसों तुमसों भलीविधि द्वंद्वजुद्ध पुनि होदू॥ ४७॥ काव्य मध्य जो कहि गये परम रामकी उक्ति॥ बेनन उद्धत रीति बिन वामे ऐसी युक्ति॥ ४८॥ जहँ समता जो पद तिमे वद्ध वृद्ध नुप्रास॥ शब्द अलंकारन विषे तिनको प्रगट प्रकास॥ ४९॥ समता को उदाहरन॥ कवित्त॥ चिंतामनि काच कुच भार लंक लचकानि सोहै तनकी छविखान की॥ चपल बिलास मद आलस वलित नयन ललित बिलोकनि लसनि मृदु बानकी॥ नाका मुक्ता हल अधर लाल रंग संगली नी सन्धि संध्या राग नवल प्रभानकी॥ वदन कमल पर अलिज्यों अलक लोल अमल कपोलनि झलक मुसक्यानिकी॥ ५०॥ सौकुमार्य अपरुष वदन श्रुति कटु दोष अभाउ॥ उज्जल बंध्यनु कांति बहु गाम्य अभाउ गनाउ॥ सौकुमार्यको उदाहरन॥ सवैया॥ कामनि मंदिर की छवि छंद छपाकर की छवि कुंजनि पोख्यो॥ पाइके स्वच्छ मनोहर चाइनी चापुलै मैन महा बल रोख्यो॥ सुंदरिको मुख चंदको छाडि चकोरन चंद

मयूषन च्योयो॥ चंद सिलानितें नीर भा
सो सुमवे नियको विरहा मिति सोयो
५१॥ दोहा॥ शब्द अर्थमे लहना नैंगुनकी
निधि जानि॥ अब वरनन प्राचीन मत
दूनौं अर्थ गुन मानि॥ ५२॥ प्रौढ सुव्याधि
समास पुनि बोज प्रसाद बखानि॥ पुनि
माधुर्य उदारता सुकुमारता जुजानि॥ ५३
अर्थ व्यक्त पुनि औरहैं कांति श्लेष बखा
नि अवेषम्य है भांतिकी अर्थ दूहि सोजा
नि॥ ५४॥ बरनी एक अवोनिहै अर्थ दूष्ट
यह कोइ॥ अन्य छाया जानि पुनि अर्थ दू
ष्ट दूनहोइ॥ ५५॥ प्रौढा कोल०॥ वाक्य रच
न पद अर्थ में एक प्रौढ यह कोइ॥ वा
क्यअर्थमे पद रचन प्रौढ दूसरी होइ॥ ५६
पदार्थ मैं वाक्यार्थ कथनं॥ अत्रि नयन सं
भव सदा संभु मौलि हाल वास॥ पति बि
हिन निय बध सिख्यो कात यह नीति बि
लास॥ ५७॥ उज्वल वेष विलासिनीउज्व
ल जाकी छांह॥ कंत हेत संकेतको चली
चांन्नी मांह॥ ५८॥ वाक्यार्थ मे पद रचना॥
यह स्यामा सावन निसा सखी मिलीहै जाहि

६५॥स्वामि प्राय ब्रोजको उदाहरन॥कवि
त्त॥ हैंनो हौं अनाथ तुम नाथनको नाथहौ
जू दीन तुम दीन बंधु नाम निजुकीनोहै
हौंनोहौं पतित तुम पतित पावन वेद पु
रान बखान कछु वाद्यो नांनदीनोहै॥कव
हूं सेव हौंजो कहा मेरी सेवा रीझो आप
हीतें आपरीको चिंतामनि लीनोहै॥अब तु
मे मेरी रक्षा कारवेही परी राम राखेही मोहि
नितु नातो जोरि दीनोहै॥६६॥दोहा॥जहां
अधिक पद परत नहिं विमला त्यवाजु प्र
साद॥सुनो अधिक पद दोषको यह अभा
व अविवाद॥६६॥अर्थ गुन प्रसादको उ
दाहरन-दो॰कुंदनदरपन तुलित तनु वसन२
कुसुंभी रंग लसत लाल मनि वेलिसी ला
ल वाल सव अंग॥६७॥नयो उक्त वैचित्र
को सोमाधुर्य निहारि॥यह अलपी गुन२
दोषकौ इहां अभाव विचारि॥६८॥चौपी
रची ज्ञानधा आछी मनकी जीति॥संगति
सज्जन की भली नीकी हरिकी प्रीति॥६९॥
मंगल मय कोमल अरथ सुक मारता बखा
नि॥असंगल्य अश्लीलको यह अभाव मन

य विषैं॥क्रम कौटिल्य जो अप्रगट उपमां
दिकका जुक्ति॥जो बदलो यह अर्थकी न
हंस्लेष की उक्ति॥७६॥कवि चातुरी विचि
त्रता यहगुन क्यौंकरि होइ॥अक्रम भंग
अभाव वह अवै अन्य गुन कोइ॥७७॥
अश्लेष गुनको उदाहरन॥कवित्त॥एक
पलका पै बैठी सुंदरि सलोनी दोऊ चाहि
कै छबीलो लाल आयो रति केलि घर
चिंतामनि कहै आनि बैठो प्रीतम पै काहू
सौं कछू न कहि कै सकात दुहूंको डर॥सुख
कै मनाइबे को ऐकको दिखायो नांहै वि
परीत रतिको स्वरूप लीखि चित्रपर॥जौलौं
वह सकुचनि आंखैं मूंदि रही तौलौं प्या
रे प्रान प्यारीके उरोज कर पर॥७८॥वैध
र्थको उदाहरन॥दोहा॥अरुन उदय रवि
होतहै अरुने अपवत आनि॥संपति वि
पति बडेन को एकै क्रमसौं जानि॥७९॥
अजोनि अर्थको उदाहरन॥दोहा॥चंद दि
पत रमनीय रुचि सरद विमल नभस्या
म॥मानो कौस्तुभ मनि लसत हरिउरमें
अभिराम॥८०॥अन्य छाया जोनि को उद

हरन॥दोहा॥चाप मुकुट पट तडित बग पाँ-
ति मुकत मै दाम॥ कनक लता लखिऊनयो
आइ दूते घन स्याम ८१

इतिश्री चिंतामनिकवि रचिते कविकुल
कल्प तरौ प्रथमं प्रकरणं॥१॥अथ अलंकारः

॥दोहा॥

शब्द अर्थ गति भेदसौं अलंकार द्वै भांति
अलंकार आदिक शब्द अलंकार की पाँ
ति॥१॥वक्रो कति अनु प्रास पुनि कहि ला
टा नुप्रास॥जमक स्लेषो चित्र पुनि पुनरु
क्ति वेदा भास॥२॥सात शब्द अलंकारवे
तिनमै शब्द जोहोइ॥ताहीतै पर्जाय पद हि
येत भासै कोइ॥३॥अलंकार ज्यौं पुरुष
के हारादिक मन आनि॥ प्रासो पम आदि
क कविन अलंकार ज्यौं जानि॥४॥वक्रो
कति नुप्रास ल०॥ और भांतिको वचनजो
और लगावै कोइ॥कै स्लेष कै काकसो व
क्रो कति है सोइ॥५॥स्लेष वक्रोक्तिकोउद
हरन॥दो॰ ए वृष भानु सुता निरखि पाइ
जमुनै सम भौन॥सिवइ जीवन चातुरी
वन कीन्हो गुरु मैन॥६॥काक वक्रोक्तिको

उदाहरन॰ दो॰ गुरबरबस परदेस पिय आयो ललित बसंत ॥ अलि कुल कोकिल ता बिना नहि ऐहै सखि कंत ॥ ७ ॥ अनुप्रासको लछन ॥ समता जो आखरन की अनुप्रास जो जानि ॥ छेक वृत्ति द्वै भांति सो द्वै बिधि ताहि बखानि ॥ ८ ॥ छेक अनुप्रासको लछन॰ दो॰ ललितहै आखरन की बारक समता होइ ॥ चिंतामनि कबि कहत यों छेक कहावै सोइ ॥ ९ ॥ छेक अनुप्रासको उदाहरन ॥ दो॰ ॥ जो अनेक सुख सा सदन मधुर मंद मुसक्यानि ॥ ब्रज जीवन आनंद घन नंद नंद लखि आनि ॥ १० ॥ वृत्ति अनुप्रासको लछन ॥ दो॰ ॥ एक अनेक बाहर ब्यजन बार बार जब होइ ॥ चिंतामनि कबि कहत है वृत्ति कहावै सोइ ॥ ११ ॥ वृत्तिको उदाहरन ॥ कवित्त ॥ तिहुन कूरख रे खर बाहखरे खरयो छिन तोहि पठैहैं ॥ लाखनेसिया दुर्गम लंकहि खेलहि मैं रघुनंदन सैहैं ॥ * ॥ * ॥ मुंडकी माल दैपाई महेस सौं संपति राम छिडाइ सुलैहैं ॥ कुंडल मंडल मंडित मंजुल मुंडकी माल महे

समुझ सकौ नै लै दू॥१९॥लाटा नुप्रासको उदा
हरन॥*॥तौमें दोष कछू नहीं होतन ज्यों
पर तोष॥दोषजु देखत आपुमें मूढ़ै निर्दो
दोष॥२०॥जमकको उदाहरन॥अर्थ होत अ
न्यारथक बरननको जँह होइ॥पोर आवन
सो जमकहि बरनत यों सबकोइ॥२१॥जम
कको उदाहरन॥चंदन सुख दरसन परसि
चंदन जोत समान॥कुंदन रद मनु छवि निर
खि कुंदन रदन समान॥२२॥फूली पौनिपु
नी सुरभि कोकिल गावन॥करहे लाल लह
लहे लही छवि घन॥गावन कोकिल बानी
पंच महल धन॥मुदित सुमन सोहै मधुप
गन॥२३॥पद अभिन्न भिन्नार्थको बाहल न
हीं अलेप॥याको देत उदाहरन सुनहु सुक
वि सुवि सेष॥२४॥सरस रसी दरसन बिरह
भीषम ग्रीषमको घाम॥जीवन बासें अलप है
सुधि लीजै घन स्याम॥२५॥हा दुहिलो वा
लम बिरह बज्र भयो बरजोर॥घनी सही
धनकी धमक धरकैं नहीं कठोर॥२६॥चौ
सर खेलत है कहाँ जागहै जीति सुभाइ॥ला
ल जानुहै हापनै अरी चुकै यह दाइ॥२७

कवित्त॥वसन दिशाहै और वासन कपाल
कर विषै खाइ रहै पेनहोत हिय हानिये
चिंतामनि कोहै ऐसी रीतिहोइ दूसको कौन
कोऊ रीति मानै जाको सांची बात मानिये
नांथन पहार पर गहन जानीको वेष सांप
मूल संगपैन संका उर आनिये॥भसमलगा
वै रहै रहै मल थौं सदां जाके गिरजा ईधन
ताको एही मूल जानिये॥२८॥बहु आदिदै
कर बरन कांम धेनु है आदि॥चित्रालंक
न बहुत विधि बरनत सुकवि अनादि २९
जोर थोर पर पीर हर सर बर धर धर धीर
मेर सूर पर हेर कर तर कर थर नर धीर॥
३०॥खड्ग बंध कपाट बंध कमल बंध अश्वग
ति गोमूत्रिका बंध इतने बंध या दोहामे देखि
ये॥दोहा॥एक छंदसे छंद बहु काम धेनु है सो
इ॥बहु छंदन भावोंबहुतयही कहत कविको
इ॥३१॥काम धेनुको उदा हरन॥सवैया॥चा
रु सरो रुह नैन ए मोहन पेखिय सांवरो देह
सुहाई॥साजत नैननि चैनजे जोहत सेखि
ये सेष अजाको गनाई॥सीपति सो गुनजेम
न मोहन लेखिये तीमन को बल माई॥सुंद

रता जिन मैनजे सोहत देखिय रूप उदार

कान्हाई॥३४॥सर्वतो भद्र॥भनिते जिनही

कारिके मनि राम जपे यों कहीहै भली म

बसों॥गनिते हिनही भरिके भनि कामें

हयेयों सहीहे चली नवसों॥जानिते चित

ही धरिके भनिही रति नामें चहीहे नली

भवसों॥धरिते तिनही भरिके तिन नामैं

लपे यों गहीहैं गली जवसों॥३३॥दोहा॥

भिन्न पदन में एक सों जहां अर्थ आभास

चिंतामनि कवि कहतसों पुन रुक्त बदभास

३४॥तन सुवरन कंचन मुलिन घन बादर

सम बार॥आँखि सरसी नीरसी सुंदर रूप उ

दार॥३५॥सब्द चित्र द्रुत ए सबै अधम का

वित पहिचानि॥जेतहैं ध्वनि हीनते अर्थ

चित्र सोमानि॥३६॥सघना भिन गुन्या स

मुझ शब्द अर्थ भिन जानि॥अलंकार इ

हि विधि गये विद्या नाथ बखानि॥३७॥

इतिश्री मत चिंतामनि बिरचिते क

वि कुल कल्प तरौ शब्द अलंकारनि

रूपनं नाम द्वितीयं प्रकरणं २॥

शिव गिरि पर गज मुख मुदित गरजत गि

रिजा पौर॥एक विनायक कारन हैं एकवि
नायक हौर॥ १ ॥जामैं मंजुल आंनसौं स
मता वरनी होइ॥वर्रां मान कछु वस्तुजो उ
पमा कहिये सोइ॥ २ ॥सो पुनि औनी आ
रथी है विधि चितमैं ल्याय॥पूरन लुप्ता भे
दनें दोऊ दुविध गनाय॥३॥ज्यौं आदिक
पदको दिये औनी उपमा जानि॥सदृस तुल्य
पदको दिये होति आरथी आनि॥४॥उप
मा जो उप मेय पद उपमा वाचक होइ॥अ
रु साधारन धर्म यह पूरन उपमा सोइ॥५
अथ पूर्णो उपमा को उदाहरन॥नाह वदाई
विरहनि आइ अचानक गेह॥दवा दीन्हवी
वेलि ज्यौं उमडि दरस जल मेह॥६॥ श्रीयु
दु नंदन द्वारिका नाथ विभूति महा कविके
वरनैंगो॥श्रीपति आपही भूमत है अरु दे
खि महा छवि रीझत हैं यौं॥लालन के भाम
रीनि के मंदिर सुंदरी छंदन सौं झलकै यौं॥
लाल रसालन सौं जवरे विलसै मुनियांन
भरे पिंजरान ज्यौं॥७॥अथ पूर्णोपमा को उ
दाहरन॥दोहा॥वल कल चीर जटा धरैं वां
धो जूके तीर॥राम लखन दोऊ जाने भये रि

मिनको मूल ॥८॥ जहां एक है नीनिको लोप चारिमें होइ॥ चिंतामनि कवि कहत है लुप्ता कहिये सोइ॥ उपमान लुप्ता॥ चिंतामनि मनु जगत मैं ढूंढ फिरौ चहु ओर॥ तो सम मोर न मोहनी कौनि तरुनि सिर मौर॥१०॥ उपमेय लुप्ता॥ सुललित खंजन से चपल बस न रहत बेचैन॥ तिन पर निवछा वारि करे न न मन सब कछु चैन॥११॥ धर्मलुप्ता॥ बदन चंद सो तरुनिको और सुधासे बैन॥ चांदू का सी हासी लसे इंदी बरसे नैन॥१२॥ वाचक लुप्ता॥ सजल जलद अभि राम तनु त डित ललित पट पीत॥ नंद नंदन सविचं द मुख चोरत चित नव नीत॥१३॥ जितय कहि ब उपमेय जहँ सो उपमान अनेक॥ सो मा लोपम जानिये भिन्न धर्म कौ एक॥१४॥ अ भिन्न धर्म मालोपको उदाहरन॥ कवित्त॥ सरद हैं जलकी ज्यौं दिनतें कमल की ज्यौं धनतें ज्यौं थलकी निपट सर साई है॥ घनतें साव नकी ज्यौं दीपतें रतनकी ज्यौं गुनतें सुजान नकी ज्यौं परम सुहाई है॥ चिंतामनि कहै आ छे आदरनि छंदकी ज्यौं निशा राम चंद

की ज्यौं दृग सुख दाई है॥ नगतैं ज्यौं कंचन बसें तैज्यौं बनकी यौं जोवनतैं तनकी नि-काई अधिकाई है॥१५॥ भिन्न धर्म मालोप मा को उदाहरन॰क॰ मालती ज्यौं मोदकौं बढा वति सहज बास सुधा ज्यौं जिवाइबेकी जतन धरतिहै॥ चिंतामनि चारौ ओर वारति उ ज्यारी प्यारी चंद्रिका ज्यौं मेरो चित चाइन भरतिहै॥ कलगी ज्यौं मंदचाल चलति मयं-क मुखी मंद राज्यौं मोहि सहा मोहितक रतिहै॥ प्रान ज्यौं सुंदरि नेकु हियेतें टरति नाहिं नाद ज्यौं नवेली नैन कोर बिह रतिहै १६॥ दोहा॥ दूत साधारन धर्म बुध जन है भांति गनाइ॥ वस्तु और प्रति वस्तु सो अरु बिंबोज बनाइ॥ १७॥ एक अर्थ है शब्द सों उ हं कहिये द्वै बार॥ कहीं वस्तु प्रति वस्तु यह भावस्तु बुद्धि बिचार॥१८॥ एक शब्द सों अर्थ जुग जहां बखान्यौ होइ॥ तहां बिंब प्रतिबिंब यह भावकहै कबि कोइ १९ वस्तु प्रवस्तु भाव॰दो॰ निज तनुतैं पिय तनु परसि ज्यौं सुख अधि क उदोत॥ आपुनतें पिय पर सखी अधिक प्रेमत्यों होत॥२०॥ बिंब प्रति बिंब॥ नाह बन्धा

द्विपदबिन गनो प्रतीय माना तौर ॥ ३०॥ जाति
क्रिया गुन द्रव्य की जौ है अध्य वसाइ ॥ ताको
विषय सुनो दुहै चौबिधि द्विविध गनाइ ॥ ※ ॥
३१॥ चौबिधि चिंतामनि कहै अध्यवसाइ बना
इ ॥ तामैं द्विविध सुजोगए विद्यानाथ गनाइ
३२॥ ताकेभाव अभाव को वाच्या गम्यौं जानि
हेतु वाच्यता गम्यता वाच्या द्विविध बखानि ॥
३४॥ तेजात्यादि सरूपको हेतुहि को फलरूप ॥
अध्य वसाइ विषय सु यों भेद बहुत जे अनू
प ॥ ३५॥ वाच्या उत प्रेक्षा विषय हेतुको फ-
ल जित होइ ॥ वाच्यौं होइ निमित्त जित ग-
म्य तहाँ नहिं सोइ ॥ ३६॥ जातैं वाच्य स्वरूप
की उत्प्रेक्षाही मांह ॥ वाच्य गम्यता अर्थको व
रनी विद्या नांह ॥ ३७॥ उपात्त गुनि निमित्त जा
ति भाव स्वरूप उत्प्रेक्षा ॥ दोहा ॥ विसद रूप हि
य राम कुल विलसत कान्ह उतसंग ॥ जनु ज
मुना जल पूर पर अलवाल तांतरंग ॥ ३८॥
उपात्त क्रिया निमित्त जाति भाव स्वरूप उ
त्प्रेक्षा ॥ दोहा ॥ जमुन पुलिन परहीर मनि
जडित किंकिनी भांति ॥ पैलति बोलति मधुर
जनु बाल मराल की पांति ॥ ३९॥ अनुपात

कौसतुभ मनि लसति हर उरमैं अभिराम॥६१
द्रव्य भाव फलो त्प्रेक्षा॥दोहा॥उमडि बिंदु की
भाँति सौं हरि रवि ससि संचार॥तिमिर अन्व-
ल कीन्हो मनौं जग अकास संथार॥६२॥२
द्रव्य हेतू त्प्रेक्षा॥दोहा॥श्री बुध पति द्विजराज
अन तीछन ऊंख सभीन॥चंद्र कारस मानौं
कियौं सकल जगत मय लीन॥६३॥द्रव्य भा
व हेतू त्प्रेक्षा॥दोहा॥जल थर मद जल गजन
जनु किय ससि सूर प्रभाव॥जानैं जानत रा-
ति दिन पावस ऋतु परभाव॥६४॥द्रव्य फ
लो त्प्रेक्षा॥दोहा॥यौं फैली है चंद्रिका महि अं
बर अब याहि॥मानो उमड्यो छीर निधि चं
द्र दरस नहि चाहि॥६५॥द्रव्य भाव फलो त्प्रेक्षा
दोहा॥मदन दहन यह जानि यह मदन सहा
यका आहि॥धरे भुजंगम नहुम लय अनि-
ल बिनासहि चाहि॥६६॥यौं उन प्रेक्षा मैं बि
धो बिधानाथ प्रकार॥उपमा हूंसैं करि सका-
न यह नाम का संचार॥६६॥उतप्रेक्षा संभा-
वना वस्तु हेत फल रूप॥उक्ता नुक्ता प्रथम
के वाहन एक कवि भूप॥६७॥सिद्धा सिद्धा
स्पद बहु विधि द्विविधो निरधारि॥स्रमा भ्रु

क्लाया नंदमैं यहक्रम किधौं निचा॥ ६९॥ उ-
त्ता स्पदा स्वरूपो त्प्रेक्षा॥ दोहा॥ मुख विधु लखि
कुचकोक जुग यह विरहाग प्रकास॥ दोनाच-
लि जनु लई उन दुखन सधूम उसास॥ ६९॥
अनुत्ता स्पदा हेतू त्प्रेक्षा॥ दोहा॥ वरनन कंज-
न नभ मनौ तमली पन जनु अंग॥ स्याना स्या-
म स्वरूप धरि लै वैंा स्याम कौ संग॥ ७०॥ सि-
द्धा स्पदा हेतू त्प्रेक्षा॥ दोहा॥ सुंदरि भूमि धरेम
नो लाल निहारे पाइ॥ मुख समता कृष्णमनौ
विधु लखि कमल रिसाइ॥ ७१॥ सिद्धास्पदा व
स्तू त्प्रेक्षा॥ दोहा॥ कुच्च वीलन कौ हेम गिरि
शृंगनि सौ संनद्ध॥ भार गहन कौ कनक जनु
दामन बद्ध निबद्ध॥ ७२॥ असिद्धा स्पदा फलो
त्प्रेक्षा॥ दोहा॥ सूरज सनमुख जल बसत लहि
त सदा दुख कंज॥ सुंदरि पग साम्राज्य कौ
काल मनहुं तप कंज॥ ७३॥ प्रतीप मानोत्प्रे
क्षा को उदाहरन॥ कवित्त॥ अलि मनो हर दंप-
तिके अलिंगन पर वारियत त्रिभुवन सुख-
मा सुदेखहे॥ चिंतामनि कहै कवि कैसे कहि
सके कोऊ अद्भुत कुरूप रचना अलेखहे॥
स्वरन लताहे तमाल सुर नक संग धन स्या

म संग थिर दामिनि विसेष है॥राधाजूको देषि देव वनिता वषान लौहें हरि उर निरख पषा न हेम रेखहै॥७४॥स्मरनालंकारको ल॰ दोहा॥सदृश वस्तु अनवे सदृश वरन्नतको ध्यान॥स्मरन बोलत विवुध जन समझौ सुकवि सुजान॥७५॥स्मरनालंकारको उदाहरन॥दोहा॥दृगन सुधा वरखत सरद राका चंद निहारि॥सुधि आवत वा वदनकी जाप र हौं वलि हारि॥७६॥जहँ विषई अरु विषयको वरन्यौं होइ अभेद॥अलंकार रूपक तहाँ समझौ सुजन अषेद॥७७॥जो अति रोहित विषयको उपकारक जो होइ॥विषईसो रूपक वरन यौं वरनत कवि कोइ॥७८ पुनि दूसरो वयव अस निर्वय वस्तु प्रकार है विधिसों यक पुनि त्रिविधि वरनत वि-मल विचार॥७९॥सरववस्तु विषयक प्रथ-म वरनत सुकवि विचारि॥एक देस विचर त अपर परे परित निरधारि॥८०॥निरवय को पुनि द्विविध गन केवल माला रूप॥इन के देस उदाहरन सुनिये सुजन अनूप॥८१ सर्व वस्तु विषयको उदाहरन॥कवित्त॥को

किल कापो तकीर कुहकनि कोकिल कलि भारी
कोला हल दिसि विदिसि मैं छायोहै॥क
ए राते पाटल पताका पाटु रात लनि पुहुप प
रा धूरि भ्रमर उडायो है॥मौर मोर मान मद
गंजन मलंग छूट सो हल सौं रसी सम कौन
मन भायोहै॥आली सहा बली रतिपति म-
हीपति कौ सोरिहु पति सेनापति सेना साजि
आयोहै॥८२॥रूपक कौ अधिक उदाहरन॥
कवित्त॥जाहि मिलि नैन नील कमल खुले
हैं कानन मुकुत नखत पर वार्यौ विचार्यौहै
परल मधुर मुसक्यानि कौमुदी सौं बडो सु-
खमा गरब वारि जानको बिडार्यौहै॥निर
खत सवन कौ सब बरखत कौ हिये हरखत
हरि ध्यान निरधार्यौहै॥चिंतामनि कहै चख
कोरन कौ आनंद सुख चंद राधिका मुकुंद कौ
निहार्यौहै॥८३॥एकदेस विवर्ति रूपक कौ उदा
हरन॥दोहा॥सरद सिंधु सन चमरिका स-
जल जलज कर अंत्र॥किरनि माल मुक्ता-
वली बिधु अनंग सिर छत्र॥८४॥परंपरित
को लच्छन॥दोहा॥जहाँ एक आरोप मैं आरो
पान्तर होइ॥परंपरित रूपक तहाँ बरनति छि

निहिं कोइ ॥८५॥ श्लिष्ट विशेषन होइ जह और
अर्थ हि निहारि ॥ माला रूपक परं परित रूप
क सुमग विचारि ॥८६॥ श्लिष्ट विशेषन प
रं परित को उदा हरन ॥ दोहा ॥ सुंदर नंदन नंद
को रूप किलो कानु काम ॥ गोपी फूली हेम
तन वेलि रसिक अलि स्याम ॥८७॥ श्लिष्ट
माला परंपरित को उदा हरन ॥ दोहा ॥ जीवन
दायक स्याम घन गोपी पदमिन मित्र ॥ संप
रत मधुरन बाल निधि श्री गोविंद विचित्र ॥
८८ ॥ अश्लिष्ट विशेषन माला रूपको उदाह
रन ॥ कलाजान सुर तान कल्प तरु मन आनंद
कंद ॥ सुखमा सलिल समुद्र हरि लोचन कु
मुद चंद ॥८९॥ दूसरो उदाहरन ॥ कवित्त ॥
मन कुल मंदाकिनि जलजा कोमल मही राज
मही विमल प्रवालिन विविधि नय ॥ वृंदाव
न अरविंद नैन इंदु मुख इंदी वर दल स्याम सुं
दर सदा सदय ॥ चिंतामनि मुनिमन मोर कोक
दीन जन सीता नैन मीन सुधा समुद आनंद
मय ॥ कौसिल्या कल्प बेलि संभव सुमन रजा
दसरथ रूप निधि चंद राम चंद जय ॥९०॥ २
निरवयव को वल रूपको उदा हरन ॥ दोहा ॥

ललित अलक मुख चंद पर मनकी यहीं अभो
ट॥ बिहसौंहैं चंचल नयन मीने अंचल वोट॥
८१॥ निरवय माला रूपक को उदा हरन॥
दोहा॥ दर पसिरी कंदर परी चनकी सहज म
साल॥ भागनिकी अधि देखना कौन धन्य
ही बाल॥ ८२॥ परनामलंकार॥ दोहा॥ लखि
विषई विक्रयात्मको करत प्रकृति उपजोग
रूपकते परनामजो भिन्न कहत कवि लोग॥
८३॥ ब्रज बासिननें जगत पर और सभा तिन
जानि॥ कलपद्रुम तिनको भयो आपु आ
त्मा आनि॥ ८४॥ जहां बिषै बिषई सुभगक
वि संमत मन नाहि॥ सोंदेहास्पद होतहै कवि २
संदेह तहांहि॥ ८५॥ प्रथम कहत निश्चय गर
भ निस्च यांत पुनि जांन॥ अलंकार संदेहय
ह सजनद्विविध मन आंन॥ ८६॥ दर्पन धोंको
ललित चित ससि धों बिनै कलंक॥ अंबुज
धौंन बिलास यों निख मुख लखि मनसंक॥
८७॥ निश्च यांत को उदा हरन॥ सवैया॥ खंज
नहें धों उडातन अंबर कंजहै धों थिरता नहिं
चीहें॥ भृंगहे स्यामल खेनन बदूधों मीनहें
नैनन मोदजु दीन्हें॥ कामके बान धों पांच २

सुनेहमय आव यामलहै चिन कीन्हे ॥ नैनन
चैन करै निरखैं अलि नैननि नैन रनालिनु-
लीन्हैं ॥९८॥ दोहा ॥ जहां होतुहै प्रकृति मैं अ
प्रकृतिहि को ज्ञान ॥ भ्रांति मान यासों कहत
पंडित सुकवि सुजान ॥९९॥ फटिक महल
चढ़ि बिधु मुखी देखत श्री नंद नंद ॥ कह्यौ
सखीसों हरि चलो ऊपर आयो चंद ॥१००॥
अपन्हुत ॥ विषई को आरोप कै करि जो वि
षय निषेध ॥ ताहि अपन्हुत कहत हैं धर्म-
हि समुझि सुमेध ॥१०१॥ कवित्त ॥ वारन मत
छिदा रुचो महा तम देखि महा तमकी अधिका
ई ॥ अंकमैं भरि गह्यौ कर सायक आनन लो
क वालक काई ॥ मानसकै से बचे मृग लो-
चनी कान्ह समीप वसैनो भलाई ॥ आवत ऊ
पर अहहि मंद सों कूट महोपम गोद है भाई ॥१०२
उल्लेख को लक्षन ॥ दोहा ॥ कहुं ग्राहक के
भेद कछु विषय भेदसों होइ ॥ एकहि को उ-
ल्लेख बहु कहि उल्लेख जु सोइ ॥१०३॥ नाम
भेद उल्लेख को लक्षन ॥ दोहा ॥ दीनदया र
जालकौ जालधि सकल कामिनी काम ॥ कहत
भक्त जन कल्प तरु रामहि रिपु जम नाम १०४

विषय भेद उल्लेख को उदा हरन॥दोहा॥कह
त स्याम को काल्य नर पूरन लखिलव साध,
दीन दया निधि सब जगत सुखमा सिंधु अ
गाध॥१०५॥श्लिष्ट श्लेष को उदा हरन॥सो॰
जीवन दायक देखिकै ब्रज बासी घन स्याम
कीन्हहि भक्त मुकुंदानीके हरन कामिनी का-
म॥१०६॥पर नाम। उल्लेख ए दोऊ रूपक
माहि॥भिन्न गंस हात रूप तो मंमट बरनें
नांहि॥१०७॥अति शयोक्ति को लक्षण॥दोहा
प्रौढ उक्ति जो कविन की अतिशयोक्ति है सो
इ॥भिन्न अर्थ हात भेदतें भिन्न ताही जो हो
इ॥१०८॥जहाँ त्रात उप मेयको उपमा नहि
में होइ॥ प्रकृति को जो अन्यथा कहै दूजैको
वि जोइ॥१०९॥जो यह यों तो होइ जो याबि-
धि के अभिधान॥कारज पहिले ही कहै पी
छे कहे निदान॥११०॥अतिशयोक्ति ए चारि बि
धि मंमट कथन उचार बरनत चित्ता मनि
सुकवि निज मति के अनु सार॥१११॥अ-
तिशयोक्ति यथा क्रम उदा हरन॥सवैया॥पूर-
न मंडल बेलिके मूल लग्यो अक लंक मयं
क नवैयो है॥नील सरोज भरे मधु बिंदन लै

सरतारका हूंर सबयौहै॥डोलतुहै तिल मूल के पौनद्य धूकी लखे छवि कौन छयौहै॥गो हके द्वारमैंकाहू महा सुकृती जनको जनु पुन्य पक्यौहै ॥११२॥ * ॥डोलनि बोलनि ऑन काहू लटकौ काहु ऑन लुभा यहि जोऊ॥ १ ऑन काहू परिहास विला सहे ऑन हसी मृदु सुधि हि सोऊ॥ऑनकाहू दृग कंज चि॰ तौ निहै ऑन काहूद्युति दांतनि सोऊ॥ऐसीकयौ वोपरहै तनमैं मन लागै जहां करता कर दो ऊ॥११३॥सखितो समहोन को सारदा सोंक मलामिलिकैस्वरूप धेरै॥पुनि ताही स्वरूप मैं चंद मुखी सब चंद्रिका आपनी चंदभरै मति तापर जोतप कोरि करै पुनि तातप पै जो विरंचि ढरै॥तिहुंलोक की सुंदरता हरिकै तबतोसी जो वाहि करैतो अरै॥११४॥दोहा तोय कामिनिन के मननि लखि छवि घन घन स्याम प्रेम उमग पहिले भइ पीछेव्या प्यो काम॥११५॥धरलव विष्णु धन बल उकुल जो काहु औरकी होइ॥याहि सभा मे कोति कहत पंडित संमट कोइ॥११६॥अति पवित्र जलवास कन कुमुदिननित अधिकाइ॥फूली

है प्रति देखत दुज पतिको पति पाइ॥२१७॥प्र
स्तुति वक्र विशेष तन वाह्य जाथल होइ॥अ-
प्रस्तुति गर्भित सभा सोता काहै ए कोइ॥२१८
जोन अलिंग देत धन कुम दिन को आनंद
निसा बदन चुंबन करत उदित भयो जब चं-
द॥२१९॥श्लिष्ट विशेषन होत कहुं कहुं साधा
रन जानि॥उपमागर्भित होत कहुं सज्जन
गमभन आनि॥२२०॥कहा मुदित अतिही
भई पतिको आगम जानि॥प्रगटे चारु मयं-
क रचि निसा बदन मुस क्यानि॥२२१॥जा-
को रूप स्वभाव अरु क्रियाजु जैसीहोइ॥☼
ताको तैसोई कथन सुस्वभावोक्ति कहि कोइ॥
२२२॥कवित्त॥ जसु मति मैया होऊं मैया वड़े
हैहैं नदा चिंतामनि वैरिनके उरनमें सालिहैं
सुर वरषन गोपकुल हरषन लाख लाख बरखन
ब्रजभूमि प्रति पालिहैं॥ललित ललाट परलटकी
हैं लटैं मानो वदन कमल पर मधुकर आलिहैं
देख लाल पलकाकी पाटी को पकरि खरे खेल-
त हंसत किलकात हांस हांसिहैं।२२३।दूसरो उदाह
रन।कुलहीललितविलसतिवार।दो०।प्रगटित वस्तु
छ ।दूये जोवनाइ कछु काज॥व्याजोकति तासों

१३३॥ तिय मंदिर की दुति पतिको भाग्य उद्योत॥ तनकी दीपति सौध ग्रह सब सुवरनकी होत॥१३४॥ और वस्तु गुनको ग्रहन जहं न धारै कछु वात॥ ताहि अंत गुन कहत हैं जो कवि मति अधिकात॥१३५॥ गंगा जल उज्जल जमुन जलु छवि अंत समेत॥ दुहूं मध्य मज्जन करनु हंस सेत को सेत॥१३६ सो विरुद्ध अवि रुद्ध मे जहं विरोध अभिधान॥ सुनो जाति गुन क्रिया अरु द्रव्य माहं सज्ञान॥१३७॥ जाति जाति दिकन सौं गुन गुनादि सौं जानि॥ क्रिया क्रिया अरु द्रव्य सौं द्रव्य द्रव्य सौं मानि॥१३८॥ यौं विरोध दश भांतिसौं मंमट गये बखानि॥ तिनके देत उदा हरन सुकवि लेहु मन मांनि॥१३९ जाति जाति विरोध॥ दोहा॥ अभिनव नलिनी दल कमल सैवल मृदुल मृनाल॥ अनल भये या बालको विरह निहारे लाल॥१४० परवत मे मारवन भये मारवन मृदु पषान ललित पल्लवित वे सिद्रुम सव फल फूल निदान॥१४१॥ जाति गुन सौं विरोध॥ गोपद सुहमी कनक मय गिरि सर वपकोमि-

रदूका॥ द्रव्य द्रव्य सों विरोध॥ कवित्त॥ मालती
के फूल मालतीके फलही मारे फूलनकी
माल मीड़ा मारे सुकुमारीको॥ चिंतामनिकहै
है वरनन हीन अंग अंग औरई वरन होत अ
निल विचारीकों॥ भयेहैं जलज बाल सरको
जलज बाल गिरि गिरि मूल लसें जापै गिरि
धारीकों॥ भयोहै निसाहूं ससे कान्हके वियोग
सीतकार भान सम मानकी दुलारीकों॥१४८॥ वि-
शेषको लक्षण॥ दोहा॥ बिन प्रसिद्ध आधारजो
करै आधेय बखानि॥ एकहि की इक बारजो
थित अनेक थल आनि॥१४९॥ एक वस्तु के
काल जो होइ असंख्यो ठौर॥ त्रिविध विसे-
ष विचारिके कहत सुकवि सिरमौर॥१५०॥
देव लोक वासहु भये जिनको उत्तम योनि ॥
रहति रसावलि सकल नर सोधन वारे विनमा
न॥१५१॥ वह मनमें वह ध्यान में वहै वचनहूं
मांह॥ वसत तिहारे वास वह हम पावै कित नां
ह॥१५२॥ रचन उदार सुचार छवि लोहि चतुर
सिर मौर॥ नई सिरी रति दूसरी रची सारदा औ
र॥१५३॥ जो अधार आधेय की अन रूपता
न होइ॥ दोऊ को आधिक्य नाम अधिक अ

लंकान सोइ॥१५४॥पृथु अ[illegible]का लंकार को
उदा हरन॥दोहा॥जाहि जसोदा गोदमें ली
न्ह मोद अखंड॥ताबालक के उदर में लखे
सकल ब्रह्मांड॥१५६॥दूसरो उदा हरन॥काल
प अंत जाके उदर सकल चराचर रूप॥नंद
नेहनी गोहमें ताहि सुबाल रूप॥१५७॥*
अन्यच्च॥दोहा॥कलप अंत जाके बसत जग
त सकल सवि भाग॥तेहरि अंग अमात नहि
राधेको अनुराग॥१५८॥बिभावना अलंका
रको लछन॥दोहा॥कारज उतपति की जहां
कारनकी प्रति षेध॥सोसव कहत बिभावना
पंडित सुकवि सुमेध॥१५९॥बिभावनाको
उदा हरन॥दोहा॥बान धनुष सब फूलको
सेना अबला संग॥कौन हेतु हैं जीतिको जीत
तु जगत अनंग॥१६०॥बिसे षो क्तिको ल॰
दोहा॥जो अखंड कारन मिले कारज कछू न
होइ॥तासो बिसे षो क्ति कहत पंडित सब
कवि कोइ॥१६१॥कवित्त॥मंडप मृनाल जा
लजालनके पातनके सेजहू में बिछेजल जा
तनके पातहैं॥करी नीरें गुलाबके नीरकी अ
नूपनदी सिकता कपूर चूर अति अब दातहैं॥

चिंतामनि ऐसी भांति विकल बिरहिनीको सी-
तल अपार उपचार अधिकाल हैं॥एते परभुति
फल बिरह अगिनि पीरे पीरे होतपैन सीरे होत
गातहैं॥१६२॥असंगतिको लछन॥दोहा॥हेतु
और थल मैं कहूं काजऔर थल होइ॥अलं-
कार ज्ञाता कहत होति असंगति सोइ॥१६३॥
आज़ु चलाए नैन सर मोपै लकि तकि नांह॥
सखी लखो आचरज़ु यह छिदे सौति उरमांह॥
१६४॥कहि विचित्र सुविरुद्ध फल पावन कोउ
होग॥अलंकार सुन बीन यह बरनत पंडित
लोग॥१६५॥गनपति प्रभु सुनिये वचन बोलत
बिमल सुभाइ॥सबते ऊंचो होनको नवत तिहा-
रे पाइ॥१६६॥जहां बिमल है बात कछु करत
परस परकाज॥अलंकार अन्योन्य यह बरनत
सब कबि राज॥१६७॥अन्योन्यको उदाहरन दो-
हा॥छपा बनि चांदनी समुझ बडो उपकार॥
विपुल करतिहै चांदनी सुंदरि को अभिसार॥
१६८॥जो संजोग दे बातको जथा जोग नहि हो-
इ॥विषम अलंकार कहत यह कवि पंडित
सब कोइ॥१६९॥करनीकोन क्रिया फलै पुनि
अनर्थ कछु होइ॥जोकारज गुरानिया तेकीज

और विधि सोइ॥१७०॥यौं विरुद्ध तारेरिबो विषम कहत कविनाह॥अलंकार करता नके देख्यो ग्रंथन माह॥१७१॥प्र॰ विखम को उदाहरन॥दोहा॥कितसि रीव कोमल अमल कमल मुखी को अंग॥कितकर्कस बारह रतन तीरवन तपन अनंग॥१७२॥मदन मिली मुखके डरन सेयो वन घन कुंज॥भये महा दुख दानि उत दुगुन मिली सुख पुंज॥१७३॥स्त्री हरि जू आरसी कुसुम स्याम तिहारे ध्यान॥विसद होत मन मुनिनको विमल शुद्ध विज्ञान॥१७४॥तीस विषम कोउदाहरन॥दोहा॥मोतन तापतिरे सदा तोतन सीतल संग॥तिहीते उपज्यो विरह ज्वारत मेरे अंग॥१७५॥समको लच्छन॥दोहा॥होत समा लंकार सो जो कछु जोग संजोग॥द्वि विधवस्तु बरनैत मन अमल जोग कहत कवि लोग॥१७६॥संजोग समा लंकार को उदाहरन॥*॥ सवैया॥वेदू नको हित तेल उसासन ए उनको हित होतिहै पीरी॥सुंदरता हरि राधिका कीलखि औरकी सुंदरता विधि कीरी॥वेदूत नंद कुमार भले वृष भान कुमारि रूप गहीरी॥जो यह जोरी मिले सखि होहिं दुनो अखियां सखियां-

नकी सीरी ॥१७७॥ दूसरो उदा हरन ॥ दोहा ॥ प्रग-
ट भई संसार में निंदा वाही लोग ॥ ताके आदर
कारन को प्रगट भये खल लोग ॥ १७८ ॥ दो प्र-
कार तिन होइ की अप्रकृत को कोइ ॥ तुल्य ध-
र्म इक बार ही तुल्य जोगता होइ ॥ १७९ ॥ मंड-
ल विधु नंदा किनी वृष वाहन सब गात ॥ स-
दा सदा शिव त्व लसि सदै बाल अवदात १८०
प्रकृ ति और अप्रकृति की धर्म एकही बार
कारक की बहु क्रियन में दीपक उक्ति उदार ॥
१८१ ॥ प्रस्तुति अप्रस्तुतिन को सदृस धर्म संजो-
ग ॥ गम्य होइ अगम्य जिन तिन दीपक बुध
लोग ॥ १८२ ॥ श्री राधाके अधर रस स्वादन और
ह होइ ॥ दाख सिता मधु सुधा ए हरिको भाव-
त नाहि ॥ १८३ ॥ लोभी जन धन लाभ अरु तिय
जन संग सकाम ॥ साधु सकल श्री रामको ना-
म लहत आराम ॥ १८४ ॥ देह लसनि मन गेह
पुनि लसत सिरी संपन्न ॥ जल अरु बिन कवि-
न ए नीके लगे प्रसन्न ॥ १८५ ॥ पूरब पूरव करै
जो उत्तर को उप कार ॥ माली दीपक होत यह
समझो बुद्धि उदार ॥ १८६ ॥ कवित्त ॥ तूली अली
चल वैनन मै मन तो महं जीवन मे यह जाँनी ॥

ता यह जोवन बीच बनाई अनूपम रूप कला
पहिचानी॥ ताही अनूपम रूप कलामें मनो
रथ मैन महा सुखदानी॥ ताते बढ्यो मन मो·
हनको मनको खिलवेको मनो रथ रानी॥१८७
दोहा॥ आवति दूत सुनि जातिहै ललित दि-
खावति गात॥ मृग नैनी हेरनि हंसनि कहनि
मधुर बाछु बात॥१८८॥ सदृस धर्म तुलका जो
शब्द भेद सों होइ॥ कवित एक द्वै बात मे प्रति
वस्तूपम सोइ॥१८९॥ प्रति वस्तूपमको उदा ह-
हरन दोहा॥ जो छविको हियरा लगी लसति सीस
मनि सोइ॥ तिय तान ऊपर उरवसी सबनि सरा-
ही सोइ॥१९०॥ माला मय प्रति वस्तूपमा ॥
दोहा॥ हीरनि सों सौ सुदान अब दानै कैला-
स ३॥ रसों तनको हियो अब लैसासि सिरपर
वास॥१९१॥ मेरुथ ह्वात ही तुंग विधु सीत-
ल बिना उपाइ॥ सज्जन समुद गंभीर अरु सु-
जन सुभाइ गनोइ॥१९२॥ जहं बिंब प्रति बिंब-
को भाव सबन में होइ॥ कहत सुकवि दृष्टांत है
लखहु ताहि सब कोइ॥१९३॥ जहां तुलित द्वै
वस्तु को शब्द भेद अभि धान॥ सो बिंबप्रति
बिंब मय भाव कहत सज्ञान॥१९४॥ अलंका

रदृष्टांत में सदस धर्म कोहोइ॥विसे धनहुकोहे
इ पुनि बिसेष्य मे होइ॥१९५॥लाल तिहारे
लावन ही बात हिये हुलसात॥लसनि लसनि
अब लो बातहि पदमिनि पदमिनि रात॥
१९६॥वैधर्मेते दृष्टांत॥दोहा॥काहू दंस दंसी
नको रह्यो न रहत निदान॥भारद मारतही
होतु है प्रगट वखाल को ध्यान॥१९७॥अन
होनी जग वस्तुको कछु संबंध जु होइ॥ उ
पमा पर काल्पक दुते निदर्स नाकहि सोइ
१९८॥कित अवला हम अलप मति कितय
हु जोग अगाध॥कौंकर कौरे पपील का अ
चल उखावन साध॥१९९॥अलि अंजन
बंधूक दुति अधर अधर लखि लाल॥धरी
नई दुति इंदुकी बात वदन में वाल॥२००॥
अपने अपने हतुको जोजा संवध ज्ञान॥हो
त क्रियाते निदर्सना ताहू कहत सुजान॥२०१
कवित्त॥ उज्वल स्वरूप सुबन प्रमानि थिरै
गुन वंत अनूपमजोहैपाइवौ उज्वल सोपद उ
त्तमसोहत है निरखे मन मोहै॥सो यह बात
विचारि कहै मन देखो विचारि मतौ सबकोहै
मंजुल जो मुकता हल हार सो नारिवो ऊंचे उ

होत हैं विमाल ससंक वलादू ॥२१०॥ एक वाक्यमैं होत है जाथल अर्थ अनेक ॥ ताको अर्थ श्लेष कहि कवि जन करत विवेक ॥ २११॥ दृग लीव मन सुख होत अति सद तस दुख मिटि जात जह दीपनि दुति देखता दरसन पावे प्रात ॥ २१२॥ साभिप्राय विसे षनन कथन सुपर कर जान ॥ याको हेत उदा हरन सुकवि लेहु मन मान ॥ २१३॥ कवित्त ॥ हौंतो हौं अनाथ तुम अनाथन के नाथ हो दीन तुम दीन बंधु नाम निज्जु कीन्हो है ॥ हौंतो हौं पतित तुम पतित पावन वेद पुरान वषानो कछु कह्यो नवीनो है ॥ धाव करी सेवा जो हौं कहौं मेरी सेवा रीझो आपही ते आपनो कै चिंता मनि लीनो है ॥ अब तुम्हें मेरी रक्षा करिवे ही परी राम रावरे ही मोहि निज्जु नातो जोरि दीन्हो है ॥ २१४॥ जहं विशेष अभि ध्यानको दूक्षरा कथन निषेध ॥ तिलामनि कवि कहत है सो आछेप निसेध ॥ २१५॥ वर्त्तमान विषय निषेध को उदा हरन ॥ दोहा ॥ कहौं न काहू निडर सौं हौं काहू की बात ॥ बिन विचार कर वाज अब मरौ जु मरिहो प्रात ॥ २१६॥ उक्ति विषय निषेध आछेप को उदाह-

रन॥दोहा॥प्रेम निहारे चंद्रिका चंदन कमल मृनाल॥अनल भये वा बालको काहूूं न काहियें लाल॥२१७॥स्तुति निंदा मिसि और अस्तुति निंदा होइ॥चिंता मनि कवि कहत है व्याजस्तुति है सोइ॥२१८॥कवित्त॥जाको छाया औरे माको संसारे छडावे कोहे चिंतामनि भांति यह भली मन भाई है॥पापी सुकृती न सेसे एके गति कोरे इन्हे जाने को कहांते भाकौन थों बडाई है॥माया मोहे सवही को रीहे व्याध गनिकाधे कीरति सवाल जग ऐसी कछू गाई है॥रूप जाति गुन काहा वे जगत पति जगत की प्रभुता धों कोन गुन पाई है॥२१९॥ अस्तुति मिस निंदा-मानस तो लीजि यसु परषि सुभाइ लषि तुम पिय सुज्ञान सिरोमन प्रकास हो॥जिनको हू चुरायो मन मानिक तिहारो सो वहे नष दुति हिये पावत हुलास हो॥चिंतामनि कोहे कठोर कुच उर वीच ताही तुम बांधे निसि माहे भुज पास हो॥ताको सरवमानि लेत कहां लों भलाई कहों ऐसे स्याम सुंदर सुधाई के निवास हो॥२२०॥ अप्रस्तुत प्रसंसा को लछन॥दोहा॥अप्रस्तुत के कथ-

न बिनु प्रस्तुति जान्यौ जाइ ॥ अप्रस्तुति पर
संससो सज्ञान सुनौ बनाइ ॥ २२१ ॥ कारज के
प्रस्ताव मे कारज को अभिधान ॥ कारन के प्र
स्ताव मै कारज कथन सुजान ॥ २२२ ॥ अप्र-
स्तुति सामान्य जो तहं बिसेष कहि जाइ ॥ का
हुं बिसेष प्रस्तुति कहैं सामान्यौ सु बनाइ ॥
२२३ ॥ कहूं सदृस प्रस्ताव मैं सदृस अभिधा
न ॥ अप्रस्तुति लंकार के पंच भेद बुधि जा
न ॥ २२४ ॥ ॥ यथा क्रम उदाहरन ॥ दोहा ॥ सक
न तजी कुलकानि तजि लखि गुरु लाज समा
ज ॥ सेवै रमी हरि मुख निरखि सदन रह्यौ रह
काज ॥ २२५ ॥ इहां आतुर क्यौं खडी कैयो नही
है बेटी है तोहि कछू सुधि नाही यह कारज प्रस्ता
व मै हरिमुख दरसन को कारन कह्यौ कारन
के प्रस्ताव मै कारज कौन. अधर बिंब बरनत रहे
लाल उकति करि कौन. आजु लली को बरन्यौ
चहत रहत लाल गहि मौन ॥ २२६ ॥ इहां सखी
मंडल मै नवोढा के अधर बिंबा स्वादन नायक
कियो यह प्रस्ताव मे बिंबा स्वाद ते लौकिकानु
भाव बरन्यौ नाही जात बुद्धि मांद भयो यह का
ज. कह्यौ सामान्य के प्रस्ताव मे बिशेष को कथन

ही. जल कन कमल निपात मै उन मन मुकुता
मानि कर परसत लषि लीन भइ सोचत कहि
निजु हानि ॥२२७॥ विशेष के प्रस्ताव मे सामा-
न्य को कथन ॥ दोहा ॥ जासों आपन मित्र को मि-
को जाइ उपकार वह कुलीन वहै धनी वहै ध-
न्य संसार ॥२२८॥ जहां तुल्य अभिधान तहं
तीन प्रकार विसेष ॥ श्लेष समासो क्ति अ-
पर सम्बल मूल करलेष ॥२२९॥ श्लेष मूलक
को उदाहरन ॥ दोहा ॥ कहि मनि अधिक सने-
ह कर कैसे लाह विधि कोइ ॥ कहूं प्रकासत
जगत मै बिन गुन दिया न होइ ॥२३०॥ समा
सोक्ति मूलक को उदाहरन ॥ दोहा ॥ हसा
जो जवलों नहीं होत उन आदर मेह ॥ हसा जा
गे जा हीय मै सबै करत है नेह ॥२३१॥ सदृस प्र-
स्ताव मै सदृस कथन ॥ दोहा ॥ जित तित ललि-
त बसंत मै फूली लता अतूल ॥ फूल नहीं
अलि के हिये बिना मालती फूल ॥२३२॥
वाच्यनु वाचक भाव की रीति तजै कछु भ-
ति ॥ पेच लिये सो सब कहत पर्यायोक्त
जुक्ति ॥२३३॥ साम अर्थ जो विंजना सो प्रताप
हित होइ ॥ पर्यायो कति ताहि को कहत विबुध

सव कोइ॥२३४॥ निरविकारन्हको रूप लवित जीवासकी प्रीति॥सुंदरता उन सद मदन मन मन सुध बुध नीति॥२३५॥ प्रस्तुति कारज ते जुहे प्रस्तुति कारन ज्ञान॥ यजो यो कति कह तथे विद्या नाथ सुजान॥२३६॥ दरकी अंगिया मल गजी सारी अति चित चैन अलसो हैं से ललित हैं आनु लजो हैं नैन॥२३७॥ यह रचिवे को ए रचे ऐसी कहि कछु बात॥ जुवा हेप उप मानको सो प्रतीप कहि जात॥ २३८॥ उप मानो उप मेय यह कोरे अनादर काज॥ इहां प्रतीपे कहत हैं पंडित सव कवि राज॥ २३९॥ रचि मधुराई अधर की सुंदर वदन वनाइ॥ सुधा सुधा निधि को रचे विधि वुथ वै भव पाइ॥२४०॥ गरभ धरत मन जानिहो एक तरुनि सिर मोर॥ रूप वती अति जगत में तो सी रति है और॥२४१॥ जुहे साध्य साधन कठिन सो वरनत अनु मान॥ तर्कन्याय मूलक सुतो अलंकार सज्ञान॥२४२॥ भौंह भाव जहं तिय करे तहीं परति है वान॥ इनके आगे सर मदन लीन्हे वान कमान॥२४३॥ हेतु वाक्य के अरथके अर्थ पदन को होइ॥ काव्य लिंग

ताकौ कहत हेतु बखानत कोइ ॥ २४४ ॥ हरि
उर निर्मल नील मनि हर जन सिला समान ॥
श्रुति बिंबत इत राधिका कमला कांति निधा-
न ॥ २४५ ॥ पदार्थ को हेतु ताको उदाहरन ॥ ※
दोहा ॥ साध्य असाध्य नहीं कहौ पावन पावत
लाल ॥ है स्मर संपन सुख चालस जास अमो-
ल है काल ॥ २४६ ॥ नील बसन पावस निसा
अली जहां तंह चंद ॥ देत काहू मेरा लखि लिहै
कछु उघार मुख चंद ॥ २४७ ॥ श्लेष मूल को
उदा हरन ॥ दोहा ॥ पाप मतंग पदान तिन अ-
नुरागी नित्य राहि ॥ चिंता मनि जिनके बसत
पंथा मन उर माहि ॥ २४८ ॥ काल पवन परसो
मथन जो सामान्य विशेष ॥ सो अर्थांतर न्या-
स कहि लखि पंडित मन लेष ॥ २४९ ॥ विशे-
ष परि मान को उदाहरन ॥ दोहा ॥ मूढनकी
मति मंदता तियन साधु करि लेत ॥ लखत
रस पति कमलिनी मधुपन को मधु देत ॥
२५० ॥ रिसानि को भानि बूझ बिन बूझहु लेत
रिसाइ ॥ नीकी कौनी को लगे सब विधि स-
कै रिसाइ ॥ २५१ ॥ नाम कान को अन्वय जहां
क्रमसौं नाम क्रम होइ ॥ यथासंख्य सो अलं-

लत सुमति कहत सबकोइ ॥२५२॥ अथ उदाहरन

मध्य कुच लसत सुधा बैन अरु नैन ॥ बिंब चंद

लसै कोक अरु अली कमल से ऐन ॥२५३॥ ए-

क वस्तु के असतें और भई जो होइ ॥ ताको का-

हियै यह कहा अर्थापत्ति कोइ ॥२५४॥ सुंदरि

की दिन कांति तनु राति उज्यारी होति ॥ दीपक

की जोति कहा चंप कली की जोति ॥२५५॥ स-

लवस्तु जो अनेक थल प्रापत एक हि बार ॥

नियमितकीजै एक थल पर संख्यालंकार ॥

२५६॥ एक वस्तु जो एकही ठौर नेम सो होइ ॥ पर

संख्या तासों कहत कवि पंडित सबकोइ ॥२५७

प्रश्न भई जो अथवा पुनि तातें भिन्न जु और ॥ परिसं

ख्या द्वैविध द्विधा कहत सुमति सिर मौर ॥२५८

वर्जनीय द्वैसौ कछू कहूं शब्द गत होइ ॥ क-

हूं अर्थ बल पाइयै यह बिधि होऊ दोइ ॥२५९

पूछौ अन पूछौ कथन कछु वस्तु को होइ ॥

ऐसो औरन हेत यह परिसंख्या कहि सोइ ॥२६०

परि संख्यालंकार मैं कहत शब्दगत होइ ॥ क-

हूं अर्थ बल पाइयै जो सम नाही कोइ ॥२६१॥

संमट अरु चारुचन्द्र इहां ऐसो कियो बिबेक ॥ प-

रिसंख्यालंकार को समुझौ पंडित एक ॥२६२॥

शब्द गत वर्जनीया प्रश्न परि संख्या कोउदा हर-
न॥ दोहा॥ कौन सुखी जो राम कौ नहि संपति
रस लीन॥ कौन सुखी जो रामतें विमुखन सं-
पति हीन॥२६३॥ अर्थ गत वर्जनीया प्रश्न पूर्वि
का परि संख्या॥ दोहा॥ कहा सेइये पुरुष कौं
सब दिन सज्जन संग॥ कहा धेयये काहल म-
नि व्यापक ब्रह्म असंग॥२६४॥ शब्द गत वर्ज
नीया अप्रश्न पूर्विका परि संख्या॥ दोहा॥ भूष-
न की रति नाहि रतन धन विद्या नहि वित्त॥
लोचन खंजन तिन नैन जुग समभात सज्जन
चित्त॥२६५॥ अर्थ गति वर्जनीया अप्रश्न पू-
र्विका परि संख्या॥ दोहा॥ कुटिल लाई तेरे कुन्तल
बार पग बोलन राज॥ नैननि चंचलता कठिन
ता कुचनि भाल मैं आज॥२६६॥ शब्द गत व-
र्जि नीया प्रश्न पूर्विका श्लेष मूल परि संख्या॥
दोहा॥ कौन नेह बिन दीप सके दीपन सज्जन स-
माज॥ कौन संदेस न वार नहि मंजुल राम के-
राज॥२६७॥ प्रश्न पूर्विका अर्थ गत वर्जनीया
श्लेष मूल परि संख्या॥ दोहा॥ को बिन गुन र-
ति हार बिन जो ती को मुखचंद॥ कौन मंद गति
अवधमैं बात बाल सा नंद॥२६८॥ शब्द गतव-

जे नीया अपुरस पूर्विका श्लेष परि संख्या दोहा॥
तिथ छबार मंगल विना कैसो काहिये सर कोद्
विसमय रस नहि देल वचन जित हरि स्तर
चा होइ॥ २६९॥ अर्थ गत वर्न्न नीया पूर्वि का
श्लेष मूलक परि संख्या॥ दोहा॥ मीन मरीच
मय द्वारिका हरि नगरी अवदात॥ सुनी दिगु
न वर वाहि मे जामे तमकी वात॥ २७०॥ उत
र सुनि जहं प्रश्न को अटका रही ते ज्ञान॥ का
हु मिष्ठा उत्तर कथन प्रथमो तर सज्ञान २७१
वसन काहो कैसे पथिक पति मेरो पर देस॥
लासु अंध वहिरी ननंद वैठे काल्ह वाको लेस
२७२॥ कवित्त॥ सुंदर को मन मोहे जू दूत वैठी
हो वैठी काहो स वजीकी॥ वात कहै सुनि हो
कहि सपति की वतियां सुख दायका तीकी॥ आ
वो दूते मिलि आरसी देखिये हे हम नीके कि
हो तुम नीकी॥ नीकी भई जु जो हो तो कहो हम
कैसे के होहि वरा वर पीकी॥ २७३॥ दोहा॥ सि
खवन पठये तुम जु दूत ऊधो सब गुन धाम॥
निरगुन कुविजा सगतै वो सुत बल सो स्याम
२७४॥ सुका सिद्ध कर संग मिलि ओरो साधक
रे ष॥ होइ अनेक समुच्च या अलं कार यह १

अरथान्तर हैइ॥२७९॥ क्रिया क्रिया जोरा स-
मुच्चय कौ उदाहरन॥ दोहा॥ औध नगर तें
निकरि कीर वन बसि रघुकुल राज॥ स-
त्य पिता कौ बचन अरु कियौ देव गन काज
॥२८०॥ दूजे कारन के मिले कारजु जु इक होइ॥
सो समाधि बरनत बिबुध सरसात इक जान
कोइ॥२८१॥ हरि चाहौ पग परन कौ मान
वती लखि बाम॥ भई तडित घन स्याम में
मिलि विलोकित घन स्याम॥ जहं कहियै परत-
छ सम भावी भूत जुवात॥ अलंकार करता वा
हत सामा विक कहि जात॥२८३॥ दियो हुतौ
जावक जु यों प्रगट देखियै पाइ॥ अंग भूषन दै
सबै भूषित लगै बनाइ॥२८४॥ जा उपाय काहू
करी काहु जु अन्यथा बात॥ ता उपाइ जीते सि-
ये कौं कहौं व्याघात॥२८५॥ ज्यावति है तिय
नैनहि नैन जु ज्यौं यों काम॥ जीतति विषम
विलोकननि वाम लोचनी बाम॥२८६॥ काम का-
म एक अनेक मे एकहु माह अनेक॥ द्वै प्रका-
र परजाय यौं सत कवि करत बिवेक॥२८७॥
सवैया॥ छोडि दई तनु ताजु जिते दाहे ताकौ क-
ह सेवन लागै॥ पाटल चंचल ता जुलजो अ-

पै किये विसे षन भाउ॥ दृगा पृथक्त पद केरि
काहि एका दली बनाउ॥२९५॥ व्याज व्याप स्तु
ति धाम जो रूप बल बहु रूप॥ सहित विलास
विलास जो मनमथ बान स्वरूप॥२९६॥ नभा
ल कहां नहि कंज नाहि कंज जहां नभि संद
नाहि मिलिंद का सवन जो रह नल जिलमानं
द॥२९७॥ जहं समास लम अर्थ को बदलो
वरन्यो होइ॥ चिंतामनि परसन्न वह बरनत
है कवि लोइ॥२९८॥ बांसु दियो तन जोबन हि
जोवन तन कौ जोति॥ उभ कारन उन मन की
रीति परस्पर होति॥२९९॥ कहा कहीं हौं
कौन सौं आई हौं इह काइ॥ सुधि बुधि ह
रि सब हरि लई दीन्ही बिरह बलाइ॥३००॥
जाइ लियो नहि बैन जहं परसै प्रबल बिचा
रि॥ ऐसो कौ अपकार जो धुल्य नीको निरधा
रि॥३०१॥ रूपहु पहचैं तुम हसौ बहु तम र
सौं अक सैन॥ जोतिय चाहति है तुम्हें ताहि देत दु
ख मैंन॥३०२॥ होइ जु कौनो अर्थ ले सूक्षम अर्थ
प्रकास॥ सूक्षम नाम प्रसिद्ध यह अलंकार सु
ख वास॥३०३॥ कवित्त ॥ कहूं किंसुक फूल पा
लनि सो पूजत प्रभु लखे वृष भान की॥ मुसका

वो निषेद्ध्य जु परस्य रहै संसृष्ट विवेक ॥ २१० शब्दालंकार अनुप्रास यमकी एकहि ॥ दोहा शिव गिरि पर गज मुख मुदित गरजत गिरिजा पोर ॥ एक विनायक करत है एक विनायक सोर ॥ २११ ॥ चाप मुकुट पट तडित बग पांति मुकत मनि दाम ॥ कनकलता लखि ऊनयो आइ इते घन स्याम ॥ २१२ ॥ संकर पुनि इनकी दूते अंग गिला बखानि ॥ आपुहि की विश्राम को पावत जे नहि आनि ॥ २१३ ॥ कनकलता इह अति सयोक्ता संबोधन मै ताको उपमाकारि उपस्था पित जो अर्थसो याको उपजीव्य है याते अर्थालंकार को संकर है ॥ दोहा ॥ कहुत भले पात मै जहां अर्थन निश्चित होइ ॥ वो है मै संकर वहो वरनत है सब कोइ ॥ २१४ ॥ कवित्त ॥ होसो तुम्है पहि चानलि हौं वल वातन के वहु पंच वने हो ॥ औरके माल भयो छतियां कुच कुंकुम छाप छपा वन रेहो ॥ वाहू सों ऐसि ही वोलहुगे मनि पीतम जाके घरे जब जैहो ॥ मोहनी मंत्रसे वैननि मोहि को मोहन मोहि कहा वहं केहो ॥ २१५ ॥ * ॥ याभे मोहनी मंत्र तुलित जे वचन हैं तिनकरि मोहि-

जो कारन ताहि है यह कारनते विद्य मान ताहू
वह कारि की ऐसों सलाहते अर्थालंकार कीसृ
ष्टि है या कवित्त की वस्तु सो यामे मोहनी मंत्र
तुल्लित जे बचन हैं तिन कार मोहिवी कारनता
है यह कारन को विद्य मान ताहू वह कारि की
ऐसों सलाहते अर्थालंकार की सृष्टिहै यावः
वित्त की वस्तु सों कवित्त प्रथम ॥तेरे कपोलसे
है। दून लोऊ जु कंचुकी की कारि आरसी वोपे
अंग। प्रभात अनूपम सैन बधूके मदाही गुमानजि
तोपे॥याद सन दुति चंदिका लालची चोहे
चकोर भये दृग तोपे॥वारको तो विधुवंधुमुषी
हसि नेकु बिलोकि बिलासिनि मोपे॥ ३१६॥
दुहांप चाधाति शक्ति प्रथम चरन मे॥वितरेका
दूसरे चरन मे॥ पर नामा तीसरे चरन मे॥ रूपका
चोथे चरन मे या सतहै॥ दोहा॥ एसके दोऊ
जने है नहि कारनु अनंग॥प्रति विंबित आ-
पुहि लषत ए दोऊ दुहु अंग॥ ३१७॥ * ॥ * ॥
श्री राधाकृस्न की एकात्ता साध्य है अरु एकअं
गमे उभयावलोकन हेतु है याते साध्या साध-
न अनुमान है के अनंग करत विचारते अंग-
ते भिन्न करत तातपर्य यह मायाप्रतिविंबित

चैतन्य उभयत्र है आपु आत्मा एकौ है माया स
बको छोडे शुद्ध चैतन्य है आपु आत्मा एको-
है माया सबको छोडे शुद्ध चैतन्य है महाछि
षहै सो उभयत्र एकत्व साधक है ताते अनु-
माना लंकार है अरुया शब्द से औरो अलं-
कार संभवित है अन्यो अन्या दिक याते ए-
क को निश्चय नाही ताते संकर है ॥दोहा॥
कछुन सुपरि मा मृदुलता बिसद बरन जुत फू
ले॥रूपच मेलिहि तवात अलि सब बेलिन
के तूल॥३०८॥*॥इहां विशेषणगत समासो
क्ति है के अप्रस्तुति प्रसंसा है ताको निश्चय ना
ही ताते संकर है ॥दोहा॥अस्फुटि जो एक हि
विषय पर अर्थ लंकार लहै व्यवस्था कोऽनुनि
संकर समुझ विचार क॰मोर किरीट लसै कमला
पद नील व ला हक रंग हरे हैं॥गोपके कंध
धरे भुज दंड अनूप विलास कलानि धरे हैं॥
कान धरे नव मंजरी मंजुल वंजुल कुंजन ते
निकरे हैं॥सुंदर मार हुते सुकुमार सो बैलवि
नंद कुमार करे है॥३०९॥दोहा॥छवि छलका
ति तन सहज की तापर ललित बिलास॥कुंद
न पर संदर लगत ज्यों मनि वृंद प्रकास॥३१०

यहो उपमालंकार को कति अनुप्रास को संकर है ॥ इति श्रीचिंतामनि विरचिते कवि कुल कल्पतरौ नाम अर्थालंकार निरूपनं त्रितीयं प्रकर्णम् ३ ॥ दोहा ॥ शब्द अर्थ रसको जु दूत दीषे परे अपकर्ष ॥ दोषकहत है ताहि को सुने धटतुहै हर्ष ॥ ✻ ॥१॥ स्रुति कटु च्युत जो संस्कृत अर्थ जुक्ति असमर्थ ॥ निहतारथ अनुचित अरथ औ रजु होइ तिरर्थ ॥२॥ और अवाचक त्रिविधि पुनि दूत अस्लील विचारि ॥ संदिग्धो अप्रतीति पुनि ग्राम नेयार्थ निहारि ॥३॥ क्लिष्टो बहुरि बखानिये बिरुद्ध मति नाम जानि ॥ शब्दन के ए दोष हैं सुजन लेहु मन आनि ॥४॥ कानन को जो कटु लगे स्रुति कटु दोष सुजान ॥ संसकार च्युत होइ तो च्युत संसकृत मान ॥ जो नहि प्रोगी सतकबिन कान्ही भाषा जान ॥ मथुरा मंडल के कविये औपरिपक्व बखान ॥५॥ स्रुति कटु को उदाहरन ॥ दोहा ॥ धन्य भयो कृत कृत्य हों सफल भई है द्रष्टि ॥ दरस तिहारो पाइके हिये भई सुख सृष्टि ॥७॥ कान्ही भाषा को उदाहरन ॥ दोहा ॥ कान्ही रुसति सांवरी सो मुहि लागी नीकि ॥ व-

है वसतिहै चित्तमें और नहीं सुधिदेहि॥८॥
मथुरा मंडल ग्वालि घर की रहत बानी कोइ॥
तोन पयोगी सत ।कवित्त अपुष्ट युक्तिहै सोइ॥
९॥ अपुष्ट युक्ति को उदाहरन ॥दोहा॥ जबतें दे-
खी भावती तबतें रहत नचान ॥ भिन्न भिन्न त
नु जारिहै मो कंदर्प कमान॥१०॥ असमर्थ को
उदाहरन ॥दोहा॥ बनमें सोहत कमल अरु
रजत सारस हंस॥ सरमें अति सुंदर लसत
सरद वाल अवतंस॥११॥ द्वै वाचक पद मेन
हां अपद्रत तिहि को बोध॥ सो निहतारथ कह
त है चित्ता मनि मन सोध॥१२॥ निहतारथ
को उदाहरन ॥दोहा॥ लो हूत ललित विला
से है रवाल रूपहै हाथ॥ लात वाहत कामद ग
ति चली सखिन के साथ॥१३॥ अनु चित्त को ल
छन ॥दोहा॥ होइ अनुचित अरथ तहं उचित
न वरनन होइ॥ ताहि अनुचितारथ कहत पंडित
सत कवि कोइ॥१४॥ मानति नाही मै गई हरि
जू वारक आठ॥ बोलति नाही ऐंठ के बैठ रही
है काठ॥१५॥ निरर्थ को लछन ॥ दोहा॥ छंद
पूरन को जु पद होइ निरर्थक सोइ॥ ताको लच्छ
पदन जो वेहें अवाचक होइ॥१६॥ बोलति है

गह कोकिला सोपुनि तहं तू पेष॥ रिसहा प-
हीहै सखी तुही बोल पुनि लेष॥१७॥ अश्ली
को उदाहरन॥ दोहा॥ वि मारग देखति उहा पा-
ह परी हौं आइ॥ तू तवबोसी करहि जो विर-
ह पीड मरिजाइ॥१८॥ संदिग्ध को लक्षन॥
दोहा॥ जहां होतु संदेह है सो संदिग्ध बखानि
॥ग्राह्य हीन मे जो कह्यौ अप्रतीति सो मानि॥
१९॥ संदिग्ध को उदाहरन॥ दोहा॥ कूदत
जाको होतु है ये विरहै मनु लाइ॥ अति सुंद-
र सुंदर बन्यो हरि देख्यो किन आइ॥२०॥ अ-
प्रतीति को उदाहरन॥ दोहा॥ तो चित मे चितु
है सखा तू क्यो बैठी रूठि॥ तै निजु मान कि-
यो मदू ज्यों मर वाट की मूठि॥२१॥ ग्राम्य को
लक्षन॥ दोहा॥ होत गंवारी पद जहां ग्राम्य
काहत हैं ताहि॥ चिंता मनि कवि काहत है सुक-
वि तजत हैं वाहि॥२२॥ ग्राम्य को उदाहरन॥
दोहा॥ चुची जभीरी सी बनी गोल लाल है गा-
ल॥ जाके नैन विशाल वह गरे लगो दव बाल॥
२३॥ नेयार्थ को लक्षन॥ जहां निषिद्धि की ल-
क्षना सो नेया र्थ बखानि॥ चंदहि हनत चपेट
सो तेरो मुख मृदु बानि॥२४॥ क्लिष्ट को उदाहरन

जाको अर्थ कहे बिना जान्योई नहि जाइ ॥ कोवे लेस ते जानिये सोहै क्लिष्ट बनाइ ॥ २५ ॥ द्रव्य नाम दग हीन पद आसन रिपु पर भास ॥ फूल खवान ताको सुहद लीन्यो द्रुखद तासु ॥ २६ ॥ विरुद्ध मत क्रत को लक्षन ॥ दोहा ॥ सो विरुद्ध मत क्रत जहां जान्यो जाइ विरुद्ध ॥ ऐसो कवि जन कीजिये हे यह निपट अशुद्ध ॥ २७ ॥ विरुद्ध मति क्रत को उदाहरन ॥ दोहा ॥ वडे प्रवीन सुबुद्धि हैं सदा अकारथ मित्र ॥ कहा और संसार में ऐसो विमल चरित्र ॥ २८ ॥ अब वाक्य दोष गनाता लिखेंदैं ॥ दोहा ॥ प्रति कूला क्षर होतहे अरु हत व्रत्ति बखानि ॥ ऊन अधिक पद कथित पद प्रतत प्रकर्षा मान ॥ २९ ॥ पुनि समाप्त पुनि रात कहि चरनां तर पद होइ ॥ पुनि अभवन्मत जोग कहि अकथित वाच्यो कोइ ॥ ३० ॥ पुनि कहि अस्थल स्थपद संकीनों निहारि ॥ गर्भित और प्रसिद्ध हत भंगा क्रम निरधारि ॥ ३१ ॥ अक्रम अमत अपार थे वाक्य दोष ए मानि ॥ कवि चिंता मनि कहत हे सज्जन के मन आनि ॥ ३२ ॥ प्रति कूला क्षर को लक्षन ॥ दोहा ॥ अक्षर रस अनुकूल नहि प्र-

लि कूलाहर सोइ॥ बाहल विबुध हत वृत्ति सो
कहै संगहि जोइ॥ ८३॥ अद्भुत वद विपद कु
च छुटिहुहिय मार॥ संपत छुटिय लुटि सुख
छुटिय परिय बार॥ ८४॥ हत वृत्त:॥ दोहा॥
रूप काम अभिराम तन अमल कमल दल नै-
न॥ चलो जात हो का गली देख हंसत सखि सै-
न॥ ८५॥ जो कछु कारज छंद मैं भलो जो आमु
होइ॥ सो जानो मति कूल है योहुं बाहत व-
खु कोइ॥ ८६॥ चौपाई॥ धरनी धरि पातालहि
पैठी॥ धरि कुंदकी महलन बैठी॥ सेस नाग फ
न सहस नवायो॥ साजि सैन जब भूपति धा
यो॥ दोहा॥ सब लच्छन कर सहित सुलतन
नीको होइ॥ यही बाहत हत हैं जे सज्जन
कवि लोइ॥ ८८॥ कामीन लागत चंद है जाकी
कांति कमीन॥ ऐसो सुंदर कहत है बचन स-
मान अमीन॥ ८९॥ न्यूनपदको लक्षन॥ *
दोहा॥ जहां बरन को करत है न्यूना धिक प-
द होइ॥ तिन्हें सजि कविकहत है न्यूना धि
क पद सोइ॥ ९०॥ बाकी अद्भुत रीति है कोऊ
काहू सो जानि॥ है सब बपु लखि लख्यो परत
जहीं तहीं है आनि॥ ९१॥ कलिका लता दामिनि

किधौं आपुहि चंपा दाम॥एक लखी वह कामि
नी हरी मन मथ काम॥५२॥कथित पद॥*
दोहा॥जो पद दीन्हे है प्रथम वहै बहुरि है जाइ
तात कथित पद है तहां कविजन सुनहु बनाइ
५३॥कोमल मुख वह कमल सों निरखि नैन वि
त हास॥गोरी कोमल देह है सोहत ललित र
विलास॥५४॥पतितप्रकर्षन लछन॥दोहा॥
जौ आखर अरंभिये तैसे जो निबहै न॥चिंता
मनि कवि कहत है पतत कर्ष सो ऐन॥५५
चाम चूनरी चपल चष चौका चमकन चार
चतुर चंद बदनी चली गरे पहिरि कै हार॥५६
समाप्त पुनरात्ति॥दोहा॥जहं वाक्यार्थ समाप्त कै
है बहुरि विसेष देइ॥सो समाप्त पुनरात्ति है
जानि सुजान लेइ॥५७॥बडे बार लोइन बडे
छीनो दरि बर नारि॥दक्षिण दिसि मे साँवरी
वह सोहति सुकुमारि॥५८॥जहं जो उत्तर अर्ध
पद पूरब अन्वित होइ॥अर्थांतर गत पद सुयों
दूषित भाषा कोइ॥५९॥जामैं अन्वय बनत
नहिं सो अभव मत जोग॥चिंता मनि कवि
कहत यों सुकविन करै प्रयोग॥६०॥वे मन
मोहन रहते रची सकल सो माहि॥जो वह

जोरी सखि मिलि वैन नैन सिय राहि॥५३॥*
अनुक्त वाच्यनीय॥दोहा॥जो अवश्य कथनी-
य सो कहो जहां नहिं होइ॥ इत अनुक्त वा-
च्यनीय यह दोष कहत है कोइ॥५३॥ जो पा-
ई नहिं मैं निका पाई काम बधून॥ सो बहला-
ल लद्द निरखि तकत लषत मदून॥५४॥ ज-
हां होइ संकीर्ण पद सो संकीर्ण बखानि॥
एक वाक्य मे और जहं सो गर्भित पहिचा-
नि॥५५॥ पीजै पान नवाइ पै पानी बोलि
पानि॥ पिय हिय ठाऊं रावरे सुखहि मिला-
ऊं आनि॥५६॥ गर्भित॥दोहा॥ औरन के अ-
पकार ते खलसों काहू मिलाय॥ तुम्हहि सि-
लाऊं काहु जनि किये परम संताप॥५७॥
जो पद जा थल चाहिये सो नहिं ता थल होइ
दूषन अस्थान स्थ पद कहत सुकवि जन
कोइ॥५८॥ तू कल लखत मदून यह नकार
अस्थानस्थ पद॥ दो॰ ज्यों पद अस्थानस्थ पद
यों ही अर्थ समास॥ लोल भ्रुकुटी उर्मि मै
कालिन्दी उर्मि प्रकास॥५९॥ मेरे आगम मा-
न्यो काहि यत पिक श्रुति वंत॥ अलि इंदि-
न हिंडोल कलित आयो अली बसंत॥६०॥

प्रसिद्ध हत बोलः॥ दोहा॥ श्रुति रस आदि प्रसि
द्ध जहं तहां दीजिये सोइ॥ और भांति जो दीजि
ये तो प्रसिद्ध हत होइ॥ ६१॥ वा मृग नैनी को
सुनत नूपुर को निक्वान॥ पंच बान अभि
मान सों ताने बान कमान॥ ६२॥ पूर्व मनु वा
देन प्रकृत मानो द्यः प्रक्रम दमन विखिलः॥
प्रक्रम भंग प्रति निर्देश्य॥ छंद॥ ॥ उद्देश्य प्रति
निर्देस थल मै प्रथमही जो दीजिये॥ पुनि ता
व है कहिवे परे तो वहे ता थल लीजिये॥
जो कथित पद की भांति ते पर्जाय पद तिन
कीजिये॥ तो होइ प्रक्रम भंग दोषसु सत्य जा
न पती जिये॥ ६३॥ अकन उदित रवि होत है
अहते अथवत आइ॥ संपति विपति बडेन
को एके क्रम लखि जाइ॥ ६४॥ अतनु दैव बि
करत है लाले अथवत आइ॥ ऐसो जो कहि
ये तु तो प्रक्रम भंगहि जाइ॥ ६५॥ जिन विरंचि
जगती रची तिन न रची तू बाम॥ और लटक
औरै ध्वनि औरै दुति अभि राम॥ ६६॥ ✻
और लटक आनै ध्वनि ऐसोन कहिये सोइ
नमत दूसरो अर्थ जहं अमत परा रथ होइ
चिंता मनि कवि कवित है रचैन सत जाथको

नु संधान नाहि अंगाहि की बहु जुक्ति॥८५
शृंगारीनि की पुनि विपर्जय अनुमित
बर नन जानि॥ चिंता मानि कवि कहत है
ए रस दोस बखानि॥८६॥ प्रथम कथित सं-
चारी अस्थाई रस॥ दोहा॥ संका दुर जन
के हिये वाके हिये उछाह॥ अरिन सा-
हत वीर रस अनुरागी नरनाह॥८७॥*
विभाव की क्लेसते व्यक्ति॥ काकी मद सु-
धि बुधि गई वाहिन कहुं बिश्राम॥ निसि
बासर रोवति रहति कछून भावे काम ८८
प्रतिकूलोक्ति॥ दोहा॥*॥ प्यारी हंसि के
बात कहि डारि गरे में बाहि॥ रोस छोड म-
ति मान करि जोवन घन की छाहि॥८९
अतिश्योक्ति॥ दोहा॥ भली भई बहु ते अ-
ली लागी धरमे आगि॥ मेरे कर की गागरि
लीन्ही साजन मांगि॥९०॥ मुख्या नन सं-
धान॥ दोहा॥ मै चौपर खेलन लगी निसा
समै मे आजु॥ बैठी सखी समाज मे भूलि
गए ब्रजराज॥९१॥ अंगको बिस्तार॥ दोहा
कालिंदी सुंदर नदी सुंद र पुलिन सरूप॥
वृंदावन घन छांह तकि कुंजनि रूप अनू-

प॥८२॥ प्रसिद्धि विपर्ययः॥ दोहा॥ लिंद्य
त नैन सहस्र सौं सुंदरता सखि देख॥ रंभा
की मघवा दुखित लागत होत निमेष ८३
अनु चित वर्नन॥ दोहा॥ विरहिनि नैनलिखे
सूक्ष्मि काजर लेखे नवीन॥ दिन देखे पियको
रहे मनौ स्याम मुख कीन॥ कहूं कर्न अवतंस
हूत थादि पदन को दान॥ सं निधान कृत्या हि-
के बोध हेत सज्ञान॥८५॥ जहां हेत पर सिद्ध
है तहं नहि तन दोष॥ तव अदुष्ट अनुवाद
न मै हूते नहीं अतोष॥८६॥ चिंता मनि
गोपाल की वर्नन कीं बनाइ॥ जिन हियाओ
चिंत्यते दोषो गुन है जाइ॥८७॥ इति श्री
चिंता मनि विरचिते कवि कुल कल्प तरौ
दोष निरूपणं नाम चतुर्थं प्रकर्णं॥ * ॥४
दोहा॥ पद वाचक अरु लाक्षणिक व्यंजक
त्रिविध बखान॥ वाच्य लक्ष्य अरु व्यंग्य पुनि
अर्थो तीनि प्रमान॥१॥ बिन अंतर जा शब्द
कर जाको होत बखान॥ सो वाचक पद होत
है कहत सुकवि परमान॥२॥ लक्षणा ताको
कहत जो होत लक्षणा जुक्त॥ चिंतामनि क
वि कहत है यह प्रमान है उक्त॥३॥ मुख्यार-

थके बाध अरु जोग लहना होइ ॥ होत प्र-
योजन पाइकै काहू रुढि हित सोइ ॥ ४ ॥ गंगा
घोषक है तहां होत तीर को बोध ॥ सीतल ता
दपवित्र ता तहां प्रयोजन सोध ॥ ५ ॥ तहां वि-
जना वृत्ति वह होत लक्षना मूल ॥ कहां प्रयो-
जन जानिये कहत ग्रन्थ अनुकूल ॥ ६ ॥ *
जहं अभिधा अरु लक्षणा अति कछु भि-
न्न प्रकार ॥ होइ अर्थ को बोधतहं कहिये व्यं-
जक व्यापार ॥ ७ ॥ शब्द अनेको एकहनि अ-
ति कछु भिन्न प्रकार ॥ होइ संयोगादिक
गनन इत अवाच्य कौसार ॥ ८ ॥ तहां व्यंज
ना वृत्ति इत यह्ने मं मट तत्व है ॥ चिंतामनि नि
ज ग्रन्थमें कवि इत बरनत आनि ॥ ९ ॥ संयोगा
दिक जोगनो प्रथम एकासें जोग ॥ चिंता मनि का
वि कहत इत बरनो बहुरि विजोग ॥ १० ॥ अरु ।
अकारन चिन्ह पुनि ॥ दोहा ॥ * ॥ आनस हचारि
चिन्ह पुनि आन शब्द हल संग ॥ सामर्थौ औ-
चित्य औ देसकाल पर संग ॥ ११ ॥ और आभरन
आदि ते शक्ति नियम चित रीति ॥ एका
अर्थ में औरकी व्यंजन ते पर तीति ॥ १२ ॥
शंख चक्र जुत हरि कहो शंख चक्र करि आनि

खजके नीकी लगी लगन सखी की रस वतियां
चिंता मनि पल पल पर प्यार चढ़ौ उपज्यौ
वियोग व्यापी विथा दिन रतियां ॥ मोह ही-
ते जहां तहां पियको देषन लागी दुखि खे-
लि वेलि तहां लखौ हे सब तियां ॥ याही
समै आये वेई मांचे आपु आपुही ते नवल
लपटु लागी लालन की छतियां ॥ २२ ॥ अ-
र्थ अनेकार्थ पद व्यंग ॥ दोहा ॥ साखी हे सखि
यां लखै अवहो भई अचेत ॥ मै मनु दीन्हो आ
पनो दै दूत पाउ नदेत ॥ २३ ॥ अर्थ व्यंजक ॥
वर्तिध्य मान सुरति गोपना ॥ कवित्त ॥ ग्रीष
म मै वापी कूप सर वर सूखे सव जल नदी
भिरनाते आवतु नगरमै ॥ जहां जात आवत
लगत कांट मारग के होत जैहो हौंही पानी
पीवति हों घरमै ॥ अति दूर हीते भरी गागरि
लै आवति हौं छूटत पसीना कांपै अंग थर थर
सै ॥ कहति हों पुनि सासु ननद कौन मोपै
जाउंगी तो आऊंगी भरि दुप हरमै ॥ २४ ॥ इति
श्री चिंता मनि विरचिते कवि कुलकल्पतरौ
शब्दार्थ निरूपणं नाम पंचमं प्रकरणं ५
दोहा ॥ उत्तम मध्यम अधम ए त्रिविध कवि-

वि पंडित राख्यौ ॥७॥ व्यञ्जना की ध्वनि जहं
वाच्य अर्थमें होइ ॥ सो अविवक्षितवाच्य है
कहत सकल कवि लोइ ॥८॥ अत्यंततिरस्कृ-
त वाच्य अर्थ संक्रमित वाच्य द्विविध मू-
ल ध्वनि बरनते अविवक्षित वाच्य ॥ अत्यं-
त तिरस्कृत वाच्य को उदाहरन ॥ दोहा ॥
कमलन को पुनि दिन कही किये बहुत उप-
कार ॥ ऐसो काम करो सदा जीवो वर्ष हजा-
र ॥९॥ अर्थान्तर संक्रमित वाच्य ॥ दोहा ॥ तो-
सो यह हम कहत हैं सकल संपति मति जा-
हि ॥ कीजै काम विचारि कै भलो आपनो
चाहि ॥१०॥ वाच्य अर्थ सुविवक्षित वाच्य
द्विविध यहि जानि ॥ लक्ष्य अलक्ष्य क्रमानि
सों व्यंग्य सुमन मैं आनि ॥११॥ प्रति शब्द
श्रुत लक्ष्य क्रम व्यंग्य सुद्विविध बखानि ॥
शब्द अर्थ जुग शक्ति भव त्रिविध ध्वनि भेद
सुजानि ॥१२॥ शब्द शक्ति उद्भव व्यंग ॥
दोहा ॥ अलंकार की वस्तु जहं व्यंग्य शब्द-
ते होइ ॥ शब्द शक्ति उद्भव सु वह बरनत
है कवि लोइ ॥१३॥ शब्द शक्ति मूल व्यंज
ना कार को उदाहरन ॥ दोहा ॥ मधु मोहित

अलि मंजरी मंजु मौलि छवि जाल॥ पद्म
राग पल्लव ललित रज तल अरु माल १५
इहां नायका अरु आभूषनौ उपमा नोपमे
यते उपमा लंकार व्यंग्य है॥ शब्द शक्ति मू
ल व्यंग्य वस्तु को उदाहरन॥ दोहा॥ चौपर
खेलत है कहा जुगहु जीति सुभाय॥ ला
ल जात हैं हाथ ते अरी चुकै यह दाव १६।
इहां शब्द शक्ति सों नायका अनुनयो कि
है है जो लाल चलि यह व्यंग्य॥ दोहा॥ भेउ
पद गत वाक्य गत जो गनि चारि प्रकार॥
अर्थ सक्ति भव भेद के कारत विबुध विस्ता
र॥ १७॥ अर्थ शक्ति उद्भव ध्वनि भेद॥ ॥
दोहा॥ स्वतस्संभवी सुकवि को प्रौढ उक्ति
पर सिद्धि॥ कविनि बद्ध वक्ता कुकी प्रौढ उ
क्ति पर सिद्धि॥ १८॥ त्रिविधि अर्थ व्यंजक बा
छ विधि वस्तु असं त्रिम रूप॥ त्यों ही व्यं
ग्य छ भेद सों द्वादस भेद अनूप॥ १९॥ मेरी
बातनि आजु उन हियो कान छवि खानि।
सुनत तिहारो नाम के मुसकानी सुखदानि
२०॥ इहां नाम श्रवण नंतर मुसक्यानि रूप व
स्तु कारि तुम्हे वह चहति है मिलैगी यह वस्तु॥

ली नारि ॥ २३ ॥ इहां स्वभाव उक्ति करि मोपर स-
कामहै इह वस्तु ध्वनित होतिहै ॥ स्वनःसंभवी अ-
लंकार करि अलंकार को उदाहरन ॥ दो ॥ कोवरजै उनहुं
इनको कौन थरावै धीर ॥ दोऊ प्यासे जेठके
दोऊ सीरे नीर ॥ २४ ॥ इहां नायका अरु नाय
क को अरु जेठ मास पिपासित अरु जेठ
मास को सीतल जल इन सौम्य भेदन रूप
नि रूप अलंकार करि दोऊ परस पर निर
वधि प्रेम पात्रहैं ताते समालंकार ध्वनित होत
है ॥ कवित्त ॥ कर वास गिरि कोमल कमल
करते उतारि धरि लाल मेरो मनु अकुलात
है जीवैगो सो जीवै जो मरैगो वहु मरै मोसो
कैसे निरज बालक कौ क्लेस देख्यौ जातहै
मेरी कही करानतो निकसि मारोगी कहि-
चली जहां वारिका सिलान कौ निपातहै ॥
जहां कढे गोपी गोप गन संग नंद रानी तहां
रहकी वकौ अचल अधि कातहै ॥ २५ ॥ *
कवित्त ॥ दोऊ जन दुहूकौ अनूप रूप निर
खत पावत कहूं छवि सागर को छोरहैं ॥ चिं
तामनि केलि के कलानि के विलासनि सोंदे
ऊ जने दोहुन के चितन के चोरहैं ॥ दोऊ ज-

ते मंद मुसक्याति सुधा प्रकासत होऊ जानैध
को मोद मद छुहू कोरहैं ॥ सीता जूको नैनराम
चंद्रको चकोर राम चंद्र नैन सीता मुखचंद्र
के चकोर हैं ॥ २६ ॥ राम चंद्र के नैन चकोर (
सीता को मुख चंद्र राम चंद्र मुख सीता के नै
न चकोर यह पर रूप वारि होऊ सम प्रेम
पुनाहीं ताते समा कार यंथ है ॥ इहां कवि प्रो
ढ़ोक्ति कारि अनल की अधिकाई बोको
को बरनन सो भी हास्य की ब्यागि सब रस
मयी है यह अर्थ सोतितलहै ॥ कवित्त ॥ पजिस
रकानि महा मधुर न्यारथों न्यारिविलिन रिलल
सकानि अनु लाइहै ॥ चिंता मनि कहै अति
परम ललित रूप अथा पर दूलह छिलो वान
को आईहै पैली सहलनि मनि मेखलामान
के महा मनि नूपुर नकी तिना तनकी अगाईहै
पहिले उज्यारी तन भूषन सबभूषनकी पाछ
ते मयंक मुखी मोहन आईहै ॥ २७ ॥ इहां
चंद्र मद प्रदीपा दिखाजो लाइयातें जस पाल
के तिनको आगमनते पहिले ही जैसे दीप्ति
होतिहै तैसे उनके मुखादि अंगन की अभर
नन की दीप्ति होतिहै पहिले उज्यारी तन

दांति भले चंड कर मंडलते चंड कर माल सी॥
२८॥ इहां कवि प्रौढोक्ति उपमा लंकारके भले
कालिका सूर्य्य मंडल सोते निकारि किरनि
मंडल जैसे जगति को संहार करत है ऐसे
मंडलित श्रीरामके धनुषते सर इंदनिकारि
करि कर सिंधुकी सेना को भले कीन्हो यह
वस्तु द्योतित होतिहै कविनिबद्ध वक्ता प्रौढो
क्ति सिद्ध वस्तुकरि॥ वस्तु व्यंग्य धुनिको उदा
हरन॥ दोहा॥ मै समुझो यह आजुही है अनं
त बलवंत॥ जो सुत मारो इंद्र जित जिति व-
ल भरन अनंत॥ ३०॥ अनंत बलवंत है यह
कथन रूप वस्तु करि रावन के अंत काहू को
भय नाहीं यह वस्तु द्योतित होतिहै॥ कविनि
बद्ध प्रौढोक्ति सिद्ध वस्तुकरि॥ अलंकार व्यंग
ध्वनिको उदाहरन॥ कवित्त॥ जबते आयुन र
ह्याये जानुकी लंका बीच भयेताही दिनते भ
यंकार निमित्तहैं॥ परी सेना समुद के तटमे अ
संख्य कपि रिझनके वाटका वदत उत्त नित-
हैं॥ जौलों राम लखन तेरे तेज बानन सों
भये लंकापुरी केभ भट भिन्न भिन्नहैं॥
तौलों रघुनाथ ढिग जानुकी पठाइ दीजे ऐसे

मेरे उत्तम विचार होत चित्तहे॥७१॥इहां का-
वि पोद्दे।ता सिद्ध जो अलंकार अरु प्रेमसोलाको
चाहिबो सो तुम्हारे बिनमत्रको उपस्थित भ-
येहे जो मीला राधको निकट पराई हेउतो वं
थाको विनाश नहोइ॥कवित्त॥वारिवेकेलिवेको इ-
जनवोले हस धर प्रलय वारिद पराय प्रक्षताहि
सब भाइहो॥चिंतामनि आरती के बरगिर
बराथि गोपी गोप गोधन को गनको बचाइ
हे॥ ※ ॥दूरके गुमान बरषा कोमहामेघ
न को पालो महा मघवा को रोदन कराइहो
वाही के हजार रुका लोचन के आसुन सों सु
हर सुंदर के मंदिर बहाइहो॥७२॥इहां पर-
म पर कार्यकारि वासो अन्यो न्यालंकार का-
हाये कार्य यह सनी होइके॥असत होइ इ
इ असत कार्ज कीन्हो इनके प्रान को विना
सवारिवो प्रलैकालीन मेघन को वरषाको गु-
मान जैसे दूरि होइ ऐसो इंद्रके सहस्र नेत्र
नके आसू बरसाइ को मंदिर दहाइता वात
को वदलो हो काविनि वह बना ओढोतो १
सिद्ध अन्योन्या लंकार करि आपनो परिपू
रो पर्व अस हन को समा धान यह लिखि

वस्तु अभिव्यक्त होतिहै॥३३॥कवि निबद्ध
वक्ता प्रौढोक्ति सिद्ध अलंकार ध्वनि कौउ
दाहरन॥कवित्त॥अमल अमोल मुकता
हल कौ हार तैसोहै लखि अमोल मुक्ता हल
के हारसी॥चिंता मनि चारु चीरखुल्यो छी
र फेन सम सरद जुन्हैया सुख सुखमा के
सारसी॥जागत हमारी परतीतिहै हमारी ग्रा
री राधा रिझवारि सारदा की अवतारसी॥
धवल पुलिन मध्य जमुना की धार ध-
सी दुरद रदन पर जनु आरसी॥३४॥इ
हां मान पर बैन श्री कृस्न कौ देखि प्रनय को
प कारि अप्रसन्न हृदय श्री राधा कौ सनु-
खि श्रीकृस्न उनको मन उदास कौ स्तुति
कीन्हीं सरस्वती अवतार को साम्यहै सा-
भिप्राय विशेषन याहे की प्यारी हमारी रा
धा रिझवारि रीझिहै ए बातें सुनि रीझि
वे की उन मुख भई सोई उन जुगि काही
धवल पुलिन पर जमुना की धार धसी
दुरद रदन अरपर मानो आरसी॥यह उत्प्रे
क्षा लंकार कह्यो प्रसाद की और हेतु कह्यो
तातै समाधि लंकार कार्य कारनं तर जो बात

यह समाधको लछनहै ताते। श्री राधाजू प्र
सन्न भई अधर सुधा रसुधा प्रसाद दीन्हो
ताते अलंकार व्यंग्यहै॥ यह स्वतः संभवी
को उदाहरन मै जानिबो॥ दूसरो कवित्त॥ उम
डि घुमडि घन अंबर अडंबर लोंवाहू लग भले
घन घटा घोर घिरिहै॥ चिंतामनि वोहू चि
त चिंता जिनि करौ कोऊ कहालौं दिखा
रो योंविचारो दुंदु चिरिहै॥ एकाकी वाहूहै
कोटि धरा धर धरे रहो जोलौंकोटि विधि-
की उपज फिरि फिरिहै॥ जानो जानि बडे ९
पर मान भारी गिरिहै सोमेरे कारपर परमान है
न गिरिहै॥ ३४॥ इहां परत द्रव्य पर मान ९
करि दिखायो यह विरोधालंकार करिनंद
पुत्र जे आपु तिन कहा अघटन घटना प
टी यत्व साधारन धर्म करि आपनो गार्मी
का नारायणसाम्य व्यक्ति करतभये है॥ दोह
अर्थ शक्ति उदभव अरथ बारह भेद विचा-
र॥ सोपद वाक्य प्रबंध गत छौलि सभी ति-
नि हारि॥ ३५॥ सिद्ध कहत सब सकल फल
देत तुरंत ज्योंनाम॥ व्यापक अस गुन भूप
जसु धवल कियो श्रीराम॥ ३६॥ इहां व्याप

हेली॥ तैसे फूल रचीकिलमाल गुहे मनि मे
रिये कंठमे मेली॥ माल देहै मुंदई पुलकी किलकी
यह हाम विलास की केली॥ मोहि पठाइ दि
केली विते वह पूरन इंदु मुखी अलबेली॥
४९॥ सवैया॥ बेलसे चाह उरोजन केलीकरे
री काहू जाकी लगी रतिचेटी॥ मीत अशोक
बिलोकी कहूं जिनहै जग रूपकी रासि लपे
टी॥ पीत दुकूल लसे पट भूषनश्री मिथिला
महि पालकी बेटी॥ सुंदर रूप धरे जनु दामि
नि राजत दामिनि दाम लपेटी॥ ५०॥ तैं सुना
देखी कहूं मृग लोचनी बोलि विते अब जा
इ छपीहे॥ छाडि छबीली घने पीर दारुन
छाती बिछोह के ताप तपीहे॥ तैं नहिं जान
त तेरे छुटे पलु तेरी जीवन मोह तपीहे॥ बो
लिते हरिके याको गुमान जो कोकिल कुंजन
मे जल पीहे॥ ५१॥ ऐसे सबै बनके द्रुम जं-
गन पूछत जानकी जीको पुकारे॥ व्याकु
लह्वै मुरझाइ गिरे उछले मनि नेनन नीर
की धारे॥ दुःख महो दधिकी लहरें जनु मूर
छा आवति जाति अपारे॥ लछमन वे उपचा
र जो भूव भाई को दीनन हारि सम्हारे॥ ५२॥

मेरी भई यह भांति दसा कृत रैन छपी जोन्ह
जौ नहिं आई॥ राम जू ऐसे कह्यौ कवलोच
न सीताजू ऐसी करी निठुराई॥ बाघन बीच
मृगीसी भई सु कहा मृगलोचनी आपदा
पाई॥ मैं जिनको अपराध कियो तिनरा
कस इंदन घेरि कै खाई॥ ४३॥ इहां दूसरेच
रनते अंत को कवित्त छोडौ प्रबंध कोउ
न मांह व्यंग्य है॥ उभय समुद्भव को उदाहर
न॥ दोहा॥ लसै हारके मध्य रवि सोभोथ
रे बिसाल॥ हियेसारिवेको योग्य है यह मनि
नायक लाल॥ ४४॥ इहां वाच्य अरु व्यंग्य
अर्थ के उपमानो पमेय॥ भावते उपमा
लंकार व्यंग्य है सलक्ष्य भेदयों कहे एकचा
लीस॥ दोहा॥ असंलक्ष्य क्रम व्यंग्य ध्वनि
आनि रसादिक चित्त॥ दूतै आदि पदलक्ष्य
के तिन्है गनावत मित्त॥ ४५॥ प्रथम कहि रस पु
नि भाव गनि तिनको पुनि आभास॥ भावसां
ति अरु भाव को उदै बखानि प्रकास॥ ४६॥ भा
वसंधि पुनि सबलताभावन की मन आनि॥
असंलक्ष्य क्रम व्यंग्य ध्वनि तिनके भेद बखा
नि॥ ४७॥ अथांतर रस स्वरूप निरूपनं॥ *

गनि विभाव अनु भाव अरु संचारी नमिला
इ॥ जित थाई है भावसो रोरस रूप गनाइ॥
४८॥ काहुक यथा काम अधिका यह तीन
हु को काम कोइ॥ व्यंजन कौन लख्यौ परै
तौ अलख काम होइ॥४८॥ भावलक्षन॥
दोहा॥ मन विकार कहि भावसों बरनवास
नारूप॥ विविध ग्रंथ करता कहत ताको रू
प अनूप॥५०॥ जो नहि जाति विजाति सों
होइ तिरस्कृत रूप॥ जब लगि रस तब ल
ग सुथिर थाई भाव अनूप॥५१॥ काव्यो-
दित रामादि सुख दुखा थन भव जात॥ मन
विकार संचारि तजि यह थाई थिर वात॥
पावे ल्यावे आपने रूपहि और अखेद॥ जो
विरुद्ध हू भाव नहि रहि विक्षेपका भेद॥ ॥
५४॥ सो थाई है समुद सो जब लगि रस आ
स्वाद॥ तब लगि यह वह रहत है जो थाई अ
विवाद॥५५॥ प्रथमहि रति अरु हास पु-
नि बहुरि सोक गन क्रोध॥ पुनि उत्साह
जुगुप्स पुनि विस्मय सम उर बोध॥५६॥
यह थाई नव भेद जो ताको जुहे निदान॥
कारज सहकारी जगत कवि तामे कहि आन

५७॥सनि विभाव अनु भाव पुनि संचारीय
हु लाय॥ विभाव नादि अवलोकि कै व्यापा
रन अभि राम ॥५८॥ जिन जिहुके अवलो-
कि कै करि व्यापार गनाइ॥ विभावना अनु
भावना संचार ना बनाइ॥५९॥ सब जन सा
धारन त्रिविध व्यापारन सो तीन॥ सहृद
य हियथिर भावको व्यंजन धरम नवीन॥
६०॥ साधारन व्यापार बल सब साधारन हो-
इ॥ नियत प्रमातहि मै यदपि नहीं अपरमि
त होइ॥६१॥ महा नंद उल्लास बहु सुहाती
सेवत जोइ॥ अस्वाद सुखदजु ग्रंथमै रस
नि रूपना सोइ॥६२॥ रत्या दिक वे हेतु जे का
ज औरु सहचारि॥ जगमै तेई लखत मै आ-
ज नाम निरधारि॥६३॥ विभाव नादि को
लौकिक व्यापारनि सुमिला ले विभाव अनुभाव अरु
संचारी धरि चित्त॥६४॥ साधारन व्यापार
सों सो साधारन जानि॥ ले विभाव अनुभा
व अरु पुनि संचारि बखानि॥६५॥ थाईसा
मायहु कहिय असल वासना रूप॥ अरु जो बि-
भावादिकनि मिलि रसहै लसत अनूप ॥६६॥
प्रथम चाहत शृंगार के विभा वादि इत आ-

नि ॥ आगे सिगरे लखन को कीन्हों लिखिबे जा-
नि॥६७॥थाइ हेतु जग मध्य जो कथित म-
ध्य सुचि भाव ॥ आलंबन उद्दीप वो द्विवि-
ध प्रसिद्ध गनाव ॥ ६८ ॥ नायका ल० ॥ दोहा ॥
आलंबन शृंगार को तिय नायका बखानि
बालनि प्रवीन छिला सिनी सुंदर ताकी खा
नि ॥ ६९ ॥ कवित्त ॥ बरन मैं विधि आनि गो-
रीकी जवानी जादि गोरे गात दोरी सारी के-
सरि के रंग की ॥ चिंतामनि कहै चारु चंद्रिका
सी हासी लसै निसि नखतावली मुकात पां-
ति मंग की ॥ मानो प्रेम बुंदलाल बिंब पर वि-
ल सतु अधर की आभा मुकता छल के सं-
ग की ॥ पग पग रंग आन अन्तपन्थ
अंगन मै ठाढ़ी मानो अंगना अनंग की ७०
दोहा ॥ दिव्य अदिव्य कहै सुकवि दिव्या दि-
व्य विचारि ॥ त्रिविध नायका जगत मै मं-
थन बहु निहारि ॥ ७१ ॥ दिव्य देव तिय जानि-
ये नारि अदिव्य बखानि ॥ अमर नारि भुव
अवतरी दिव्या दिव्य सुजानि ॥ ७२ ॥ नरखते
दिव्य तिया बरन सिखते विबुध अदिव्य ॥
नरखते सिखते बनिये जो तिय दिव्या दिव्य ७३

ह्वांनख सिख वर्नन जानवो ॥ दोहा ॥ प्रथम २ सुकीया नायका पुनि परकीया जानि ॥ पुनि सामान्या समुझिये यों कवि लसत बखानि ॥ ७४ ॥ स्वकीया लछन ॥ दोहा ॥ जो अनन्नेही पुरुषमें प्रीत वंत निरधारि ॥ काहत स्वकीया नायका लछन सुकवि बिचारि ॥ ७५ ॥ सील सुधाई लाज जुत गुरुजन सुकवि विचारि ॥ प्रीतम को चित हरिसो काही स्वकीया नारि ७६ कवित्त ॥ चिंता तनि सखी कोऊ सीख देति काहेजव समता के जानिहे पीतम सो जायसे जीवको वारने काहि वरज्यो चहे लजाइ काहि पैन सखी काछू सह न्चरी तियासौं ॥ गुरुजन २ संमत सकल आचरन वाको वरनत होत २ लाह चाहिए सौं ॥ पीउ जाने गुरुजन हूमें नवाल जाने गुरुजन जाने काहा वोलि जाने पियसौं ॥ स्वीया भेद ॥ दोहा ॥ मुग्धा मध्या प्रगलभा तीन भेद निरधारि ॥ सुभग स्वकीया नारिके लाल कवि ग्रंथ विचारि ॥ ७७ ॥ जाके जोवन अंकुरित सो मुग्धा वर नारि ॥ दुहू वहि क्रम संधिमै नव वय संधि निहारि ॥ ७८ ॥ उवन चहत जोवन लखी सुंदरि वाला निकेत ॥ मंद मधु

र लुहकनिमुख कियो कन्हैया खेत ॥७९॥ क-
वित्त ॥ राधाजू के अंग संग लखि त्यौं रवि
र बाहु गुलाबन को रंग लखि तौर भांति सौं
भिरी ॥ चितहि चुरावति चलो किल वीवा
नी लगी कानन चितौनि प्रेम सदको मतौ
मिरी ॥ चित मनि सोही है रसाल मोरेकुं
जनि ते अलिन के पुंजन लुभाने सुनि आ
चिरी ॥ बालन के बीच लरिकाई आइ सिसि
रसै माघ सुदी पंचमी मे ज्यो बसंत की सि
री ॥८०॥ दोहा ॥ मुग्धा अंकुर सित जोबना
अविदित कामा पेखि ॥ विदित मनो मद जोबना
कहु रस वेदा लेखि ॥८१॥ पुनि विश्रब्ध न
वोढ गनि कोमल कोपा जानि ॥ त्रिंता मनि
कविकहत है षटविधि मुग्धा मानि ॥८२॥
अंकुरित जोवना ॥ सवैया ॥ बांकी भई
भृकुटी बिन कारन लोचन कानन आनि
रहे हैं ॥ छाती कछु उचकी बिन हौर बंकी
चितवे इक भाउ लहे हैं ॥ पाइ उठाइ धरे
गरुए मनि बेन सकोच न जात कहे हैं ॥
मानहि मौन बिचारि करे मेर अंगनि को
न सुभाव गहे हैं ॥८३॥ अविदितकामा ॥ को

थुकार अंकुलाने मानौ छल की सरोजन
के ऊपरहै लहरै॥९१॥ विश्रब्ध नवोढ़ा॥
सवैया॥ लालकी दीठि बचाइ के बालकि
को च्वैहै दूरि प्रदीप की वाती॥ पीके हियेह
रव सुंजवढौ सूतौ पूछतही कछु बात
सुहाती॥ लागत ही तल मे पतिको कर चं
द मुखी चित चौंकि सकाती॥ सोईहै आ-
दूरि के पीतम साथपै सुंदरि हाथ छपाइ कै
छाती॥९२॥ सोइकै मेरी प्रतीतिलै देखो-
हो आजिन जांउगी योंही डरौ जिन॥ नेकु
दया करौ काहे रिव आवत रातिकी भांति
सो अंग भरौ जिन साथ तिहारे हौं पौढ़ि
रहौ पर छातीके ऊपर हाथ धरौ जिन॥
जो कछु की केसो काल्हि परौ पिय पायप
रौं कछु आनु करौ जिन॥९३॥ कोमलको
पा॥ सवैया॥ और तियाकी छुई छतिया
पिय नौल वधू सो कहूं लखि पाई॥ आं-
खि भरोरवे है अंचल ओट दृगंचल ताकि
के भौंह चढ़ाई॥ अंबर ओट छपाइके अं
गन पौढ़ि रही पलका रिसवाई॥ मेरी तू प्या
री है प्रानहु ते मुंह चूंवि लडाइ यो कोठलगा॥

है॥ ८४ ॥ मध्या लक्षन ॥ दोहा ॥ जातिय के हिय होतुहै लाज मनोज समान ॥ ताको मध्या कहत हैं सिंगार सुकवि सुजान ॥ ८५ ॥ सवैया ॥ पेखो चहै पियको विन ओट वैन कछू विन घूघट खोले ॥ आवेन संग छुट्यो पतिको सकुचैनकरे कछु काम कलोले ॥ चाहति र वात वाहीन कह्यो पर जातरह्योन रहे अन वोले ॥ झूलतु है मन प्रान पियारी को लाज म नोजके वीच हिंडोले ॥ ८६ ॥ दोहा ॥ कहि आ रूढ़ो जोवना आरूढ़ मदना जानि ॥ पुनि विचि त्र सुरता कछू प्रगलभा वचना मानि ॥ ८७ ॥ आरूढ़ जोवना मद उदा हरन ॥ सवैया ॥ म न नेन विसाल रसाल चितोल पे लाज सुभाव र लए अपनो ॥ कचला वलचे कुच भारसों लं वा सेवे तन कंचन रंगगनो ॥ पगपैंजन औ वि छिया झलकें कल किंकिनि ने वरनादघनो यह पूरन जोवन चंदमुखी चली आवति मं द गयंद मनो ॥ ८८ ॥ अरूढ़ मदना मध्या ॥ * कवित्त ॥ अवलोकनि मे पलवीन लगें पल- को अवलोकि विना ललवें ॥ पतिके परिपूर न प्रेम पगी मनि और सुभाउ लगेन लवे ॥ ति

चकी बिहसी ही बिलोकनि मै मनि आनंद आल
नि यों मलके ॥ रसवंत कविजन की रसु कैधों अ
रव रानके ऊपर है छलके ॥ ९९ ॥ कवित्त ॥
चैतकी चांदनी की यौं चंद अवलोकन ते छीर-
निधि छीरके पूरन पूर उमगे ॥ चिंता मनि १
कैहै मन आनंद मगन है कै बिहरति दंपती अ
रूप प्रेमसौं पगे ॥ अध खुली अंखियां सुरति
सुरवे रसबस मानो भौर अध खुले कमल-
नि मैं रगे ॥ प्यारी के सुढाल तन श्रम जल
बिंद सोहै कनकलता मैं मुकता फल मनो १
लगे ॥ १०० ॥ प्रगल्भ जोबना यथा ॥ सवैया ॥
ऐहै प्रबीन महा सिगरी पति हास बिलासन ल-
षगी ॥ मोसौं सबै रिझि बोलन की चतुराई
को बैन बिचारि चुनैगी ॥ केलि रहौ मति बोलौ
गावे जानि पायल पैंजनि मौन ठनैगी ॥ जानती
हैं सगरी सखियां मेरे नेवर की झनकार सुनै-
गी ॥ प्रौढ़ा कोप ० ॥ दोहा ॥ केलिकला मैं चतुर
अति प्रीतम सौं अति प्रीति ॥ लाजत जो है मद-
न बस प्रौढ़ा की यह रीति ॥ * ॥ प्रौढ़ा भेद ॥
दोहा ॥ प्रौढ़ा जोबन प्रगल्भ अ मदन मत्त पुनि
आनि ॥ कोहि पति प्रीति मती सुरति मोद परबस ॥

मानि॥१०३॥प्रौढजोवना प्रगल्भा ॥सवैया॥
कोटि विलास कटाक्ष कलोल बढ़ावै हुलास
न प्रीतम हीतर॥यौं मनि याम्हे अनूपम रूप
जो मैनका मैन वधू काहू तिरा सुंदरी सादी
सुपेद मै सोहत यौं छवि ऊंचे उरोजन कीतर॥
जोवन मत्त गयंद के कुंभलसै जनु गंग तरंगनि
भीतर॥१०४॥आंखिनि मूंदि वके मिसि आनि
अचानक पीठि उरोज लगावै॥ बांहू कांहू मुस
क्यांहू चितै अगराइ अनूपम अंग दिखावै॥
नाह छुई छल सौं छतियां हंसि भौंह चढ़ाइ
अनंद बढ़ावै॥जोवन के मद मत्त तिया हित
सौं पतिको नित चित्त चुरावै॥१०५॥रतिप्री
ति मती को उदा हरन॥सवैया॥लीनसी ह्वै त
न प्रीतम के सुभरे अति आनन सौं जियको॥
मानि आपुहि ते मुख चुंबन कौ सु हरै मन मोह
न के हियको॥छन मान विलास तिहै छन दै
सुछना छनदै सुख यौं पियको॥रति कोलि वि
लासिनि छोडिकै और नभावै काहू लछ्नी ति
यको॥१०६॥रत्या नंद परवसा॥सवैया॥प्रीतम
कौ रति रंग समै सुमनो रसको वरसा उनई है॥
ऐसे भुजा भरि भेंट रही जनु दै तन की कोरए

कालई है ॥ सुंदरि मोहन के मुखसों मुख लाइ अ-
नंद मैं लीन भई है ॥ ऊंचे उरोज लगाइ हिये जनु
अंगन बीच बिलाइ गई है ॥ १०७ ॥ दोहा ॥ मध्या
प्रौढा मान मैं कवि मति त्रिविध बखानि ॥ धी
रा और अधीर लखि धीराधीरा मानि ॥ १०८ ॥ व्यं-
ग्य कोप प्रगटै जु तिय मध्या धीरा होइ ॥ को-
प बचन बोलत प्रगट मध्य अधीरा होइ ॥
१०९ ॥ मध्या धीरा ॥ सवैया ॥ सांझते चंद क-
लंक उदयो मन मेरौ लै साथ रहे तुम न्यारे ॥ बैठि
रही मनि मंदिर बीच लगे सब दीप प्रकास
अध्यारे ॥ ग्वालहि पाइ सुधा मद पारनानैन
रखौ रस मोहन प्यारे ॥ दैखौंन अनूपकला प्रग-
टै अकलंक कलानिधि मोहन प्यारे ॥ ११० ॥ म
ध्याधीरा ॥ कवित्त ॥ कहां जागे रैन आस निपट
उनीदे होउ सोइ रहौ प्यारे बिछौ आछौ पर
यंक है ॥ खेलत हैं चांदनी मैं ग्वालन के संग काहू
ग्वालन को नाम लीनो काहू काहू संक है ॥ योहीं भले
मानि लेउ गाढ़ लौं कलंक हौ को देख्यौ काहू चिताम
निरलिहू को अंक है ॥ पीत रंग अंबर सुनील रंग भयो
लाल भूठौ हौ गुपाल तुम्हें काहे को कलंक है ॥ १११
दोहा ॥ बचन रहित के संग कहि कोप प्रकासै नारि

मध्याधीर अधीर तिय मिश्रित कहत विचारि
॥११२॥ उदाहरन ॥ सवैया ॥ रातिकै मनिलाल कहूं
रमिहां दुतु बाल वियोग लहैं आरसकै अझनो
हय होत सरोस तिया दृग देन कहे हैं ॥ लाल
भये दृग को रति आलिकै यों अंसु वानवों बुं
द रहे हैं ॥ चौन्दन चोप मनो सिपिलै विष्खं-
जन दाड़िम बीज रहे हैं ॥११३॥ दोहा ॥ प्रौढा
धीरा नेकु नहि कोपै करै प्रकास ॥ पति को
अति आदर करै रतिते रहै उदास ॥११४॥ सा
वहि मालो उदाहरन ॥ सवैया ॥ बोलति काहे
न बोल सुनै मधुरी बतियां मन मोहन भावैं
बोले कहा कछु चित्त मैं है दुख पित्त बढ़े कछु
लागती हावैं ॥ ठाढ़े हैं लाल बिलोकौ नबाल
क्यों तेरी बिलोकनि को अभिलावैं ॥ लाल भ
ई बिन काज हि आजु सहेली कहा मेरि दूख
ती आवैं ॥११५॥ सादर धीरा ॥ सवैया ॥ आजु
कौं पलकाते धरी पुहमी पर माथे हमारे न
पाहू धरी ॥ कह बोलो सखीन सौं संभ्रम सौं हं-
सि बोलि हमारे न ताप हरी ॥ बिन काज हौं पान
न आन कौ मान सौं आन भुजा भरि अंक भरी
दुख देत सबै बिन वादर ज्यौं यह आदर आप

नो दूरि करी॥११६॥सखु हास धीरा॥सवैया॥
बोलोगी बैनतो कानन श्वैननबोलोगीबैन अ
नंद भईहो अंचल सों मुख मूंदि रह्यो तव आ
नमैं जो धरि चित्त लईहो॥ बैठति काहे न
हो ढिग सुंदरि मोको दई सुख रासि दई हो॥
मोहि गनो निजु दास मनो तुमको बिन काज
उदास भई हो॥११७॥जावक रंजित भाल र
किये मन भावन भावती गेह सिधारे॥ दूरिते
भौंह कमान चढ़ाइकै सुंदर नैन कटाछ ते डा
रे॥आइकै बालम बांह गही ढिग चंद मुखी
मुखि कै भभकारे॥ चंपक मालसी कोम
ल बाल सुलालचु मैली की मालसों मारे
११८॥दोहा॥ प्रौढ़ा धीरा धीर तिय बोलै धी
र अधीर॥चिंता मनि कवि कहत है समु झ
त बुद्धि गंभीर॥ ११९॥कवित्त॥मेरी कहा च
ली है न आपली कहति बात बड़ी भली करी कछू
काहूसो निबाहिजे॥मोहि तजि गए जाइ वासों
सुकरम कियो यह कौन धर्म तजत अबाहिजे॥
चिंतामनि कहै क्यों न वाकी सुधि लेत जादू जाको
मनके व्याकुल कारिताहिजे॥जापै रति मानि
प्यारे आए हो हमारे घर ऐको घरी करो वाकी

प्रीति को मुलाहिजो ॥१२०॥ दोहा ॥ जहां होति
है द्वै तिया तहीं रीति यह जानि ॥ पुरुष अ-
भिमुख घट प्यार ते ज्येष्ठ कनिष्ठा जानि ॥१२१
कवित्त ॥ एक पलका पै बैठी सुंदरि सलोनी
दोऊ पाछिले छबीलो लाल आयो रतिकेलि
पर ॥ चिंता मनि कहै दिग बैठो आनि पीतम
पै काहू सों कछू न कहि सकत दुहूं के डर ॥
मुख के मनाइबे को एक को दिखायो नाह
बिपरीति रतिको सुरूप लखि चित्र पर ॥ जौ-
लौं सकुचन वह आखें मूंदि रही तौलौं प्रान
प्यारे प्यारी को चुम्बन पर रच्यो कर ॥१२२॥ प
रकीया को लक्षण ॥ दोहा ॥ प्रीति करै पर पुरु
ष सों परकीया सो नारि ॥ ऊढ़ा और अनूढ़
ता सो द्वै भांति विचारि ॥१२३॥ ऊढ़ा होइ बि
वाहिता अबिवाहिता अनूढ़ ॥ परकीया द्वै भां
ति की जानत जगत अनूढ़ ॥१२४॥ ऊढ़ा को उ-
दाहरन ॥ सवैया ॥ अति सासु भरै ननदी स-
त रातलखै कुल कानकी हानपरी ॥ घरबाहि
र सों बलि बैर बढ़ौ सु अजो तुमको नहि जा
नपरी ॥ मनि सांझ गली तुम बांह गही सु-
तो कौन अहो यह बान परी ॥ वह बात कही

हुती कानन में सुनी कानन कानन आनपरी १२५॥ दोहा॥ सुरत गोपना चतुर कहि कुलटा बहुरि बखान॥ कहत ललिता सुकवि जन अनुसैना उर आन॥१२६॥ सुरत गोपना को उदाहरन॥ कवित्त॥ ग्रीखम मे नदी कूप सरवर सूखे सब जल नहो भिर लाले आवत नगर मे॥ तहां जात आवत लगत कांटे भारन के होत जेहो होही पानी पीवति हौं घर मे॥ अति दूरि ही ते भारी गागरि लिआइ के सो छूट पसीना अंग कांपे थर थर मे॥ कहति हौं पुनि सासु ननद सुबोल मो पे जाउंगी तो आऊं मे भर दुपहर मे॥१२७॥ दोहा॥ बरनत सुकवि जु नायका द्विविध चतुर सिरमोर॥ वचन चतुर कहि एक पुनि क्रिया चतुर पुनि और॥१२८॥ वचन चतुर को उदाहरन॥ कवित्त॥ रहो तुम कोऊ नेकु घर देखन रहो देखो बिना मालि बागन मे को पेलह लही है भलो धरम है है देव अरचन काज सुंदरी चमेली की कली कछू कम ही है॥ बाग मे अध्यारी डर लागतु है जात उत ताते हौं कहति तूं हां को लोग और नहीं है॥ कैसे करि जाउं फूल ले

नहीं अकेली इहांतो आछे आछे फूलनकी
वेली फूल रहीहै ॥१२९॥ क्रिया चतुर को उ
दाहरन॥ सवैया॥ कैसेहु देव वधू नमें कोउरु
होइतौताको बराबरि वाछै॥ सोहतिहै नखते
सिखलौं मनि अंग अनूप सिंगारन वाछै॥
सील वढाइ जनाइ विनै चलैसासु औनंद
जिठानीके पाछै॥ नैनके सैननि मोहनको
मुरिकै मुसक्याइ विलोकति आछै॥
१३०॥ दोहा॥ जहां प्रीति पर पुरुष की प्रग
टित जगमें होइ॥ ताहि ललिता कहत हैं
चिंता मनि कवि लोइ॥१३१॥ सवैया॥ लोग
की लाजमें काज कहा मन मोहनतें कुल
कानि डगीहैं॥ बोलैं कहा हम बावरी हैं वह
सांवरी सूरति देखि ठगीहैं॥ जानति नंदजि
ठानी औ सासु चहूं दिसि मेरे दवारे जगीहैं
जाने सो कोउ हजार कहो हम नंद कुमार
के प्रेम पगीहैं॥१३२॥ दोहा॥ वहु पुरुषनि
की केलिको जाके मन अभिलाख॥ कुलटा
तासों कहत हैं सव सज्जन कवि लाख॥१३३
सवैया॥ छैलनि गैलमें आवत देखिकै भां
कि झरोखनि रीझि रिझावै॥ चंचल अंचल

डारे रहै अंगराइ अनूपम रूप दिखावै॥ ला-
इट की गति नैनन की निरखै निरखे बिन
चैन न पावै॥ जोवनके मद मत्त तिया तजि
काम की केलि सु औरन भावै॥ १२६॥ अ
नु सैना॥ दोहा॥ संकेत स्थलके नसत भावि
स्थान अभाव॥ मीत गयो हों ना गई जो पोछ
पछि ताव॥ १२५॥ होइ अनु सैना त्रिबि ध
विधि बरनत सब क बि राइ॥ कामते दत उ
दा हरन सब सज्जनन सुनाइ॥ १२७॥ प्रथम॥
कवित्त॥ रहै है सजीव कोउ कैछगो इ न वेहै
त अधरम लेत कौन ठाट ए ठाटत हैं॥ सिगरे
बासई इहै इनके कहा सुभाइ औरनको तो हाइ
हाइ हियरा फाटत है॥ चिंतामनि सज्जन इहांई
तिन्हें पूछि देखौ आगे न्याउ के है वैतो इनको डाट
त है॥ देखे इहि देस आली खर निरदई लोग इरे
हेर रूख अरहरके काटत है॥ १२८॥ दूसरी सवैया॥
आली अटारी चोबारे त्यो मंदिर वैठको सून सुहावन
जीको॥ खेलन को तुमको थन ठौर है जैसे उ
ते सुख पावैगी नीको॥ हैमनि सुंदर लोग उ
जा गर नागर नेह पगे परतीके॥ ज्यों इहां
त्यों ससुरारि तिहारी में बाग वडे ढिग हैं

खिरकीके॥१३९॥तीसरी॥सवैया॥अपने भी
त परोसी सों सुंदरि सूने चौवारे सहेट रखा
नी॥ ह्वां उन बोलि कपोत की बानि अटा पर
आलि दूहावत ठानी॥जानिलूहे सरला यह स्या
नि मनोजके बान लगे घह रानी॥ आइ गा
यौ तनसे परसे इपरी पति संगसखी अकु
लानी॥१४०॥मुदिता॥सवैया॥द्वै दिन को
पथ तीरथ न्हान को लोग चल्यो मिलि कै
सिग रोई॥सासु बहू सों कह्यो यों रहौ घर
और रहै नहि राखिय कोइ॥सुंदरि आनंद
सों उमगी यहचाहतिही जुभयो अब सोई॥प्रेम
सों पूरन दो ऊजने घर आपु रही की रह्यो
नन दोई॥१४१॥दोहा॥परकीया अविवाहि
ता सुतौ अनूढा नारि॥सब ग्रंथन को देखि तो
कवि मन कहत विचारि॥१४२॥सवैया॥*
जामे कछू मनि सोतु स कोचन आछिये
सो तो कछू लरकाइ॥आवत हीं कन नैनको
रस मोहन के वसिको लल चाई॥ देखे वि
ना कल नेकु नहीं अरु देखे तो गोकुल गाव
च वाइ॥जामे हंसे हू कलंक लगे यह कौन
धौं वैस विखा सिनि आइ॥१४३॥दोहा॥*

काहि स्वाधीन प्रिया बहुरि वासक सज्जाजा
नि॥ बहुरि विरह उत्कंठिता विप्रलब्ध पु
निमानि॥ १४४॥ पुनि खंडिता बखानि ये
कलहंतरिता नाम॥ पुनि कहि प्रोषित
भर्तृका अभिसारिका सुवाम॥ १४५॥ सोस
ब भेद तिहून के भेदन हू के होत॥ जे जैसे
संभवत ते तैसे लहत उदोत॥ १४६॥ सो स्वाधी
न प्रिया कही जाके नाह अधीन॥ सुतो सदा
आनंद मय बरनत सुकवि प्रवीन॥ १४७॥
मुग्धा स्वाधीन पतिका उदाहरन॥ सवैया॥
ऐसी छवि मोहि दिखाइ भावते वै सो छ
वि पाइ कहीं सुर अंगनि॥ न्हाइ नीलवधू
मनि नैन चकोर से ज्यावे कहा है सुधारस
लीन्हनि॥ अंदर लाल मे यों मुख ज्यों प्रतिविं
बत चंद सरस्वति वीचनि॥ मानो उदै गिरि कं
दरा अंदर इंदुस्यो कुरविंद मरीचनि॥
१४८॥ मध्या स्वाधीन पतिका॥ सवैया॥ फू
ल्यो फल्यो मृदुबाग बन्यो मनि मंदिर की ग
ति त्यों छबि लीली॥ प्यारे यों प्रेम की खानि खु
ली अंखियां बिलसैं मुसक्यानि रसीली॥ कां
चन के रंग अंग लसैं पिय ते रंग रंगी

है रसीली ॥ मै रेही संग विहार करिहै अब
लाज सों काजु कहा छूल छबीली ॥ १४९ ॥ १
प्रौढ़ा स्वाधीन पतिका ॥ सवैया ॥ आपुही पा
इन देत महाउर वेनी गुहै अरु वेनी झुलावै
आपुही वीरी बनाइ खवावै अनेक विला
सनि रीझि रिझावै ॥ तेरी सखी सखि आपने
मित्र सों तै रेही प्रेमकी बातें चलावै ॥ तोते १
त्रिलोक मै को वड भागिनि जो लिय यों पिय
को वस पावै ॥ १५० ॥ देखैन देखौं सुख मान
घनो सखि जा सुख मानको सोर भयौ है ॥
सांवरो सुंदर जो सिगरी ब्रज नारिन को चि
त चोरि लयो है ॥ आपने आइ अटा मै लहू
घन छोरि पटान को सोर भयो है ॥ नंद कि
सोर भयो देखो चोर सुतो सुंदर चंद चकोर
भयो है ॥ सामान्य स्वाधीन पतिका ॥ दोहा ॥
या पर नेह निदान तू है यह निपट ललाम
तन धन मन सब तोहि है तुही वारी सब बाम
१५२ ॥ पियको आगम जानिकै अंग सिंगा
रै वाम ॥ सौध सेज संवारि रचै वासक सज्जा
नाम ॥ १५३ ॥ मुग्धा वासक सज्जा ॥ सवैया ॥
मंदिर सुंदर धूपे सुधा मय जोन्ह की जोति

जहां अधिकानी॥प्यारी सिंगारी प्रवीन स
खी भनि मोतिन की सुखमा सर सानी॥भै
ज रची पय पोनसीहांपिय आगम वेरी
जेवे नियरानी॥हेरी अली सौं चली हंसि
नील वधू मुखकी लल वादू लजानी॥१५४
मध्यावा॥सवैया॥मंदिर धूप करे से सुमं
दिर इंदिरा देवी प्रसन्न निहारति॥सेज सं
वारे दुकांत मैं आपु रकंतहि आपुन अंग
सिंगारति॥फूलनि हार सुगंध रच्यो जन
भेरसे ओर सखी को सुधारति॥इंदुमुखी
पिय आगम औसर वेरति केलि की साज
संवारति॥१५५॥प्रौढा वा॥सवैया॥चंदन
लीपो मनोहर भोनसौं धूप्यो भले अगरे
द्भव धूपनि॥इंदु कला सित सेज रची पिय
आगम सुंदरि सेदु सरूपनि॥अंग सिंगार
धरे गहने जेवने मुकता मनि वृंद अनूपनि
वास मे सेसो रुल्यो वह मंदिर मंदिर मा
नो रुल्यो रस कूपनि॥१५६॥परकीयावा
सकसज्जा॥सवैया॥सेज रची मनि मंजु प्र
सूननि आवहीसुख पाइहै जोपी॥देखत
सौ भगवाम वनी जिन काम वधूहुकीदीपति

सखी नभ रथीन सों धाम को कामहि व्याकुला
यों जो मन बीच विचार करै उनको इन मोहि
वियोग दिखायो॥ जानति हौं न कहा गति है
मेरे प्रानन को पति कै विलमायो॥१६१॥
प्रौढा वि: उ०॥ सवैया॥ आजु विलंब भई
काहु काज मैं भोर पै प्यारे को चित्तन जैहै
कोकपदी बहु जाति बड़ी तुम पीउ तुम्हा
रो प्रभात मै ऐहै॥ आनंद ह्वैहै री कोमक उरो
जन नैन सरोजन सों सुख पैहै॥ तेरो क
ह्यो सब ह्वैहै सखी यहु पूरन चंद जो जीव
न देहै॥१६२॥ जीवति यों अब मारत मा
र बड़े दुख जामिनि जाम बिताई॥ देखे बि
ना जुग सों पल जातु सुजानि के प्यारे
हों त्यों तल फाई॥ हौं लखि हों मुख क्यों ल
मनो हर श्री मुख चंद कावे सुख दाई॥ आ
द्र पस्यो धौं कहा गुर काज जो बालम आ
जु बिलंब लगाई॥१६३॥ परकीया वि:
सवैया॥ द्वंद्व उदे पहिले ही संकेत मैं आ
गेही दूती पैठे ठह रायो॥ नागरि आइनि
कुंजके भीतर नागर नेकु विलंब लगायो
तौलग वाके हजार विचार भए अति

न मुख छवि जगमगी है॥ चमेलिन की १
थाली सौं रचना अनूप रची मंदिर मैं चंद
की सी जोति जगी है॥ वह सौ अध फूले
फूल हंसत हैं याहि जानु जा की ठगनी १
काहू भले ठग ठगी है॥ १७१ ॥ खंडिता लक्ष
न ॥ दोहा ॥ आन वधू रति चिन्ह धरि आ
वै जाको पीउ ॥ प्रात घरै सो खंडिता यह
रसिकन को जीव ॥ १७२ ॥ मुग्धा खंडिता ॥
सवैया ॥ आन वधू रति चिन्ह धरे इत प्रात
ही प्रीतम आगम कीन्हो ॥ आली की हाथ मैं
आरसी दै मनि नोल वधू मनि भीतर लीं
न्हो ॥ बोली सखी यह रूप की देख कहां य
हु वेस उपद्रव कीन्हो ॥ या मुख नैनी पत्या
नी लली को कहा चित लाल को काढ़ ले
लीन्हो ॥ १७३ ॥ उत्तमा ॥ कवित्त ॥ जो पै प्रान
प्यारे चित चाहन तिहारे काहो तुमही धौं
कहा गति मेरी तौ बिहारी है ॥ नेह रस भरे
डीठि राखियै अधीन हौं मैं स्याम सौं च प
रभात काम रचि हारी है ॥ चित मनि तैं
लौं लहलहे जौ लौं सींचि यतु अनसींची
कुम्हिलानी मालती निहारी है ॥ ऐसी पा

सपाई मरजातुगी वारने जातुजीवनि हमारी हंसि बोलनि तिहारी है॥१७४॥मध्यारवंडि ता॥कुंकम लेपसों कीन्हे सबै तनु लाल है। दीपनि पुंज उज्यारे॥दूषन हेरे हम सों चक हैन के फूले सलोचन बोल विचारे॥बाहि र आइते नारिनि की खुली नीविनके हैं बंधा वन वारे॥आइ प्रभात दिखाई दई तुम लीजिये मिन्न स प्रान हमारे॥ १७५॥प्रौढारवं. डिता॥आन अंगना के अंग संग चिन्ह धरे आयो पीउजौ दूषित जो अ राध दो षमै॥कोप मुंद राई पर कोपसौ चढाई भ यो मोहन को मनु प्रेम कोरी भिती समै॥रे नि मग हेरि जगी पीतम पै आइ परी नीर भरी अखियां आनन अति रोसमै॥ऊपरहि आई जल लहरि आइ वालमकेअलि मानौ कोकानद को समै॥१७६॥पर कीया खंडिता दोहा॥स सपने कौ रंग निधि समुझि आ जु पछिताति॥भली करति इनसौं सखी जो न चितवति नाहि॥सामान्या खं॰॥दोहा॥ आन चिन्ह लखि कंठते लीन्हो हार उतारि लाल नैन करि हाथ सौं गमन बतायो नारि

१७८॥ रिसते पिय अपमान करि पुनि पी के पछिताइ॥ कलहं तरिता कहत हैं ताही सों कविराइ॥ १७९॥ मुग्धा कलहं॰॥ सवैया॥ लाजन मे पहिचानि सी मे पुनि हों पहिले पियको न पत्यानी॥ पेच सों आलिन दीन्हो मिलाइ भई मन प्यारे को प्रेम बिकानी॥ कालि अकेलिये सेज मैं सोइके आपु न याते कहू मै सकानी॥ प्रात थिये है म नी होवहां ते सूरति गयो उठि हौ पछितानी॥ १८०॥ मध्या कलहं तरिता॥ सवैया॥ कान्ह रे सब लाखी अधरा पर प्यारे को प्रातमै बात बखानी॥ काहू बिलोकयो बिभाति बधू कहै सो सुनिके मजनी मुसक्यानी॥ नाथ के हाथ दई उन आरसी बैतो लजाने सुमै यह जानी॥ पीउ गए उठि कै जब ते तनु तापनि ते अतिही अकुलानी॥ १८१॥ प्रौढा क॰॥ कवित्त॥ मृग मद चंदन सुरभि अंग आवे विधो प्रा न प्यारे तेरे भौन गौन मेरे आगेरी॥ ताको मान बधू अंगराग परम लजानि तू कियो काहल सब सह्यो बड भागेरी॥ तोहि हसी जानि अगामन उठि गयो पीउ कहा धौं कर

तजो आये कहूं जागेरी॥अब बैठीन मौहँता
नि मानि करि बैठी कत लागी पछितान॥
मन मैल यान लागेरी॥१८२॥परकीयाक
दोहा॥ प्रेम कियो कुलकानि तजि पछ्यो
विसन रसाइ॥गयो लाल सो हाथते कहा
लेउं पछिताइ॥१८३॥सामान्या कलहंती
ता॥दोहा॥भई विपुल धनवंत हौं जाके
पाइन सेइ॥तासों तिहि अनुताप यह
मोहि महा दुख होइ॥१८४॥प्रोषित भर्तृ
का लक्षण॥शृंगार मंजरी यथा॥प्रोषि
त यह भावर्थ या नितलिहूंकालप्रवासहि
कहत आन॥सो जामें सो प्रोषित विचार
यह प्रिया प्रोषित भर्तृका जान॥१८५॥
※॥※प्रवत्स्यत भर्तृका और जानि॥प्रव
त्स्यत प्रिया पुनि और मानि॥प्रोषित भर्तृ
का और एक॥योंतीनि भांति याको विवेक
१८६॥वडे साहिब अपने ग्रंथ माहि॥निर्णय
कीन्हो कवि बुद्धि नाहि॥१८७॥दोहा॥प्रिया
वामके हेतु कहि ताप धरै सो होइ॥ताही
सो प्रोषित भर्तृका समुझलेहु सबकोइ॥
१८८॥याके भेद कहत॥दोहा॥प्रथम प्रव

स्य पिया पुनि प्रवत्स्यत पतिका जानि॥पुनि प्रोषित पतिका कही तीनि भांति यौं मानि ॥१८९॥प्रवत्स्यत पतिका को लक्षण॥*॥ दोहा॥प्रिय विदेस को गोनवो उद्यम ल हि दुख पाइ॥होति प्रवत्स्यत पिया तिय आकुल चिंत बलाइ॥१९०॥मु प्र उदा॥ सवैया॥जाने असो दुख दीन कछू यह आजु बिलापते राति है सोतें॥दूलह की दु लही बनि भूले कहा जुरही है संकोचि स सौतें॥हौं दुख सागर मे सखि बूडति आ नि कहौ कतले चरचातें॥दंपति के पहि चानि लसै कछु नीको रपीके पयान कीवा तें॥१९१॥मध्य प्र॰ उदाहरन॥सवैया॥* ॥प्रीतम सोवतो बिदेसबिदेस सुने तिय के बिरहा गिनि जागी॥नैननि मे असुवा झलके तिय के हियते सिगरी सुधि भागी॥ रहि सीस नवाइ रही सुभई मतिहे अति ही दुख पागी॥यो निरखो मनो जीवसो पीवको संग सिधारिबो बूझन लागी॥१९२॥ प्रगल्भ प्रवत्स्यत पतिका॥सवैया॥नाह विदे स को चाह सुनी वह साहस काज विचार

कह्यौहै॥ चित्रलिखी सी हली न चली वपु भा
नौ कलेसन सौं अधीरहै॥ जैसे कोहाल
अलिंगन कीन्हो सुलाल तुह मुखसौं जा
र्योहै॥ सूकत दूखपूनो निधिमें पियको
लिखआनो यातें पकर्योहै॥१९५॥ परकीया
प्रवत्स्यत पतिका॥ दोहा॥ लोचन चूआति
लाल यह पुलकित सौं कहि॥ तियाकह्यो
सखि अपनेहूं वह आसुही पूछि॥१९६॥
सामान्या प्र॰॥ दोहा॥ सखी कारन रूसको
उचित सुमरन होके पञ्च॥ सुंदरि वहुत गा
ढरहै पुनि कहै रुपान्न॥१९७॥ कादत पी
उ पर हेसको आपने आरिलन देखि॥ प्रव
त्स्यत पतिका नाम कहि नयो भेद यह ले
खि॥१९८॥ मुग्धा प्र॰॥ दोहा॥ यह मुग्धा
आन समुझा को तासे अंजलि जोरि॥ नि
पुर होत सकार यह नई दुलहि चाहोरि॥
१९९॥ मध्या प्र॰॥ सवैया॥ लाल विदेस
की साज सजी सब सुंदरिहैं हिये अकु
लानी॥ चाहै कह्यो अहो प्यारे रहो सबला
जन तेनकही मुख वानी॥ तौ लगि यौं अंसु
वार भयो सुख साज भयो सुखी अधिका-

नी ॥ नैननि के जल पूर बह्यो मृग लोचनी ॥ दुक्ख समुद्र समानी ॥ २०० ॥ प्रगल्भा प्रवत्स्यत ॥ सवैया ॥ मंगल साज पयान कीये हुते प्यारे दियो पहिलो पग भूपर ॥ देखत लाल अलज्ज भयो निकटै मह आनन को जैसे कूपर ॥ ता सम व्याकुल सुंदरि के असुवां परे टूटि उरोज दुहूं पर ॥ प्यो अब ओट चढावे मनो दृग मोतिन माल महेश के ऊपर ॥ २०१ ॥ परकीया प्रवत्स्यत सवैया ॥ सुंदरि मंदिर के ढिग मंदिर सुंदर कौ थान बनायो ॥ झांकि झरोखे के नारि संदेस पठायो वही यह देत पठायो ॥ वाकी लगी ते चिठी जु लई उन बांचि प्रवास उदोत जो पायो ॥ आपनो आनन चंद मुखी वहु छोस को आनन चंद दिखायो ॥ २०२ ॥ सामान्या प्रवत्स्यत पतिका ॥ दोहा ॥ लाल चलत लखि लाल उर बोली तिय सजि नेहु अपनी प्रतिमा लाल यह लाल निसानी देहु ॥ २०३ ॥ जाको पति परदेस को वाढ्यो तु दुखित नारि ॥ प्रोषित पतिका होति है पंडित कहत बिचारि ॥ २०४ ॥ मुग्धा प्रोषि

त पतिका ॥ सवैया ॥ जाके उरोज कढ़े उ
रमै तजि लाजनि बाल सखी अनुरागी
ऐसे मैं पीउ बिदेस गयो यह जानै नही
तौ महा दुख पागी ॥ पूनौ को चंद कला
सी मनोज कला न बढ़ैगी जु जोबनता
गी ॥ ※ ॥ पूनौ कौ चांदलो आवै घरै
पति दंपति तौ गनियै बड़ भागी ॥ २०५ ॥
मध्या प्रो॰ ॥ कबित्त ॥ मोसों बूझि मली भां
ति समा धान करो तेरो कितनो वियोग
ताहि रभात जागुन है ॥ सु तु सखी सपनो
मैं लख्यो आजु दीनो आप चित्र रूपवो
स्यो अमावान को छगुन है ॥ लिहारी सखी
को कंत या बसंत पंचमी को आवत बसं
त याको भयो समागुन है ॥ पूजै को कहै यों
मेरे मन अति आरत यह छपिवो छबी-
ली काहा पूछत सगुन है ॥ २०६ ॥ प्रौढ़ा प्रो
षित पतिका ॥ सवैया ॥ जीवित नाथ वि
देस गयो हम जीवति हैं विरहा सिनि (
हागी ॥ तेरति कों काल पंत भई पियके संग
को निभिरैहैं सब जागी ॥ मोपर आपने
प्यारे को प्यारे कहीजे अनूप कथा रस पागी

जो छतियां लगिकै बतियां सुनि ते छति-
यां अब सालन लागीं॥२०७॥ परकीया
प्रोषित पतिका॥ दोहा॥ सुमह होत पति
को कछु ललित हिय बतिया वाल॥ काव-
रे है प्यारो सखी मोहि कछू नहीं हाल २०८
सामान्या प्रोषित पतिका को उदाहरन॥
दोहा॥ रोदु कहति है आइहै मेरो धन सोंपा
स॥ सुंदरि पिय मग लखन को कीन्हो द्वार
निवास॥२०९॥ अभि सारिका लछन॥ दोहा
सुभ वेख धरि जोन्ह मैं कारे जु तिय अभि
सार॥ सो को कहा अभि सारिका सकल र
सिक रुचि सार॥२१०॥ कवित्त॥ तन सब
सुवरन दरपन समता मैं मैन अधि काई
जो गुराई गहिराई है॥ लाम कपूर चंद्रिका आ
लक सों ही सारी सेत सुखमा समूह सर
साई है॥ आभरन जोड़ मुकुता पोत विमल
दुति अंग अंग तारागन तेई जनु आई है
चली इंदु मुखी उत ढूंढ़ अधि देवता सी
सुकवी तिहारो कोऊ दर मन पाई है॥२११
तमो भिसार॥ स्याम वेख धरि तम समय चलै जु पि
य पै नारि॥ वह कहियत अभि सारिका स-

ज्ञान लेहु विचारि ॥ २९२ ॥ सवैया ॥ मेचकरंग के अंगकोरंग कुरंग नदद्रवदं कि उज्यारी ॥ चोवके रंग रंगी पगिया पहिरे तन नील १ अनूपम सारी ॥ ह्वै रिवरकी मग है निकरी सु अंध्यारी जैबे तुलसी अति कारी ॥ बागमें आनि रमी मन मोहन प्यारेके संग म नोहर नारी ॥ २९३ ॥ दिवा भि सारिका ॥ दोहा ॥ व्याज प्रगट अभि सारजो द्योस करे बर नारि ॥ सो कहि दिवा भि सारि का सज्ञान लेहु विचारि ॥ २९४ ॥ तन सिंगार आईजु करि बागवि लोकन काज ॥ पिय मिलाप लहि आपयह सफल भयो सब काज ॥ २९५ ॥ दिवाभिसारिका ॥ सवैया ॥ कातिक पुन्य महा नदी न्हान कौं तिय संग सखी मन भाई ॥ न्हाइकैनीके सिंगारि कै आगनि बाग विलोकनि काज सिधाई ॥ कुंजनु कंतमै मित्र मिल्यो धनिमानि उन्है दिन राति बढाई ॥ लोग मिले मेरेनेह रचो घर प्रातमै आईयों बात बताई ॥ २९६ उत्तम मध्यम नीच ए तीनि भांति करिजानि ॥ इनके लच्छन उदा हरण कहत लेहु मन आनि ॥ २९७ ॥ जोपै प्राणप्यारे कछू चाहिन ति

हारे कवित्त पीछे लिख्योहै॥ प्रिय हाल हि-
त अरु अहित मैं करै हिता हित नारि॥ इ-
हि चिंता मनि कहत है सो मध्यमा विचारि॥
२१८॥ सवैया॥ पहिले जो प्रीति करी हो ल-
री अब आनि परी तुम्हें औरन की रुख॥ है
मनरीत नई सी लई तुम ऐसी कही अपि
काइ कही कछु॥ योवन कान करै अथा
वत हो जैसी हुती तुतो तैसी हुती तव॥ आजु ते
राजु कहो बलि जाउं सो का पर काहू हमैं तुम सौ
अब॥ २१९॥ दोहा॥ हितो कारतललखिनाह कौ अ-
हित करै जो नारि सो अधमा है नाइका अन-
न कहत विचारि॥ २२०॥ कवित्त॥ चिंता म-
नि होइ कोऊ नीको की अनैसी लीमा लेई
पाबे जामे प्रीति पतिकी उदोति है॥ हहीं यों
विचारि हरि कारि मोती हार गरे पहिरे तौ
कहा छवि पावति यो तिहै॥ काहा कीने न-
कु लहै पीके उर बसी नतो कोली हेन तिन्है
उर बसी कैसी जोतिहै॥ कौन है निकाई ये
ह बैठी मुख नायको री नायक दिखाइ तैं
निकाई नीको होतिहै॥ २२१॥ कवित्त॥ स्वा-
म सर सिज अंग राजे सर सिज लालीत

रच्यो सिरपर घनस्याम रंग घनेरग॥चिंताम
निकोहै मानो वदन कमल पर मधुकर पुंजमा
नो प्रगटत परभाग॥पीठपर वैठीतन सहज
सुगंधलोभ मानौ अलि अवलि विसारि कै
चमेली वाग॥वेनी मृगनैनी की यौं मंडित सु
मनि रूप निधि की रचीहै मनो दामानिध
रनाग॥२२२॥स्यामा जूके सनेह की स्यामता
मैरीझि स्यामता मै सवरीझि रह्योजगुहै॥चिं
तामनि कहै जु और वचनकी ठौर मैन ऐसौ
कछु सुखमा को समूह अदगुहै॥पाटी है सिं
गार घन घटन के वीच मै मयूष सीसफूल
वाल रवि लाल लगुहै॥सेंदुर सुभग तियमांग
रंग भरे अलि मानौ पियमनु के गमागम को
मगुहै॥२२३॥स्यामा जूके सुंदर सकल अंग
पेखि स्यामलि पायो ससि सैन मैन को अलंक
है॥वृषभान नंदनी के नैन निहारि हारि मानि म
हा कुवलय कुरंग भयो रंकहै॥चिंतामनि कहै
लाल मनि वेंदी भाल लयोन अलंकृत कीन्हो
परजंकहै॥दीपति वितान महा मंगल निधान म
नो मंगल मिलत अगर आठे को मयंक है॥२२४॥
प्रतिप्रफुलित यहि हेरि वेई दिखाऊंगी हौ केलि

सर वर अर बिंद जो अलि इंदु है॥ यों कछु है
सर वर अर बिंद जो अलि इंदु है॥ यों कछु है कवि चिं
तावत अलि मधुर अधिक छबि कवि चिं
ता मनि ज्यों नवल रिंदु है॥ सरद की पूनो
की निसाको महा नीको कहा फीको सो
लगत याके आगे यह इंदु है॥ सुंदरी जू सु
लगत याके आगे सुंदर लगत हमै
हरि के सुंदर बदन आगे सुंदर लगत हमै
इंद नार बिंद है॥२४॥ याहीकौ लै सुभ देस
करत है गंध बंध ऐसो वामें साह जिकसो
रभ चमेलीको अंग मनो नाना रंग फूल-
नि की रासि उन अंगन मै बिमल बिला-
स अमल बेली को॥ चिंता मनि चंपक कु
सुम होय अभि राम दिव्य रूप काम कला
आनंद के कलीको॥ जाके अब लोके सब
दूरि होत दुख सोहै नैननि को सुख सुख
कमल नवेली को॥२६॥ मोहन मोहन
मंत्र देवता बिराजे राधा यामें देव बधू हंद
वैसे अंक सतुहै॥ मुख बिधु बिंब पर रच
ना रची बिरंचि जामें बडो सुखमा समूह
सर सतु है॥ चिंता मनि सु ललित अल का-
वला है लसे भाल पर मृग मद बिंदु बिलस
तु है॥ वृष भान नंदनी की भौंहै अति सोहै

ऐसो अरथ गुविंद जाके वस मैं वसतु है॥

२२७॥ जाकी नासिका मैं तिल फूल भाव

प्रकासक रति लखो विधि यों जोतिसो र

तमाम सोभा घर॥ तेरी छवि देखि वाकी

ऐसी छवि छीन होति मुख दुति दीन जै

सो प्रभात को सुधा कर॥ चिंता मनि काहे

काहा चंपक सुमन इन लै लात कीन्हो मु

वाती हल प्रभानि भर॥ काहा अति रिझु र

नील नायक रिझायो रीझी नाक नाय

की है तेरी नाक की निकाई पर॥ २२८॥ अम

ल कपोल प्रति विंवन सहित मनि जटित

ताटंक चारि चारु छवि धाम है॥ चिंता म

नि वदन मयंक रथ रचि सचि मीन नहे

मंजुल है महा रथी काम है॥ सारी जरता

री हेम पंजर मैं खंज मुख सुखमा सरोव

र कै सरसिज स्याम है॥ चाहे नैननैन जाने

जैसो चैन होन वैन काहलौं काहेगजैसे

नैन अभिराम हैं॥ २२९॥ चिंता मनि का

है तारा इंद्र नील आसननि सहा विलस

ति प्रति विंवित विहारी हैं॥ सोहे नैन मैन र

वान खंजन सपच्छ मानो मंजुल अंजन गु

नंगुफित निहारीहै॥मोद मंदिरन फिर
नावली की छज्जनकी छवि अवलो क
नि रुचिर रचि हारीहै॥द्यान मैलागीम
न मृगकी छावरि मनो घनी बावी बरनी ए
तरुनी निहारीहै॥२२०॥सोहै अंग बिलाम
नि नगन जटित दिव्य कंचनकी वेली कै
ले सुंदर नवेली को॥सकल जगत पर एका
सुखाली हो तुम नायकान वल ऐसी नाय र
का नवेली को॥एक ठौर देखो छवि आप
ली नहूकी प्रति बिंबित है आर रूप आन
हवे केलीको॥सुबरन आरसी से अमल
अमोल कांढ़ि गोरे गोरे गालहै कपोल अ
ल केलीको॥२२१॥अह निसि चरचा सखि
न संग स्यामा जू की स्याम सुमिरन और
काज सब नाखेहैं॥वृष भान नंदनी कैना
ह नंद नंदन पै खिला मनि नेह वाहा तोमें
जात भाखेहैं॥गोविंद के चरित अठार हो
पुरानन मे सुनि हियो भरि पुनि अभिला
खेहैं॥सुवरन रेख नव अंक दुहू कानन मे
दुगु नित द्रुघ लिखि मानो लिख राखे हैं
२२२॥केसरि सो अंग नागा वेसरि कीछवि

यह हरति छबीली आप सरन को चेतुहै॥
चिंता मनि कोहै अल बेली अक लंक सु-
खी सरद मयंक अंखि यन सुखु देतुहै॥
ललित कनक मय कलप लतामे लग्यो
सुधा मय बिंब फल सुख मा निकेतुहै॥
लाल यों कहत धन्य जीवन मुकतये थ
क्यो मधुर ऐसे अधर कौ लेतुहै॥२३॥ह
य मान तरुनी की रत्ननि की कांति कोवि
चिंता मनि कोहै ऐसो काहां ते प्रवीनोहै॥
सुंदर श्री जको बासरचना रची विरंच या
ते उन बिरंच बधू संग लीनोहै॥हरि गुन
सुनिवाको आपने समीप जी मन पाकोसु
मन सुललित थल दीन्होहै॥सुललित दृं-
दिरा के मंदिर के द्वार कारतार कुबिंद रान आ
बरन कीनोहै॥२४॥सवैया॥ न्हानु भयो ज
बते तबते लिय एक लखी मनि आनु अन-
लमे॥दामिनि ज्यों जमुना प्रतिबिंबित योंभ
लकै तनु नील दूकूलमे॥ देखत ही सुखदेखे
बिना दुखु जादू परी कितते उत मूलमै॥ठो
ढीमे स्यामल बिंदु गुपाल मनो अलि बा-
ल गुलाब के फूलमै॥२५॥सारी सुपेतप

वाह मनो सित फैल रह्यो तनु सोनेके भूप
र॥जोरी जुरे च्चकई चकवा मनो यों सन्धिर
जतहै कुच ऊपर॥कांठते ऊपर आनन की
छवि यों वरनै कविरोक काहू पर॥दिव्य धुनी
मधुनी मधि कंचन कंचु लसे जनु कंचु-
के ऊपर॥२३६॥*॥श्री नंद नंदन कीति
तिया गुर लाज पहार हजारन पेलिकी॥का
न्ह कसोटी के सोने की रेखसी मेचक अंग-
न ऊपर मेलिकी॥मैन महा धन साधन सो
हाति स्याम तमाल अलिंगन केलिकी॥पी
न विलासिनि वाहु लसे मृदु मारुत मनो भु
ज कंचन वेलिकी॥२३७॥दूरिते दीपति देव-
तहीप्रति पच्छ चधून के हौल उजाहै॥च्यारु प
योद घटान के वीच मनो विजुरी की जगी अ-
नु जाहै॥योंछवि सों अधि काति मनो हरि
राधिका की अंग राति भुजाहै॥काधके कौ-
न अलक्षत अंकित मैन की मानो विजैकी
धुजाहै॥मेरुके शृंगते गंग की धार धसी उर
है सुभ हार धसेहैं॥चंदकी चंद्रिका मे सिव
है जनु यो सित कंचुकी वीच वसेहैं॥कंचन
हीं विव नारि के तार को यों मति पीन उतंग

लसेहैं॥तो उर सों उर नाह धसै वैधसे कुच
आपु समाइ धसेहैं॥२४९॥वाल पनै की
निकासी भई वलवादो अयान दै आदि
भुराए॥जोवन को विधरानु दियो उन
आन किये सव काज सुहाए॥चूचक मे
चक वै मनि छत्रन वो कलसा करि कात
नु ढाए॥देवता है रति मैनके हैकुच सोने
केहै मठ मानो उठाए॥२५०॥कवित्त॥ह
ष भान नंदनी के नैन निहारि हारि मानि
कहा सव सुनारि हैं जनके।चिंता मनि लाल
दर सन हेत लल वात सुवरन संभु जुग
सोहत सुलज्ज के॥मैन रति मंगल के सुव
रन कुंभ कैधों कैधों कुंभ कुच जुगल जोवन म
द गज्ज को॥खगकैधों कुम्भ कैधों श्रीपाल सु
दाम के धों श्याम जू के मोहन वो सेभन गुच्छ कंज
के चिंतामनि सोहैं कुच कंचन कलस चारु
नव गन पति कुंभ रोचन के रंगको॥विम
ल वदन दुज राज राचि गुर कीन्हो सेवत
विमद जाहि जमन दुसंग को॥हरि जूकी
प्रीति हेत जग उल हायो पायो जोवन नरे
स राज राधा जू के अंगको॥२५१॥सवैया॥

और तिलोक मे कोन त्रिया अति रूपवती वृ
षभान ललीतें। चोर भये को भयोन चल्यो
उत जोवन राज प्रताप छलीतें॥ मैन महा
बली सोंपि दियो मनु छूटन पावतु क्योंत्रि
बलीतें॥ श्री नंद नन्दन मोहन हेत बिधाता र-
ची मनो बाज कलीतें॥४३॥ को महा मूढ छबीले
के अंगन जाय परयो ज्यो समारो बहीर मे॥ ठा
ने अनठान अधीन जो आपते ताहि को आ
नि सके पुनि तीरमें॥ जोवन पूर बिलासत
रंग उठे मनमोद उमंग समीरमें॥ सैल उरो
ज ते कूदि परयो मनु जादू प्रभा नदी भौंर गं
भीरमें॥ ४४॥ जोवन को आगमन समुझ
के पद छोडि चंचलता चारु चख पर चा
हि धाई है॥ जघन पुलिन लगि आई थिर
ताई चख छोडि पग चाहिके उर जतट र
आईहै। पानिपमे त्रिवली तरंग नाभि भौंर
रूप नदी मध्या नंग ने प्रकासी यों निकाई
है॥ चंचलता थिरता उता रन कारन रोम र
राजी नील मनि सेत रेख पुल छाई है॥४५
कोट कटाछ तुरंगम है पुतरी असवारन की
छबि छाजे॥ मत्त गयंद के कुंभ उरोज बिलो

कात मानस धीरज भाजे॥ श्री मनि चारु रथंग लिलाके है पति विलासन ते जनु साजे॥ सुंदरि ये चतुरंग चमू नृप मंजुल मध्य अनंग विराजे॥२५६॥ कवित्त॥ सोहत छबीलो अंग धीर ति नंदनी को हेरि मंद मुसक्यानि चारु चहुँ तुलन है॥ चिंता मनि इंदिरा के मंदिर अनूप अरविंदतो प्रभात हूं मैं सकात खुलन है॥ सेत सारी हरी सेनिहारी नेकु संनमुख सुख निरखि मन सकात डुलन है॥ सरद मैं पुग दल नीर निघटत मेरु मही पर मानो मंदाकिनी को पुलिन है॥२५७॥ अभिनव उदित मदन रवि रथ चक्र पर पंथी वाल हष्ठा निशामय वेली को याही को सुर दसनस म मात घन स्याम खंडन विरह वैरि सैना चेरि मेली को॥ चिंता मनि याते कहावे चक्र चिन्ह चित भयो है लखि चक्रपानि मेली को॥ श्रुं श्रुमके मानो कुच कुंभ है भवादू धरे जोवन कुलाल चक्र नितंवन वेली को॥२५८ सोभा को सदन अवतरे हो मदन तुम देखिये ललित रूप रीति रतिकेली की॥ * ॥चिंता मनि कहत गुंजरत भौंर आस पास अंबन-

मे साह जिकी वासुहै चमेलीकी॥दीपनिकी दीपतिसी दीपजव वसन वोट कदलीकोमू लसी रुमंजुल नवेली की॥सुर पति सुख हूतें सुख सरसैगो उर परसैगो लाल ऊरू अलवेली की॥२५८॥ खिला मनि सोहत सुभग हेम खंभ चारु जोवन मदनमद पुंडरीकमालसी॥सोनेकी तरकसी है कामकी चरन नख चंद फूली अंगुली वंधुकवाली वानसी॥जेहरि रतन जोति चित्र रंग अंग अवरसीवह मित गोपन निदान सी॥राधा जूकी जंघा मकरध्वज प्रधान कैधौं सिरी को निधान राजै गभिति निधान सी॥२५०॥ सवैया॥ यौं मनि मैन महीप प्रताप लिया तनवेर सुभाउ गिलेहैं॥ आनन पूर निशा करके ढिग वार घने तम आइ हिलेहैं॥वे सुखमा के समूह कढ़े अंगुरी पखुरीन प्र कास खिलेहैं॥छोडि सदा को विरोधकहा कर कंजन सौं नख चंद मिलेहैं॥२५१॥क वित्त॥वरनत इनको सदाही मुनि चिंताम निकीन्हो जो मुदित मन महा मोद मदतें॥ नाह मनु मत्त मोद उलहावे नीके अभिन-

व ललित कल पलता छदतें ॥ स्यामके है सं जीवनि वेलके पल्लव ए ज्याइ लियेजो वचाइ विरहागिनि हूदतें ॥ महा उर रंग रंगे रंगत हैं लाल उर राधिका के चरन अधिक कोक नदतें ॥ चिंतामनि लेई कहो चंद मुखी याकी वडी वडी छवि छाती जिनि सौतन की दहीहैं ॥ चंद मुखी औरे को कहि सकत याके आगे अर्ध रात चंद हू प्रात सचि त्याहीहै ॥ विमल वदन देखि याको तुमहूतो चंद मुखी कहि कान्ह मोह नदी अवगाहीहैं ॥ निरमल दसननषचार सुंदरि के चरन अंगुरि यन सेवत सदाही हैं ॥ ४५ ॥ इति श्री चिंतामनि विरचिते कवि कुल कल्पतरौ श्री राधावर्णनं पञ्चम प्रकरणम्

॥ अथ नायकावर्णनं

दोहा ॥ सकल धरम जुत निपुन धन विक्रम पूरो होइ ॥ ताको नायक कहत हैं कवि पंडित सब कोइ ॥ १ ॥ प्रथम धीर पद दै गनौ नायक ए निरधारि ॥ कहि उदात उद्धत वहुरि ललित संत ए चारि ॥ २ ॥ महा संत गंभीर अ

व क्रिया सिद्ध जो होइ॥ अवि वाम्मान धीरादि मन यो उदात कहि सोइ॥ ३॥ धीरा उदोत लक्षण॥ कवित्त॥ पिता राम राज अभि षेक को बुलाय पुनि वन को पठावे नहीं बद ल्यो बदन रंग॥ प्रबल वैरी को भैया सर न हि आयो तासों कारना निवात आपु रहे मि लि एक संग॥ हन्यो इंद्र जीत कुंभ करन औ रावन ए एक एक तिहूं लोकन के जेता अ भंग॥ इंद्रादिक देवतानि बरनी बड़ाई आ इ नेकु न भे नाही काहू प्रगटयो गरब अंग ४॥ दोहा॥ प्रबल गर्व मत्सर सहित चंडवि कत्थन होइ॥ मायावी जो जगत मे धीरो द्धत हे सोइ॥ ५॥ सवैया॥ याहि यो उग्र सु भाउ पर्यो सब छत्रिय वार इके संघारे॥ गर्भ लगे इन छत्रिन के कुल खंडित की न्हे भये बार भारे॥ तें जगके गुरु संकर को धनु तोर्यो कहा मन मोह विचारे॥ राजकुमा र यो तीरवन धार पर्यो हौन कानकुठार हि ह से दे॥ धीरल लित लक्षण॥ दोहा॥ सुंदर अ ति मन हरन गन सुखी कान्ह सो होइ॥ क ला सक्ति निहि चित रहु धीर ललित है

सोइ ॥७॥ सवैया ॥ मोर किरीट लसे चपला पट नील वला इक रंग हरेहैं ॥ गोप के कंध धरे भुज दंड अनूप विलास प्रभानि भरेहैं ॥ कान्ह लिये नव मंजरी मंजुल कुंजन ते निकरेहैं ॥ सुंदर मार हु ते सुकुमार सों वे लखि नंद कुमार खरेहैं

॥८॥ धीर प्रसांतको लक्षण

दोहा ॥ विप्र सखा गोविंद को धरम ज्ञान निविष्ट ॥ इंद्रिय विषयन तें विरत सो प्रशांत अति शिष्ट ॥ ९ ॥ श्रृंगारी नायक बहुरि च्यारि भांतिके जानि ॥ प्रथम कह्यो अनकूल पुनि दक्षिण नाम बखानि ॥ १० ॥ बहुरि धृष्ट पुनि सठ कह्यो लक्षण फिरि अनुरूप ॥ बरनत ए श्रृंगार के आलंबन नृप रूप ॥ ११ ॥ एक स्वकीया मेंरमें सो अनुकूल बखानि ॥ सबमें सम बहु नारि रत सो दक्षिण मन आनि ॥ १२ ॥ अनुकूलको उदाहरन ॥ सवैया ॥ पीतम और वधू सो मिल्यो भनि जाने सबै गुन दोख विसरैं ॥ मैं सब कों ते उपाय रचे पिय को सह और तिया मुख पेखे ॥ मेरो विचार अंचा विचक्षन १

मोपैनहु ऊलत है हसि हेरे॥पावे काहौ वि
त दूसरी बात चकोर जो चंद्रमा को समले
खै॥१३॥दक्षिण को उदा हरन॥दोहा॥स
व अपने मन मुख लखत होत सकल सा
नंद॥कालनि कलित मनि अति ललित
प्यारो पूरन चंद॥१४॥धृष्ट लक्षण॥दोहा
पुरुष प्रगट अपराध जो निरभै आवै गेह
कहे धृष्टति य धन्यते तासों करै सने
ह॥१५॥रिसनि निकारी गेहतें निपट नि
ठुर करि जीउ॥वार बदलै हेरत कहा सं
ग सोवतु है पीउ॥१६॥सठ लक्षण॥दोहा
॥छपि तियको विप्रिय करै बाहिर प्री
ति दिखाइ ऐसो नायक होइ जो सठ करि
बरन्यो जोइ॥सठ को उदा हरन॥सवैया॥*
प्यारी कहो हमसों निसि बासर यों कछु
प्रीतिकी रीति निहारी॥केहूं कृपा करि
मोहि चहो मनि हौंतो उपाइ घने करिहा
री॥कैसे छपै हमसों जो छपाइ भयो नि
त औरके संग विहारी॥और कहूं हिय
अंतर की हमसों सुखकी पिय प्रीति तिहा
री॥१८॥ अथ शृंगार लक्षन॥हाव प्रसंग-

वर्णनं ॥ सवैया ॥ पीली उच्चा रीनलेसु
रह्यो तम माया निसाके सहायन के ॥ कु
रहंद सुधा भर बृंद भरे अक लंक अनू
प सुभायन के ॥ अंगुरी मनि नीलकै पा
सिनके मनौ अंक परे सुभ दायन के ॥ उ
र अंतर सुंदर आनि उये नख इंदु गुविंद
के पायन के ॥ १९ ॥ तेरे नहीं दु संतोष त
ऊ जो रहे तिहुं लोक की संपति कों मिलि
है ॥ थिति वे मकरंद सुधा भर बेलि संतो
ष की रासन मैं खिलि ॥ लीहि सुहातु है रा
ग घनौ मनि राग लसै जिनि मैं तिनिमैं
हिलि ॥ चाहै जो सीतल ता हियरे हरिके
पग मंजुल कंजन सौं मिलि ॥ २० ॥ कान्ह
की ऊरु लखे जग के कदलीन के मूल
ल की छवि लाजै ॥ यौं बल खानि उदंड
लसै लखि दिग्गज सुंडन के मद भाजै
जो हरिके हर रोमके कूप अखंड बनी ब
र भंड समाजै ॥ ता गुरु भारके धारन कौं
मनौ नील महा मनि खंभ विराजै ॥ २१ ॥
सैलसै सैल उठाइ लियो बलकी अधि
काई सुयौं दरसै ॥ कर ऊपर सोहत अंग ॥

दो दधिके जल फेरे॥ जेइनको पल ध्यान ध
रैं मन तेन परैं कबहूं जम घेरे॥ राजे रमार
मनी उप धान अभै वर दानि रहै जन नेरे॥
हैं बल भार उदंड भरे हरिके भुजदंड सहा
क मेरे॥ २६॥ कान्ह को कंबुजु कुंकुम रं
जित भागनतें मनहूं मन आनो॥ श्रीकम
ला वल यावलि अंकित सुंदरता जग ऊपर
जानो॥ हैं रम नीयत्रिरेख मनो अब तामै ल
सी मुकमालि वखानो॥ एक निवास के नेह
मिले सुभ संख सों सूतिन के सुत मानो॥
२७॥ लखि लोचन नील सरोज मिलैहैं प्रका
सत प्रेम प्रमोद घनो॥ मनि कानन मैं मुक्त
ता झलकैं उठिहैं परिचार मनो अपनो॥ मुस
क्यात सदा नद नंदन को मुख यों सुख मा
को समूह गनो॥ यह सांवरी स्वच्छ पसारत
चांदनी सांवरो सुंदर चंद मनो॥ २८॥ कान्ह
के अंगन की छवि देखत नीकोन अंग लगै
आरसी को॥ ऐसी मनो हर मूरति मैं मन
लागत है मनु धन्य जसीको॥ सोहै सुभाव
कपोलनि मै नद नंदनको मृदु मंद हसी २
को॥ नील महा मनि आरसी माहं मनो भा

नव हाइक जोहैं॥मानिनि के मनको धौंजु
री सर नैननि मैन कमान मनौहैं॥वेदनिही
के बिचार यहै सदा सेइये नंद कुमार की
भौंहैं॥३४॥पैठे जबै सुख मा जल न्हान
को व्याकुल है बिरहा नलडाढ़े॥जोराव
री जिनसें चलि मनिहै व्रज नारिन के
मन गाढ़े॥श्रीनद नंदनजू के मनोहर का
नन कुंडल यौं छवि बाढ़े॥देखन वाह म
नो मकर ध्वज तारिव सुधारस कुंडल गाढ़े
॥३४॥कान्हकी मूरति देखी हुती जिनतो
स्निगरे व्रज ऊपर जानो॥काहेन ध्यान ध
रै निसि वासर भागनते मनहूं मन आनो॥
सो सी लसी नंद लालके भाल मैं कुंकुम
को अस नाइ बखानो॥दिव्य उदै को समै भ
लको विध भाग मै राग विराजत मानो॥
३५॥लाग निरंतर जाहि बखानत है सिग
रे निगमो पचि हारे॥स्याम की सोभन रू
प कला कहं पावत कोटि अनंग विचारे॥
आनन ऊपर मोर किरीट सुधार विराजत
घूंघुर वारे॥इंद्रके चाप समेत मनो विधु
मंडल ऊपर वादर कारे॥३६॥दोहा॥जे

बैठकीनि तान मृदु घूघुरू मृदंग धुनि घोरकी
सुंदर रतन मय मंदिर सुंदरीनि संग खेल
नि ललित लाल ललित किसोरकी ॥ ५० ॥ प्र
तीप संदीप्त करो यो उद्दीपन बिभावको बि
वेक कियोहै ॥ दोहा ॥ आलंबन गुन दूंनितो
आलंकार रसलीन ॥ पुनि तटस्थ चौथो कह्यो
उद्दीपन परबीन ॥ ५१ ॥ आलंबन गुन रूप अ
रु चेष्टादिक चित आनि ॥ बहुरि हाव भावा
दिये चेष्टा लखी जानि ॥ ५२ ॥ नूपुर अंगद हा
रकुल आदि अलंकार देखि ॥ मलयानिल
चंद्रादि ए सब तटस्थ लेखि ॥ ५३ ॥ यापर
हम यों कहत हैं ॥ * ॥ दोहा ॥ उद्दीपन के भाव
र सुने कहूं हम नाहिं ॥ चेष्टा चाला हिलाबा
है समुझो नीके जाहिं ॥ ५४ ॥ आलंबन के तु
न सबै आलंबन को कीन्ह ॥ तै उद्दीपन को क
है चपल लगे यह नीच ॥ ५५ ॥ सौंदर्यादिक
गुन रहित आलंबनै न होइ ॥ आलंबन गुन र
हित जो बरनि सकै नहि कोइ ॥ ५६ ॥ चेष्टाद
की आपुही बरनैगे अनुभाव ॥ अब उद्दीपन
कहत हैं जैसे बुद्धि प्रभाव ॥ ५७ ॥ आलंबन
की अलंकार है आलंबन माहि ॥ सो उद्दीपन

है कवि कुल कल्प तरौ पञ्चमं प्रकरणं ॥

॥ दोहा ॥

दृति कारज अनु भाव गनि एकादश है आ
दि ॥ मधुर अंग इहा कहे सहृदय सुखद
अनादि ॥ १ ॥ जेपुनि थाई भावको प्रगट क
रै अनयास ॥ ताहि कहत अनु भाव हैं स
व कवि बुद्धि विलास ॥ २ ॥ कवित्त ॥ जोबन
सिंघासन मै सुंदरि को रूप भूप दीलम र
हैन जाके उप मार पनमै ॥ चिंता मनि क
वि किलोकनि मुस काइ पाइ होत है मु
दित जैसे पिव तरपन मै ॥ सोहत वदन बा
ल घूंघट की ओट पिय कीन्हो तन मन र
थन जाके अरपनमैं ॥ विलसत मनो प्रतिबिंबि
त सरद चंद विमल पदुम राग मनि दरप
न मै ॥ ३ ॥ लाल रंग कंचन किनारी दार सा
री तैसी लाल की नरवल मुकतान कीउजारी
है ॥ बीजुरी की छटासी छबीली ही कछ
नि तैसी चिंता मनि नील घन घटन को धी
रोहै ॥ मोहि देखि मुरकि मधुर मुसक्याइ
न्याइ कीन्हो चित चपल कटाछन कोन्यै
रोहै वाको फेर घूमर ललित पटु लहँगा

की मनोहरभ्रमनमैभ्रमतमनमेरोहै॥ ४॥ दोहा॥
स्वेदतंभ रोमांच कहि स्रुनि सुर भंग वनाइ
वहुरि कंप वैवरंग्यागनि आसू अवलीना
इ॥ ५॥ आठ सात्विक ए कहत सज्जन गन
मन आनि॥ इनको हेत उदा हरन एक कवि
त मै मानि॥ ६॥ कवित्त॥ लोचन नि भाल
को प्रमोद जल कंप स्वेद सलिल अचल
तनु पुलक पसारोहै॥ पीत रंग भयो मुख
वैन निकारैन मैन हूं गित हरन करि खेल
यों उघारोहै॥ देखत परस पर यहे गति भ
ई उनदेवता स्वरूप धेय आपनो बिचारोहै
वचन अगोचर जो परम आनंद नंद नंदन
सो रूप भान—— नंदनी निहारोहै॥ ७॥ सं
चारी भाव लक्षन॥ दोहा॥ जे विशेष ते था
इवो अभिमुख रहे वनाइ॥ ते संचारी व
रिणये कहत वडे कवि राइ॥ ८॥ रहत सदा
थिर भाव मे प्रगट होत इहि भांति॥ ज्यों
कल्लोल समुद्र मे यो संचारी जाति॥ ९॥
सोनिर्वेद विस्त्रमजहंजडता धीरज हर्ष
दैन्य उग्रता चितन्ना साइखो है अमर्ख॥ १०
गौरव सुमिरन मरन

पै काहाती कोहू हसै जो सखी जनती गाढि
जाति सको अन वाल अयानी॥स्याम ति
हारे सनेह रहै मृग लोचनी सोच संकोच
समानी॥२३॥श्रमको उदाहरन॥सवैया॥
रति अंतकछू अल साइ उठी तिय थाके
लिया करि रुका दिये॥मनि वेनी है पीठ प
री विथुरी अपने कर दूनी वाम लिये॥भालके
श्रम बिंदु छुटी अलकों बिह सोहैं ले गोल
कपोल किये॥अब केउप जावत लोचन
को सकुचौंहैं सलोचन आलहिये॥२४॥
धैर्यको लछन॥दोहा॥ ज्ञान सक्ति आदि
कनते जो संतोष प्रभूत मानि॥निज अदृष्ट
परि पाक सो व्यग्र चित्त पहि चानि॥२५॥
धैर्यको उदाहरन॥कवित्त॥ पूरब करम वस
भूमतहै भूतल मै पूरब जनम जो कियो
है सोई पायहे॥तिनसों महीप कोऊ काहे
को गुमान करै चिंता मनि जिनको सहज
चित्त चाहहै॥कोस दस बीस को नरेस वि
तायो काहा होत बिस राये परमेश्वर सहा
यहै॥सबके सदाही साथ अनाथन को ना
थ हमै काहा दीन बंधु विश्व नाथ बिसरा

येहै ॥ २६ ॥ दोहा ॥ सकल आचरन ज्ञानकौ अक्षमता जित होइ ॥ प्रिय अप्रिय देखै सु नैं जड़ता कहिये सोइ ॥ २७ ॥ जड़ता कौ उ दाहरन ॥ दोहा ॥ अन मिख लोचन देखिबो चुप रहिबो इत्यादि ॥ होत काज बरनत रहत यों सब सुखद अनादि ॥ २८ ॥ अन मिख लोचन व्है रही हली चली नहिं बा ल ॥ चित्र पूतरी कीहि छवी अप छपा ला ल ॥ २९ ॥ इष्ट वस्तु पाय हरख मन प्रसा द जो होइ ॥ आंसु स्वेद गद गद बचन तनै सब कोइ ॥ ३० ॥ सवैया ॥ यों मन बैठी चित्र रति हो मधुमें अब होन वियोगी अनं गसों ॥ पीउ अचानक आइ गयो सु परीप गायो सिंगार दुरव अंगसों ॥ बाहिर भीतर सूल ऐसो भयो ब्रद मेरो अनंद उमंगसों पूर उमंग भगी रथ लौ तप जैसे विरंचिक ल गंगसों ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ जो दारिद्र विरहा दिते होइ मलिन ता कोइ ॥ चिंता मलिनता दिक करि होत दीनता सोइ ॥ ३२ ॥ तापती नहीं तपत हौ जग मैं पाप प्रवीन ॥ अबकौ दया सुदीन पै कीजतु दया नदीन ॥ ३३ ॥ दृ

सो उदाहरन ॥ सवैया ॥ मोहके दोसन नांह
विदेसन चाहि सदस्य पाली पठाई ॥ सोच तिया
ति सबै पलको पलको नभरे सुत हांई ॥
बैठति नारि जहां सुकुमारि है लोचन वारि
न आंखि लगाई ॥ सांई मिले मनो याफ
लको आनि बैठीहै आंसुन की जल साई ॥
३३ ॥ दोहा ॥ कछु अपराध लखै जहां रोस
चढ़ उत होइ ॥ तर्ज नादि कारन जहां होइ
उगनता सोइ ॥ ३४ ॥ राम सील जगता पह
र सीतल सुखद अपार ॥ रुक्मसंन के संहा
र को अनल भयो इक वार ॥ ३५ ॥ चिंताक
हि यत ध्यानहे सन्य तादि जित होइ ॥ आ
सूर स्वासिता पतित बरनत हैं सब कोइ ॥ ३६ ॥
चिंताको उदाहरन ॥ कवित्त ॥ गूंथति है मानों
मुक्ता हलको हार वह चारु नीर नैननि २
की धार यों हरतिहै ॥ अरुन अधर कहि का
है को दूखित करे कौन हेत आजु ऊंची सास
न भरतिहै ॥ अचल व्है रही केलि मंदिर में
चिंता मनि मथन वदन चंद्र चंद्रिका पर
तिहै ॥ बैठी कांत आजु कर कमल कपोल
धरि ध्यानतूं कमल नैनी कौनको करतिहै

३७॥ दोहा॥ काहु उपाद्रु कोपादि कर उपजत भय जो चित्त॥ ताही सों खंडित कहत त्रास जानिये मित्त॥३८॥ सवैया॥ मानवती को मनाइ रह्यो वह चंदमुखी त्रिय केहू न मानी॥ ऐते में आइ गई पुरवाई लगे वरही गन बोलनि वानी॥ ऐ तैसें आइ उमंडि १ अचानक कारी घटा घनकी घहरानी॥ चौंकि परी चपला चमकें चलिकें पति की छतियां लपटानी॥३९॥ दोहा॥ जो स मृद्धि पर गुनन की उत्तम सही न जाइ॥ अ भंगा दिक ईरखा वरनी बुद्धि वनाइ॥४०॥ कान्ह कह्यो देखी न कहुं राधा की अनुहा रि॥ कह्यो सत्यभामा सुनी राधा गोरी ग्वा रि॥४१॥ श्रम रख अपमानादि ते चित्त प्र ज्वलित जानि॥ नैन राग सिर कंप अरु त र्जे नादि कर मानि॥५२॥ कवित्त॥ बोल्यो हनूमान रावन सो सकल सुरा सुर सिद्धन आगे॥ जंगम अनय रक्ष रक्ष सत्व क्वतु कहो कहां कपिकुलसें भागे॥ भुज साध न चढि मुडपक्क फल तोरत प्रख रस भर अति जागे॥ पाइ रुधिर वल देउ भैरवनि

रण॥ दोहा॥ स्वप्न नींद अरु अर्थको अनुभ
व जो काहू होइ॥ सुखदुखदा दिवा हेतुय
ह स्वप्न कहावे सोइ॥ ५५॥ प्यो आयो परदे
सतेसुनि सपने कीबात॥ पति आगम प्रति
बिंब लखि साचु भयो वह प्रात॥ ५६॥ स
पन संग जागि दुख उठे पिय आगमन नि
हारि॥ सखी कलप तरु बाग है वीच अर
न्य उजारि॥ ५७॥ मन में मीजल जाद बाहि
अमा दिवानिते होइ॥ स्वासा दिवा तहं दे
खिये सब इंद्रिय लय होय॥ ५८॥ सवैया॥
मांगते छूटी ललाट लटे लसे लर मोतिन
की लटकी चट कीली॥ बेसरि की मुकता
हल डोलत यों मानि प्रा मन लेति रगीली
ढीली भुजा कीए पीठि छुवे लपटाइ रही
रीते अंतर सीली॥ सोई अजो छतिया हेल
गी सुई ज्यों छतिया मन मांह छबीली॥
५६॥ दोहा॥ निद्रा को अवसान जो सो विवो
ध मन आनि॥ द्वग मद इन अंग राइ अरु
जंभा दिक इत जानि॥ ६०॥ उघरत तियद्द
ग जुगल छबि निरखत नंद कुमार॥ खुल
त जलज जुग जागि जनु चुल वुलात अ

लिचार॥ ६१॥ लज्जाको लक्षण॥ दो॰॥ हानि दि
ठाई की जुहै सो लज्जा मनि आनि॥ मुख
ना रुलि आदिक कछू होति तहां है वा
नि॥ ६२॥ वेंदी पिय पट मे लगी लीन्हो अ
ली उतारि॥ वूडि गई अब सोचि हूत सकु
च सिंधु सकु मारि॥ ६३॥ जो ग्रहादि आ
वे समय दुख। दिक ते होन॥ अप स्मार
भूपात तित पोन मोन अधिकात॥ ६४॥
मोह लक्षण॥ दोहा॥ मोह कहत है ताहि
को जहां ज्ञान मिटि जात॥ विमल दुख
चिंतानि ते जहं अनि विह बल गात॥ ६५
खान पान परधान सब ज्ञानबिसारो वा
ल॥ यों माही तुम को निरखि तुम निरमोही
लाल॥ ६६॥ मति लक्षण॥ दोहा॥ नीदपं
थ अनुसारहे आदि अरथ निरधारि॥
मति ताते कछू हास्य रस अरु संतो प अ
पार॥ ६७॥ विना प्रयोजन मित्र जो सोई मि
त्र वखानि॥ मित्र प्रयोजन ते जुहै सतो मि
त्र जिय मानि॥ ६८॥ विन मतलव को र
यार जो सासो कीज्यो प्यार॥ मतलवलेंया री या
रै कहा मतलवी यार॥ ६९॥ निरू दिक

ने होतहै उत आलस अंग सोइ॥नैन अध
खुले भांति यह बरनन सब कोबिद होइ॥७०॥
आलसको उदाहरन॥कबित्त॥ छूटे हाथनि
दैहै सिंगार सब अंगनि पै कोटिक सिंगा
रनकी अंग भाल [illegible] की॥ हिला [illegible]
कौहै अहो जाये कोहि जाल गोरे कुसुमोद
हन पर आभा [illegible] की॥ सुरजानि र
लिखिहै ऐसो छल्ले ललोनी यह लागी पी
की लालित कपोल पान बान की॥ रतिर
ति रंग [illegible] रसुली खोली खुली र
हि आलू अध खुली [illegible] की॥७१॥
दोहा॥ भोजन मांह उद्योग जो नेहहु आल
स जानि॥ बहु आलस लच्छन राय विख्या
[illegible] बखानि॥७२॥ ऐसो करै को काम ल
हु कामहु सिथिल सुभाय॥ जो करिबे पि
य संग सो प्रबल करावत काम॥७३॥ दुष्ट
निष्ठा [illegible] लै संभ्रम अभिलाष होइ॥ ता
ही सो आवेग कबि बरनत मैं धनलेइ॥
७४॥ अवेगको उदाहरन॥ सवैया॥ श्री वृष भा
न कुमारि के संग मे केलि रची हरि जमु
ना तट॥ दंपति कुंज के मंदिर मे बहलीव

नमाल वनीमुकता छ्न ॥ भूखन वास गि
रे रति रंगमैं पायो त्यों काहू को बोल को
आहट ॥ आकुल ह्वै हरि मेचक अंबर
राधिका ओढ़ि लियो पियरो पट ॥ ७५ ॥
चिंताको उदा हरन ॥ दोहा ॥ मिलन गई
तुल कौन बल मिले मुई यह बालि ॥ नि
रखि तुम्हें नंदलाल जो सोचति है वह बा
ल ॥ ७६ ॥ वितर्कः लक्षण ॥ दोहा ॥ जो
विचार संदेह ते सो वितर्क यह जानि ॥ सि
र अंगुन तन है जहीं चिंता मनि मन आ
नि ॥ ७७ ॥ संशे पन आकार को सो अव
हित्थ वषानि ॥ प्रस्तुति तजि कछु और
को कवि को वाष्न सवानि ॥ ७८ ॥ जान
तलोकाञ्जलि न लगि कौन लालस को
न ॥ दोऊ एको है गए कहा मौनही मौन
७९ ॥ व्याधि वियोगा दिकन ते हसता
दिक निरधारि ॥ कंप ताप भूपात हूत २
आदिक यों जु निहारि ॥ ८० ॥ सवैया ॥
काहू की बात सुनैन कछू नकहे कहा
चित्तके बीच विचारै ॥ नैननि नीर भि
रहे भिरै कछु अंगन हूं की नवानि सं-

मिलाविन रथ लाभ मैं नहिं विलंब सहि
जाइ॥ उत्कंठा जामैं कछू आकुलता अ
धिकाइ॥ ९६॥ दूल्ह हिनके विछिया व
त थरैं दृग उल जात॥ ज्यौं ज्यौं होइ वि
लंब अति त्यौं त्यौं अति अकुलात॥ ८७॥
दोहा। दिखाते होत है थिरता कछू जहान॥
स्वछंदा रचनादि को है चापल्य निदान॥
आवति ढिग छूवति न तन हसत दुरान निहारि
चपला पल अति मद छकी छकी छबीली नारि
इतिश्री चिंतामनि विरचिते कविकुलकल्पतरौ षष्ठ प्रकर

दोहा॥ भाव हाव माधुर्य वहु हेला धर्म
वखानि॥ लीला और विलास कहि पुनि
विछित जानि॥ १॥ विभ्रम किल किंचि
त कह्यौ मुट्टायत पुनि आनि॥ वहुरि कु
टुंबित वरनिये पुनि विबोक वखानि॥
ललित कुतूहल चकित गन समुझि
विहृत अरु हास॥ चेष्टा अष्टा दस गनी
या शृंगार प्रकास॥ २॥ जो प्रतीप दोन्हू
यकै साहित्यदर्पन माह॥ इस रूपको मत
क्रम कहे विश्वनाथ कवि नाह॥ ३॥ जो
वनमै सत्वज काहत अलंकार ए बीस॥

हस रूपक मैं तिन कहे सुनहु सुकवि मग
हेत ॥ ५ ॥ साहित्य दर्पन मै कहे आठ औ
र अधिकाइ ॥ विश्व नाथ मत कवि कह
त ते अब सुनहु बनाइ ॥ ६ ॥ भाव हाव
हेला प्रथम तीनौ ऐसे जानि ॥ सोभा कां
ति कही बहुरि दीपति और बखानि ॥ ७ ॥
पुनि माधुर्य प्रगल्भता औदार्य गनि
और ॥ धैर्य सांत अज नाम यह कहत
सुकवि सिर मौर ॥ ८ ॥ लीला और बि
लास कहि पुनि बिछित्ति बषानि ॥ बि
भ्रम किल किंचित बहुरि मुट्टायत पुनि
जानि ॥ ९ ॥ बहुरि कुट्ट मित बरनिये पु
नि बिब्बोक्क बिचारि ॥ चिता मनि कवि क
हत यौ सज्जन लेहु बिचारि ॥ १० ॥ ललि
त विहृत हस ए कहे ए हस रूपक माह ॥
आठ और बरने उहे बिश्व नाथ कवि ना
ह ॥ ११ ॥ तपन मुग्ध विक्षेप पुनि बहुरि कु
तूहल मान ॥ हसित चकित अरु केलि
पुनि अष्टा दस ए जानि ॥ १२ ॥ दस प्रता
प रुद्रीय कौ कहे अठारह भेद ॥ तिनको
लक्षन उदा हरन बरनत सबै अभेद १३

है सब जोबन संधि मे मैनके दसौ विका
र॥ भाव बरन यों कहत हैं विद्यानाथ प्र
कार॥१४॥ कोकिल कूका सुने उमगे स
नरु पीछे लिख्यौ है॥दोहा॥ भूनेत्रादि
वि कारजो कछुउपजे मन माहि॥कछु
सलक्ष्य विकार वह भाव हाव है जाहि॥
१५॥ हौं निकासी हिग ह्वै सुयों अंदान पु
लक जनाइ॥*॥ हेरि तिहारे हगन सों
चली बाल मुसक्याइ॥१६॥ जहां देह
हग भौंह मुख इंगित अति अधिकात॥
अधिक प्रगट मन भावते हेला सो क
हि जात॥१७॥ सवैया॥ करसों कर जोरिकै
आनन इंदु को वदु लता पर वेख करे॥
अगिराइकै अंग दिखाइ दुरे मन मोहन
को मुसक्याइ हरे॥ मृग लोचनी नैन वि
लासनि सों पियके हिय भीतर मोद भरे
मन मोहन मोहन भावन ही सों बुलावे वि
ला सिलि कुंज घरे॥१८॥दोहा॥ विना वि
भूखन मधुरता सो माधुर्य बखानि॥ स
कल अवस्था मै सदा लसै छविन की खा
नि॥१९॥ कवित्त॥ ओठ मनो रवि विंब प

लीचात चंद्रिका बाहिर निकसति है ॥ मृग
लोचनी की वह काहू अचानक हंसि हेरि
कै मूरति मेरे मन मे बसति है ॥ २९ ॥ विभ्र
म लक्षण ॥ दोहा ॥ आनंद अंग आभान को
अंग अंग आवेस ॥ त्वरित समै विभ्रम य
है वरनत सुकवि सुरेस ॥ ३० ॥ सवैया ॥ देख
त कौन हमै अवलोकि धौं आली काहा य
ह वेख कियो है ॥ को करि है तिल नायो च
है मन मोहि गयो इहि भांति हियो है ॥
नूपुर हाथन पाइन मैं पहुंची कटि हार
लपेट लियो है ॥ तेरे कहा उर नैन महा उ
र अंजन ओठन बीच दियो है ॥ ३१ ॥ दोहा
क्रोध आसु अरु हास भय आदिक जहं
इक वार ॥ किलि किंचित तासों कहत स
व कवि बुद्धि विचार ॥ ३२ ॥ कवित्त ॥ दंपति
अनूप वैस सुरति अरंभ समै ते होऊ रस
रीति मैन सरसाति है ॥ लाल न चढ़ाइ त्योरी
भौहै मिसि कोर कोप मानि मन छतिया
की छुवनि सुहाति है ॥ वहिया गहत पिय स
न तिन प्यारी भारी कोपते निहारि देद
नैनन कसति है ॥ ३३ ॥ नहियां करति नीचे

खोलति नवेली बाल रोवति रिसाति अर
साति मुसक्याति है ॥ २३ ॥ दोहा ॥ जहं पि
यकी बातें सुनति भाव प्रभा सित होइ ॥
ताहि शुद्ध मित कहत हैं यों बरनत सब
कोइ ॥ २४ ॥ सवैया ॥ कान्हकी रूपको पावै
नवे विधि कोटि अनंग गन्यो ऊपर वारि
मेरे कहेगी सुनि कै उत जैसी भई वह वे
सीस्न आपु निहारे ॥ रोम उठे दृग मूंदे से
नीरसों कीन्हो वधू मन मांझ विहारे ॥ सो
हिराई मन मोहन रू मन मोहन मोहन
मंत्र तिहारे ॥ २५ ॥ दोहा ॥ प्रिय कर तनम
रकहु मन सुख पावै वर नारि ॥ फिरि हू
ग सिर कंपलको सो कुद्ध मित विचारि
२६ ॥ कुद्ध मित को उदा हरन ॥ सवैया ॥ क
छु देखति चित्रहु त्यों चित मैं तिल आनि
अकेलि ये ठाढ़ी भई ॥ विहसौंहें से नैननि
से ननिसों मनकी मनि प्रीति भई जुनई
कुच गाढ़े गह्यो कर औचकमें भिभ्मक र
कातल हाथ अनूप भई ॥ हिय पीरी वहेति
य पीर जनाइ कछू सिसकी मुसक्याइ ल
ई ॥ २७ ॥ दोहा ॥ रूठहु को अप मान कोक

उघरयौ अधर लहि बोल कछू पर आयौ नबो
ल यौं साज गही ॥ सुधि आवत ही कछुवै छ
तिया जो कछू बतिया बोलिआनकाही ॥ ५७
दोहा ॥ जोबनको आगम लसै बिन बातहि
जो हास ॥ हंसनि नाम सो तियनको लसत अ
नूप विलास ॥ ५८ ॥ उदित कहत जोबन ससी
प्रगटयौ हास प्रकास ॥ लो नीको आयो भल
कि नैनन ललित विलास ॥ ५९ ॥ रूप सो
भा प्रभुता ते सोभा अंग सिंगारि ॥ मनमथ
उसापित सुतौ कांति कहति निरधारि ॥ ५० ॥
कांतिकु को सिंगार सो सो दीपति पहिचा
नि ॥ चिंता मनि कवि कहत है रस ग्रंथन को
जानि ॥ ५१ ॥ सोभा कांति दीप्ति प्रभा सूर्य को
उदा हरन ॥ कवित्त ॥ बैसकी उठौन ठौन रूप
की अनूप कान्ह अंग अंग औरै कछू को
प उठा हरति है ॥ चिंतामनि चंचला बिलास
को रसाल नैन मदन के मद मोर आभा उ
म हति है ॥ कुंदन की बेली सी नवेली अ
लबेली बाल दौतिक गरब की सो गौबला
गहति है ॥ उझकि झरोषे तुम्हे चाहिवे कौ चं
द मुखी चोसहू मे चंद्रिका पसारति रहति है

राज॥कान्ह कुवर की वनीकी कहा वनी छवि आज॥ ६४॥ इति श्री चिंता मनि विर चिते कवि कुल कल्प तरौ रस प्रसं॥

श्रृंगार रस

दोहा॥जामैं चाहै रति सुतो मनकी लगन अनूप॥ चिंता मनि कवि कहत हैं सो श्रृंगार स्वरूप॥१॥सुतो सदा संजोग है विप्र लंभ कहि और॥द्विविधि होत श्रृंगार यों वरनत कवि सिर मौर॥२॥जहां दंपती प्रीतिसों विलसत रचत विहार॥ चिंता मनि कवि कहत है यों संजोग सिंगार ३ श्रृंगारको उदा हरन॥कवित्त॥कंचनकी सी वारन संकुल ललित मंच नग जडितन मैं उलहे मरीचवर॥वैठी प्रान प्यारी संग राधा सुकुमारी जाके चिंता मनि अंग नग विलास है अनंग लर॥कोऊ मृगनै नी लिये हाथ मैं चमर चारु काहूकोऊ कर सजै पानन वीडन का कर॥निरमल मनि मय महल मैं वैठे चंद्र वदनी सु लावैं लाल झूलत हिंडोरे पर॥५॥ तीसरो उदा हरन॥सवैया॥ चंद्रिका सी

धरियो सिंगारो जगमोंथके ऊपर दंपति सोहैं ॥ दूधके फेनसी सेजके ऊपर रूप अनूप प्रभा मन मोहैं ॥ ह्वां पिय प्यारीके चारु जुरे दृग दूर दुरेही सखी जन जोहैं ॥ श्याम भयो ससि देखि मनो किय दंपति पंकज ज्यें दल कोहैं ॥ ६ ॥ कवित्त ॥ चैतकी चांदनी के ज्यो चंद अब लोकनिते छीरनिधि छिबको पूरन पूर उमगे चिंता मनि काहै मन आलद मगन ह्वैके बिहरत दंपती परम प्रेम सों पगे ॥ अध खुली अखियां सुरति सुखरस बस मानो भोर अध खुले कमल से भै खगे प्यारीके सकल तन श्रम जल बिंदु सोहैं कनक लता मैं मुकता फल मानो लगे ॥ ७ ॥ चुंबन आलिंगन हिदे आदि विविधि बिधि भोग ॥ चिंता मनि श्रृंगार मैं सो कहो संजोग ॥ ८ ॥ जहां मिले नहिं नारि अरु पुरुष सु बरन वियोग ॥ विप्रलंभ यह नाम कहि बरनत सब कवि लोग ॥ ९ ॥ विप्रलंभको साधारन उदा हरन ॥ ज्यों ज्यों जलु डारत जलद त्यों त्यों जारत जागि ॥ सम उपाय बिरहित बिरह यह पानी की आगि ॥ १० ॥

दोहा॥सो पूरव अनुराग अरु मान प्रवास बखानि॥ पुनि कहिये करुनात्मक सुकल लेहु मन आनि॥१२॥होइ मिलनते प्रथम ही सो पूरव अनुराग॥ याँमै दसन कहत सब लगकवि दसा विभाग॥१३॥ पूर्वं अनुराग को उदाहरन॥ दोहा॥लखत सुधा सी तव लगी सब जारति ज्यौं आनि॥ विसैवि खा सिनि की भई वह मुरिकै मुसक्यानि॥१३॥ प्रेम प्रीति अखियान की पुनि मन संगम जानि॥ पुनि संकल्प बखानि ये पुनि प्रवास उर आनि॥१४॥ बहुरि जागरन बरनिये क्रमता और बिचारि॥ पुनि लाज को छोड़िबो पुनि मज्जन निरधारि॥१५ पुनि उनमाद बखानिये मूर्छा और बखानि मरन अंतकी दसा ए बारह भांति सुजानि॥१६॥ प्रथम बरन अभिलाष पुनि चिंता चितमें आनि॥ बहुरि सुमिरिबो गुन कथन बहुरो सुमति बखानि॥१७॥ पुनि उद्वेग प्रलाप गनि पुनि उन्मादो मानि॥ व्याधि और जड़ता कही मरन अंत तै जानि १८॥ काहू ग्रंथ कहत काहू संबंधन लह्यो

गए उत लाल सखी छवि त्यों कछु चंद
की दीपति पैनी॥ ज्यौंही परे दृग वार भटू
के कोरे जकटाछ की डोरै सु पैनी॥ प्रेम सु
धा मीत पाकि गई मति लागि गई मनमें
मृग नैनी॥२५॥ सात्त्विक को उदा हरन॥
सवैया॥ जो कबहू हरि आन लली कहुं
खोति जसो मति माइ बुलावै॥ चित्र लि
खित गेह विलोकति सोभित मौनके
भीतर आवै॥ मोहि विलोकत ही हंसिकै
भुज चंपक माल गरे पहिरावै॥ लागि
रहो हियरा में यही अबलों हियरा हि
यरा में लगावै॥२६॥ आनि कहै कबहू
यो गली कहि कैधौं निरखै गुरु लोगन
को चन॥ ज्यौं थरकै खरकै हियरे हम
जानति हैं मर जाइगी सोचनि॥ कुंडल
लोलह सोहैं कपोलन नंद लला लखि
ते दुख मोचन॥ पाऊं कहूं सखि ठौर कु-
कंत है देखी जहां हरि को अरि लोचन॥
२७॥ प्रलाप को उदा हरन॥ दोहा॥ काहा
कहत कासे लखै क्यों बोलत नंद लाल॥
पुनि पुनि बातें रावरी यों बूझति ब्रज बा-

ल॥८८॥दूसरो उदाहरन॥सवैया॥रूपअ
नूप कदंबको कानन कुंजनि केलि कलो
ल कलाको॥काम करोर की सूरति स्या
म की धीरज कौन कहा अबला को॥
मोर किरीट धरे बन माल बिसाल लखे
सखिहर दकपूलाको॥मंद हसी मुख चंद
मनो हर नंदको नंद गुविंद ललाको ८९
दोहा॥चंद मंद अनु मत सवनि मारत
मदन अराति॥मोहन सों अखियां लगी
अखियां लगीं नसाति॥९०॥हुलासको
उदाहरन॥दोहा॥जे कार मूलन मैबाडे
मनि कंचन हैं प्रात॥तुम्है देखि जाने न
उन अयांहि जात विरि जात॥९१॥अर
ति को उदाहरन॥सवैया॥तीनो तिलो
क संभारन आन धरे हर आपने अंतर
हाई॥जामै बड़ी विष माई हुती यौंही
ताको दई भूल मांहउचाई॥कंठ लिल्ल
हमै सील मैई समली यह साहक पां
ति बसाई॥तौरबे हला हल आनि काला-
नि सों जानैसुधैन काला निधि माई॥*
९२॥दृष्टि त्याग को उदाहरन॥कवित्त॥

चिंता मनि स्याम जके सुंदर वदन पर है
मँहैं विकानी कौन यामैं छल छंदुहै॥ का
हो कुल कानि जाति कौन पै निवाही
जाइ देखतु है याही ताहि लाग्यो प्रेम
फंदु है॥ मधुर कपोलनि मधुर मुसक्या
नि माई मधुर विलोकनि मधुर मुख चं
दुहै॥ जैसे सब कलनि अमृत मय चंद
ऐसे लिभर अनंद मय नंद जू को नंदुहै
॥ ३३ ॥ संज्वर को उदा हरन॥ कवित्त॥ मंड
प मृणाल जल जालन दै पालन को मै
नहू मैं विहि लाल जालन के पालहैं॥ का
हे कवि चिंता मनि विकल विरहिनी को
सीतल अपार उपचार अधिकात हैं॥
चंदन अगार ताके जलकी वहाई नदी
सिकता कपूर चूर आलि अब हातहैं॥ स्र
ते परप्रति पाल विरह वियो गिनि को पी
रे पीरे हात पैन सीरे होत गातहै॥ ३४॥
दोहा॥ ❋ ॥ विमल वदन की अवासते वि
रह महा दुख पाइ॥ हनी चंद लीरव निसि
दिन परी बालमुरझाइ॥ ३५॥ प्रथम दर
न अभि लाख पुनि चिंता मन मै आनि

बहुरि बरनि यै गुन कथन पुनि उद्वेग ब
खानि ॥५६॥ पुनि प्रलाप उन्माद मि
लि ब्याधि जुजड़ता होइ ॥ दसौं दसा य
गनत हैं सुकबि ग्रंथ कर कोइ ॥ ५८॥ ज
स्यौं बस्तु अरम्य सम दुःखद यह है जाहु
चिंता मनि आदि कहत है सो उद्वेग ग
नाहु ॥ ५९॥ बचन अनर्थ प्रलाप कहि
उन्माद वृथा ब्यापार ॥ ब्याधि तापसंता
दिका बरनत कबि जन बुद्धि बिचार ॥ ६० ॥
जड़ता चेष्टा रहित तनु मरन सुजो
सोत ॥ चिंता मनि कवि कहत यौं जहँ
त ग्रंथ सुर सोत ॥ ६१॥ अभिलाष को
उदाहरन ॥ कवित्त ॥ नैननि की सुखदा
ति अनूप सु नैननि सौं सुधा रसनाऊं
या जग ऊपर मैं अपनो यह तो धन
जीवन भाग गनाऊं ॥ श्री ब्रजनाथ
अभीर के दासहि बार अनेक मैं ध्यायु म
नाऊं ॥ भा बार कहौं जु बिलासनि कौ मु
ख चंद बिलास बिलोकन पाऊं ॥ ६२॥
ज्यौं निसि बासर चाहतु नाहि सुतौ कब
हूं अंक न्याह धरै गी ॥ है रि हसौं है बाट ह

न सो मृग लोचनी मो हिय आनि हरैगी॥ या निरदै निसा नाथकों ए घनी रातन कों घन ताप हरैगी॥आनन रूप कला करि ता निशा नाथ सों मोहि मनाथ करैगी॥ ५३॥सवैया॥मोहि कछू नहि हेरि परै दृग देखत हूं दिन होत अंध्यारी॥कैसेक कौं कहि आगि मनौ चहुं ओर लगी नि सि चंद उज्यारी॥सीरे उपाइ चलैनकछू बिरहा नल व्याधि चढै अति न्यारी॥हा हू मै कौन उपाइ करौं वह पावै कवौं प्रेम की पीरको प्यारी॥५४॥कुल का उदा ह रन॥सवैया॥सो छिपते निरखैन सुकैयोंवि सरे छवि अंग अमोलनि की॥द्युति सैविल सै दूरकुंडल लोल जु सोहत सुन्दर बोलनकी॥ लसि यों नलहै लसि संकुल पंकज काति कदंबु कली लनकी॥मुस क्यानि सै हासि नि सों रसकी चसकी मुख ओप कपोलन की॥५५॥पालीन पीवति पानन खात स वै तनको व्यवहार निवेरे॥सुंदरि तेरे सरू पकी सोरत बोलैन बार पुकारत टेरे॥मं दिकासी मुख चंद हसी कछू सीरे अंगमु

लाके तनु ह्वै॥ नैननि नीर भिगनि सरै बि
सरैन विलास विला सिनि तेरे॥५६॥ ना
यका की स्मृत॥ सवैया॥ मोहीहे ग्वालि गु
पाल लखे ब्रजकी बनिता कछु भेद न पावें
बोलैन बोल ठगी सी लखे मन मैन के बा
न छियो अकुलावें॥ रोमनि अंग कदंबक
ली मन मे घन स्याम की यों छवि छावें र
सोरति मंद कियो हसिबो उमगें असुवां अ
खियां भरि आवें॥५७॥ गुन कथन॥ पेखत
ही प्रगटी मनको मनि वेनी महा विधना
गिनि माई॥ ताप चढाइ गयो निरखे सुर-
श्री तरुनी मुख चंद दुराई॥ नील सरोरुह
मैनको काजल नैन निसारिबे पीर जगाई॥
आगि अंगारके रंगन अंगनि कैसी अनंग
की आगि लगाई॥५८॥ उद्वेग॥ सवैया॥
मैनके बान गने बिष संकुल बागके फूल
नि मोर बिहारे॥ चंद्र उवे निसि मे लखि-
के कहें और जरी अग अगिलि ह्वारे॥ हेल
नहीं काल ब्याकुल होत हितू उपचारनि
के पचि हारे॥ ऐसे भये मन मोहन लाल
बिला रिजी बाल बियोग तिहारे॥५९॥

ताछिन तोहि विलोकि विलासिनि ताछि
नते कछु औरन भावै॥ तेरियै बात सुहा
ति सदा पुलकै कोउ तेरोजु नाम सुनावै॥ने
क नहीं काल मोहन लालहि यो सब लंक
मयंक सतावै॥ तौ बनि आवैजो आनन
तेरो अरी अकलंक मयंक जिआवै॥५०
नायका को उदाहरन॥ बीछीको डंक म
यंक किधौं आगो लिखेहै प्रलाप॥ सवै
या॥ मूरति तेरी मनोहर मैं रचि बोलत
यों कछु मोहन प्यारे॥ आवैजू बैठो किते
ही किते चली भाग खुले कछु आजु
हमारे॥ बोलत क्यों यह संक गई जो का
हे मृदु मंजुल नाम तिहारे॥ बोलत क्यों
हो जू बूझो जबैलददैन काछूकै काछूकाहि
डारे॥५१॥उनमाद॥सवैया॥ माया म
नोज की मोहन के बहु बार रचै बहु रू
प तिहारे॥ सामुहे आवति मूरति पै परिरं
भनको भुज दंड पसारे॥ हाहा करै मुख चुं
बन मागै हसौंहे कपोल लसै छबि वारे
ऐसे विलासिनी रावरे प्रेम पै बावरीसी
है कछू वार डारे॥ व्याधि॥ सवैया॥ जे

मनि कंचन गाढे गड़े कर मूलन है छल
काहू निकाई ॥ तेगिरि भूमि परे नहि जा
नत ऐसी भई तनमे दुबराई ॥ नीरनि मे
नमि नीर काहू निसि घीरी कपोलनिमे
परि आई ॥ तेरी बिलो कनि याहू बिला
सिनि ऐसी दसा मन मोहन पाई ॥ ५३ ॥
छूटि गयो हसिबो सब खेलिबो लिब को
भयो आजु निठेरो ॥ खान कछून रह्यो
उनको अब ऐसी बियोग की आपद
हेरो ॥ आंग अली नहले नचले अनसे
रो बरो यह साहस मेरो ॥ ऐसी दसा
सुनि मोहन लालकी केसो मन होतह
या ललन तेरो ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ कबहू मरमन बर
निये जीवन कबहू होइ ॥ लोपुनि बाको
आइहे यो कवि सिद्धा कोइ ॥ ५५ ॥ दं
पति की रिसि परस पर मान बखान्यो
जाइ ॥ प्रनय ईर्षा भेद सो है बिधि ता
हि गनाइ ॥ ५६ ॥ प्रनय मानल: ॥ दोहा
होत प्रनय की कुटिल गति बिन कीन्हे
जो रोस ॥ दंपति कोइक सेजमे प्रनय
मान बिन दोस ॥ ५७ ॥ सवैया ॥ तू मन

दर्पन अरु विचित्र भलीहि जो मेरी कही सिख मानै॥ जाहि चहै सो सदापति विं वित तोमे कहा तू रहै अकुलानै॥ वाहि कीन रुखाई कछू जु पै अंतर वाहि भ ले पहि चानै॥ जो मुस क्यानि मे लीन रहै तो तू आप को ताप कछू नहि आनै ५८॥ बात कही अपने मनमे मुख बाहि रको हमहू को सुनाई॥ ताकोन उत्तर दी जियै आपु तो होति गुमानहि की अधि काई॥ जानिको कोन सो बोलत को जुहै काहू के अंतर की गति पाई॥ जाकी चु भी मुस क्यानि है चाहिय तासो सु वोसे कोरे ली रुखाई॥ ५९॥ दोहा॥ प्रनय मान तन दुहुन को ईर्षा मान जु होइ॥ सुतौ बरनिये तियन मे यों बरनत सब कोइ॥ ६०॥ और तिया को देखते बोरे रोख जो ना रि॥ लघु मध्यम गुर भेद स मानस त्रिवि धि बिचारि॥ ६१॥ कौतुक छूटत मान ल घु मध्यम कीन्हे सोह॥ गुर छूटत पाइन परे पैर चढ़ति नहि भोंह॥ ६२॥ लघु मा॰ सवैया॥ म न मान कियो वृषभानलली

अनैते अब लोकात लाले लहे॥ उत आ
ह्न तुरी सखियां सिगरी पिय आयां स
खी दृक बीजकाहे॥ इत तूंहि रहो चित
सन्तु पै मान लला इसिले इत तूहि रहे
सुख बयाइकै राधि या आनंदसोंसुजम
लसों लाल लपेट गहे॥ ६३॥ मध्यममा
ना॥ दोहा॥ प्यारीकी पदवी हमैं दीन्ही आ
जु गुपाल॥ तेरीसों लाडिली उर समुझि
और तू बाल॥ ६४॥ गुरु मान॥ दोहा॥ हं
सति काहा मोपै निरखि लखि लखि द
नके अंग॥ लेहि और तिय नेह सों नेह
हमारे संग॥ ६५॥ सवैया॥ बेलको चंद औ
मंद बयारि बहै अति सीत सुगंध भई
हून॥ जाको घनो लल चाहि हौबाल सो
लाल सलोनो परयो मनि पाहुन॥ जोबन
के दिन पाहुन हैं पछताउगी पीछे के
सेरी गुसा हून॥ बोलि बरौ मिलि मोहन
सों कहा ठीक जु ठानती हौ ठकुराइन॥
६६॥ दोहा॥ मान हरन के कारन कौं बर
ने छयो उपाइ॥ छोडत हून तेरो सति
य ऐसे सदा सुभाइ॥ ६७॥ माना पमानो

भेद॥दोहा॥मास भेद ऋतु दीन दाहि
योंही पुनि तव खानि॥बहुरि उपेक्षा दाह
तहैं फिरि रस अंतर मानि॥६८॥७०
मधुर वचन सों साम कहि भेद सखी
की चाल॥दान ब्यास भूखहि को प्रनि
त करन को प्रल॥६९॥सामा दिकाकी
छीनता होत उपेक्षा चित्त॥त्रास हरख
कुन आदि दै काहि रस अंतर मित्त॥७०
सम्यापाढू॥कवित्त॥बैन सुधा तुही सी
चे बिलासिनि मोमन मोद लतानिकी
क्यारी॥मोहि कहा बल होत कहूं मनि
जो पल एक रहै जब न्यारी॥मेरिये नैन
चकोर छके मृग लोचनी तो मुख चंद
उज्यारी॥जो कछु जानो सु जाहु कहौ तु
म मेरहौ प्रानन ते अति प्यारी॥७१॥क-
वित्त॥चिंता मनि जोपै तुम्है उनसो है र
सवे तो काहे को उनको मनु बांध्यो प्रेम
फंदसों॥वे तौ हैं बिलखें मुख तुम बिन तु
म हूं तौ दुखित हो बिरहि त आनंद वो
कुंद सों॥हमतो जानति एहो तुम्है हैं स
यान देखो पूरन अयान मान ठान्यो नंद

नंदसों॥वैतुमसों मिली तुम दूनसों मि
लैहीरवुल्यौ चंदजैसे चादनीसों चांदनी ज्यों चंद
सों ७३ चिंतामनि होइ कोऊ नीकी आनं-
सी कवित आगे लिख्यौ है॥दोहा॥सो
तन को कुच दुरग तजि पिय मन मिल्यौ
निदान॥अब मनि रुका पर चढ़ी कारु
री भौंह कमान॥७४॥दानो पाइ॥कवित
मानसों निहारि हरव भानकी कुमारि-
का हिल्या ए नंदलाल गूंदि दार माल
ती की माल॥आनि अन वोली वोगरे मे
पहिराई वाही को सी नीकी लागी प्यारी
दुति उलही विसाल॥नेक मुस क्याइ ऊं
चे हेरि फेरि नीचे हेरि पुलकित अंग १
चिंता मनि यों लखे गुपाल॥चिबुक को
पोल चूंमि चूंमि गहि कंठ भूज भूमि हं
सि लाल भुज माल भरि भेटी बाल॥७६
प्रनति को उदा हरन॥दोहा॥छांड़ि मान
पाइन परो जो पिय वाही अधीन॥नी
ल कमल से दृगनि मे तियके भरू वो
नीर॥७५॥उत्प्रेक्षा उदा हरन॥दोहा॥पीव
आयो उठि इवि यो ऐसो कछु वहु मान॥

यह नहि देखति चलौ सखि यह क्यों सहै गुमान ॥ ७६ ॥ रसांतर ॥ सवैया ॥ मान किया हय भान कुमारि जि मान्यौ मनुहा रिन औ र मनाई ॥ और उपाइ थके हिगरे मन मोह न यों तब बात चलाई ॥ पीछे तिहारे कहा है तिया बाहि जो वलियां मननेंन भर माई ॥ यों सि भाकी उलकी लपकी हंसिकै नंद नंदन कंठ लगाई ॥ ७७ ॥ करुना तम: ॥ * दोहा ॥ जहां पुरुष तिय जुगल मे मृत्यु ए क की होइ ॥ पुनि जीवनि की आसमैं क रुना तम गान सोइ ॥ ७८ ॥ जोवर नौका बं वरी पुंडरीक वृतांत ॥ सो करुना तम गनत हैं सब पंडित बलवंत ॥ ७९ ॥ प्रवास लछ ण ॥ दोहा ॥ तन मन होत तियान को तास नि पास प्रकास ॥ पीतम को परदेस को वास सु वरन प्रवास ॥ ८० ॥ होन हार अरु भयौ जो द्वै विधि वरन प्रवास ॥ ताको देत उदा हरन सज्जन सुनो प्रकास ॥ ८१ ॥ भविष्य त प्रवास ॥ क० ॥ कैसी करी मनपा श्यरी सुर तौन धरी क्रिय हेरि हरेवन ॥ सोर कियो न कहा सजनी उत दादुर मोर पपी हन

कै मन॥ पावस मैं परदेस गए पिय ऐसैन
है कबहू निरदै मन॥ आए नहीं घनस्याम
घेरे कहा देखै नहीं उनए उनए घन॥ ८२
दोहा॥ प्रथम हेतु अभिलाख पुनि विरह
दसा मानि॥ पुनि प्रवास अरु सापपुनि वि
प्रलंभ के जानि॥ ८३॥ अभिलाष हेतु॥
सवैया॥ नैननि की मुसक्यानि अनूपम
बैननि बीच सुधा रस नाऊं॥ मोहन की
धन राग लखै मन मैं अनुराग प्रमोद बढ़ा
ऊं॥ यो जग ऊपर मैं अपनो यह तौ धन
जीवन भाग गनाऊं॥ बार कहौं जु बिला
सिनि को मुख चंद बिलास बिलोकन पा
ऊं॥ ८४॥ विरह लछन॥ दोहा॥ गुरजना
दि पर तंत्र जहं निकटहु मिलन न होइ॥
दंपति को दुख जान कहत विरह कहा वत
सोइ॥ ८५॥ ललित कथा निसि केलि की वि
रह जलधि को सेतु॥ होत दुहुन को धो
रुखै लख पद पद को हेतु॥ ८६॥ सुंदरि
निरमल सौध रह सरद चांदनी राति॥ ८
कैधौं रूठी पियसौं अरी मिहरी मूरख जाति
८७॥ प्रवास हेतु॥ दोहा॥ मोहि तोहि छाति

ये है भेद बखानि ॥ आसुन जुतकहि अपहसि
त बहुरि अति हसित जान ॥ तन परसे सुह
मीत लै अधमन के मानि ॥ ९७ ॥ सेतब
न यह प्रथम पति देव तहां सब खानि
याको देत उदा हरन सुकवि लेहु मन
आनि ॥ ९८ ॥ सवैया ॥ आरसी देखि जसो
मतिजू सों कहै तुत रात यों बात कन्है
या ॥ बैठते बैठ उठते उठे अरु कूदते कूदै
चलते चलैया ॥ बोलते बोले हसते हसै मुख
जैसो करो त्योंही आपु करैया ॥ दूसरो
कोत दुलारो कियो यह कोहै जु मोहि
रिझावत मैया ॥ ९९ ॥ इष्ट ना सकि अ
निष्ट की आगम ते जो होइ ॥ दुःख सोक
थाई जहां भाव करुन कहि सोइ ॥ १०० ॥
आलंबनिग सोक इत ताकी दाह त्रियादि
उद्दीपन अनु भाव गनि रोदन भूपातादि
१०१ ॥ निर्वेदादिक होत हैं जामे बहु विधि
चारि ॥ ते सब अपनी बुद्धि बल लीजे बिबु
ध बिचारि ॥ १०२ ॥ यहु बंचार रंग रसु कहो
जमदेवत जहं जानि ॥ याको देत उदाहरन
सुनो सुजन मन आनि ॥ १०३ ॥ कवित्त ॥ १

ऐसी भांति राम सब नीतको प्रकार पूछौ भरत सुनायो रोइ पिताको मरन है॥ विहूल अंगनतें अचेत ह्वै गिरे हैं भूमि भाइ हूनको गन देखि भयो असरन है॥ ते रही वियोग तें तिहारे पिता प्रान तजे तुमको धराको अब धीरज धरन है॥ यह सुनतेही राम सूनो सब जग लख्यो वाही समै ह्वै गयो वदन विवरन है॥ १०४॥ वैदेही रोवे तीनो भाइ लगे रोवन त्यों जागि रघुनाथ एक वचन मुख काढ़े हैं॥ रोवो जिन कोउ कहा तुम्है कौन दोसु राजा मेरे कालप्रान तजे मेरे प्रान गाढ़े हैं॥ तुमहू नहुतें ढिंग जीवे कहो कौन भांति मैंतो दुरजन जिन आगहू नठा ढ़े हैं॥ ऐसी वाते कहि कहि भरतसों रोइ राम नैन जल जनतें विपुल जल बाढ़े हैं॥ १०५॥ भरत वचन बोलो स्म वहू तु कहा उठो तीनो जने चलि उदक क्रिया करो॥ लछि मन सीताको बिलोकि कहो ऐसी भांति अब उठो चलो धीरको धरो॥ साथमे सुमंत आए भाइ सब मंदाकिनी जल क्रिया करे भरे असुवान सो गरो

ग्रह निशि बासर द्वंद चलिय उद्दाम दर्प धरि॥ दिग्विजय पूरन विपति रोकि रघुन के देसहि॥ चलौ उन्नारौ सुंदर देरि मारौ लंके शहि। चिंत मानि वल गन करत सब वदद र भट समर भट॥ अति प्रबल विपुल कपि वल जलधि पहुच्यौ दच्छिन जलधि र तट॥०॥११२॥ जोलौं को नर काज मे थिर जंत उत्साह॥ सोजा मे थाई सुरसुवीर कहत कवि नाह॥११३॥ जेत ग्रालंवन वरन ताको इंगित कोइ॥ उद्दीपन खुल्यादि पुनि संचारी इत सोइ॥११४॥ नायककी ग्राचरन जो सो गनिये ग्रनु भाव॥ दान धर्म के जुद्ध के दयासु ग्रादि गनाव॥११५ इष्ट देवता कानका सच वरन सु याको ग्रानि उत्तम नायक विषम जहं होइ सुजोविम न ग्रानि॥११६॥ सुभावादि चूनकी जु कछु बुध जन बुधिवल जानि॥ जुनको देख उद्दाहरन सुकविसनो मन ग्रानि॥११७॥ जुद्ध वीर को उदाहरन॥ धनासरी॥ गाय गिरि दरी बन लखन ले जानिकाहि रामजूका वचनिज ग्रंग कीन्हो॥ दिब्यास्त्र नीरसों

है सुभग अंग मौ रुचिर रघुवीर कर चाप लीन्हो॥ कियो घन गरज घन धनुष टं कोर अस ललित मुख हरष झलकौन दीनो॥ आइ भरि व्योम मुनि सिद्ध गंधर्व जै बोलि रघुनाथ कौ विजै दीनो॥११८॥
तबै थरको पकरि आप आयो उतै जितै सर चाप धरि राम राजें॥ संगले सघन घ न संघ समर चगन तिथ्य तम शास्त्र बरखा नि साजें॥ परस त्रिसूल आस पास मुद्ग र विपुल असनि सम राम पर डारि गाजें॥ समुद ज्यों आप गावेग सहि आपु धनवे ग सहि छबिन रघुवीर राजें॥११९॥ *
राम भुज दंड पाछे लिख्यो है॥ दान वीर॥ कवित्त॥ करियै लखन अभिषेक विभीष न जू को लखन विभीखन को कीन्हो अ भिषेक है॥ बड़ो सुख पायो बानरन रीछ रावसन भयो मनो सबनि सुर सनेकु है॥ त्यारा राम जू को साधु मोदक अछत राज मंडल की साज भयो उछव अनेकु है॥ रा वन संघायौ राजु दियो विभीखन कौ ज गत सरा ह्यौ रघुनाथ कौ विवेकु है॥१२०॥

परम अपार भवसागर उतारि वेको॥ पीठेहू
लिख्यो है॥ कवित्त॥ अवधनि फट नंद ना
उकोस एका पर निरख्यो वारवार पट्या
रीसोग साधको॥ छिना मनि वोहे मृग चर
म जटानि धरे मुनि वे ष जगत अभयका
र हाथको॥ वंस अलं हात कारि आपने
चरित्र सत्यकारी भागी रथ आहरन नाथ
को॥ जाइ हनूमान देख्यो धरम वृतन धरे
पेख्यो है भरत उतभैया रघुनाथको॥ १२१
दया वीरको उदाहरन॥ दोहा॥ इंद्र कह्यौ म
न मोद धरि यों सुनिये श्रीराम॥ कौसि-
ल्या सु पुत्र भई पाइ पूत गुन धाम॥ १२२
इंद्र कह्यौ अब माग वर यों वोले हूत राम
वे जीवें कपि रीछ जे मरे महा संग्राम॥
१२३॥ जे पाल मूल अकास हू पावें वानर
वीर॥ होंइ विमल वसवनदी विलसैं जलके
तीर॥ १२४॥ इंद्र कह्यौ ह्वैहे इहे राम तिहा
रे हेत॥ सुने काहू संसार मे जीवत काह परे
त॥ १२५॥ ह्वैहै सव जो चाहियत यों कहि
गयो अकास॥ सवके देखत समरमे वरस्यौ
अमृत प्रकास॥ १२६॥ परसोन राकस लोथ

रन् कहूं अमृत को बिंदु ॥ मोह गयो मूल का
ष्टिम को उयो ज्ञान को बिंदु ॥ १२७ ॥ उठे ब्र
ह्मन बिन कापि सबै जग ईश्वर भगवान
दस रथ नंदन रामजू कारी अलौ किकठा
न ॥ १२८ ॥ रौद्र चित्त भव चित्तकी विक
लपता भय जानि ॥ सो यामे थाई सुरस भ
यानक हि पहि चानि ॥ १२९ ॥ जाके उप
जत है सुरे ते आलंबन जानि ॥ ताके दू
षित चेष्टा उद्दी पन रस मानि ॥ १३० ॥ वे
वनो दिख पने रु जाको कृत अनुभाव ॥
शंका भीता दि क भले ले संचारि गनाव
१३१ ॥ काल बरन याको वरन काल देवता
मानि ॥ याको हेत उदा हरन सुकवि लेहु
मन जानि ॥ १३२ ॥ भया नक को उदा ह
रन ॥ अति अनीत कवामी मरो राम विस
रो गात ॥ मरो कालिंगा धिपति को दोरड
खारे सात ॥ १३३ ॥ बीभत्सितलक्षण ॥ दोहा ॥
देखे कुत्सित वातको चित्त जुगुप्सा जा
ने ॥ सोई थाई भाव जित सो बीभत्स व
खानि ॥ १३४ ॥ रुधिर मास दुरगंध मल आ
सेवन मज्जादि ॥ महा पाप पति नील रं

न उहीं पलछनलु काहि॥१२५॥अपहु ता
र ओहिल अरु सोहा विसु करि नारि॥
हरन रस की सरस मैं रुज्जनहीं पु वि
चारि॥*॥१२६॥कवित्त॥*॥विपु विपु
ल निअपर बानर वपु विकत पुन रत मं
उल खंडिय॥सजत दल उल लतन
अनतु निरखि रिप पति साहस छं
डिय॥समर भूमि पर तुरत वेगि उठि
भिरत रुधिर जल सरित उमंडिय॥*
ढाल कत भुज खंड मल सम सिवाला
अस्थि मुसल्ल प्रिल वंडिय॥*॥१२७॥*
दोहा॥ निरखि अलौ किक — वस्तु जो
होत चित्त विस्मार॥सो विस्मै थाई जि
ते सो अद भुत रस सार॥१२८॥बातअ
लौ किक जो कछू सो उहीं पल जानि
महिमा जाके गुनन की सो उहीं पन मा
नि॥१२९॥आलं बनगनि ए जु जो बरन
अलौ किक सोइ॥उहीं पन ता गुनन
की महि मा जो कछु होइ॥१३०॥नेत्र
विकासा दिक जहां सर नतहैं अनु भा
व॥हर्ष वितर्का दिक इते संचारीस

नुभाव ॥१४१॥ पीत बरन सो बरनियै म
न मथ दैवत मानि॥ याके हेत उरा हरन
सुकवि लेहु मन आनि ॥१४२॥ कवित्त॥
बाल पन कौसिक के मख के विघन का
र निसा चर मारे सिला पग रज तारी
है॥ गरु हर चाप तोर्यो बाप सत्त बैन
कीन्हो कानन सिधारे राज सिरी नानि
हारी है॥ बाली मार्यो महा बली राक-
स संघारे पांति रावन के भुज दंडन
की मही पर पारी है॥ दीन्हो निज धा
मल अवधि दया निधि को अब धन
देस राम अवधि उधारी है ॥१४३॥ कवित्त
कोमल कर कमल कर कस गिरि तै
उतारि धरि लाल मेरो मनु अकुलातु
है॥ जीवेगो सो जीवे जो मरेगो वहु मरै
ऐसो वैसे निज बालक बालक देख्यो
जातु है॥ मेरो कह्यो कान न तौ निकरि म
रौगी कहि चली जहां कर का पिलानि
को निपातु है॥ जहां कहै गोपी गोपम
न सब नंद रानीहू को रस करिवे को अ
चल अधि कातु है ॥१४४॥ संत लहरा॥

॥दोहा॥ सम कहियत वैराग्यते लि
विकार मन होइ॥ सो थाई जित सांत
रस वर नत हैं सब कोइ॥ १५४॥ कुंदइंदु
सम धवल यह श्री नारायण आप॥ यों
रसके अधि दैवता जे मेटत सब ताप॥
१५६॥ आलंबन संसार के निश्चित सत्य
बखानि॥ के पर मारथ अरथ जो सो आ
लंबन जानि॥ १५७॥ पुन्या श्रम हरि क्षे
त्र अरु तीरथ रम्य बनादि॥ ताके उद्दीप
न गनत महा पुरुष संगादि॥ १५८॥ र
पुलकादिक अनुभाव गनि संचारी ह
रषादि॥ सकल साधु सेवत लसत यह
अति विमल अनादि॥ १५९॥ कवित्त॥

पूरन विमल गुरु कृपाके प्रभा
व सब बिगरे प्रपंच भए व्याप
क गगन है॥ प्राचीन कर्म भोग
करति जो देह ताकी सुधि नका
हू है ऐसे मान्यो जगन है॥ का
म क्रोध लोभ मद मत्सर आदि
महा मोहको बिलास ठग सब
ठगन है॥ धन्य जन कोऊ एस

अभिराम ब्रम्ह ज्ञान आनंद
अपार पारावार मैं मगन हैं १५०

॥ दोहा ॥

यह रस पुनि सु अलक्ष्य क्रम व्यंग आसु धुनि हारि ॥ अंगा रादि विसेष पद वाच्य को कहत विचारि ॥ १५१ ॥ वाचक पद रस्तुय हौ जो सब साधारन नाम ॥ चिंतामनि कवि कहत है समझौ बुध अभिराम ॥ १५२ ॥ इन सब्दन तें कहत हू वंधन रस को होइ ॥ यातें रस सब ठौरमें व्यंगय कहत सब कोइ ॥ १५३ ॥ कछु विभाव अनुभाव कछु अधिक बहुल संचारि ॥ व्यक्ति जु थाई भावसों रस नाम यह निरधारि ॥ १५४ ॥ व्यक्ति सुरस को नाम तुय हु समुझौ रस ध्वनि नाम ॥ जो रसथा सो होतु है सज्जन मन अभि राम ॥ १५६ ॥ त्योंही भाव विचार रस भावन को आभास ॥ भाव सांत्या दिको पुनि अक्रम वरन प्रकास ॥ १५७ ॥ देव पुत्र गुरु आदि के तिनमें जो रति भाव ॥ कै संचारी व्यक्ति सो थाइ भाव समु भाव ॥ १५८ ॥ देव

वलय दल सुकुमार ॥ हसत वदन दतिया
दै देखि चिंता मनि जनम सुफल करि
मानै दसरथराइ ॥ गोद लैकै राम जू को
आनंद मगन मैया ललकि कै वलैया
लेत वार वार ॥ १६१ ॥ रसाभास ॥ दोहा ॥

अनुचित विषय करति जु है
सोई तरस अभास ॥ अनुचित
विषयकै भावजो सो पुनिभा
वाभास ॥ १६२

वैठि झरोखे मारि दृग वानन करति कु
काज ॥ मृगनैनी मृगया रची तरुन मृगा
न पर आज ॥ १६३ ॥ भावाभास ॥ दोहा ॥
पाइ न परि ईश्वर कहै जाको सुर नर ना
ग ॥ प्रभु मिथि वध रावन कियो रघुपति
जू रन जाग ॥ १६४ ॥ उपसमया वै भाव २
जो भाव संत सो जानि ॥ भाव उदै आदि
का सुतो उदया दिका यहि वानि ॥ १६५
मानवती पीतम लख्यो खरो दीन मुख
दूरि ॥ औचका ही लोचन जलज आएज
ल सों पूरि ॥ १६६ ॥ भावोदय को लक्षण

* ॥ दोहा ॥ *

बेंदी पिय पट सों लगी लीनी अली उता
रि॥ बूडि गई अब लोकि उत सकुच सिं
धु सुकुमारि॥ १६७॥ भाव संधिको उदा
हरन॥ कवित्त॥ चारु मुख चंद राम चं
द अरविंद नैन इंदी वर देहु दुति लस
नि सुहाई है॥ कानन के मुकता पाल
नांकी झलकि मंद हसनि कपोलनि
अमोल छवि छाई है॥ रीझी सुकुमा
रि दसरथ के कुमार लखि भीषम धनु
ष दीन सुख मुरझाई है॥ ह्वै के विह व
लतन जानुकी विकल मनहि मनसैल
सुता कुल देवता मनाई है॥ १६८॥ *

भाव सबलता

कवित्त॥ दूरहीतें सोंही चारु अचल हसी
ही ऊंची भौंहन के संग सोहै सुभग नवे
लीकी॥ आयो जब ढिग तब सुबरन वे
ली पर लीन्ही उन हारि है खंजन जुग
केलीकी॥ पुनि अध खुली इंदी वर
की कालीसी आइ परी है तिरी छीडीठि
दृच्छा के सहेलीकी॥ बिबिध कटाच्छ भां
ति मैन सर पांति खरी खुलीं आजु अ-

लियां अनूप आल देखीकी ॥ १६८ ॥॥

इति श्री चित्र भेद वि
रचिते काव्य सुन्दर कल्प
तरौ अष्टमं प्रकाशम्
समाप्तम् शुभ मस्तु ॥

हस्ताक्षर चण्डी दत्त ब्राम्हण कान्यकुब्ज

साठ बरस की उमर में एक बेटा पैदा हुवा: बादशाह ने उसका नाम जान आलम रक्खा सूरज उस्को देख कर थर्राता था· चांद परम के मारे घटा जाता था· बादशाहने खजाना खोला· कैदी छोडे रैय्यत का महसूल माफ़ किया· दूर दूर तक रुपये बांटे· लड़के के नाम से गंज बसे मुसाफिर खाने बने: पंडित जोतिषी आये· और कुंडली खेंच कर बोले· महाराज का· बोल बाला मन बढ़ा दुबाला· हमारी· हमारी पोथी में निकलता है के भगवान की दया से शाहज़ादे का चंद्रमा बली है· सब ग्रह अच्छे पड़े हैं· देग तेग का मालिक रहे· धरम मूरत ये बालक रहे· जलदी राज पर बिराजे· पृथ्वी में धूम चे· ऐसी शादी रचे मगर १५वें बरस बृहस्पत वार बेआवेगा पानी चर पांव पड़ेगा· एक पखेरू सुए के बरग में हाथ आवेगा तिपा की खट पट से वो ऐसा वचन सुना वेगा· के राज पाट छुड़ावे सब देस फिरावे गा· डगर में शाहज़ादा भटके· कोई पास न फटके· साथी छूटे· अपने डील से डांवा डोल रहे· फिर एक मनुष्य ठाकुर सेवक कृपा करे राह लगावे· कोई कलं कन लोभी होकर कष्ट दिखावे· वहां से जब छूटे तो रानी मिले· महा सुन्दर वो चरण पर प्राण वारे· पिता उस्का ग्यानी गुण की भरी हुई· तरुनी दे· उस्से कोई मलेस न रहे: दुख में आड़ी आवे बड़े काम बनाये जब उस नगर में पहुंचे जिस्की चिंता में घर छोड़ा तो द्रव्य अपने हाथ आवे· सब क्लेश दूर होजाय· एक हरनी मन का कपटी स्त्री पर दुचित हो बुराई करे· नर नारी लड़े कुछ जल में हलकी चल हो प्रीति लाग छुट जावे नर नगर खोजपे फिरावे फिर सब बिछड़े मिल जाय मां बाप के ढोक आय स्त्री तिन हो· दो का प्रमाण रहे· एक की हीन हो बड़ा राज करे

ज्या धरम के काज करे प्रभु की कृपा से जान की खैर है· बडी श्ध्ध॰
ती की सैर है· बाद शाहने ये सुनके उदास हुआ मगर दिल मज़बू
त करके कहा जो ईश्वर करे वोही अच्छा सबको इनाम दिया· शाह
ज़ादा बडे लाड प्यार से पलने लगा· कोई बरसो में बडना है वह घ॰
डीयों में बढा· ओहान पांव निकाले के दस बरस की उमर में हिरन के
सींग चीर डाले· रूप ऐसा चमका के शायद ईश्वर से भी दूसरा बे
सा न बने· लिख पढ कर हुशीयार हुवा· सिपाही गिरी सब सी
ख ली· चौदा विद्या निधान हुआ· बाप ऐसा और बेटा ऐसा· चौ
दा बरस की उमर में एक शाहज़ादी परी की सूरत कामनी मूरत
साहनलन नाम से उसकी शादी रची और बडी धूम धाम मची॥

२ चरित्र ॥

जान आलम कभी सैरको जाता था · एक दिन उसने बाज़ार में बडी भीड़ भाड़ देखी · हरतर्फ़ वाह वाहो रही थी · देखा तो एक ७० अस्सी बरस का बुड्ढा तोते का पिंजरा हात में लिये खडा था · शाहजादे को देखतेही तोता अपने मालिक से बोला के ले तेरा नसीबा जागा · शाहजादे का दिल मेरे तर्फ़ आया · अगरचे मैं जानवर हूं और बिल्ली का भी खाजा नहीं मगर जोये कृपा करे तो अभी तू निहाल हो जावे · शाहजादे को तोते की बात बहुत प्यारी लगी · पिंजरा हात में लेकर उस बुड्ढे से दाम पूछने लगा · तोता बोला के गरीब आदमी के माल का कौन मोल लगाता है · जो हजूर की मर्जी · जान आलम ने एक लाख रुपये और खिलत दिया · और पिंजरा हात में लिये घरमें आया · और माह तलत को दिखाया · तोता रोज़ किस्से कहानी बाद शाहजादे को सुनाया करता · ऐसा जाल में फ़साया के सोते जागते जान आलम उससे अलग न होता था · और जब दरबार जाता तो शाहज़ादी को सौंप जाता · एक दिन जान आलम तो दरबार को गया था · शाहज़ादी नहायी और सिंहार के सोने की कुरसी पर बैठी · हवा जो लगी तो शीशे में अपना मूं देख कर अपनी खूब सूरती का अभी मान करने लगी · सहेलियों से पूछा · के अब मैं कैसी लगती हूं · एक ने कहा चांद हो · दूसरी बोली परी हो · जब वो सब के चुकी तब शाहज़ादी ने तोते से पूछा के ऐसी सूरत कभी तेरे ध्यान में भी आई थी · तोता उदास बैठा था चुप हो रहा उन्ने उससे फिर पूछा · तोते ने कहा ऐसा ही होगा · शाहज़ादी को लग गयी और क्रोधमें आकर बोली मियां मिठ्ठु जी तेसे खफा हो जो हमारे सामने चवा चवा के बातें करते हो · तोते

सवारी ज्ञान आलम और खरीदना तोतेको बाज़ार चौकसे
तोतेवाला

જાનઆલમ
બાંદી
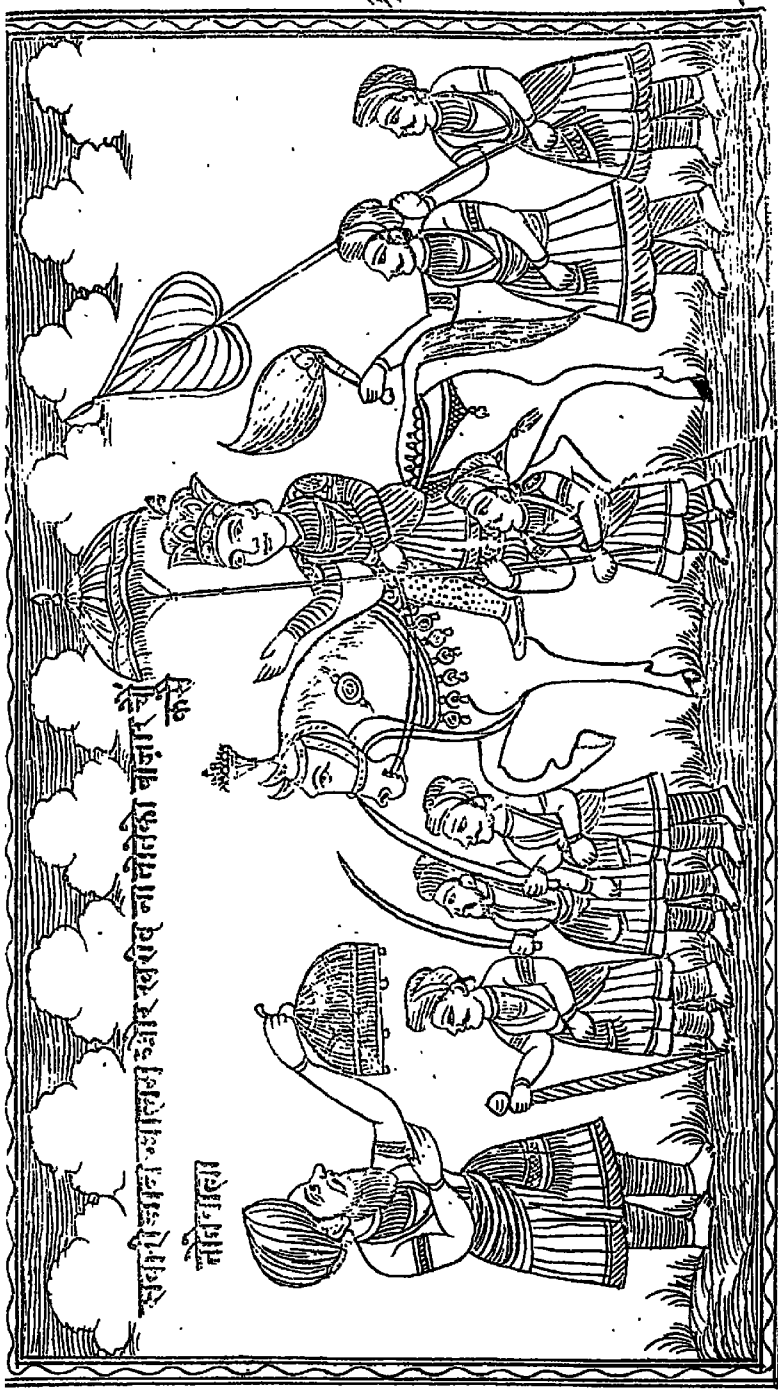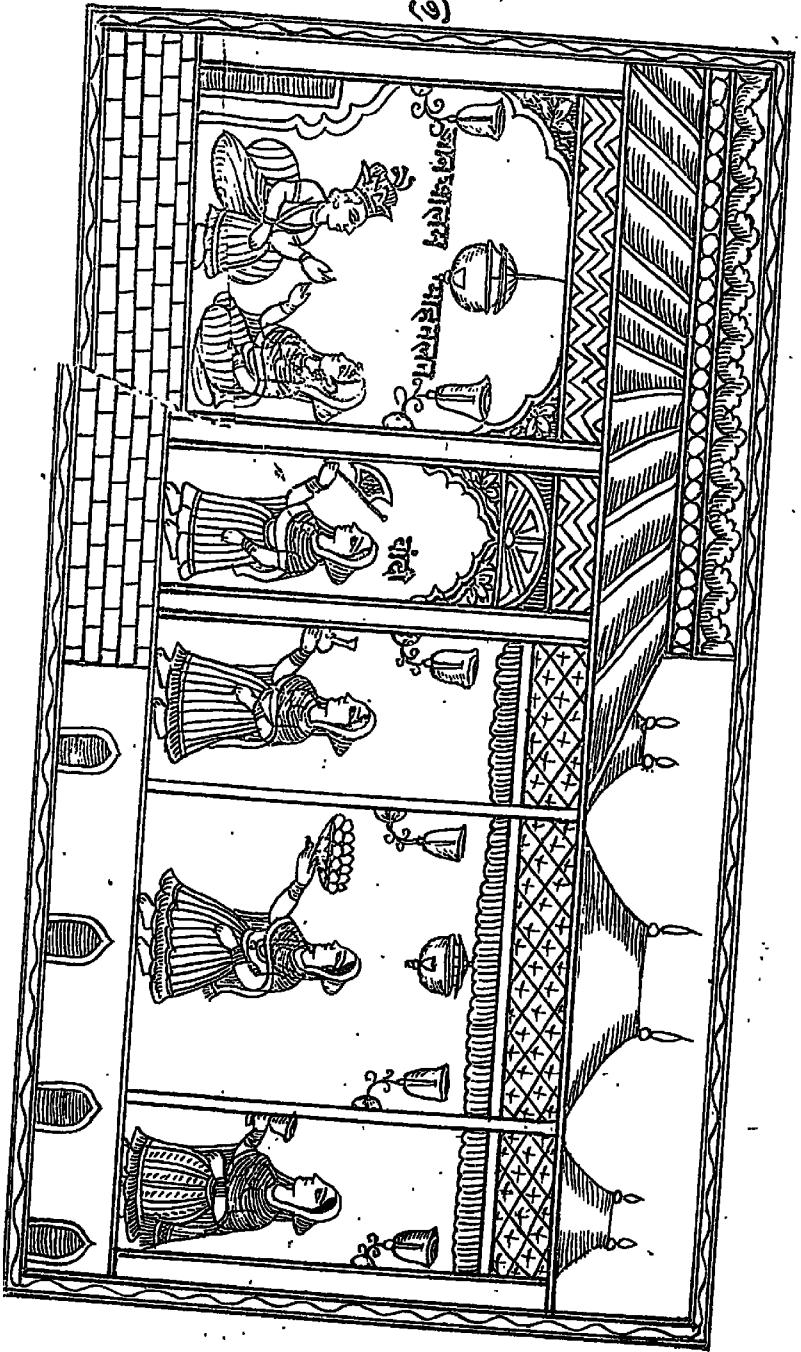
ने कहा·बात चीत और और और धमकाना और हूकूमत से
डराना और और गुस्से की आंख दिखाना और क्यों उलझती हो शायद तुम
सखी हो ये सुनते ही शाहजादी कहा थी बोली क्यों तेरी मौत आई है·नाहक
की ऐंठें सचाई है·हमारा मतलब तो ही जानता·तोते के मूसे निकला क्यों इत-
नी बिगड़ती हो·साहब तुम बड़ी खूब सूरत हो·यहां तो ये हो रही थी के शा
हज़ादा आया और ये हाल देख कर पूछा के आज क्या है·तोता बो
ला खैर यहां से तीन कोस पर है·कुछ दाना पानी इस पींजरे में बाकी था
सो आप आगये·नहीं तो शाहज़ादी मुझे जीता न छोड़ती आप खाली
पिंजरा देखके रोया करते और यह कहते तोता हमारा मरगया क्या
बोलता हुआ था·साह वलत इन बातों से और चेढी हुई और क
हा जो तोता मेरी बात का जवाब नहीं देगा तो उसकी गाडे की गर्द
न मरोड आखें निकाल अपने नखों से मलूंगी तब दाना पा-
नी खाऊंगी·जान आलम ने कहा·कुछ हाल तो कहो तो
ता बोला·हुजूर मुझसे सुनिये·आज शाहज़ादी अपनी वालि
दा में बडी खूब सूरत थी·मुझसे पूछने लगी के तूने कभी ऐसी सकल
देखी थी मेरी शामत जो आई तो मेरे मूसे निकला के खुदा ने करे·बस
इस बात पर वो मारने को तैयार हुई·जान आलम ने शाहज़ादी
से कहा के तुम भी कितनी अकल से खाली बेवकूफी से भरी हो·तुम
तो परी हो·जानवर की बात पर क्या इतना रंज करना वो बेचा
र जानवर है·मिया मिठ्ठू को इन बातों की ताब न आई·आंख बद
ल कर रूखी सूरत बनाई·और कैसे बोला सरकार झूठ है औ
र सच सच है·जिसके बराबर कोई नहीं वो निराकार
ज्योति स्वरूप है·उस्के सिवाय सेर पर सवा सेर मौजूद है·ये सु
न कर शाहज़ादी और भी पूछने लगी असल मशहूर है·
राजहट·त्रियाहट·बालक हट·जान आलम ने लाचार होकर कहा

जो होसो हो · मिया मिट्ठू प्यारे · सच कहदो तोते ने कहा मु
के सच न बुलवाईये · मेरा मूल खुलवाई ये · नहींतो हुजूरके
दुशमनोंको · जंगल जंगल फिरना पडेगा · जान आलेम
ने कहाये और हुई · जो कहना है कहिये · तोता बोला सफ़
र में बडी मुसीबते है · मैने बहुतेरा टाला मगर आप
की किसमत हीमें लिखाथा · मेरा इसमें कसूर नहीं अ
ब सुनिये के यहांसे बरस दिन की राह उत्तर के तरफ़ एक मु
ल्क है · जर्निगार नाम · वहां की शाहज़ादी अंजुमन आरा
कातो क्या कहना है · मेरी क्यानाकत है जो तारीफ़ करूं ईश्व
र खुद उस्को देख कर अपनी कारीगरी पर घमंड करता
है · मगर सातसौ लौंडियां उस्के पास है · अगर शाहज़ादी
उन लौंडियों को देखे और कुछ शरम भी आवेतो यकीन है
के चुल्लूभर पानी में डूब मरे माहतलत ये सुनकर सुन्न हो गई ·
जान आलम पिंजरा उठा दूसरे महल में लेगया और सच्चा हाल
पूछने लगा तोते ने उसका मूं देख कर जाना के बिरह के जा
ल में फ़सा बहुत पछितात्था और दिल में कहता के मैने इ
स्से क्यों कहा · मंत्र चल गया पढा जिन सिर चढा टालने के
वास्ते कहा के इस तरफ़ का इरादा न करो · बिरह का रस्ता बहुत
कठिन है अकल जाती है · खपत होता है · आंखे बहती है ·
मूं पीला होकर · भुख प्यास मर जाती है नींद नहीं आती ·
लोग ताने देते हैं · लडके पत्थर मारते हैं · ॥ तिनके चुनते
हैं रात भर तारे गिनते हैं · जंगल में जी लगता है · बस्तीउ
जाड मालूम होती है · दिनतो फिरने में कट जाता है · मगर रात
पहाड़ मालूम होती गूंगा बहरा बनजाता सुन्न हो जाता है अभि
तो कुछभी नहीं हुआ · ठंडी सांसे भरते हो देखो न भाला ·

शीशे में सूतो देखो · कोई किसका यार नहीं सब झूटा धंधा है उ
ल्फ़त कंबख़्त बे पीर है · यही टेढी खीर है बडे बडे सूरमा इसमें
मर गये छाती पर अरमान ले गये अपने प्यारे से मिलने में बडा म
ज़ा है मगर अलग रहना मार डालता है उल्फ़त कूवे फूकाती है·
ये बीमारी जान के सात जाती है · और वो बात जो मैंने कही पच
के सबब से कही थी नहीं तो कहां मुल्क ज़र्रि गार और के
सी अंजुमन आरा जान आलम ये सब बातें सुन के बोला
वाह वाह मैं कब मानता हूं अगर वो झूठा था तो ये कब सच्च है
· इन बातों ही में शाहज़ादे का हाल और ही हो गया दीवानों
की सी बातें करने लगा · रोया, चिल्लाया · कपडे फ़ाडे सिर
पीट लिया · तोता बहुत शरमाया · दिल में कहा के उस और
त के सबब से इस बिचारे का ख़ून मैंने अपनी गरदन पर लिया ·
अब समझाने से क्या फ़ायदा · ये सोच कर जान आलम से कहा
क्यों घबराते हो · मैं तुम को ले चलता हूं मगर शर्त ये है · जो कहूं
सो करना नहीं तो धोका खावोगे · फ़िर मुझ को न पावोगे पछिता
ओगे · जान आलम ने कहा जो तुम कहोगे सो करूंगा · मगर
जलदी पता बताओ नहीं तो दम निकल जायगा तेरे हा
थ क्या आवेगा · तोते ने कहा इतनी जलदी न कीजिये · एक
अरदम लीजिये कल यहां से चलेंगे जान आलम ने तडप
तडप के रात काटी · सवेरे ही वज़ीरज़ादे को बुलाया लडकप
न से साथ रहे थे परले दरजे की मुहब्बत थी · दो घोडे अस्त
बल से मंगवाये और दोनों बिन माले चल निकले ॥

कबित्त

(न सुध बुध की ली और न मंगल की ली ॥
(निकल शहर से राह जंगल की ली ॥ १ ॥

२ चरित्र

तब बाद शाह ज़ादा इन फटे हालों से शहर के बाहर आया •
फिर कर बादशाही मकानों के तरफ़ देखा ठंडी सांस भरी • कम
र मज़बूत बांधी खुद दिल खोल कर रोया तोते को पींजरे से खो
ल दिया • आप और वज़ीर ज़ादा घोडों पर सवार और मि
या मिट्ठू पैदल नथा दाना खाने और नथा पानी पीने चलते च
लते एक जंगल में पहुंचे हर तर्फ़ फूल खिले हुए थे ठंडी हवा
चल रही थी इतने में दो हिरन आये ज़र बफ़्त की झूलें पडी ज
डाऊ सींगों पर था चडी • गले में हैकलें पडी हुए २ करते चौकडी
यां भरते हवा की मानिंद सामने से निकल गये जान आल
म और वज़ीर ज़ादे ने इनको जीता पकडना चाहा। घोडे डाले •
हिरन भी कनोतियां बदल चौकडी भरते हुए भागे • तोता ये हा
ल देख कर चौकडी भूला • कहा ये क्या करता है ये सब जा
दू का खेल है • बहुतेरा पुकारा • सिर दे मारा • सन्नाटे में किसी
ने न सुना • तोते ने अपना सिर धुना • और थक कर एक पेड
पर बैठ गया। दो चार कोस चल कर एक हिरन एक तर्फ़
और दूसरा दूसरी तर्फ़ गया एक के पीछे शाह ज़ादा और दू
सरे के तर्फ़ वज़ीर ज़ादा जान आलम शाम तक घोडा बढ़ाके
के गया • अचानक से वो हिरन गायब हो गया फिर तो ये अके
ला जंगल में घबराया आदमी की बो भी नहीं आती थी •
एक झिरे पर पहुंच कर हात मूं धोया खूब रोया के ईश्वर
तेरे सिवाय यहां कोई नहीं किसको कहूं और किससे बोलूं
तेरे ही भरोसे पर मैंने ये काम किया है इतने में एक बुड्ढा
आदमी आया और सलाम कर पूछा कि क्या मांगता है शा
हज़ादा खुशी के मारे फूल गया • तोते और वज़ीर ज़ादे को ?

कोभी भूल गया · और कहा के मुझ को जल्दी मुल्क जरनि
गार तक पहुंचा दीजिये · बुड्ढा हंसा और कहा के अभी इस
कुसी बन से तो निकलो · तुम को शायद मालूम नहीं है
के इस जंगल में सब का रस्ता · जादू का है · यहां का फंसा क
भी नही निकलता जान आलम बोला के हमारा जीना मरने से
भी बुरा है ॥ कबित्त ॥

हमेशा आग निकलती है अपने सीने से
इलाही मोत दे गुजरा में ऐसे जीने से ॥

बुड्ढे को इसके हाल पर दया आई · कहा क्यों घबराता है ईश्वर
में सब कुछ रत है जान आलम बोला के एक दफे अपनी प्यारी
को देखलूं जिंदगी का क्या भरोसा है · दिल में अरमान तो
न रहे · बुड्ढे ने कहा आंख बंद कर आंख बंद करते ही ·
मुल्क जरनिगार देखने लगा · प्यारी की शकल देखते ही
हाय हाय करने लगा · उस्से बुड्ढे ने समझा कर आंख खुल
वाई · कुछ खिलाया और उसी किरी पर सुलाया · जब सवेरा हुआ
तो शाहजादे ने अपने तई वही पाया जहां से हिरन के पीछे घो
डा फेंका था · तोते से सब पता पूछ लिया था · अपना रस्ता च
लने लगा एक दिन बड़ी धूप पड़ी जबान में कांटे पड़े जाते थे ·
तलवे जले जाते थे · जानवर पत्तों से मूं छुपाये पड़े थे · जंगल
में सन्नाटा · धूप का तड़ाका · पत्थर तपते से आग का अंगारा ·
जानवर हर एक प्यास का मारा था · उस धूप से हिरन काला
हो · बात करते जबान में छाला हो · मछलियां पानी में भुनती
थी जलजल कर किनारे पर सिर धुनती थी · मुसाफिर नहिं
में बड बडा ते थे कोई चुल्लू भर पानी दो · ऐसे सफर में जान के
से बचे आस पास कुछ पेड नजर आये · एक होज भी दि-

रवा॰ शाहज़ादा बैठ गया॰ जानमें जान आई॰ हौज़ पर पानी
पीनेको झुकातो पानी में उसी की शकल दिखी जिसके
वास्ते ये मुसीबत उठा यी थी॰ वो बोली बड़ी देरसे तेरा रस्ता
देख रही हूं जलदी आ इस कोतो आंख बंद करने का हिसा
ब आठ पहर रहा करता था॰ धमसे कूद पड़ा॰ सिर नीचे टां
गे ऊपर॰ आंख खुलीतो कुछभी न था॰ जंगल ही जंगल दि॰
खा॰ कहा अफ़सोस॰ दूसरा धोका खाया॰ होने की बात
आगे आई॰ चलते चलते एक बाग़ के पास पहुंचा देखा के
वहां नहर बह रही है॰ जानवर पेडो पे बैठे हैं सुंदरीयां बाग़में
फिर रही हैं बीचमें एक बारहदरी एक संग मर मर का चबू
तरा॰ और एक मसनद पर एक कामनी मूरत बैठी है॰

आस पास लौंडियां खड़ीहैं शाह जादे को देख कर एक लौं
डी बोली साहब तुम कौन हो · जान न पहचान · बेधड़क
पराये मकान पर चले आये येतो मरने पर तैयार ही था ·
कुछ न बोला · और मसनद पर जा बैठा · वो औरत तो मु
द्दत से इस पर मरी हुईथी हंस कर बोली आप कहां से
तसरीफ़ लाये · जान आलम हक्का बक्का बाग़ को देख
ता था · जान वर की शकल के फल लगे थे · फूल बातें
करते थे जिस में वे पर दिल चले वो मूके पास आंजा वे
जितनी चाहो खाओ फ़िर वो पेड़का पेड़ही पर मौजूद
है · ये बातें शाह जादे के वास्ते थी · जान आलम ने दिल में
कहा · लोफिर फ़से · उस औरत ने फिर पूछा तुम कहां
से आये · शाह ज़ादे ने कहा के हम से क्या पूछती हो · तुम
तो आप जानती हो · वो हंसी · शराब मंग वाई कबाबभी
आये · जान आलम ने सोचा के अगर नही पीते हो तो
जान जाती है और जो पीते हो तो क्या मज़ा है · आख़िर को
प्याला लिया और लहू के से घूंट गला घोट घोट के पीये ·
वो औरत शराब में मस्त होकर छेड़ छाड़ करने लगी · जान
आलम भी डरके मारे कुछ हां हूं कर कर देता था सच है जि
से जी प्यार करता है उस्की गाली भी सुहानी लगती है · और
दूसरे का प्यार ज़हर मालूम देता है · आधी रात को खाना
आया · जान आलम ने दो चार निवाले। पानी के स
हारे से उगल उगल के हलक़ के नीचे उतारे मगर उस
मर मुई ने खूब हत्ते मारे । फ़िर शाह जादे का हाथ पक
ड़ कर अंदर के मकान में लेगई · पलंग पर बैठाया · आप
लेट गई · शाह ज़ादा वहां से सरका · वो बड़ी ज़लील हो गई
और बोली · तूने सुना होगा के शाह पाल जादू गर तमा

ज़ादूगरों का बादशाह है· मै उसकी बेटी हूं मुद्दत से तेरे ऊ
पर मरती थी· नखाती नपीती थी· आज तू मेरे हाथ आ
या दिलका मन लब भर पाया· जो तुके चाहीये मुझसे ले
अगर अंजुमन आरा से न मिलने पावो गे पहले तो शाहज़ा
दा डरा फिर मजे बूत दिल करके कहाके ये सब सच है तेरी·
बातों से मालूम होता है के तू उल्फत का मजा जानती है·अ
गर इंन साफ़ तो कर जिस्के वास्ते मैन घर छोडा·तू उसीके
जान की दुशमन है· मैं तेरा क्या भरो सा करूं·दुनियां में
तीन तरह के दुशमन होते है· एक तो अपना दूसरा दुश
मन का दोस्त और तीसरा दोस्त का दुशमन· ये सब बरा बर
है भला ये कौन दस्तूर है के एक के नाम को खराब कर कर
जहां आराम मिले वही बैठ रहना· मैं कुछ रुपये पैसे का
भूका नहीं अपने घर का राज छोड कर आया हूं ये सुन
के वह रिवसि यानी कुनिया सी फुफ लाई और बोली के
जो तू मेरी बात नमाने गा तो अभी पल भर में अंजुमन
आरा को लाकर तेरे सामने जलाऊं गी और अपना दि
ल ठंडा करूंगी जान आलम डरा और सोचा जो मान
ने होतो अपनी जान का डर है· जो नही मान ने होतो अ
पनी प्यारी की जान जाती है ये सोचने लगा· और :
अपना भू नोचने लगा· जिस पर पडे वुही जाने·दिल
का ये हाल होता है के जिधर आया आया जिस्से फिरा
फिरा एक तो अपनी प्यारी से अलग रहना और दूसरे जिस्से
दिल घिन उस्के पास बैठना·ये कहांकी मुसीबत·आखिर
को यही ठहराई के इस्से जो बनाये रहो गे तो अपनी और
अंजुमन आराकी भी जान बच जायगी· ईश्वर और कोई स

ना दनावेगा · ये ठान कर उस औरत से कहा · हमतो तेरा जी ॥ देखते थे · हमने सुना है · के प्यार करने वाले, सब बाते सह ते हैं · अगर ये झूठ है · तो धम काते है · डराते हैं · प्यार कर ने वालों की हकूमत कभी कानों से नहीं सुनी होगी · हमने आखों से देखी तू इतना भी न समझी के तुझ सी परी और इतने रुपये को छोड कर ऐसा कौन बेवकूफ होगा ॥ जो उम्मेद पर जंगल जंगल ढूढ ता फिरेगा · मैंतो तुझसे हंसता था · ये कह कर गर दन में हात डाल दिया · और उस्का मूं काला किया · वोतो लेट तेही नरक में पोंची। इसको नींद कहां आनी थी · रात भर रोया करा जब वो कर वट लेती तो डरके मारे चु प होजाता · और झूठ मूठ सो जाता · सवेरा हुआ वो इसको हंमा म में लेगई नहा लाया फिर खाना खाया और कहा के ·
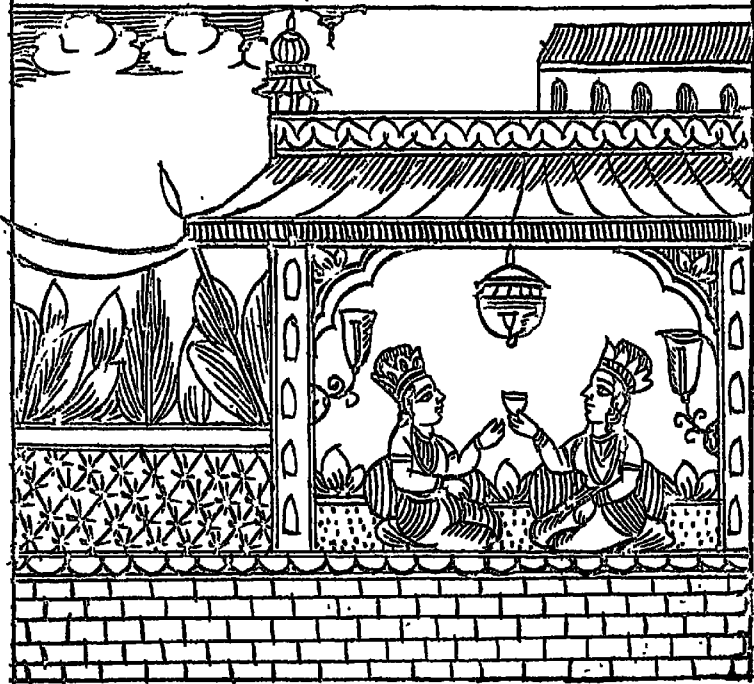
इस वक्त से तीसरे पहर तक में शहयाल के दरबार में हाज़िर रहती हूं· अगर तू छुट्टी दे तो जाऊं· दिलमें तो जान आलमने कहा जो दम बचे सोई गनी मत है· मगर ज़ाहर में बात बनाई और कहा के मैं तेरे वगैर कैसे रहूंगा· खैर जा· जलदी आईयो वोये सुन कर बहुत खुश हुई· उसके जाते ही बाग सुन सान हो गया· जान आलम अकेला खूब दिल खाल कर रोया· और कहा के हमसा भी कम बख्त कोई न होगा कोई ऐसा नहीं जिस्से दिलका हाल कहूं· डांडा मेंडा उस्से ऊंचा· जिसकी शाकल से भागूं· तोता यों उड गया· वजीर ज़ादा वो छूट गया· शामके वक्त वो जादू गरनी आई· जान आलम झूठ मूठ हंसने लगा· दो महीने यों ही कटे जान आलम सूखके कर कांटा होगया· एक दिन जादू गरनी ने कहा के तुझ· को तो ये बाग काटे खाता होगा· तेरा दिल घबराता होगा· क्या करूं यहां कोई नहीं· लौंडियां को अभी उठना बैठना भी नहीं आता· जान आलमने कहा हम क्या घबरायेंगे· अकेले ही पैदा हुऐथे· तमाम उमर अकेले ही रहे हमारी किसमतमें दूसरा लिखा ही नहीं· मगर ये है के अगर कोई मार डाले तो तुझसे कौन कहे मेरी मिट्टी मुफ़ में खराब हो। उसने कहा ये जादूका मकान है· इसमें किसीकी मजाल नहीं जो तेरी तर्फ़ देखे· जान आलम बोला के अगर कोई जादू गर इरादा करे तो क्या हो· औरत ने कुछ न सोचा और प्यार में अंधी होकर एक तावीज संदूक मेंसे निकाल जान आलम को दिया· वो दरबार को चली गई· ये अपनी प्यारी के ध्यालमें रोया किया· एक दिन इसने अपने दिलमें कहा तावीज़ तो खोलो· शायद कुछ मतलब निकले· ये कह कर

तावीज खोला · उसमें लिखा था जोकोई जादु गर के फंदमें फसा
हो तो इस तावीज को पढे · फिर जहां चाहे वहा चला जाये और
जिस जादु गर पर फूंके वो जादू गर जल जाय · जान आलम ब
हुत खुश हुआ · तावीज़ याद कर लिया · इतनें में जादू गरनी आई
जान आलम की तेवरी पर बल देख कर बोली के आज मिज़ा
ज कैसा है · वो बोला बहुत अच्छा है · तेरा रस्ता देख
रहाथा ले अब मैं जाता हूं तुझ को शैतान के हवाले किया ·
ये सुन तेही उस्का दम निकला समझ गई के पेंच पड़ा · सिर
पीट लीया · फ़िर कुछ पढ कर तालि यल ज़मीन पर मारा ·
हजारों अजदहे पैदा हुए · जान आलमने तावीज़ के जोरसे
सबको पानी कर दिया, फिर तो मिन्नत करने लगी · पांव पर
सिर धरने लगी · जादू गरनी थोंने समझाया के प्यार में दगा
बाजी अच्छी नहीं जो अपने ऊपर जान दे उसका साथ देना चा
हिये · जान आलम ने कहां जरा गरे बान में मूडालो · सोचो
हम भी किसी की उलझन में जंगल फिर ते है · तुम ने जबर
दस्ती हमें कैद किया ये अहसान थोडा है के तुमारा खेल न
ही बिगाडा · नहीं तो तमाश कार खाना उलटा पुलटा कर दे
ता वो सिर पटक ती ही रही · ये चल दिया · उसी होज़ पर
आया · घोडा वहां सिर पटक के मर गया था · उसकी लाश
देख कर रोया के अब पैदल चलने की मुसीबत पडी · फिर अ
पनी प्यारी का जो ध्यान आया तो चलने लगा · पांव में छाले
पडे गये · कहीं पांव रखता कहीं पडता इसी तरह से चलता ·॥

५ चोदिन

जान आलम चलता चलता · जीना न मरना · एक
दिन सुहावने एक जंगल में पहुंचा फूल फल और बाग की सो

मा देख कर ईश्वर याद आता था · शाहजादे को यह ज
गा बहुत पसंद आई · वहीं रात काटने का इरादा किया जानव
रों के छूल बल · उछल कूद · खेल कुलेल देखने लगा · कहीं का·
ला कहीं लाल बादल सावन भादों की घटा याद दिलाता था ·
घन घोर घटा छाई · मस्तों की बन आई · ॥

कवित्त

की फ़िरिस्तों की राह अक्ल ने बंद ॥ जो गुन: कीजिये स
वाव है आज ॥

नदियां नाले चढे : तालाब भरे पपीये का वहां होना · पीपी
कर जान खोना कोयल की कूक · मोर का बोलना बिजली की
चमक · बादल की कडक बडी सैर दिखा रही थी · शाम के
वक्त जानवर सब पेडों पर बैठे थे · आसमान पर शफ़क फू
ली · अवध की शाम की सैर भूली · एक तर्फ़ धनुष में लाल
हरी पीली धानी लकीरें दूसरे, तर्फ़ बुलबुल बोल रहे · हि·
रन चरते थे · कहीं मोर नाचते थे · कहीं चकोर चांद के ऊपर
लपक थे थे · जब कोई अपने प्यारे से अलग हो · और ये सैर
देखे तो दिल के टुकडे क्योंन हो और छाती कैसे न भर आवे · द
स्तूर की बात है कि जब आदमी को आराम मिलता है तो
जिसे जी प्यार करता है वह याद आता है · जान आलम को
अपनी प्यारी याद आई · इस सोच हीमें था के और तोका
गोल नजर आया · ये धोका खा चुका था · संभल बैठा और ता·
वीज पढने लगा · मिसल मशहूर है, दूध का जला छाछ फूंक
फूंक पीता है, जब वो आगे बढी तो मालूम हुआ के चार पांच
सौ औरतें परीज़ाद चुस्त चालाक कमसिन, अल्हड पनमें दि
न · उछलती कूदती पैदल चली आती हैं · और बीचमें एक

चांद का टुकड़ा आफ़ताब का पर काला ॥ कबित्त ॥ बरस पंद्रह या के सोले का सिन ॥ जवानी की रातें मुरादों के दिन एक सोने के हवादार में बैठी है उसके नकश का क्या हाल लिखा जावे ॥

कबित्त

गुलसे रुख्सार गोल गोल बदन ॥ गात जिस तरह कुंकुमे रोशन फूल अपने जोबन पे मस्त जैसे हूर ॥ चश्म बद्दूर आंखें मोती चूर गाल मुंह पर वह बिखरे ज़ुल्फ़ के बाल ॥ रंगे वो गुलसे होंट पान से लाल ॥ ३ ॥ अप्सरा ॥ सबदो नाज़ुक के जान दे दीजे ॥ मुंह वो ऐसा के मिठिया ले लीजे ॥ ४ ॥ नज़र न लगे ॥ नाक में नीम का फ़क़ति नदा ॥ कूदना हंसना सब लडकपन का ॥ सीने पर दोनो छातियां अन मोल ॥ ऊंची चिकनी कड़ी करारी गोल ॥ ५ ॥ छाती ॥ अस्तीनों की वो फ़सी कुर्ती ॥ जिस्म में वो जवानी कि फुरती ॥ देख मुंह मोतियों के दानों में ॥ बिजलियां छोटी छोटी कानो में ॥ आडी हैं कल गलेमें डाले हुऐ ॥ प्यारी प्यारी कुंचे निकाले हुये ॥ ६ ॥ गहना ॥ बालसी वो कमर लचकती हुई चोटी एडी तलक लटकती हुई ॥

चरित्र

ज्ञान आलस ये देख कर आह भरने लगा ये आवाज़ औरतों के कान में पडी और निगाह जो जान आलस से लडी सबकी सब लड खड़ा कर ठिठक गई सक्ते की हालत में सहम कर झिजक गई किसीने कहा सूरज छिपा है दूसरी बोली चांद चमक रहा है तीसरी ने कहा चांद नहीं तो तारा है चौथी चुटकी लेकर बोली उछाल छक्को तू बड़ी खामपारा है एकने कहा चलो पास जा चलके देखें आंख सेके दिल ठंडा करें दूसरी खिलाड न बोली दुर हो ऐसा न हो इसी सोच में तमाम उमर जल

जल के मरे· किसीने कहा दिवानी यों चुप रहो क्या जाने तुम सब के दीदों कहां की चर्बी छायी है · वोनो भला चंगा हट्ठा कट्ठा मर्द वाहे· सवारी जो रुकी तो मलका मेहर निगार ने हवा दार परसे पूछा· खैर तो है सबने हात बांध के अर्जकी के जानकी अमान पावे तो जबान पर लावें हुजूर की सवारी यहां रोज आ तीहै· आज गैर मामूल इन दरखतों में ऐसी शकल दिखानीहै के न कभी देखी न सुनी · मलका ने पूछा कहो वो बोली हुजूर के सा मने· जिसवक्त मलका की निगाह जान आलम पर पडी बर्छी जि गर के पार होगई· इश्क की मदत हुई· सबवला रद्द हुई· होश जाता रहा· रंगउड गया· और आखर को थर्रा २ कर मलका ह वादार पर गश पाई· लौडियां घबराई· किसीने गुलाब· किसी ने केवड़ा· छिडका· किसीने बाजू पर रुमाल खेंच कर बांधा· कोई तलवे सहलाने लगी कोई मिट्टी पर अतर छिडक कर सु घाने लगी· कोई हात मूंके बडे से धोतीथी· कोई सदके होहो रोतीथी· किसीने कहा यूं शबकी तरली धोकर पिलाओ· को ई चिल्ला के बोली लोगो इधर आओ आखिर को मल्का होश में आई· दिल बेचैन मगर शरम के मारे चुप· लौडियोंने सला कीके सवारी इधर से फेरो· और मलका को बीचमें घेरो मगर म लका को कहां सबर था· बोली दिवानियां हो· ये कोई मुसा फिर बिचारा सफ़र का मारा थक कर बैठ रहा है· इस्से डरना क्या है· चलो पास से देखो· वो सब ताबे दार थीं· चली मगर झिझक तीं २ एक हुई बढी· जो जो सवारी बढ तीथी· वों वों मलका की छा तीधडकतीथी· जान आलम भी देखतेही बे चैन होगया· म गर दिल को मजबूत करके तेवरी पर बल न आने दिया· एक लौंडीने मलका के इशारे से आगे बढ कर पूछा क्यों जी

लिया मुसा फ़िर तुम्हारा किधर से आना हुआ और क्या मुसी
बत पड़ी · जो अकेले कोई संग न साथ इस जंगल में आण्डे
हो जान आलम ने हंस कर कहा · मुसीबत हराम ज़ादी तेरे
ऊपर पडी होगी · मालूम हुवा के यहां आफ़त के मारे आते
हैं · कहो तो तुम सबकी क्या कमबख़्ती दिनों की सकती है ·
जो चुडोलों की तरह सरे शाम ता काम फ़िरती हो · मल
का ये बात सुन कर फडक गई और बोलने लगी · वाह वा सा
हेब तुम तो बडे गर्मा गरम तेज़ मिजाज हो · हाल पूछने से इतने
ख़फ़ा होकर ये कडा फिक्रा सुनाया के उस मुर्दार के साथ थू थू थुक
छुट सबको पिछले पाइयां बनाया · जान आलम ने कहा आप
ना दस्तूर नहीं कि हर किसू को से बात करे दूसरे मुर्दार से बात
हराम है मगर खैर धोके में जैसा उसने पूछा वैसा ह मैंने जवाब
दिया · अब तुमारे मूंसे मुर्दार निकला हम समझ गये चुप हो
रहे · मलका ने हंस कर कहा · खूब एक नहीं दो हुई साह
ब जरा अपनी चोंच समालो · ऐसी बात मुंसे न निकालो क्या मे
रे दुशमन दरगो मुर्दार खोर हैं · भला बोलो कहके सुन चु
की मैं आपसे पूछती हूं के हजूर तशरीफ़ कहां से लाये और
इस जंगल को निहाल किया · जान आलम बोला क्या खूब आ
पहम को बनाती है · बिगड कर ये सुनाती है · हम हुजूर का
हे को हैं · तुम तो जीते जी चार के कांधे चढी खडी हो · अकेले
ला हुजूर हो · लोंडियों ने मलका से कहा हुजूर आप किसे
बात कर्ती हैं · ये मर्दुवा तो लठ है · सख़्त मूफ़ट है मल
का बोली चुप रहो इन बातों में तुम मत बोलो · ऐसा न हो ख़
फ़ा होकर और कुछ बातें सुनायें · लोंडिया हटी और कहने
लगी खुदा खैर करे इस जंगल में गुल फ़ूला चाहता है · ये पर

देखी राह भूला चाहता है · फिर मलका ने कहा साहेब कुछ मुझसे बोलो सिरसे खेला · जान आलम ने कहा अमीरी छोडो नीचे आवो · मालूम हुवा तुम बडे आदमी हो · सवारी भी मांगे की नहीं · लोडियां भी तुम्हारी है · फकीरों के बिस्तर पर आवो तकल्लुफ़ तह कर रक्खो दिल चाहे गावो हम भी कुछ कह उठेंगे · तुम हवा दार क्या हवा के घोडे पर सवार हो हम खाक पर सायवार है · हम तुमसे बड़ा फ़रक है · मलकाने कहा खुदा की कसम है · इतनी उमर में तुमसा मूफ़त आदमी मैने नहीं देखा तुम भी कोई चीज़ हो टट्टू न घोडा · गठड़ी न बुकचा · नंगा लूच्चा वोही मसल है · रहें तो कोथडोमें और ख़ाब देखे महलों का · हर बात पर ठंडी गर्मियां करते हो जो यही खुशी है तो लो ये कहके मलका हवादार से उतर शाहज़ादे के बराबर बैठ गई लोडियोने भयानक होके कहा लो बीबी ये मुवा क्या जादू का बना हुआ आदमी है · मलका सी परी को गालियां देदे के शीशे में उतार लिया बैठे बिठाये मैदान मार लिया · एक बोली तुके अपने दीदों की कसम है · सच कहियो ऐसा जवान · रंगीला · सजदार नुकीली, ढोल आफ़त का पर काला · दुनिया से निराला · तूने या तेरी मलका ने भी कभी देखा न भाला था · अरी दीवानी नादान खूब सूरती अजब चीज़ है · ये सबको प्यारी और अजीज है · जान आलम मलका के बैठ ते ही आह भर के बोला :॥

कबित्त

ज़ाहर में गरचे बठा लोगोंके दरमियां हूं ॥ पर ये खबर नहीं है मैं कौनहूं कहाहूं ॥ खुशी में दूर रंज में फसा आफत का मारा घर बार से आवारा · कोई संग न साथ · कोई

रस्ता बताने वाला नहीं तन को खाता हूं और लोहू पीता हूं पांव मे ताक़त नहीं मगर ऐडिया रगड ने चल ताहूं. जंगलघ रहे और क्या खबर है : ये कह कर चुप होरहा. मलका समझी के बेशक कोई बाद शाह ज़ादा है. मगर किसीकी उलफत मे फसा है. बात में मुहब्बत टपक तीहै. जबान से आग निकलतीहै. दिल में आया के किसी तरह घरले चलिये. सब हाल मालूम हो जावेगा. कहां तक छिपावेगा. बोली तुम हमारे इलाके में आये हो. तुम्हारी खातर करना हम को जरूर है. घर चलो. रात भर आराम करो. सवेरे इख्तियार है. जान आलम ने कहा. फ़िर अमीरी की ली. यानी हम तो यहां के मालिक हैं. और आप भूके प्यासे मुसाफ़िर हो चलो ये फ़िक़रा किसी फ़कीर को सुनावो. किसी मुहताज को अपना करो फिर देखावो. हद से कदम बाहर निकालो. यहां दिल अपने बस में नहीं. चला चली में फुरसत कहां मलका ने सुस्त होकर कहा दावत को मंजूर करना चाहिये आगे आपको इख्तियार है. जान आलम ने दिल में सोचा कि मुद्दत बाद आदमी की सूरत देखी. यह शाहज़ादी है. इसको नाराज़ करना बे हयाई. आदमियत का जो लीहाज़ आयातो बोला के खाने पीने सोने बैठने की हवस दिल में नहीं मगर किसीका दिल तोड़ना भी अपने मज़हब से बड़ा गुनाह है. और इतनी रुखाई जो मैने कीतो इस वास्ते की के आपको रंज होगा. रोती शकल के पास हंसना कहां. हम सुसी बतज़ादों के पास खुशीका नाम नहीं. और जो येही मज़ा है तो. चलो. ये कह कर उठा. साथ साथ हातों में हात बातें करता. चला. बाद शाह ज़ा

ज़ादा बड़ा ठठोल था · कोई बात बे नोक झोक ज़बान पर नहीं लाता था · मलका का हर बात पर दिल पिगला जाता था · मगर दिलसे कहती थी · ऐसा न करना के शर्म से हात धोना पड़े · बैठे बिठाये जान खोनी पड़े · जग हंसाई हो · ये तो किसी उल्फ़त में मर मिटा है · दूसरे मुसाफिर है · ॥ कबित्त

मुसाफिरसे करता है कोई भी प्रीत
मसल है के जोगी हुए किस्के मीत

चरित्र

मगर दिलको कहां चैन था · ईश्वर के कार खाने में किसी का दखल नहीं उल्फ़त में आगा पीछा सोचना किसने बताया है · जो दम मिल बैठे वोही गनी मत है । इसी तरह चलते चलते बाग तक पहुंचे · इस बाग की तारीफ़ क्या बयान हो · उस्के बीच एक बारह दरी थी · उस पर तमामी का शामियाना तना · सफेद बादले की झालर · कला बत्तु की डोरियां · चौदवी रात · आसमान साफ़ · चांदनी छिटक रही · हजारे का फव्वारा छूट रहा · मलका ने · जान आलम को मसनद के ऊपर बिठाया · एक तरफ़ से शराब आई · दूसरी तर्फसे गाने बजाने वाले मौजूद हुए · परीयां बनी बनाई सजी सजाई आंख लड़ाती पेड़ फड़काती फिरती थी · तबले की थापब आये गमक से कबर के मुरदे जागते थे · ताल और सुरसे घूंघरू बजते थे · ठोकर से मुर्दे जीते थे · गत के हाथ पर ये गत थी · के देखने वाले हात मलते थे · ठंडी सांसे लेते थे · राजा इन्द्र की सभा इसके आगे गर्द थी · उस वक्त मलका ने प्याला शराब का भर शाह ज़ादे को दिया · और कहा के आप इसे पीवोगे के सफ़र का रंज दिलसे दूर हो · मुझे कुछ हाल पूं

छला जरूर है · जान आलम ने देखा ने को इन्कार किया · मल
का बोली वाह साहब आपतो किसीका दिल नही तोडते हो ।
फिर क्यों सुकेड करते हो · जान आलम हंसा और प्याले को मूं
से लगालिया · फ़िर जान आलम ने एक प्याला भर अपने
हात से मलका को पिलाया · फ़िरतो खूब शराब उडी · दोनो
मस्त वाले होकर सब रंज भूल गये · जान आलम बोला जिंद
गीका क्या भरोसा · जोदम है सो गनी मत है · एक लौंडी
जो मलका की बडी मूं लगी थी बोली की इस चांद नीकी बहा
र तो जब है · के एक चांद बगल में हो · एक चांद मुकाबिल हो
मलका ने ठंडी सांस भर कर कहा · सुदरि हम तेरी छेड छाड
सब समजते हैं · मगर क्या करे अब् ओस की बात है जिस पर
हम मरें उसका दिल कही और है · जान आलम ने लौडियों
से पूछा में मुसाफ़िर हूं मुझसे दिल न लगाना क्या भरोसा
मेरा रहा न रहा मलका चाल के पूछने लगी तुम सच कहो
कहां से आये हो किस फिक्र में हो और क्यों घब राये हो ·
जान आलम ने उस वक्त तमाम सब सच्चा हाल कह दिया ·
जब मलका ने सुना के यह अंजुमन आरा की उल्फ़त में फसा
है तो हात पैर टूट गये छक्के छूट गये · घबराई · रोई · पीटी · चि
ल्लाई · जान आलम ने कहा मलका खैर तो है · यह क्या करती
हो · मलका बोली सुन मेरी जान के दुश्मन · मेरा बाप बडा बाद
शाह था · मगर छोटी उमर से फकीरी की तर्फ उसका बहुत दिल
था · सब राज काज तज इस जंगल में एक मकान में बैठा मुझसे व
होतेरा प्यारी को कहा मैन तमाना अबये कहा कि बला मेरे
ऊपर टूटी · जो तू फ को देख तेही दिवानी हो गई और तू उस्की
उल्फत मे फ़सा है के जिसका दुनियां में जवाब नहीं अब मौत के ॰

सिवाय क्या इलाज है · सवेरे तू कहां और मैं कहां · इनसा फतो कर किससे कहूंगी के दिल घबराता है · जान आलम की जुदाई से जी निकला जाता है · संग सहे लियां ताने देंगी · छेड छाड कर जाने लगी · जब लोंडियों पर खफा हूंगीतो वो बु डावेगी · ये वातजबान पर लावेंगी · के मलका उल्फ़त का रंज हा लती है · शाहज़ादा चला गया न रुक सका · उसके ऊपर तो बस न चला गुस्से की फाक हम पर निकाल ती है · मा और बाप सु ने गे तो क्या होगा · रुस वाई के डर से दिल खोल के न रो सकूं गी · जब दिल घबरायगा बताओ की कौन तसल्ली देगा · आप उधर जायगें हम यहां घुट घुट के मर जाय गे वा पने जादू तो निय स ब पढा परंतु हमारे नसीव की रेखा नही देखी ये कह कर छाती पर हात धर कर रोने लगी · आसू ओं से कपडे भिगाने ल गी · जान आलम पर ये पड चुकी थी वे चैन होकर बोला · तु म्हारा किधर ख्याल है · मैतो तुम्हारा ताबे दार हूं · जो कहोगी सो करूंगा · हर गिज तुम्हारी बात से मूं न मोडूंगा · मगर थोडे दिन सबर करो अगर अंजू मन आरा को हूढ ने न जाऊंगा तो तुमको मुझसे क्या उम्मेद होगी बराबर वालों को क्या मूं दिखाऊंगा ये वक्त देखा चाहिये प्यारा प्यार करने वाले · की तसल्ली करे अप नी ताबे दारी उसके गले उतारे · नसीबे वालों को ऐसे भी मिल जा ते हैं प्यार करते हैं समझाते हैं लोक जलन से जल कर मरजाते हैं · मल्का ये सुन कर खुश हुई सच है, जिसको जी प्यार करता हो अग र वो कुछ भी बोले तो प्यार करने वाला उसे वेद पुरके बराबर मानता है · मलका बोली · खैर हम तो इसे भी केल ले गे · ये खेल भी खेल लेयेंगे · मगर शर्त यह है के तुम हमको दिल से न भूलो · जान आलम ने कसमें

खाई· और कहा के हरगिज़ फ़रक न होगा· ये· बहु मछो
डो हंसी खुशी की बातें करो· जुदाई की घडी सिर पर खडी है·
रात थोरी· कहानी बडी है· दो बातें भी नहीं करने पाये थे के तड़
का होगया· मुल्लाने अजांदी· मुर्गे बोलने लगे· जान आलमने चल
ने का इरादा किया· मलका बोली अगर हरजन होतो मेरे
बाप से मिलते जावो· जान आलम साथ होलिया देखा के
एक बुड्ढा आदमी एक बोरिये पर बैठा है· और अपने ध्यान
में माला जप रहा है· इन्ने सल्लाम किया· उन्ने आदेकर हात
बढाया· छाती से लगाया· पास बिठाया और कहा के रात
का हाल फ़कीर को सब मालूम है मलका के बराबर कोई कम्ब
ख़्त नहीं हमारा कहना नमाना· बडे बोल का सिर नीचा· तुमने·
क्या क्या करार किया· जो तुम तसल्ली नहीं देते तो इसका भी
जीना मुशकिल था· अगर वायदा पूरा करोगे तो तुम्हारा
भला होगा· नहीं तो क्या जाने मलका का क्या हाल होगा· म
र्दों की यही बात है· के मुसीबतज़दों की मदद करें· जान
आलम ने कहा आप मुझे शर्माते हैं· मैं लाचार हूं· इस द्य
द्दे पर घर छोडा अपने बिगाने से मूं मोड़ा· अगर न जाऊं तो
वो कहेंगे बडा कम हिंमत है· जहां आराम मिला वहीं बैठ
गया· इससे जान सका कूटा था· नाहक मुहब्बत का दम भरा·
उस बुड्ढे ने कहा शाबास मर्दों की यही बातें हैं· हमको यकीन है
के तुम अपना वायदा भी पूरा करोगे· यह कह कर एक तख़्ती
जान आलम को दी और कहा मुसीबत पडे इसको देख लेना
जान आलमने वो लेली· और कहा कूंच की अपनी अबतैयारी
है· मलका ये सुन कलेजा थाम सिर को धुनाबोली· ॥ कबित्त॥ मैं म
रगई सुन उसके सरंजाम सफर का· आगाज ही देखा न कुछ -

अंजाम सफ़र का · जब जान निकल्ला तु मुझे साथ लिये चल · क
लों   लूंगी साथ तेरे काम सफ़र का · आख़िर को रुख़सत किया · ४
और कहा खुदा हाफ़िज़ जैसे पीठ दिखाते हो ऐसाही फिर मुंह दि
खाओ · जान आलम तो रवाना हुवा · मलका ने रोरो के नदियां
बहाईं · संग सहेलियां बोलीं मलकाजी खोवोगी जो इसत
रह बिलख बिलख कर रोवोगी · मुसाफ़िर के पीछे रोना अच्छा
नहीं बीबी खैर है · ये · शगुन बहुत बुरा है · वोभि दिन ईश्वर
दिखावेगा · जो वो परदेसी सही सलामती खैर से आवेगा · म
लकाने कहा · ॥ कवित्त ॥ बेदर्द कोई इतना समझता नहीं है ·
दिल दुखे तो किसतरह से फर याद नहो · जों जों जान
आलम की जुदाई बढ़ती थी · त्यों त्यों मल्का · घुट घुट के मरती
थी · कभी कहती अगर दिलका हाल कहूं तो शरम आती है ·

जो चुप रहूं तो जान जाती है · यह सब कहती होगी के मल का को प्रारम आती · राह चलतो से बैठे बिठाये दिल लगाती है आप रोती है हमें मुफ़त रुलाती है · समझाने वाला कहां से लाऊं किसको हाल सुनाऊं अब कौन आंसू पोछने को मना करेगा · कौन प्यार से छाती पर सिर धरेगा । जब लोग · बे दे खते तो उसको घेर ते · सिर पर हाथ फेरते · और पूछते के अपनी जान की कुशल हमें तो बता कि तेरा क्या हाल है तो वो कहती और तो कुछ जानती नहीं पर हाथ पांव स नसनाते हैं · गश चले आते हैं · दिल घबराता है · घर काटे खाता है · बंद बंद टूटता है · जी छूटता है · सब नाय अ च्छा मालूम होताहै · याद मियों से दिल घबराता है · अके ला रहना खुश आता है · आंख बंद हुई जाती है मगर नी द नहीं आती · कपड़े फाड़ने को दिल चाहता रहता है । जी अ चलाता है · जंगल की धुन लगी है · रात दिन रोती हूं अ गर जान आलम का जिक्र दिल लगा के सुनती हूं जो कोई समझाता है तो रोना आता है · कलेजा जलता है · दिल को कोई मसोस कर मलता है · अरे लोगो ये क्या आजा र है · सबसे आंख चुराती हूं · बराबर वालियों से शर्मा ती हूं और ये कहती हूं ॥ क़ालिन्द ॥ अफसोस ये हाल याद आलम देखे · ऐसा न हुवा के जान आलम देखे ॥ अगर उल् फ़त इसीका नाम है · तो मैंदर गुज़री मेरा सलाम है · जो लोग उल्फ़त करते थे क्योंकर जीते थे · क्या खाते क्या खाते थे क्या पीते थे · दो दिल से नहीं खाया मगर पेट भरा है · खड़ी हूं जी बै ठा जाता है · पहिले मुझे क्योंन मना किया मेरी जान के दुश मनो पैदा किया · खैर ईश्वर की मर्जी · किसीका क्या बिगड़ा · मेरी

किस्मत का लिखा · जो किया वो अच्छा किया ये सुन कर एक सहेली खेली खायी मुहब्बत के सदमें में उठायी · पास आई और कहा कुर्बान जाऊं वारी · अभी सलाम ती से न यी फसी हो · जो इतना तड़फ़ती हो · सहते सहते आदत हो जावेगी · दिल को तसल्ली आवेगी · ये बात सुन कर मलका का दिल भर आया · वे इख्तियार रोने लगी · ॥

५ चरित्र ॥

मलका मेहर निगार के बाग से ५० मंज़िल मुलक जर निगार था शाहज़ादा या प्यादा अकेला पांव में छाले गिरता पड़ता मरता कुदता कई महीने बाद उस मुल्क में पोंचा जो जो पते तोते ने बताये थे वो: सब पाये · जान आलम हंसा खुशी से जल्दी जल्दी कदम उठाये चला जाता था · एक दिन दो चार घड़ी दिन रहे एक चीज चमकती हुई · उत्तर के तर्फ़ देखी · उस पर निगाहे नहीं ठहरती थी · आंखों में चका चोंधी आती थी ये घबराया · कहा अफ़सोस इतनी दूर · आकर भी कुछ फ़ायदा नहुवा · जब पास पहुंचा तो देखा के एक बडा दरवाज़ा · उस पर लाल और जवाहिर जडे हुए हे · अब दिल में यकीन हुवा के ठिकाने पर पहुंचा गिरता पडता शहर के दरवाज़े तक आया देखा दिल्लोर की ईंटें जडीं हैं लोहे की ढली हुई तोपे चढी हे · जवान जवान · गोलं दाज बादले के दग़ले पहने गुले नार इक पेचे बांधे सजे सजाये तोपों के दाहें बायें टहल रहे हैं · दरवाज़े पर पांच हज़ार सवार एक लाख प्यादे जमें खडे हैं · जान आलम ने पूछा इस शहर का क्या नाम हे · और यहां का हाकिम कोन हे · वो: इस को देख तेही ताड़ गया · के ये बे. पा कक हीं

का शाह ज़ादा है · नूर चेहरे से टपक रहा है · उनों ने पूछा
आप कहां से आये · जान आलम बोला भाई · सवाल और
और जबाब और आखर को एक ने कहा हुजूर इस मुल्क
को जर निगार कहते हैं · ये सुनते ही बाछें खिल गई · चे
हरा कुंदन की तरह दमकने लगा · दिल से कहा मैं ख्वाब देख
ता हूं · नहीं तो नसीबों से ये उम्मेद किसको थी · ये कहकर आ
गे बढ़ा शहर के अंदर गया · सब चीज माजूद पाई · हलवाई
रोटी वाला · कुंजड़े · कसाई · सक्कों के कटोरों की झनका
र · मेवा फरोशों की पुकार · दल्लालों की बोल चाल यारों
के अवाजे तवाजे · कोई कहता था मजा अंगूर का है रस
रीसे · कोई बोला गुलाब में बसाई है · गंडेरियां पोंडे की एक
तर्फ तंबोलन आंख मार कर कहती थी · अच्छी से सुखड़ा लाल
है · कहीं से ये आवाज आती थी कौडी में साडे तीन मजे · को
ई कहता करारे भुर्भुरे नीबू के रस के · कोई गुप चुप बेचने
वाला अलग ही ललकार रहा था · के सास की चोरी बहू का गु
टका · जान आलम ने पूछा किला किधर है · लोगों ने कहा
सीधे जाके दाहें हात को फिर जाना · ये वहीं पहुंचा · देख के भौ
चक्का रह गया · जो लोग दरबारी थे सब काले कपड़े पहने
हुए थे · इसका माथा ठनका · एक एक पांव कई मन का
होगया · हर एक का मूं तकता था · कदम उठने सकता था ·
कहा खुदा खैर करे शगुन बुरा है · और कदम बढाया ·
सवारी का सामान नजर आया · बचोबढ़ो का गुल मच र
हा था · देखा के एक ख्वाजा बड़ी धूम से सवार है · मगर ग
म के मारे चेहरा उदास है · जान आलम ने सलाम किया
उसने सलाम का जबाब तो दिया · मगर उसकी शकल

को देख कर भौचक्का रह गया · और कहा के ईश्वर ने इसलि
हीसे क्या क्या बनाया है · फिर पूछा के आप इस मन्हूस शहर
में कहांसे आये हो · जान आलम ने कहा मियां साहेब खैर है ·
हमतो फ़कत इस शहर और यहांके मालिक के वास्ते घर
बार छोड कर आये हैं · तुम खुदा के वास्ते हालतो कहो के।
सबके काले कपडे क्यों पहन रक्खे हैं · उसने चीख मार
मार कर कहा के यहां के बाद शाह की बेटी थी · अन्जुमन आ
रा नाम · तमाम दुनियां में उसकी खूब सूरती की तारीफ है ·
आज तक उसके बराबर न देखा न सुना · हज़ारों बाद शाह उ
स के वास्ते ठोकरे खाकर दीवारो से सिर टकरा के मर गये · दो चार
दिन हुए के एक जादू गर अपने जादू के जोर से महल से उडा ले
गया · ये बात पूरी भी न हुई थी · जान आलम का काम तमाम ऽ
होगया · सिर चकराया · जमीन पर गिर पडा · और बोला ॥
कबित ॥ जी की जी में रही बात न होने पायी ॥ हायरे उससे
मुलाकात न होने पाई · ॥ ये कह कर वो इस तरह गश खा
गया · ॥ कहे तू जीते ही जी मर गया · १॥ खोजा घबराया · कहा
के ये अन्जुमन आरा की उल्फ़त में फंसा है · मुझसे गलती हुई ·
नाहक इससे कहा · बहुतेरा केवडा · गुलाब · छिडका कुछ न हुआ ·
बाद शाह के पास जा कर अरज की के हज़ूर आज अंजूमन ऽ
आरा का मातम ताज़ा हुआ एक शाह ज़ादा राजकों फ़क़ी । तज
री भेस कर अंजु मन आरा के वास्ते यहां आया · मुझसे जा
दू गर का हाल सुना · गिर पडा अब तक होश नहीं आया · क्या
जाने जीता है या मर गया । मगर हुजूर देखे तो शाह ज़ादी
को भूल जावे · बाद शाह ने कहा जल्द ले आओ · लोग दौ
ड और मुर्दे की तरह उठा लाये · बाद शाह ने केवड़ा छिड
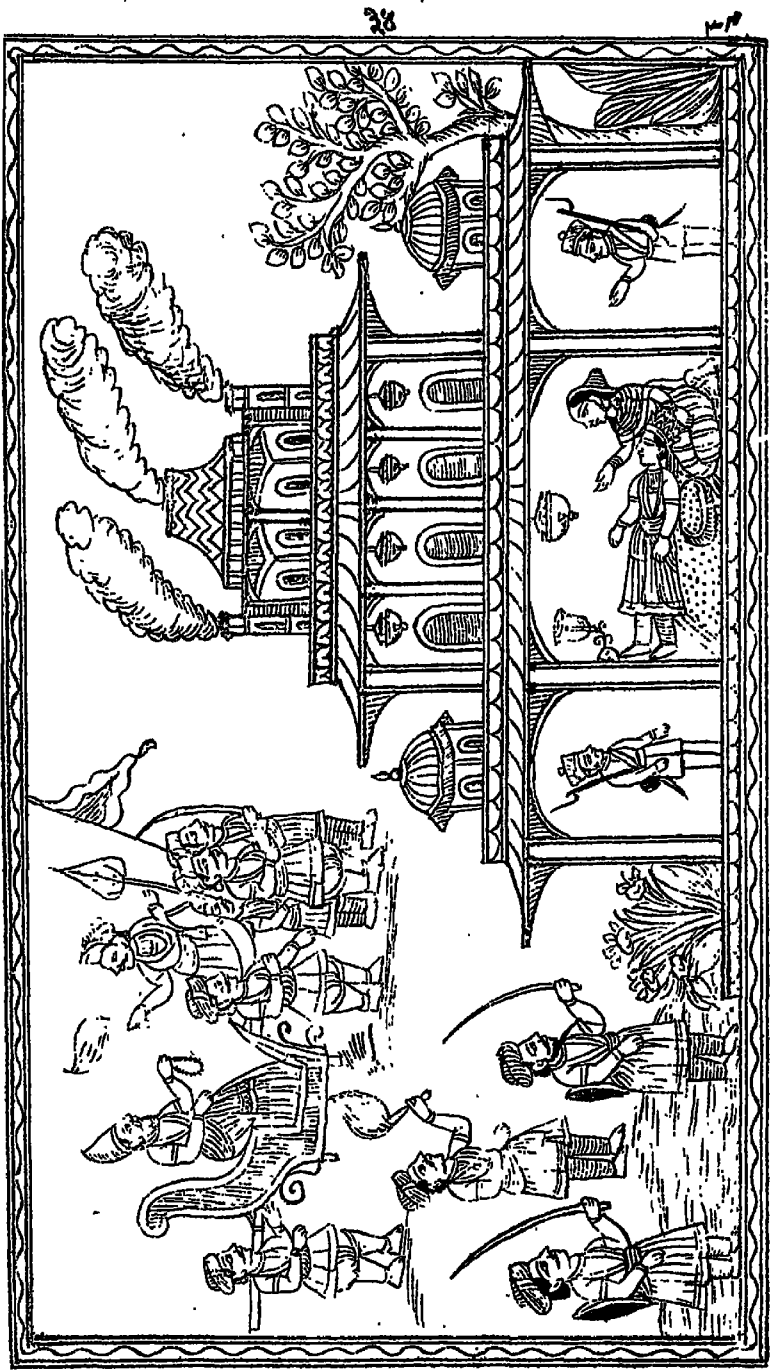
का शाम के वक्त जान आलम होश में आया · देखा फिर
उठ बैठा देखा के एक शख़स ताज पहने हुये बड़ी धूम धाम से
तख़्त पर बैठा है · और अमीर वज़ीर अपनी अपनी जगह खड़े
हैं · जान आलम ने दस्तूर के मवाफ़िक सलाम किया बादशाह
ने छाती से लगा लिया · सब दंग थे सच्चे कैसे ढंग थे ·
इस वक्त जान आलम का हाल देखना चाहीये · ॥ कबित्त ·
हस रत पर उस मुसाफ़िर के कस के रोईये · ॥ जो थक गया हो
बैठ के मंजिल के सामने ॥ १ ॥ दिल चिल्लाने को करता था मगर
शरम से दम को घोटे बैठा था · बादशाह ने मा बाप का हाल पूछा ·
सब पता बता दिया · जान आलम ने फिर सिर झुका कर
शाहज़ादी का हाल पूछा · बादशाह ने कहा के एक जादूगर
मुद्दत से उसकी फ़िक्र में था · बहुत चौकसी होती थी मगर वो
धोका देके ले गया · आजतक महल में नही चोंगे हूं · खाना
पीना · सबको हराम है · जान आलम ने कहा कुछ येभी
मालूम है · कि किधर · को लेगया · बादशाह ने फ़रमाया के यहां
से पांच कोस तक पता मिलता है · आगे आग का किला है · वहां
का हाल मालूम नहीं के सब जादू का कारखाना है · शाहज़ादे ने
कहा अगर जिंदगी बाकी है तो कहां जाता है · ये कह कर उठ खड़ा
हुवा · बादशाह लिपट गया · कहा बाबा खुदा के वास्ते ऐसा
काम न कर ना · उस जंगल में वहम के पर जलते हैं · हवा के पांव
में छाले निकलते हैं · एक को धोके में खोया · मुझको जान बूझ
के कैसे जान दूं · तू यहां राज कर और मैं कोने में बैठ रामराम
जपूं शाहज़ादे ने कहा ये राज आपको मुबारक रहे · बंदा अपने
घर की हुकूमत छोड कर यहां आया है · लोग यही कहेंगे के
कैसा बेशरम है · शाहज़ादी को तो जादूगर ले गया · और येजी

तारह· प्यारी के वास्ते मरना हमें उचित है· वेसिर दिये कब
चलते है· बात और बाप एक है· जो कहे सो कर दिखावे· जि
स ने यहां तक जीता पहुचाया · वो वहा तक भी पहुचावेगा
नही तो अकल दिवानी क्या जरूर है· पहिले जब अकल औ
र उल्फत का सामना हुआ था तो मेरा दिल खटका था· अक
ल कहती थी केमा बाप से अलग न हो· राज हात से मत दो· मु
हब्बत कहती थी मा बाप किसके· राज कैसा· अपने प्यारे ले कि
न फकीरी राज से अच्छी है· अकल कहती थी· आबरू का पा
स करो कुलवे का नाम मत डूबो औ· जंगल की धुन न बांधो·
जंगल में बहार है· अकल कहती थी· बादशाही पोषाक न
फाडो· मुहब्बत कहती थी· अकल दिवानी है· नंगे रहने के बरा
बर कोई पोषाक नहीं· न कुछ धोने की जरूरत न फट ने का
डर· चोर इसको न ले जाय· डाकू इसको न उठावे· न पानी से·
भीगे न आग से जले· सडे न गले· गले से अलग न हो· न को
ई इसको ले सके न आप किसी को दे सके॥ कवित्त॥ तनकी
उरयानी से बेहतर नहीं दुनिया में लिबास॥ ये वो जामा
है के जिसका नहीं सीधा उलटा॥१॥ आखर को अकल
ने शिकस्त खाई॥ सब कूटा नाना कूटा· किस्सा बखेडा पा
क हुवा· तोता और वजीर जादा साथ हुआ· सो उन का
साथ भी नसीब में न था· तोता उड गया· वजीर जादा
हिरन के मिलने से छुट गया· सो· जो सामान था सो लु
ट गया· फिर जादू में फसे· हम रोये· दुश्मन हंसे· वहां
से छुटके अकेले चले· मुहब्बत ने दूसरि हात लिया· परियों
के अखाडे में जा फसाया· एक परी ने बहुतेरा घेरा· तमाम
सामान मौजूद किया· मगर यहां तो और ही धुन लगी हुई

था· एककी नमानी· अब घर पहुंच कर खाना किसे बता या है· मैंतो जीतेजी मरने को तैयार हूं · ये खबर महलमें प हुंची· अंजुमन आरा की मा पर्दे तक चली आई· शाहजा दे को महल में लेगये· अंजुमन आरा कीमा गिर्द फिरने लगी और नोंने घेर लिया ·फिर खाना आया ·जान आलम ने गर्द न हिलाई· खोजा पांव पर गिर पड़ा ·और जो तुम नखावोगे तो कोई न खायगा·लाचार होकर जान आलम ने दोएक नि वाले खाये· फिर नींद का बहाना करके पलंग पर जालेटा· म गर किसकी नींद और कहांका सोना · कर्वटे लेते लेते कमर भी थक गई· अंजुमन आराका ध्यान बंधा हुआ था· मगर शरमके मारे बोल न सकता · बड़ी मुश्किल से सवेरा हुआ· जान आलम ने मरने पर कमर बांधी· सब शहर में ये खबर उडीके जादूगर की लड़ाई को शाहजादा तैयार होता है·स ब लोग देखने को किलेके सामने आखड़े हुए बादशाह तख्त पर सवार जान आलम को बराबर बैठाये निकला· लोगों ने फतः की दुआ मांगी · जान आलम ने कसमे देके बादशाह को रुखसत किया· और अकेला जान पर खेल कर चला· आगका किला देखा उसमें से एक हि रन निकला· और फिर वही गायब होगया · जान आल म ने वुढ्ढे की तख्ती निकाली ·उसमें निकला जोये पढ क र उस हिरनको तीर मारे · और निशाना पूरा बैठे तो ये सब जादू का खेल भंड हो जावे· और जो निशाना चूका तो जान जावे· राखके सिवा पत्ता न मिले· जान आलमनेक हा जो हिरन मारा तो जिंदगी का मजा है · नहीं तो यही मौ तका रहना है· वेयार के जीना मरने के बराबर है· ये कहक

र तीर संभाला उधर हिरन निकला · इधर निशाना मारा हिरन की मौत आई थी · तीर पार हुआ · हिरन जमीन पर गिरा और एक दफेही गुल मचा · हां हां लीजियो घेरियो जा नेन पावे अंधेरा होगया · आंधी चली थोरी देर बाद सूरज निकला · न आग रही न किला · चबूतरे पर फुलसी हुई लाश पाश पाश देखी · वो जादूगर सिंदूर का टीका माथे पर टुकड़े टुकड़े जर्द जर्द दांत होटों के बाहर · मूंछों से गंदा · शैतान का बंदा · बालों की लटें लटक ती · हड्डियां खोपरियां गले में पड़ी · काला भुजंगा सिरसे पांव तक नंगा · तीरसे छिदकर औंधा पड़ाथा · हरकारों ने जाकर बादशाह को अर्जकी के शाहज़ादा बलाका पुतला है · एक तीरसे आगका किला ठंडा किया · बादशाह ने कहा · होनहार बिरवे के चिकने चिकने पात · हरकारों को इनाम देके फिर रवाना किया · इतने में जान आलम आगे बढ़ा: उस किले के पास पहुंचा जहां मेअंजुमन आरा कैद थी · देखा कि वो किला जमीन से अधर है और कुम्हार के चाककी तरह फिर रहा है आंख न जमतीथी ऊंचा इतना के देखनेसे पगड़ी गिरती थी जान आलम देख किलाभी थम गया · चार दरवाजे थे · बुरज गिने नहीं जाते थे · जाने का रस्ता और अंदर एक बंगला दिखताथा · वहां से ये आवाज आई के क्यों मौत आई है · क्यों जमको छेड़ता है · जिंदगी से नाहक मुंह फेरता है · तेरी सूरत देख कर रहम आताहै · आगलती इतना खूबसूरती के बदले में माफ़ करदी · नहींतो ऐसा मारूंगा · के हड्डियों का पता न मिलेगा · बादशाहजाद के अफ़सोससे जान खोवेगा · मर कर भी तेरी आत्माको चैन न मिलेगा · जान आलमने हंसकर कहा · गाली · मादरब

रता तू क्या हमारी रवता माफ करेगा· ठेर तो मुझे भी उसकी ही पाय ती पोंचा ता हूं ये सुन कर वो झल्लाया · काला दानां औ रउड़द उस बदमाशने निकाले· आस माना चक्कर में आया जमान थर्राई· उसने लूला चमारी का नाम लेकर उन दानों को आसमान के तर्फ से फेंका सरसों विनोले और राई मि लाई· अवर घिर आया· पत्थर और आग का मेह बरस ने लगा· शाहज़ादे ने भी पढना शुरू किया· सब पानी हो कर वह गये जान आलम ने बुड्डे की तख्ती निकाल कर देखा उसमें निकला के इस तख्ती को किले की दिवाल से लगादे फि र तमाशा देख· जान आलम ने उच तख्ती किले की दिवार से लगादिया· फ़िर तो हज़ारों तोपों की आवाज आने लगी· नादिवा का कलेजा हिलगया· जमाना बदलगया· जंगल गर्द बर्द होगया· आग का कारखाना· सर्द हो गया· चार घड़ी में अंधेरा जाता रहा· वहां कुछ भी न पाया· लेकिन रेत का टीला सा कडा सरकंडे गडे· कच्चा सूत नीला पीला उन पर लिप टा हुआ· कुछ फंदे पडे हुए उसके अंदर एक चांद का टुकड़ा बैठा है· मगर भौचक्का बद हवास कोई आस न पास· जान आ लम ने पैछाना· ताब न रही· जी सन सनाया· अकेला देख कर कलेजा मूंका आया· बहुतेरा रोका न रुक सका· थर्राता दम चढा जाता दौड़ कर गिर्द फिर ने लगा· लड़ खड़ा के गिरने ल गा· अंजुमन आराने शर्मा के सिर झुका लिया और कहा सभलो साहब· जरा किसी का लिहाज भी नहीं कुछ दिवा ने हो जो इस तरह पास चले आते हो· ये कहते कहते आंख चार होगई· बर्छी जिगर के पार होगई· ये बातें सब जानते है· इस मुहब्बत ने छोटे बड़े को मारा है· हराम

जरा यहां बिचारा है • जान आलम तो गशमें गिर पड़ा • अंजुमन आरा का दिल लड़ पा • जाना के इससे बेशक हमारा प्यार है • जो सिर पर खेल के यहां आया उसका सिर उठा अपने घुटने पर धर लिया मूं पोछने लगी • गशतो कभी देखा न था • घबराके रोने लगी • इस तरह यार का मूं धोने लगी • यह जो आंसू की बूंद मुह पर पडी तो लखलखे का काम कर गई • के लडके की हाजत न रही • चट आंखे खोल दी • अपने सिर को प्यारी के घुटने पर पाया • अपने आपेमें न समाया • दिमाग़ असमान पर पहुंचा • पांव फैलाया • इतना इतराया • अंजुमन आरा ने फीका कर घुटना सरका लिया • जान आलम बोला • हमारे होश से ती बेहोशी भली थे कह कर आंख बंद कर ली के लो • हमें फेर गश आया • तुमने क्यों घुटना सर काया • अंजुमन आरा ने कहा क्या खूब इतना प्यार मेरी चीड है • मैने तेरी मेहनत को देख कर ये रहम किया था • तुम तो चल निकले क्या जाने दिल में क्या समझे • अपनी राह लिजिये आ हवा ने की खैर बाद गुना लाजिम • जान आलम ने कहा हमारी तो मिट्टी यहां से निकले गी • मगर चोर की डाढी में तिनका • आपको अपना आशक कभी न मानूं गा • नमाशूकों के दफ्तर में आपका चेहरा लिखूंगा • अंजुमन आरा बोली • चे खुश • क्या खूब • भला लो • कुछ होया नही • जमाने का मजा निकालो • ये तो वही मिसल है • मान ना मान मैं तेरा जिजमान • इश्क • आशकी की बातें मेरी बला जाने • छेड छाड और किसीसे जाकर करो • अपना चोंच ला तक रक्खो • अपनी सूरत तो देखो तुमने सुना नहीं हलवा खाने को मूं चाहिये • जान आलम बोला • मैं बिचारा

मुसीबत का मारा म हूं न पन कहां से लाऊं क्यों कर वैसी सू
रत बनाऊं • एक हंसता है • एक रोता है • तुम्हे तो मोहन
भोग का मज़ा नहीं भूला • बात बात में ज़बान पर हलवा है
हमने तुम्हारे वास्ते जोग लिया • राज काज तक तज दिया • ख
ब मुराद पूरी हुई • ये सुन कर अंजुमन आरा खिसियानी
होगई • कहा • चलो • साहेब • वो सुआ सदके किया था •
अपनी चोंच बंद करो • कटी जली की हसी अपने घर
जा करो • जादू से आदमी लाचार है • इसमें किसका इख
तियार है • मगर खैर • और जो चाहिये कह लीजिये • दरपर
दे क्या साफ़ साफ़ गालियां दे लीजिये • ये बातें सब किस
मत सुनवाती है • देखिये अभी तक और क्या क्या दिखाती
है • अगर ईश्वर घर बार छुड़ा मुझी से लगके न फसता तो
हर एक सूह चलता काहे को ऐसी बातें सुनाता • जान आ
लम ये सुनके डर गया • शर्म से मर गया • आंसू भर कर
कहने लगा • मेरी क्या मजाल • जो आपको कुछ कहूं • मैं
तो मुसीबत का मारा मुसाफ़िर हूं • इन साफ़ करो • तुम कि
तने हट धर्म हो • अहसान तो भूली • हंसीमें रो दिया • ह
मको दोनो जहान से खो दिया • अंजुमन आरा ने देखा के
उसके आंसू जारी हैं • हिचकी लग रही है • हंसकर कहा •
सच है • ओछों का भी अहसान बुरा होता है • खातर ज
मा रक्ख अपने घर चल कर माल असबाब लाद दूंगी के
तुझसे चल न सकेगा बोझ से हिल न सकेगा जान आल
मने कहा • फिर सलतनत का घमंड आया • हमको मुह
ताज जान कर ये फिक्रा सुनाया • हमसे भी कभी लोगों के
काम निकलते थे • अगर तुम्हारी मुहब्बत में न फसते तो का

आफ़त से मूं न मोड़ा· जी पर खेल गया क्या क्या तूफ़ान थे से
ल गया· जान जोखों की तब तुमने हमको देखा और हम
को तुम्हारी सूरत नसीब हुई· रूप रंग देखो· तमाम शहर
उसके मुहब्बत में फंसा है· छोटा बड़ा उस पर मरता है· यूं तो तुम
जिगर के टुकड़े आंख की पुतली हो· मगर वारी जो इन्साफ़ से
देखो तो तुमसे और उसमें बड़ा फ़रक है· वो मर्द है और तु
म औरत हो· अंजुमन आरा ने ये सुन कर सिर झुका लिया
रोने लगी· कहा हुज़ूर सूरत शकल का ज़िक्र क्या ज़रूर था·
ये तो· उसके खेल हैं किसी को बिगाड़ा· और किसी को बना
या· बहुत से लूले लंगड़े काने खुदरे गूंगे बहरे हैं क्या वो नज़ी
ये कहीं धूप कहीं छांव कहीं शहर कहीं गांव· और जो अहसा
न से दब कर कहती होती दुनियां में एक दूसरे के आड़े आ
ना है· जो ये न आता और मेरा नसीबा सीधा होता तो कोई
और पैदा हो जाता· मेरे बंद छुड़ाता· मेरी किस्मत नकमबख़्त
पूरी थी· एक मुसीबत से छुड़ा दूसरी आफ़त में फंसाया· हमवत
न के नाते अपने बिगाने छुटे पड़े के ये आया· मुझे क़ैद से छुड़ा
या· क्या जाने वो कौन है· कहां से आया है· और अपने तईं
शाहज़ादा बनाया है· मैं आपकी लौंडी हूं· और हर सूरत से ता
बेदार अगर कुंवे में फ़ोंक दो तो गिर पड़ूं उफ़ न करूं· मगर जो आप
उसकी सूरत शकल पर रीझे, मेहनत को समझ बूझ ये अक़
द सा किया चाहते हैं· तो मैं राज़ी नहीं अगर मजदूरी और
मेहनत का इनाम देना है तो रुपया अशरफ़ी जागीर हो·
उसका काम हो आपका नाम हो· ये सुन के वो बहुत हंसी
कहा शाबाश बच्ची· उसकी ख़ूब क़दर की· वो बिचारा
तुम्हारे मुल्क का या रुपये का या पैसे का मुहताज है· अ

दीनादान वोतो आप बादशाह है · बराबर वालियां ये सुनक
र कहे हंसी · हजूर बस इनका ये शोहर है · उनके नजदीक
ये शाहजादा नहीं मज दूर है · अंजुमन आरा कल्लाई क
हा रुपया तो वो चीज़ है · केजिसके वास्ते बडे बडे लोग मरग
ये · वोजो दाई ददी पुरानी पुरानी बैठी थी बोली · सदके जाये ·
वारी मा बाप के हुकम टालना है · तुमको हद मुनासिब न
हीं · और खुदान खास्ता · ये क्या तुम्हारे दुशमन है · जो कि
सीके कहे सुने से बे देखे भाले · राह चलने के हवाले करदेंगे · ॥
आदमी दिन ब दिन अकल सीखता है · ऊंच नीच सोचता स
मझता है · तुम सलामतीसे अभी तक वोही बच पन की बातें
करती हो · खेलने कूदने के सिवाय कदम नहीं धरती हो · अंजु
मन आराने कुछ जवाब न दिया · मगर उसकी सहेलियां जि-
नसे रोज मशवरे होते थे · बोली है है लोगों तुम्हें क्या हुवा आ
नूजी साहेब · कसूर माफ़ · आपने धूपमें चोंडा सफेद कियाहै
खैर है · दुलन से साफ़ साफ़ कह वाया · चाहते हो · दुनियां
की · शरम और हया की गोंडी क्या उड गई · इतना तो समझो
भला मा बाप का कहना किसीने टाला है · जोये नमानेगी
(खलखा मोशी की मरजा) बुड्ढे बडों के रूब रू और क
हना क्या · ये सुनके आनूने अंजुमन आराको जिसने पाला
पढाया · खिलाया था · मुबारक बाद देके अंजुमन आरा की
मांको नज़र दी · शादिया ने बजने लगे · नजरें गुज़री तो
ये कही · ॥ कबित्त ॥ फल्क पर ये मुबार क बाद है अब किस
के मिलने की ॥ ये ऐसा कोन वरवता बर है ज़िस्का वक्त जागा
है · ॥ चरित्र
॥ १ ॥ बाद शाहने वजीर को खिलत दिये और

वहां तैयारी करो · जान आलम मुसाफिर है · मैं उस्के यहां
जाके सामान करता हूं · खुशी के मारे जान आलम की बाछें
खिली बंद टूटे जाते थे मगर शर्म के मारे आप सिर न उठाते थे
बादशाह ने जोतसी पंडित बुलाये · तुला · वृश्चिक · धन · मकर
कुंभ · मीन · मेष · वृष · मिथुन · कर्क · सिंह · कन्या · गिन
कर विचार करने लगे · वृहस्पत और चंद्रमा एक जगें थे ·
साअत नेक ठहराई · दूला दुलहन ने गुलाबी जोडा पहना
तमाम शहर में रंगीन कपडों का हुक्म हुवा · डोंडी पिट गई ·
के जो सफ़ेद पोश नजर आवेगा लहूसे लाल होगा · गर्दन
मारा जायगा · रंग खिलने लगा · गुलाल · उडने लगा · के
सर के मारे शहर कश्मीर होगया सब रंग में डूबे फिरते थे ·
हर जगे नाच था · के जो चाहो सो लो · हिंदु को पूरी, कचोरी, मि
ठाई · आचार · मुसलमान को · पुलाव, कालिया · जर्दा · कोरमा ·
किसी को किसी से गरज नथी · दिन रात नाच देखते थे ·
और दगले बजाते थे · आस पास के राजा बाबू सब हाजर हुए
थे · जो मुसाफिर आता · खाली नजाता · बहुत से बेफिकरे
दिल्ली नखलौ वाले सैर देखने को आये सांचके रोज पचा
स हज़ार चौघडे रुपेरी सोनेरी नुकल और मेवों से भरे हुए
मिसरी · मेवा · क़ंद · दही के मटके · गलेमें मढ लियां नाडे
से बंधा आराइश की टट्टीयां · गुल बूटे बे शुमार · फिर मेहदी
की रात आई · बेशुमार तोल की मेंदी के एक दफे लगाये लाल
होजाये · तमाम उमर हाथ मलता रहे · कापूरी बतियां मेंदी
की चमक · कुंदन की दमक · ये रंग ढंग दिखाया के सब को ·
सूरत कूकर दिया · अब बरात की रात का हाल सुनो · पांच
कोस तक दोनों तर्फ बिल्लोर के झाड आदमी के कद से दुग

ने पांच पांच छः छः गज के फ़ासले से लगेये एक एक में सो सो बत्तियां बल रहीथी · और दस दस गज पर चांदी सोने के पंच शाखे जल रहेथे · हजारों मज़दूर ठारो पर रोशनी करते फिरतेथे रोशनी के काड़ अलग चमकरहे थे तयोलिये और नोबत रवाने बने उन पर ज़र बक्त के शामियाने तने फिर आतश बाज़ी गडी · वे रोशनी थी के सवार को · चींटी साफ़ मालूम होती थी · दूला सवार हुवा गुल एक बार हुवा · किसीने कहा सवारी जल्द लाना ; कोई पटका थामला सभाल कर पुकार · खिदमत गार को बुलाना पलटने आगे बढ़ी बाजे बजने लगी · नोबत निशान माही मरा तब जलूस का सामान सवारो के रिसाले बागें संभाले · सिलह दार फ़िर हजारो बांरा सों तक्त तमामी से मढे उन पर रंडीयां जवान जवान शादी मुबारिक गाती सज बज दिखा · नबले पर फररा ती · सांडनी सवार खास बर दार · दुले के बरा बर आस पास बर्छी वाले · चोप दार · चोप दार · रोशन चोकी वाले · शाह नाइयां सुर निराले · हज़ारो गुलाम सोने से लदे हानो में अंगूठीयां · कयी बाद शाह अमीर बजीर राजा बाबू · हाति यों पर सवार खवासी में अंजुमन आरा का भाई · जान आलम का साला · इसी तरह आहिस्ता सवारी पहर एक रात गये दुलहन के दरवाजे पर पोंची · मा मा असीलें दो डीयानी का कटोरा हानी के पांव के तले फेंका · किसीन कुछ और टोट का किया · दुला उतर कर मजलिस में आया · बारह सो रंडियां भांड भक्ती हीजडे जनाने नाच ने गाने लगे · सवेरे के वक्त काजी आया कई रोज के महसूल पर मेहर बंधा · मुबारिक सलामत का गुल मचने लगा फेरे हुए ॥ कबित्त

झलक झलक खुंलाई देख उस्की सो यों बोला
तुझे दे राज आज रखो के मह अन बरखुरदार हो ?

चरित्र

सब नायफ़े साथ खड़े हो एक सुरों मुबारक बादी देने लगे· बाद शाहने एक लाख रुपये इनाम दिये· दूला जनाने में बु लाया गया· और रस्में होने लगी· ये भी अजब वक्त है· बीचमें कुरान रक्खा, आमने सामने दोनों बैठे· शीशा मुंह देखाई में मजे लूटता था· डोमनी योंका सीठने गाना· दुलादुल हन का थामना कभी रोने कभी अच्छे बने सलोने इनजा लियों का पूछना· रोना लगा दुला का हंसके कहना· असा हु आ· कोई दुलहन की जूती दूला के कांधे से छुवा गई कोई जूली ·ाजल पारा हुआ लगा गई· बलाहर नालियों की छेड़ छाड़· उनके जोबन की बहार· जब तो बात के पुचे की तो· बन आई· अजब सैर दिखाई· इस तरह चुनी के देखी न सुनी· ॥कवित्त॥ वो जब पांव पड़के उठाती अज्ञान ही और हां का अजब गुल पड़ा·॥ जब ये रस्में हो चुकी· डोमनीयों ने बधाई· गाई सबकी खाली भर आई· दुलहन रुख सत होने लगी· रोते जी खोने लगी सवारी तैयार हो दर बाजे प र आई· दूलाने सेरा सिरसे लपेट दुलहन गोदमें उठाई· सबका दिल उमड आया· और गुल मचाया· दुलहन को सु खपाल पर सवार किया· बाद शाहने राज खजाना दहेज में लि ख दिया· बरात रुकसत हुई· दहेज का बहाना, लोगों का दुला पर दुवायें पढ़ना· सबेरे की ठंडी हवा का चलना· बत्ती का झिलमिला झिलमिला के जलना· शहनाई भै रो· राग कली का फूकना· चोप दारों का कोयल की तरह·

कूकना·नौबत की टकोर·झांझकी फुनकार फुट पुटाब
क्त कुछ कुछ तारों की चमक धौसे की गमक चांद के पर
सफेदी दुल्हन वालोंकी नाउमेदी·इतर की लपट फूलो
की महक·सबको नींद का खुमार·कोई पैदल कोई सवार
दूला के घरमें तैयारी·दुलहन यहां आहओ जारी·कोई
झोंके खानाथा·कोई सिर टकराता था·ये तमाशा लायक
देखने के होता है·राह चलती देख कर रोताहै·इसका मजा
तो वोहीजाने जिसने ये देखा हो·किसीके बरातमेंतो गया-
हो अगर आप व्याह नकिया हो·गरज के सवारी दूला के घर आ
पौंची·बकरा जिबे किया·अंगूठे में लहूं लगा दिया·खीरखि
लाई·रस्मों से फुरसत पाई·जान आलम का घबराना·घडी२
घडीयाली से दिनकी खबर मंगवाना·केकहीं जलदी रातहो·सो
फ़नेमें मुलाकातहो·कभी चिल्लाना केघंटा देखने को कौन गया
है·वाह किसमत की खूबी·पहर भर होगया·घडी नहीडूबी

होगा कहांथा • फ़िर पूछना था • अभी क्या बजाया • उधर ॥ अंजुमन आरा भी जमाई यां लेती थी • तकिये पर सिर धर देती थी जब कुछ और नज बीज न बन आती तो लोगों के दीका ने को ऊंघ जाता • गरज के खुदा खुदा कर शाम हुई • चांदनी छिट की लोग आंख बचा कर इधर उधर खिसक गये अब सोने के मकान का हाल सुनिये ॥ कबित्त ॥ एक दारह दरी सफेद गजकी जिसमें के निगाह जाय धजकी सोने का छिछा पलंग उसमें हीरे जडे रंग रंग उसमें ॥ हरतो खवासा या तैयार शमर रहे • जिस्से कितना बेदार ॥ शाहज़ादा जब उस मकान पर आया • ॥ दुलहन को खवास ने उठाया • ॥ मचलाती जाती ती याद शाह जादी शरमाती क दम दबाती आई • ॥ गरज के छप्पर खट में आये उस वक्त ॥ अंजुमन आरा को देखना चाहिये ॥ चोटी मिस्व जूरी वो सु अम्बर बल खाई • हुई पडी कमर पर ॥ मोती का मुबाफ़ उसमें डाला था • काले के मूं में कोडि याला • ॥ गलों पें करे थे कूके के हर दार • दो फ़ूल के झुमके फ़ूल के प्यार • ॥ वो नाक के दूब गुल से दहाय जाय • ॥ दम गुंचे का जिस्में नाक में आय ॥ नक तोडो से झलके उसके दम दम ॥ या नाक में नथ का आगया दम ॥ बिच्छू का सा डंक नथ की वो नोक ॥ रख ती थी दिलो से नोक और झोक ॥ अंगारे से लाल लाल रुखसार ॥ दिल में यही आया की जिये प्यार ॥ गरदन की वो नाज़ुकी का आलम ॥ चंपा कली दुग दुगी का आलम बाजू थी भरे भरे वो अर गोला वो नौ रतन उनमें पहने अनमोल ॥ वो हात हिनायी गोरे गोरे ता खूने उ शाक के च होरे वो छातियां गोरि गोरि और सख्त उबरी हुई गोल गोल

दंदरत ॥ वो हुस्न वो कुछ लडकपन उसका ॥ गद राया हुआ वो जोबन उसका ॥ उस चंपे रंग पर वहारे क्या जोबनकी उमंग पर बहार रेक ॥ प्यारी प्यारी वो भोली सूरत ॥ चितवन में भरी हुई शरारत ॥ अंगिया वो बनत की जग मगा ती ॥ जोबन कि भरी फबन की वाली जान आलम देख नहीं बेताब होगया· एक तर्फ शोक दूसरे तर्फ ख़ौफ़· अगला पिछला खयाल आने लगा· डरा डर वाले थोके नाकने फा कने का खौफ लगा हुआ हलके दानोंने अपने दुखड़े· रोये· दस्तूर है· के हर एक अपने प्यारे के आगे शेखी मारता है कुछ अपनी तरफ़से झूठ बोलता है· अपने दिल के फफोले फोडता है· जान आलम ने अपना सब हाल बयान किया अंजुमन आराने जादू गनी का हाल सुनकर अफसोस किया· मलकाकी बात पर बनावट से हंस दिया· फिर रूखी सूरत बनाई· नाक भौं समेटी· तेवरी चढाई मगर चले आने के सहारे पर मुसकराई· अपनी जान बचाने का अहसान दंदी जताथी· फिर तो शरम उड़ गयी· छाती से छाती· मूंसे मूं· बदन से बदन मिल गया· मसल है (एकजान दो कालिब) मगर यहां का ये कहीये जान और एक ही कालिब थे· दिल में उमंग मगर शरमसे तंग दोनो के दम चढ़ा गये थे· जंगाजरी गाव जारियां कर रहे थे· शाह जादी मौके पर हाथ न लगाने देती थी· जब वे बस हो जाती तो चुट किया लेती थी· कभी कहती थी ऐ साहब कोई इतना घबराता है· देखो तो कौन आता है· कभी आप उठकर देखती· भालती कोई दम यों टालती· कादिर· कहने लगी है है छोड मुझको ॥ बेदर्द नयों मडोड़ मुझको दम रुकने लगा· मेरा कहीं हट ॥ चला की बहुत थे :

खुश नहीं हुआ जान आलम जवाब में बोला · लग मेरे गले
ज़रा तो प्यारी ॥ दिल की मेरी देख बेकरारी ॥ हात अपनी क
मर में डालने दे · कुछ दिल की हवस निकालने दे · ॥१॥ आख
र वो जान आलम ने दबोचा · बहुतेरा सिट पिटाई · हुसने ए
कन माली · दिल में तो उसके भी उमंग थी · बराबर से जवाब
देने लगी · थे जी कि उमंग पर वो दोनो झट आरी पलंग पर वो
दोनो । दो फूलों की सेज वो पलंग हुआह · वो दोनों की एक
सी उमंग आह · ॥ गरज़ के मुराद पूरी हुई · कली खिल ग
ई · हुस्न तो दो जान लिपट गई · अल्लड़ पन के दिन थे · दो
दोनों पड़ रह गये · सवेरा हुआ · जान आलम नहाने गया · एक स
हेली उसके सदान से आई · अंजुमन आरा सोई पड़ी थी ·

कहा के उट्ठो· अबभी पेट नही भरा सूरज निकल आया· यातो
इतनी हद थी या अब ऐसी फिसली · अंजुमन आरा कुछ न
बोली· सिर झुका नहाने चली गई·॥ कवित्त॥ वो अंचलसे मूंह
छुपाये हुये· लजाये हुऐ शरम खाये हुऐ · दोनो नहा धो के
आये· पलंग की चादर देखी गई· पंजीरी आई· बराबर
वालियों इशारों बातों में रात की पते पते की कही· दोनों ने
शरम के मारे सिर झुका लिया · जान आलम बादशाह के पास
गया· फतः का खिलत पाया · फिरतो इसकी सल्लाह से राज्य
पाट का काम होताथा · एक बडा बाग रहने को मिला · जा
न आलम रात दिन अंजुमन आराके साथ शराब पिया क
र्ता · और परियों के अखाडे में राजा इंद्र की तरह चै
न उडाता · जिसने कभीये किया हो वोही खूब समझता
है· और जिन्हे नही किया वो कर देखे · नहीतो अंधेके आ
गे रोना अपनी आंखें खोना है ·॥

चरित्र ७ ॥

अब फिर मलका का हाल लिखाजाता है· वो बिचारी कम
बख़्तीकी मारी रातदिन रोती थी· बिलख बिलख के जान
खो तीथी · ॥ कबित्त ॥ यहां तक के उठाने का इ
रू करीब आया ·॥ इस पर मेरे बाली पर तुम उठके ना
आ बैठे ॥ मैं नाम तेरा लेले दिन रात जो चिल्लाऊं ॥ जो
सुनते हुऐ बहरे क्यों कर नगला बैठे ॥ १ ॥ जोकोई क
हता मलका खैर है घुलीजाती हो· क्यो इतना गम खातीहो·
तोवो ये कहती॥ कबित॥ गम खाती हूं लेकिन मेरी नियत नहीं
भरती·क्या गमहे मजेका के तबियत नहीं मरती· ऐसी ऐसी बाते
करतीकि सुन्नेवालों की छाती फ़टती · वो कहती मलका इ-

तुम न घबरावो · जलदी फिरेंगे · और मनोकामना सिद्ध
होगी · वो कहती के मेरे दम की क्या भरोसा है · क्या जाने किस
दम निकल जावे · देखो · जिस दिन से गया आजतक उसकी
खबर भी न आई · हसने मुफ़्त में जान गवाई · वे भूल के ज
वार छडी दिन रहना · तो उनी पेडों में जहां जान आलम मि
ला था जाती, आप रोती · संग सहेलियों को रुलाती और कभी
सुभों से श्याम तक उसी जंगल में सबको फिराती और ये ज
बान पर लाती · ॥ कबित्त ॥ रहेथा लिपटा हुवा जब के मु
झसे प्यारा ॥ अजब मज़े की थीं रातें अजब वे प्यारे दिन ॥
कब उससे होगी मुलाकात मैं ये पूछूं हूं ॥ ज़रा तो ज्योतसी
देखो मेरे सितारे दिन ॥ रात को एक बार घर आती और
कराह कराह सबको जगाती · और ये सुनाती ॥ कबित्त
हराम नींद की इक बार बस ले जाना ने ॥ इलाही कोई
किसी का उम्मेदवार नहो ॥ रात के चैनी से पहाड हो जाती
तो वो बडी घबराती · और कहती · हे भगवान जैसा मुला
कात की रात को तूने घटाया वैसा जुदाई की रात का क्यों न
जलदी तड़का कर दिया ॥ है है · आज मुर्ग बोला · न मुल्ला
ने अजां दी · न चौकी दार के वक्त जागा · और छडी वाली भी
नींद के झोके में गजर बजाना भूल गया · कबित्त · ये छूबे
रहा यें सब जान के खाने वाले · आज क्या मर गये घडिया
ल बजाने वाले ॥ दिन रात उस पर भारी थी · किस मुसीबत में
वो बिचारी थी ॥ लोग कहते · मलका अल्ला को याद करो
रात दिन का रोना अच्छा नहीं · रोरो के आखें खोवोगी · खु
दा जल्दी तुम्हारी मुश्किल आसान कर देगा तो वो आह भर
कर यह कहती अगर नसीब में है तो मिलेंगे मगर ये दु-

काहे को रात दिन सवेरा हो · जिससे हमें आराम · तुही हमें उठा दे · यही हमारी औलादका बदला है · ये इश्क में गजब देखिये · वहां तो शाह ज़ादा बाग में चैन उड़ावे · और यहां मलका विलखके जान गवावे · मगर जब एक के दिल में ज्यादा बेचैनी होती है तो दूसरा भी तड़फ़ता है · ये इश्क दोनो की जान लेता है · इस पर एक कहानी याद आई है · बनाने वाले ने खूब बनाई है ॥

कहानी

कलकत्ते में एक अंगरेज सौदागर था · बड़ा आली शान सब तरह का सामान उसकी दुकान में मौजूद था · उसकी एक बेटी थी · बड़ी खूब सूरत · यों तो सब सामान अच्छा था · मगर ये रकम तुर्फ़ा दम थी · बिलायत से हिन्दुस्तान तक उसके हुस्न का चर्चा था · और बंबई से सूरत तक उसकी सूरत की धूम थी · हजारों अंगरेज उस पर जान देते थे · लाखों हिंदुस्तानी उसके पीछे खराब फिरते थे जिस वक्त हवा खाने को निकलती तो दोनो तरफ़ लोग खड़े होजाते उसका दर्शन करते · और जान नजर करते · इत्तफ़ाक से एक अंगरेज खूब सूरत नौजवान · इश्क बाज · ताजा बिलायत से आया · एक दिन वो आफतका मारा कुछ सौदा लेने उसी सौदागर की कोठी पर आया · और उस हूरके बच्चे को देखा · इश्क गले का हार हुआ · होश खो बैठा · दिलसे हाथ धो जानको रो बैठा असबाब खरीदने गया था · सौदा मोल लिया · उसने गाहक समझ मोहब्बत के कांटे में तोल लिया · हाथ पांव ने सत दिलने हिम्मत हार दी · दिन धौले लुट गया · जब और कुछ तजवीज बन न आई तो असबाब मोल लेने के बहाने से आमदरफ़्त बढ़ाई फ़िर तो ये हाल हो गया के ॥ कबित्त ॥

दिन में सौ२ बार अब हम उनके घर जाने लगे· आ कुआने बोलने हम उन पे मरजाने लगे· ॥ मुहब्बत कभी आजतक छु पी नहीं लोगों ने बडे बडे जतन किये मगर एक न चली· जब सौदा गर के कानमें इसकी भनक पडीतो साहब का आ ना जाना बंद किया ये बडे घबराये· गरज के साहब बहादुर ने शिकस्त खाई· हिलने की ताकत न रही· लेने के देने पडे· यीड हर थाई से लग लई· जोजो उसके दोस्त थे सम झाने लगे· कैदके फिकरमें हुए· और नोकी बुराई बयान की मगर इसको एक खातिर में न आई· आखिर कोउस का एक बडा गहरा दोस्त थाउसने कहा· क्यों मौत मांगता है· अरे जालिम, ये क्या करता है · सिवाय बे इज्जती के कुछ हासिल नहोगा· अपने हातसे अपने ही पैरमें कुल्हाडी मारली किसने बताई है· तूने शायद मजिस्ट्रेन के बेटे की कहानी नहीं सुनी· उसने कहा क्योंकर· ॥

मजिस्ट्रन के बेटे की कहानी

मजिस्ट्रन नाम इसी शहर मेथा· बडा रुपये वाला· सब दुनियां की बाते उस्को नारदून मेथी· सो सो जहाज सौदा गरी के उसके जाते थे· मिट्टी में हात डालता तोसोना ह त आता· सिवाय बेटे के और कुछ खबर दिलमें नथी· नसी बे वालो की दुवा जल्द कबूल होतीहे। १७५ बरस की उमरमें एक लडका पैदा हुवा· बडा खूबसूरत· बारह बरस की उमरमें लिख पढ के तैयार हुआ· और तेरह बरस में बापसे सफर की छुट्टी मांगी· । मजिस्ट्रनने कहा के अभी थोडे दिन सबर कर· वो बोला· आप बुढ्ढे हुऐ मैं चाहता हूं के आपके जीतेजी सफर को जाऊं और अपनी

चाला की बताऊं लाचार दापने दस बारह जहाज लोग बागसा थकर दिये· दो महीने बाद आंधी जो आई जहाज तबाह हो गये· मजिस्हल का येक तखते पर डूबता उछलता बह चला सात वे दिन वो तखा किनारे लगा ये उतरा और घासकी र स्सी से तखते को पत्थर से बांध दाला चारा ढूंड ने गया· थोडी दूर पर एक शहर दिखला ये· उठता बैठता उधर चला· देखा के शहर खाली है· न कोई वारिस है न वाली है· रुपये अशर फीयों का ढेर लगा· हुआ है· फिरते फिरते किले मे आया· वहां फूल फल देखे· बीच में एक बंगला था· ये जर बख्त बाप दी उठा अंदर घुस गया· देखा के जवाहर के पलंग पर मुर्दे की तरह कोई सोया है· दुपट्टा ताने न कोई पायती न सिराने इसने दु पट्टा सरकाया· औरत ने चौंक· कर सिर उठाया और इसको देख कर कहा अपनी जवानी पर रहम खा यहां से चला जा· बिन आ ई मरेगा· कोई आह भी न करे गा· इसने कहा तू हाल तो क ह· औरत बोली तू पहले अपनी सुना· इसने कहा ऐसा न दिल का भूखा प्यासा हूं जो कुछ खाऊं तो बात करूं· औ रत ने कहा के मुद्दत बाद आज खाने का नाम सुना· गम के सिवाय खाना आंसूं ओके सिवाय पीना यहां नहीं है· खा ने की किसम से कसम तक भी नहीं खाती हूं· क्या जाने क्यों कर जीती हूं डर के मारे दिन पूरे करती हूं· और जान ऐसी सख्त कंबख्त है के नहीं निकल ती· लोग कहते हैं के वे खाये पिये जीते हैं ये बात झूठ है· दिल को खाते हैं· और लहू को पीते है· तू इस बाग में जा· जिस मेवे पर दिल चले वो खा· ये ग या मेवा खाया पानी पीया· उलट आ औरत को सब अप ना हाल सुनाया· और उस का पूछा· वो बोली के मैं यहां की ?

शाह जादी हूं • बाप मेरा यहां का बाद शाह था • मैं रात दिन
सैर और शिकार किया करती थी • एक दिन नदी किनारे सां
प दिखा वो मेरी तर्फ़ को बढा • मैंने उसे तीर मारा • क्या जानें ल
गा मगर देखा तो एक बडा अजदहा फपटा आता है • मै तो घो
डे पर चढ कर भागी और मेरे साथी यों को वो अजदहा खा ग
या • यहां तक के शहर में बाद शाह से हैवान तक भी न ही रहा
फ़क़त मैं बची हूं • शाम को वो यहां आता है • और दो घडी बैठ
कर गायब हो जाता है • जब भूख लगती है तो मेवा खा लेती
हूं • कोई अपना नहीं • खुदा के डर से तुझ को शुआर कर दिया •
इसने कहा तू खातर जमा रख • आज ही फैसला कर देता हूं
ये कह कर किले में से बारूद लाया • साप के बैठने की जगह
गढ़ा खोदा • बारूद बिछाई • दूर तक सुरंग बनाई • और उस
पर हरी घास जमाई • शाहज़ादी ने कहा अब वो आता होगा •
ये सुन कर मजिस्ट्रन का बेटा सुरंग के कोने मे जा बैठा • इतने में
वो अजदहा आया • और अपनी जगह पर उस ज़ु कदम ने
हरा फर्श बिछा पाया बहुत खुश होकर बैठा मजिस्ट्रन के बे
टे ने पथ्थर से आग झाड सुरंग उडाई • येक ही दफ़े धस
का हुआ वो ज़मीन का टुकड़ा सांप समेत आसमान को उड़
गया • फिर तो ये दोनो खुश हुए • सात बार तक ई खड़े रहे दो
लडके भी पैदा हुए • एक दिन शाह जादी ने कहा के शहर का बसा
ना चाहिये • अकेला दिल नहीं लगता • वो बोला के अगर घर
जाऊं और मजिस्ट्रन को लाऊं तो ये बस्ती बसे • उसने कहा मैं
अकेली क्योंकर रहूंगी • मैं भी तेरे साथ चलूंगी • आखर
को एक एक लडका दोनो गोद में लेकर चल निकले औ
र वहीं पहुंचे जहां वो तख़्ता था • कहो जो हो सो हो • इसी पर

सवार हो • कहीं तो जा निकलेंगे • येक हु कर सवार हुये •
मजिस्टून का बेटा तख्ता खोल ने लगा शाहजादी बोली यूं तो
मालदो होता है • अगर एक नारियल • छूकसीरं से भरा हु
वाहै • अगर कहै तो लेआऊं • आदमी निल्यार के केफेरमें र
हता है • इस ने कहा जो लेआ • शाहजादी लडका गोदमें लिये उत
री उसके उतर ते ही ऐसा हवा चली के रस्सी तख्ते की टूट गई व
ह चला • बहुतेरा हात पैर मारे मगर किनारे न लगा • किना
रे पर शाहजादी अलग रोरही थी • इतने में एक जाहाज
आया • जहाज वालोंने देखा के कोई जवान लडके को गोद
में लिये बहा चला जाता है • रहम खाकर एक डोंगे को दौडा
या • इसको जहाज पर लिया • जहाज का मालिक मजिस्टून
का दोस्त था उसने उसके बेटे को पहचान लिया बडी खातर
की कलकत्ते में पोहचे • बेटा बाप से मिला • घी के दीवे •
जले • मजिस्टून ने बेटे से तमाम हाल पूछा • बेटे ने सब
दाहवार बापसे कहा अब देर न कीजे जल्दी चालिये ऐसा मु
लक और रुपया हातसे न दीजिये • मजिस्टून ने कहा •
खेर है • ये भी येक किस्सा था जो मैने सुना • और ख्वाब
था जो तूने देखा • बेटे ने कहा के ऐसा अकल मंद और ऐसी
बात कहे • दुनिया में तीन चीज़ है • जर जमीन जन यानी
रुपया धरती और औरत • ये सामान जमा है अगर आप
नहीं जाएंगे तो बंदा अकेला ही चपाहुंचता है मजिस्टून ने क
हा अफ़सोस • हमतो तुम्हे अकल मंद जानते थे मगर ये ह
मारी नादानी थी • तुम्हारी जवानी थी • कोई नादान से निदा
न भी • औरत की बात पर ध्यान नहीं करता • ये बातें जभी नद
थीं के जब तुम और वो एक जगे थे ये किसकी यार है • जहां तुम

से ग़रज़ मिला · उसको होली · मसल मशहूर है · (औरत को तरह चाहिये न वक्त) लोग कहते हैं के औरत जबतक अपने पलंग पर है तब तक अपनी · हम इसको भी नहीं मानते नींद और मौत बराबर है · बल्कि करवट फेरने में इधर की दुनियां उधर हो जाती है · जो लोग औरतों पर सख्ती करते हैं वे बडे बेवकूफ़ हैं क्या वो नहीं जानते (रहेंतो आपसे नहीं तो जासगे बापसे) मजिस्द्रन ने बहुतेरा उतार चढाव दिये मगर उसने एक न माना लाचार मजिस्द्रन भी साथ होलिया जहाज पर चढे और उस मुल्क में पोंचे मगर दंग होगये सब नर्फ आदमी फिरते थे · मजिस्द्रन के बेटेने जाना के मैं रस्ता भूल गया · आदमी योंसे पूछा · इस शहर का नाम क्या है और वहां का हाकिम कौन है · उन्होंने कहा यह शहर उजड गया है · फ़कत बादशाह की बेटी बचीथी · सो दस दिनसे शादीकी और ये अबादी हुई है · मजिस्द्रन ने बेटे से कहा खुशानो बहुत हुए होगे · सीधे फिर चलो · उसने कहा इतनी मुसीबत उठाई · उसकी शकल भी नजर न आई · दो बातें करलूं तो फिर चलूं मजिस्द्रन ने कहा कहा मान · नहीं तो मुसीबत पडेगी · मगर उसने एक भी न मानी · लोगों से पूछा शाहज़ादी क भी सवार भी होती है उन्होंने कहा हां रोज़ निकलती है · ये फ़क्त पूछ पांव लडके का हाथ पकड के रस्ते में जा खडा हुआ · इतने में शाहज़ादी घोडा फेंकती आई · ये पुकारा हमने इकरार पूरा किया हाजर हुए · लडका सलामती से मौजूद है · क्या हुक्म हो · शाहे· दो किसानों की तरह देखती चली गई · कुछ जवाब नहीं दिया · वे ज़लील होकर घरमें आया · बापने हाल पूछा इसने जवाब दिया आज मुलाकात नहुई कल फिर जाऊंगा · उसने क

हा क्यों शामत आई है· नाहक जावोगे मुफ्त में पहिनावोगे· दूसरे दिन इसने बेटे को सिख लाया के जब सवारी आवे तो तू इ घोडेसे लिपट जाना· और कहना कि दुनिया का खून सफेद होग या· मा की उल्फत से वाप की मुहब्बत में ज्यादा मजा पाया· वो तो उस को साथ लिये फिरता है· तुम बात की भी नहीं करती हो· बल्कि पहि चान ती भी नहीं· जिस वक्त सवारी आई· ये तो वहुत जला था· और समझ चुका था· कि खेल बिगड गया· कहा· वस शाहजादी वाग कोरोको· वो तो खुद रुकी हुई थी वाग भी रुक गई· मजिस्ट्रनका वे टा वोला·॥

कबित्त

याद वो दिन है कि नफरत थी जमाने से तुझे।
हां तो वह शान थी वहुत गैर के आने से तुझे॥
खोफ आता था कहीं आने से जाने से तुझे॥१॥
मकर था याद खबर थी न बहाने से तुझे॥२॥
बेधडक गैर से बातों का कभी तोर न था॥
हसी हसथे तेरी सोहबत में कोई और न था
कभी चोटी की खबर न थी न था कंघी का ख्याल॥
वारहा उलझे हि रहते थे सिर के तेरे बाल॥१॥
पान की लाखे से और मिस्सी से होता था मलाल
मुझको अफसोस ये आता है के गुजरा नहीं साल
ऐसी क्या बात तेरे दिल में समाई जालिम॥१॥
इफा तन सब वो रस्मो रसम भुलाई जालिम॥
थी लगा वट हि तुझे याद न खल ना सबसे॥
गरम जोशी का भला कब था ये लपका सबसे
में बैठना कोने में हरदम तुझे तनहा सबसे॥
तुझको लग चलते कभी हमने देखा सबसे।

अब तो रुस्वी में किया के गरज़ तूने किया।
खुलगया सब ये तेरा भेद ग़ज़ब तूने किया।
मुवार सद मुझ हुई जल्द रिहाई तुझसे॥
अब तो नाहक़ हुआर मुकद्दर है सफ़ाई तुझसे
वज़ा अपनी क्या कीजे बुराई तुझसे॥ ५॥
न मिलें पर जो कहे सारी खुदाई तुझसे॥
बख़ुदा मिलने से हम हाल तेरे खो बैठे॥ ५॥
खुश रहो तुम के तुझे खोल के दिल रो बैठे॥
अब क़सम खाता हूं लो दिल न लगाऊंगा कभी.
ज़िल्लते रंज न इस तरह उठाऊं गा कभी॥ ५
गर न रहें दारवी दुनिया में पाऊंगा कभी ५
रक़ीब तो क्या है न मैं पास बिठाऊं गा कभी ५
भोसरम अब दिल के लगाने ही का जाना न रहा
यार लोगों की ज़बां पर ये रहेगा हर बार ५
गो कि आशक़ था मगर था ये बड़ा ग़ैरत दार॥
देख बद वज़ा किया दे दिये ऐसा इन कार॥ ५
सिर पटक के मर गये सब पर न मिला वो जिनहार
करे माशूक़ दग़ा किसी से तो ऐसी करै॥ ५॥
पह करे बात की आशक़ तो भला ऐसी करे॥

ये सुन के वो सर सिंदा हुई · फ़िर लड़का घोड़े से लिपट ग
या · जो बापने छिपाया था · वो कहने लगा · जब कह चूका · शा
हज़ादीने तसनूचा उस पे फ़ेंक दिया · धमसे गिर पड़ा · और
वो: नाग उठा चलदी · मजिस्टून बोला · क्यो जो हमने कहा था
वोही आगे आया · वो: बोला सवेरे जो होना है हो जावे गा · मजि-
स्टून ने कहा के तू: अपना भी वोही हाल किया चाहता है · दूसरे

दिन दो चला · मजिस्ट्रन काज़ी न रुक सका साथ हो लिया · जब शाहज़ादीकी सवारी पास आई · बाग पकड़ ली · अभी ज़बान भी नहिं लाईथी · कि शाहज़ादीबोली, मजिस्ट्रन हम ने सुना था · तू बड़ा होशियार आदमी है · सब तरह का ज़माना देखा हुआ है · मगर अफ़सोस · के बई रिशोकसे तूने नहीं सुना केजो गया सो गया · सो किन किन बातों को याद किजिये · बन बनके खेल ऐसे लाखों · बिगड़ गये है · ये कहके घोड़ा छुड़ कारा : मजिस्ट्रन ने और बोलने में जान का डर देखा · बेटे को झुकके सलाम किया वेभी बुड्ढे बाप का बेटा था · शर्मा के उलटा फ़िरा जीतेजी बापसे आख चारनकी : फिर उस अंग्रेज ने कहाके इस कहानीसे ये मतलब है के आदमी वो काम न करे जिस्में आखिरकोजल्लत होवे · अबक्या कहने हो बोला ॥ कबित्त

कब तलक जिऊंगा में मौत एक दिन आनी है ॥ इन दिनो जो आजाये ऐनमेहरबानी है ॥ लोगबाग सिर पटकके उठ खड़े हुए · कहा जब ये जान गवावेगा तब ये झगड़ा जावेगा; जब उसका अबतर हाल हुआ · तो उन्ने दोस्तों को चिट्ठियां लिखके जमा किया कहाकेकल हमारा कूच है · अगर हमारा कहा मानो गेतो यहां तुम्हारा नाम होगा · और वहां नेक अंजाम होगा · सबोने मान लिया उसनेकहाके मेरे मरनेके बाद मेरी लाश बड़ा धूम धाम सेबजरे के छतर पर संदूक में धर बाजे बजाते मेरी प्यारी की कोठीकेनीचे से लेजाना · और दिलमें ये था ॥ कबित्त ॥

॥ साथ वो मेरे जनाज़ेके लहदतक आये
अय अजल तेरा कदम मुझको मुबारक होये

रातको साहबबहादुर चल बसे · सुबह को ये खबर सब में फैली सोदागर बच्ची के कानमें भी पहुंची मुहब्बत ने जोश कि

या ·अनार आरस से दबाये रक्खा· साहब लोग सिर नंगे गुल मचा
ते दाजे व जाने जनाजा कंधे पर लिये चले · हज़ारों लोग रोते·
पीछे साथ थे· इसी सूरत से कोठी के नीचे जनाजा आया·
उस वक्त सौदागर बच्ची मुहब्बत के मारे कोठी पर चढ गई·
और वे इख़्तियार बोली के· लाश किसकी है, के मुहब्बत के हल
कारे बच्चो बच्चो कह रहे हैं· वो बोले के तुम्हारा हीनो मारा हु·
आ है· अफ़सोस के उसने जानदी और तुम्हें खबर न हुई· ता
के सरवश ने इसको सुना कर ये कहा·॥ कवित्त

॥ मुकर जाने का जालिम ने निराला ढब निकाला है
सबों से पूछता है किसने इसको मार डाला है ॥

ये सुनते ही उसने चीख मारी और धमसे संदूक पर कूद पडा
दम निकल गया आशिक़ा सोता नसीबा जग गया · मुहब्बत ने
इस तरह दोनों बिछडे हुओं को मिलाया· लोग थरीग
थे दूर दूर खबर पोहची· आखिर को दोनों को साथ एक
संदूक में गाड दिया· ये मुहब्बत के मजे हैं· कब जीत छोडती
है· अब मलका का हाल सुनिये उसका बुरा हाल होगया·॥

कवित्त· लगे ज़मीन पर अनडनार ने हमको ॥ १॥
ये दिन दिखाये तेरे इंतिजार ने हमको ॥
जुदाई में तेरे बिलआल अबतो मारा है ॥
तड़प तड़प के दिले बेक़रार ने हमको ॥

सुबह से शाम तक हिचकी लगी रहती· दरवाजे की आ
ह परवात थी· आखिर को आंख बंद होगई· मरा दिन तक
हिचकी बंधने के बाद आस रहती है तो दो पहर बंद· जब मलका
का यह हाल हुआ तो जान आलम बेचैन हुआ· दिल में सोच
ने लगा· क्याजाने मलका कैसी होगी· जाती है या मर गई·

जल्द चलना चाहीये • ऋंजुमन आरासे कहा हम तो जाते हैं •
और बादशाह से रुखसत लेते हैं • अब और नहीं ठहरते • जा
नी बेहतर यो बोली कि बेहतर है • तुझ को भी जंगल देखने •
का शौक है • ॥ कवित्त ॥ चलिये गातो साथ है •
विला उजुर ॥ रहिये गातो बंद गीमें क्या उजुर ॥ बादशा
हने जाके कहा • तो खब रा गया • के मैं कभी जाने न दूं
गा • जंगल की सैरका शौक है तो यहीं जावो • सब ची
ज मौजूद है • जानआलम ने अरज की कि हुजूर को •
एक बरस में मुझसे ऐसी मुहब्बत होगई • के जान और मा
ल से मौजूद है • भला हाल उनका क्या होगा जिन्होंने लाखो
मिन्नतें और मुरादो पर न दिन को दिन • न रात को रात •
जानकर सोला सतरा बरस खाक छान कर मुझको पाला •
दिवाने पन में घरसे निकला • मुद्दतसे मेरे जीने मरने का हा
ल भी मालूम नहीं • वे कौन सी आदमी पन है • कि आपनो
चैन करे और मा बाप जल के मरे • अब इसमें तीन पांच न
कीजिये • घर जाने दीजिये • बादशाह ने देखा कि अब ये नमा
नेगा • कहा कि अच्छा जावो जो तेरी मरजी मगर सफर की
तैयारी से ४० दिन तो चाहीयें • जानआलम ने ये मान लि
या • ॥

चरित्र ८

चालीस दिनमें सफर का सामान सब तैयार हुवा • बाद
शाह उदास दो कोस शहर से बाहर एक ठेकडी पर जा बै
ठा • और वजीर को हुक्म किया कि तुम शाहजादे को रुख
सत करो • हम यहां से सवारी का जलूस देखते हैं • तमाम ख
लकत पांच बरस का लडका पिच्यान वे बरस का बुड्ढा • और
तमर्द • सब तमाशा देखने को चले आये कुछ पुछे बना

न·ताज·बहरी·शिकारी· कुत्ते· चीते लहू पीते·फिर
गुलाब· सच्चे छिड काव करते· बेद मुश्क छिड़कते
हज़ार लाल टेसे जल रही·खुशबो के मारे उबल रही·
इतने में सुबह हुई· कली का खिल खिला खिल खिला·
उदास जलना सवारी का हलके २ चलना ·जंगल में जा
नवरों का बोलना·फूलों का खिलना· चांदनी का छुपना·सूर
ज का निकलना· तमाशा देखने वालों की भीड़ भाड़·लो
गों की उखाड़ पछाड़·इतने में खास बरदारों का गोल
आया·किमखाब की मिर्ज़ाई· मस्तु के घुटन्ने दिल्ली
के नागोरी·पांवसें·सिर पर फेंटे बंधे कला फलकी एक
ल चकमान तोडे दार करा बीन शेर बच्चे·जिस्से शेर
जीता न बचे आसपास करछी बरदार बीच में जानआल
म घोड़े पर सवार बराबर अंजुमन आरा का सुखपाल हज़ार
पांच सौ कहारी प्यारी प्यारी छोटी उमर गदराया हुआ बद
न माल मस्त अतलसके लहंगे मसालाट का मलमलके
दुपट्टे बारीक बनत गोखरू कुती· अंगिया कंधोपर सुखपा
ल कुछ इधर कुछ उधर जड़ाऊं कड़े नाजुक नाजुक हातोंमें
पड़े पांवमें सोने के तीन तीन छड़े कानोंमें सादी सादी बालि
यां जोबनकी मतवालियां·तेवरी चढाके पांव धरना हरबात पर
नक तोड़ा करना कहीं सीसकी कहीं हिचकी इस तरह·से
सवारी बादशाह के पास पहुंची जान आलम ने देखा
कि बादशाहकी आंखोंसे खून जारी हिचकी लगी है·च
ट घोड़ेसे कूदा बादशाहने कसम देके कहा के इसवक्त
हमारे पास न आवो खुदाको सोंपा·चले जावो जान
आलम फिर सवार हुवा·जब शाह जाने· घोड़ा बढाया

तमाम रवल कत का जीभर आया · उनको देखके लोग वा
हा दिल्ला ते थे· और कहते थे के आज शहकी रौनक
गई· और चांद सूरज छुप गये · शहरे में गदर पड़गा
अंधेरा होजावेगा · दिन देहे सूने सैंकड़ों औरत मर्द साथ हो
लिये · पालकी नालकी, पीनस, खेड खडीये, ऊंटों की क
तारे· छकडे, गाडिया · लदी लदाई· पीछे चली · हाथी
ददा · आनू · मामा · डेरे खेमें शाम तक चलते रहे · अशर
फी रुपये दंटे · वादशाह उलटा घरको आया · बसाबसा
या शहर लुटा · उजड़ा · बेरान · नजर आया · जाबजा
चिराग गुल, सर शाम पगडी गायब · अंधेरा बिलकुल
सब लोग थके · मांदे गिरे पडे थे · अंजमन आरा की या
की देखना चाहिये · जिसके सामने से वो दोनों चांद सूरज छु
प गये · वादशाहने समझाया · मूं धुल वाया · कुछ खानेको
खिलिवाया · इधर इसका तो ये हाल · उधर जान आलम पां
च १ कोस का कूंच करते · तमाम लश्कर की सवाले मल
का के ध्यान में हर बात की निजद कान से सुनता चला ·

चरित्र ५

जब लश्कर से मलका का बाग थोडी दूर रहा · तो खबर दा
रने थे खबर मलका को · सुन्ते ही घडं चाई · दिलो शाह
जादा आया · मुबारक हो मलका को सुन्ते ही गश आया फि
र सम्भल कर उठ बैठी · और कहा · (यह ताने की बात है · ये
हिलटी बहल ते हैं) हमारा नसीबा तो पांव फैला सोता है ·
येहम किसी भीयको जावे हो · हर वक्त की छेड खानी अ
च्छी नहीं ॥ कबित्त
किसको खुशी कहांकी हंसी कैसा इख तिलाना

हमको नछेडो तुम केदो अब हम नही रहे·
घब राते क्यों हो·यही हाल है· दो रोजसे फैसला हुवाजाता है·
तकदीरके आगे तदवीर नहीं चलती· इतने में एक लौंडी॥
बारह दरी से उतरी· और बोली· कि खुदाजाने इतनाबडालश
कर कहांसे आया· मलका हंसी·और सैरकेबहाने से लौंडि
योंकेकंधे पर हात धर ठंडी सांस भर कोठे पर चढी·देखा केब
डा लशकर पडा है· बाद शाहीडेरे खडे हैं·इतने में जानआ
लम तीन चार सवारो से घोडा दौडा़थे· चला आया·मलका दे
खकर घरां गई·मानोउलफतके हालों में सफरका मारा घर
से आवारा देखाथा·या अब चाक चौबंद पाया·जानआल
म घोडेसे उतर सीधा मलका के बापके पास गया·सलाम
किया·उसने दुआदी·छाती से लगा लिया·फिर अंजुमन
आराकी सवारी आई·उसभी भी सलाम किया·मल्का॥
का बापबोला·शाहजादी·फकीर के हाल पर तुमने इनायत
की·खुदा तुम्हारा भला करे·उसने अर्जकी लौंडी मुद्दत सेबाद
शाहकी जबानी आपकी तारीफ सुना करती थी·आजशाह
जादे की बदोलत आपके दीदार नसीब हुए·दो घडीबैठ कर अ
र्ज किया·जो हुक्म होतो मलका सेभी मुलाकात करूं·उसने
कहा इसमें पूछना क्या है घर आपका है·जानआलमरुखस
त हो खेमेमें आया·अंजुमन आरा मे मलका के घर का रस्ता लि
या·आनेकी खबर पहिले ही मलकाको पोची थी·सामान उसउ
जडे घर का फिर दुरुस्त हुवा·जब सवारी देखी तो मल्का पेशवाई
को आई·फरशीसलाम किया·उसने गलेसे लगा लिया·मल्का
आंखोंमें आसूभर लाई बोली तुमने मुझे शर्मिंदा किया·मैंफ
कीरकी बेटी·तुम शाहजादी·आपके पांव आंखों पर रखने

चाहीये· आपके आने से मेरी बडी इज्जत हुई· अंजुमन आ
रा बोली· हमने खूब किया· औरत अगर ये चोचले· की बातें
न करती तो क्या होता· ऐ साहब हमारी तुम्हारी तो बराबरी है·
और हिसाब की राह से पहिले तो सभालामती से तुम्ही हो·
सरकार की फ़ज़्ल हमें मिली है· पहिले मजा आप ही ने चक्खा है जो
बनलूं हाहे· वो दोनों के होकर रात भर हंसी ठट्ठे में प्यार मुहब्बत की·
बातें होती रही· सुबह को अंजुमन आरा जान आलम के पास आई·
देर तक मल्का की तारीफ़ करती रही के आज तक ऐसी औरत न दे
खी थी· दूसरे दिन जान आलम ने मलका के बाप से कहा के·
अब वादा पूरा कीजे· वो बोला हम इस लायक कहां हैं· तुम तो
लकोपूरे इक़रार के सच्चे हो· लौंडियों में धरलो· शादी का नाम
लेना तो चिड़ाना है· न वो हम हैं· न हमारा वो जमाना है·

आखिर को मलका का निकाह जान आलम के साथ हुवा· अब ये मालूम हुआ के एक रात अंजमन आराकी और दूसरी मल्का वी वैठी· और उन दोनों में ऐसा प्यारा बढ़ा के शाहजादे की आशकी नजर से गिर गई· सच है; बड़े घराने वालों में जलन और हसद का नाम नहीं· जलन अदावत· दांता किल २ रोज की तूतू में में छोटे लोगों में होती है· उन्हे बहुतेरा समझावो नी चूंच दिखावो मगर दो वेगार्ला गलोज फोर्व फाला के नहीं मानते दो दिन मिलके नहीं रह सक्ते· जिंदगी जहर होती है· खातरे का गम होता है· नाक में दम होता है·॥

कबित्त॥

इश्क में दोनों तरफ़ उलफ़त बरा वरा चाहिये
दिल से नो बेदा हो उसका दंदा बरा बर चाहिये॥

चरित्र १०

कुछ दिन शाहजादा वहीं रहा· एक दिन ये सब वैठे हुए थे· जान आलम ने कहा· हमे घर छोड़े अजी जी से मूं मोड़े मुद्दत हुई अभी दिल्ली दूर है· अब चलना जरूर है· वो दोनो वोली बहुत खूब· मल्का के बाप से जिकर हुआ· उसने भी रोकना मुनासिब न समझा· सफर की तैयारी हुई· इतना माल और असबाब शाहजादे को दिया के वो अंजुमन आरा के बाप का दहेज भूल गया· चलते वक्त मलका के· फकीर के पास कुछ भी न था जो देता· मगर एक चुटकला बताता हूं· जब वक्त पड़ेगा बड़े काम आवेगा· दौलत इसके आगे कुछ माल नहीं· मगर होशयार रहना फिर अलग लेजा कान में मंत्र फूंका और कहा कि अगर माजाये भाई से नी कहा गे तो दगा खावो गे· फिर अंजुमन आरा के पास आकर कहा· या शाहज़ादी फ़कीर ज़ादी को

दो चार घडी के बाद फिर अपने अपने खेमे में आये व
ज़ीर ज़ादे के वास्ते बड़ा खेमा खड़ा हुआ. जान आलम ने
दोनों शाहज़ादियों को बुला कर वज़ीर ज़ादे से कहा के जिस
तर्फ तेरा दिल चले दिला दूं. वो हरामी टाल तो औरही धुन
में था. कहा मेरी क्या मज़ाल है जो इनकी तर्फ आंख उठाके
देखूं. जान आलम बोहत खुश हुवा. और दिल में वज़ीर
ज़ादे का घर हुआ. तमाम रस्ते की मुसीबतें सुनाईं. म
गर जब फकीर के लड़के का ज़िक्र आता. टाल जाता. वो स
मझा इसमें कुछ भेद है. एक दिन मल्का और अंजुमन आरा
ने मिल कर जान आलम से कहा. ये नया माजरा है. हर
दम एक गैर. और जवान आदमी की सोहबत में शरीर
करना. खला मला रखना क्या जरूर है. बाद शाह कभी
ऐसा नहीं करते. शैतान को इन्सान दूर न जाने. गैर का
एतबार न करे. जान आलम ने कहा फिर कभी ऐसी बा
त ज़बान पर मत लाना. उसने तुम्हारी लोंडियों तक का पास
किया. और मैं क्या ऐसी नादान था. जो बे देखे भाले दस्तूर के
बर खिलाफ करता. मल्का ये सुन कर हंसी. और अंजुम
न आरा की तरफ मूं फेर के कहा. खुदा के वास्ते इन्साफ तो
किजिये. खातिर की तली जिये. इनकी सादगी में किस बेवकू
फ़ को शक होगा. आप अगर अकल के दुश्मन न होते तो क्यों
हौज में कूद कर जादूगनी की कैद में फसते. नाम डूबोते. लो
भला सच कहो. शरमिंदा न हो जी में क्या समझे थे. जो कूद पड़े.
ज़रा ख्याल न आया. के कहां अंजमन आरा और कहां जंगल
का हौज. वो बाद शाह की बेटी थी के किसी मछली की पोती
थी. जान आलम ये सुन खिसियाना हो गया. कहा. वा

दो चार घडी के बाद फिर अपने अपने रवसें में आये ८
ज़ीर ज़ादे के वास्ते बडा खेलारवडा हुआ जान आलम ने
दोनों शाजा दीयों को बुला कर वज़ीर ज़ादे से कहा के जिस
फ़कीर का दिल चले दिला दूं लो हुशली तोल तो औरही धून
में था कहा मेरी क्या मजाल है जो इनको नकी आंरव उठाके
देखूं जान आलम वोहत खुश हुवा और दिल में वजीर
ज़ादे का घर हुआ तमाम रस्ते की मुसी वतें सुनाई म
गर जब फकीर के लडके का जिक्र आता टाल जाता बो स
मका इस्में कुछ भेद है एक दिल मल्का और अंजुमन आरा
ने मिल कर जान आलम से कहां ये नया माजरा है हर
दम एक गेर और जवान आदमी की सोहबत में शरीक
करना रवला मला रवना क्या जरूर है बाद शाह कभी
ऐसा नही करते शैतान की दूर सात दूर नजाने गेर का
एल दार न करे जान आलम ने कहा फिर कभी एसी बा
त जबान पर मत लाना उस्ने तुम्हारी लोंडियों तक का पास
किया और में क्या ऐसी नादान या जो वेदेखे भाले दस्तूर के
बर खिलाफ करता मल्का ये सुन कर हंसी और अंजुम
न आरा की तरफ मूं फेर के कहा खुदा के वास्ते इन्साफ तो
किजिये खातिर की नलीजिये इनकी साद गीमें किस वेवकू
फ़ को शक होगा आप अगर अकल के दुश्मन न होते तो क्यों
हौज में कूद कर जादू गरनी की केद में फसते नाम डूबोते लो
भला सच कहो पर मिंदा न हो जी में क्या समझे थे जो कूद पडे
जरा ख्याल न आया के कहां अंजमन आरा और कहां जंगल
का होज वो वाद शाह की बेटी थी के किसी मछली की पोती
थी जान आलम ये सुन खिसि याना हो गया कहा बा

न और अस्सर सरवरा पन और • कहांका जिकर • फिर जगे लि लाया • क्या मेरी हंसी का सौदा आपके हात आया • ऐसे तो स भको मुहब्बत में क्या क्या नहीं होता • भला अपनी बातें तो याद करो वो कौन रात दिन बिलबिलाया करता था • कह हक नाहक लौंडियों को धमकाया करता था • मल काले क हा देखा • आप थमिये • तोये कहानी लाये • मैं तो और न हूं • और मुझको नाकिस अकल सल कहते हैं • भला साहब अगर मुझसे बेवफाई की हरकत हुई तो तअज्जुब नहीं • लेकिन शुक्र करने की जगह है के आपका मिजाज भी मेरा हिसा है • ये बात हंसी में उड गई • मगर वो हराम ज़ादा हर फून हर मुकाम में वक्त ताकता था • एक दिन एक जंगल में लश्कर पडा • फूल खिले रहे फिरे बह रहे दिमाग में खुशबो समायी • जान आलम को लहर आयी • बज़ीर ज़ादे का हाथ पकड फिरे पर जा बैठा • शराब मंगवाई • दौर चलने लगा • शाहज़ादा मस्त वाला हो कर प्यार मुहब्बत की बातें करने लगा • वो हराम ज़ादा थे मोका गनीमत जान रोने लगा • जान आलम ने हंसके कहा खैर है • वो बोला • जो जो नोकरी का हक होता है • सो गुलाम ने किये • कहां कहां साथ दिया • मगर खूब एवज़ भर पाया • जब आप साकदरदान तालको छुपाते हो • फिर और किसीके स किस बातकी उम्मेद रहे • जान आलम ने नशेमें आगा पीछा न सोचा उसके रोनेसे बेचैन होय गया • कहा अगर तुझको यही रंज है तो • सुनले • मुझे बल्का ने वायने थे बात बताई है • के जिस बदन में चाहूं अपनी जान डाल दूं • उसने पूछा किस तरह • शाहज़ादे ने सब तरह की तरकीब बता दी • जब

वो सीख चुका तो बोला· के गुलाम को बगैर अपनी आखों
से देखे गलती का शक है· शाह जादा उठ के जंगल की तरफ
चला· दो चार कदम पर एक बंदर मरा हुआ पडा था· क
हा देखमें इसके बदन में जाता हूं· ये कह कर शाह
ज़ादा जमीन पर लेटा· बंदर खडा हुआ· वजीर जादे
को सब ढंग याद होगया था· फौरन बेईमान जमी
न पर गिरा· जान आलम के खाली बदन में अपनी
जान डालदी· और कमर से तल वार निकाल अपना
बदन टुकडे टुकडे कर डाला जान आलम का तमाशा कि
र फिरा हुआ· समझा बडी खता हुई अपने हाथ से पांवपर
कुल्हाडी मारी· वो बेईमान· बंदर के पीछे दौडा शाह जादा
भाग के बिचारा दरख्तों के पत्तों में छुपा· वो हराम जादा·

लहू के पड़ो॰ में छिड़के बेधड़क मल्का के डेरे में आया॰ रोया पीटा॰ चिल्लाया॰ कहा बड़ा ज़ुल्म हुवा॰ में वज़ीरज़ा दे के साथ सैर करता था॰ एक दफे ही जंगल में से घेर निकला॰ और उसे उठा ले चला॰ मैंने अपनी जान पर खेल कर घेर को ज़खमी किया॰ मगर उसने न छोड़ा ले ही गया॰ मल्का ने अफसोस किया समझा कि उसकी मौत यो ही थी॰ अब क्या हो सकता हे॰ वहां से फिर अंजुमन आरा के पास गया॰ वहां भी यही कहा॰ मगर घबराया हुआ॰ बाहर चला गया मलका अंजुमन आरा के डेरे में आई॰ वज़ीरज़ादे का ज़िक्र आपस में होता रहा॰ लेकिन मलका तेवरी ताड़ती थी उड़ती चिड़िया पहचानती थी॰ घबरा के बोली॰ खुदा खेर करे॰ आज बहुत सुगुन बुरे हुए थे॰ सुबू से दहनी आंख फड़कती थी॰ हिरनी अकेली रस्ता काट मेरा मूं तकती थी अपनी छाया से भड़कती थी॰ डेरे में उतरते वक्त किसी ने छींका था॰ तड़के ही बुरा सुपना देखा था॰ तुम भी तो खुदा के फज़ल से अकल और शहूर रखती हो॰ आज की हरकतें शाहज़ादे की तो देखो के आदत के खिलाफ़ हें॰ या तुम को यों ही वहम हे॰ अंजुमन आरा ने कहा तुम जानती हो॰ के वज़ीरज़ादे से कितनी मुहब्बत थी॰ रंज बुरा होता है॰ बदहवासी में क्या होता हे॰ वो रात मलका के पास रहने की थी॰ उसे अंदर का हाल क्या मालुम था॰ तबियत के लगाव से अंजुमन आरा के डेरे में गया॰ जब पहर बजा मलका वहां गई॰ देखा शाहज़ादा बैठा हे॰ मगर चौकड़ी भूला हुआ॰ उसने पूछा आज कहां आराम करोगे॰ वो घबरा कर बोला॰ जहां तुम कहो॰ मल्का ने कहा यहीं सो रहो॰

शाहजादे ने कहा बहुत खूब· ये भी दस्तूर के खिलाफ था· उस
का खूब कहना मलका ने बुरा माना· अंजुमन आरा का हाथ पक
ड़ अपने डेरे में आई· रोयी· पीटी· चिल्लाई ; अंजुमन आरा बोली
मल्का खुदा के वास्ते कुछ हाल तो बताओ· बोली गजब हुआ· उले
ट· किस्मत गई· शाहजादे से छूट गई· खुदा की कसम ये जान
आलम नहीं· वो भी शाहजादी थी· सो सीधी साधी थी· कहा
सच कहती हो· आज बहुत सी बातें इसने नयी की हैं· मल
का ने कहा खैर· अब जो होना हो· तुम यहीं सो रहो· फिर लौंडि
यों को बुला कर हुक्म दिया के सोते हैं· तुम हथियार बांधे डेरे पर
पहरा दो· शाहज़ादा क्या अगर फिरिश्ता भी आवे तो आने न दो नि
काल दिया जावे ये· सुन कर वो बच्चा डरे· अकेले और खेमे में
जा पड़े· एक डर दो तरफ़ होता है· मलका ने कहा देखा· अगर
जान आलम होता तो कभी अकेला न सोता· बे शक चला
आता· खफ़गी का सबब पूछता उसे कैसा डर था· अंजुमन
आरा कहने लगी· सूरत तो वोही है· उस वक्त मलका ने दूसरे
के बदन में जान डाल देने का हाल बयान किया· फिर कहा ये
हाल वज़ीरज़ादे से कहा होगा ये· फ़साद उसका है· मुझे उस
की तेवरी में शक आया था· सामने आने को मना किया था· स
मझाया था· उस नादान ने हमारा कहना न माना उसका मज़ा
पाया· गरज़ ये रात भर रोने पीटने में कटी· दोनो इसी फ़िक्र
में थी के इज़्ज़त और आबरू कैसे बचे· सवेरा हुवा· सवारी ड्यो
ढ़ी पर मौजूद हुई· कूच हुआ· खबर दारों ने खबर दी के यहां से
पांच कोस पर जा कर गजनफर शाह का मुल्क है· हुक्म दिया के·
शहर के पास डेरा हो· जब शाहज़ादीयां उत्तर कर डेरे में गईं· ये
खुद आया· इधर ये बिचारियां डर से मरी जाती थी· उधर वो बच्चा

सीघ्र दराये· हुये था· ये दस भर बैठ के उठ गये· उस मुल्क के
बादशाहने लश्कर का हाल सुन कर अपने वजीर को तोफा
दिया· वो लेकर पेश वाई को भेजा के चुपके चुपके तमाम हा
ल दर्याफ्त करे· वजीर आया· ये हराम जादा भी वजीर का बेटा
था· सब रंग ढंग जानता था· दस्तूर के मुवाफ़िक मुलाकात की
चलते हुये· वजीर को खिलत और बादशाह के वास्ते कुछ तोफे
भेजे· वजीर अपने बादशाह से ऐसी तारीफ़ करी के वो खुद मि
लने को चला आया· इसने भी इस मजे से मुलाकात की· के वो
बादशाह भी दंग होगया और तकरार कर पीछे पड इसे शहर
में लेगया· अपने किले में उतारा· शाहजादियों के वास्ते भी मह
ल खाली हुआ· कोई दिन तो जलसे खूब उडे· जब फुरसत मि
लीतो दिल में सोचा के अगर चे जान आलम बंदर है· मगर उ
सके जीने से अपनी सौत का डर है· ऐसी तदबीर निकालिये
उसे जान से मार डालिये· फिर बे खटके आराम कीजिये· मल
का से डरता था· उसके बापके नाम से · म निकलता था· जैसे
शेरकी डाढी से तिनका· ये सोच के हुक्म दिया के हमें बंदर
दरकार है· जो लावे गा दस रुपये पावेगा· शहर वाले हजारों·
बंदर लाये· जो सामने आता देखके अपने सामने सिर तुड
वाता· जब बंदर कम हुये तो दाम बढे· यहां तक के २ बंदर
सौ सौ रुपये मुकर्रर हुये· दो दो चार चार कोस तक बं
दर का नाम न रहा· वहीं के भागे आज तक मथुरा और
बिंद्रा बन में फिरते हैं· और उस जमाने में इसी सबब से
बृंदा बन को बंदरा बन कहते हैं· गरज ये के सब की रोटी
हुई· हर एक को बंदर की तलाश हुई· एक चिडि मार उसी
बस्ती में बसता था· मुफलिस कलांच दिन भर फिरते फिरते

दस पांच जानवर जो हात आ जाने तो दो चार पैसेको बेच जोरू खसम रोटी खाते· अगर खाली फिर आया तो फाके से पेट भरा· एक दिन उसकी ज़ोरू कहने लगी· तू बडा अहमक है दिन भर जानवरो के फिक्र में दर बदर खाक बसर उल्लू सा दिवाना हर एक खंडर· वीराना झांकता फिरता है· इस पर भी जो रोटी मिली तो बदन पर पत्ता सा दिल नही· अगर एक भी बंदर हात आ वतो बरसों की छुट्टी हो· जावे· लाल चतो बुरी हानी है· वो भी राजी होगया· बोला· कहीं से आटा ला रोटी पका· और जिस तरह से बने· थोडे चने भी ले आ· कल बंदर की तलाश में जाऊंगा· नसीबा आज माऊं गा· उसने मांग तांग सामान कर दिया· दो घडी रात रहे· चीडी मार जाल· फचकी· फेक· लाशा· कंपा· छोड थोडे थोके की टट्टी तोड· रोटी· चने· और रस्सी ले· चल निकला· और छे सात कोस पर दरखतो में ढूंढने लगा· वहां का सुनिये· शाहजादा जो बंदर उसने दिल से बंदर पकड ते· लोगो को देखाथा· और सिर तुक वाने का हाल सुनाथा बे होश· घबराया हुवा हर तरफ छुपता फिरता था· उस दिन कई दिन का भूका प्यासा एक दरखत के कोले में बेहोश पडाथा· चीडी मारने देखा· दबे पांव आ कर गर्दन पकडी उसने आंख खोली मोत सामने दिखलाई पडी· जाना के अबके आई नही टलती· चीडी मार ने रस्सी कमर से खोल मज बांधी बूत· थोडी दूर चल बंदर ने कहा अरे क्यों बे गुनः का खून अपनी गर्दन पर लेता है· मुसीबत जदो की और दुख देता

है • वो बोला • क्या • खूब • तू बातों से मुझे डराता है • १
अगर देव • भूत • आसेब जो बला है • बलाय से • म
गर तुझको नहीं छूंगा • आज किस्मत आन भाई •
और ये दौलत हात आई • तुझे बादशाह को दूंगा
और जिससे सौ रुपये लूंगा • और चैन करूंगा • ये
सुनते ही बंदर सुन्न होगया • रही सही जान निक
ल गई • बहुतेरा हात पांव जोडे कहा लालच का
काम बुरा होता है • कुछ काम न आया • चिडीमा
र ने झट पट जल्द कदम उठाया • शाम को हंस
ता हुआ घर को आया • जोरू से कहा अच्छी घडी से
घर से निकला था • के दाने ये बंदर जाल में फसा ये • ये कह
के खूब हंसा अब दो बातें और सुनिये • इधर इसका ये हा
ल उधर मल्का अपने आप घबराई • रोई पीटी चिल्लाई •
अंजुमन आरा से कहा तुमने सुनाये • बंदर पकड वा सिर
कुचल वाता है • यकीन जानो जान आलम इसी भेस में है •
आज खुदा खैर करे • दिल बुरी तरह घबराता है • घबराता
ता है • मगर गम कलेजा चाबता है • यानो शाह जादा •
पकडा गया • या कुछ और मुसीबत पडेगी • हसी के ब
दले रोवेगो • आस बोसे हात मूं धोवेंगे • सच है •
जिससे जी को उलझन हो • अगर कहीं उसके पांव में कांटा
चुभ जाय तो यहां दिल की लगन से कलेजा मूं को आवे •
जिसने कभी मुहब्बत की होगी वोही इसे खूब समझेगा • नहीं
तो इसके सोगया • अनाडी क्या जाने बला • अंजुमन आ
रा ने कहा • इससे और जयादा क्या मुसीबत पडेगी • शह
र छुटा सलतनत गई • मा बाप जुदा हुये • हिरा और जिगर

के न्वदग आले पडे हैं · जान के लाले पडे हैं · जिस्के वास्ते
नू.री बत उठाई · सदमें सहे उसे खो दें दे · अबजो हो सो
हो · खुदा की मर्ज़ी · यहां तो ये बातें थी · उधर चीडी मार
की जोरू दिवाले बंदर को देखने लगी · बंदर सोच उस
का देखके तो रहम ला किया ये औरत है · शायद पिग
ल जाये · ये सोच के सलाम किया · वो डरी तो कलाम ·
किया अय नेक बख्त खौफ़ न कर · दो बातें मेरी सुन ले गवां
रियों जीकी कडी भी होती हैं · बंदर का बोलना अचंभा
समझ कर कहा के कह : वो बोला · हम सुसी बत ज
दे ग़म के मारे कैदमें फसे हैं · मा बापने किस किस ॰
लाड से पाला · किस्मत ने क्या क्या मुसीबत दिखाने को
घर से निकाला · ऐसे बुरे दिन दिखाये के तेरे पास पक
डे आये · सुबह को जब हम गर्दन मारे जाय गे · त
ब सो रुपये तुम्हारे हात आवेगे · आखर को इस्की
सजा पावोगे पैसा रुपया हात का मैल है · कितने
दिन खावोगे · धब्बा जीते जी न छुटेगा · धोते धोते म
र जावोगे · अगर हम पर रहम करो · खुदा कोई और
सूरत करे · सो रुपये के बदले तुम्हारा घर अशर फियों
से भरे · हमारे कतल में गुनः बे लज्जत · या एक मुर्गी
की हसरत · निकलने के सिवा और क्या फायदा है · अग
र चे ऐसा जीना मरने से बुरा है · मगर क्या जाने · खुदा
की मर्जी क्या है · हमारी तकदीर में क्या क्या लिखा है · जो
खुदा की नाम पर रहे गा · उसी का बेडा पार है खुदा उस
का मदद गार है · तूने यमन के बादशाह का किस्सा न
हीं सुना · (एक सलतनत दी और दो पायी · लालची ·

योंकी कजा आई·जाने गवाई·औरत मोम की नाक होती है·जब फिर गई जिधर फेरा फिर गई·बंदर की बातों पर कुछ अचंभा कुछ अफ़सोस करके कहने लगी·हनुमान जी सुनावो महाराज वो कहानी कैसी है॥ १०॥

॥ ११ चरित्र॥

यमन के बादशाह की कहानी॥

बंदर ने कहा यमन के मुल्क में एक बादशाह था·उस का ये दस्तूर था·के जो फ़कीर जो सवाल करता पूरा कर देता·इस सबब से उस का नाम खुदा दोस्त हो गया था·एक दिन कोई सरव्स आया और सवाल किया के अगर तू खुदा दोस्त है तो लिल्ला तीन दिन सलतनत करने दे·बादशाह ने कहा·बिस्मिल्ला·कारबारी यों को हुक्म दिया के जो इसका हुक्म न माने गा·सजा पावे गा·ये कह कर तख्त से उठा·फकीर जा बैठा हकूमत करने लगा·चौथे दिन बादशाह आया·कहा·अब क्या इरादा है·वो बोला पहिले तो मैंने फकत आपका दिल लिया था·अब बादशाहत का मजा पाया·खुदा के वास्ते ये सलतनत मुझको बख्श दीजिये बादशाह ने कहा·खैर·ये बादशाही आपको मुबारिक हो·बादशाही·देकर कुछ न लिया·लड़कों का हाथ में हाथ बी बी को साथ लिया·दिल को समझाया इतनी मुद्दत सलतनत की·अब कोई दिन फकीरी का मजा·फाके की लज्जत·देखिये·गोलशकर साथ नहो·मगर शाही हर तरे मौजूद है·पर इस शहर से और कहीं चलना

ज़रूर है· रदुदाके कारखाने हैं· कोई और सूरत निक
ल आये· एक लडका सात बरस का दूसरा नौ बरस का
था· वो बादशाह फ़क़ीर बनके चल निकला· वाह वो सल
तनत· और कहाँ यह· पर आज फटे कपडे और खाक·
बसर कोस २ दो २ कोस रोज़ चलना· मिला तो खालियां
नहीं तो भूखे ही रस्ता काटा· चलते चलते एक दिन मु
साफ़िर खाने में उतरा· इत्तफ़ाक़ से एक सौदागर कहीं से
आया हुवा· वहाँ ही उतरा था· शाहज़ादी को देख बोलो
ट गया· देखिये· मिट्टी मेंभी सोना चमकता है· इस मु
सीबत मेंभी शाहज़ादी का रंग रूप· न छुपा· सौदागर
ने आकर बादशाह को सलाम किया· ये बिचारा सीधा
साधा उसके फ़रेब को क्या जाने· दस्तूर मुवाफ़िक़ सलाम
का जवाब दिया· वो हरामज़ादा कहने लगा के थोडी
यहां दूर से एक काफ़ला पडाहै· और उसमें मेरी औरत
पेट से है· इस वक़्त दर्द हो रहा है· बडी देरसे दायी
के वास्ते गदायी कर रहा हूं· अगर तू इस नेक बख़्त को
मेरे साथ करदे तो बडी मुश्किल आसान हो· नहीं तो
एक की मुफ़्त में जान जायगी· ये बिचारा घबराया· बीबी से
कहा बडा नसीब जो इस मुसीबत में किसीका काम निकले· दे
र न करो· उसने दम न मारा· सौदागर के साथ होली· बाहर नि
कल सौदागर ने उस्से कहा के तुम घोडे पर सवार होलो· का
फ़ला· दूर है· वो बिचारी सीदी सादी थी· सवार
होली· इस हरामज़ादे ने घोडे पर बिठायी बाग उठाई का
फ़ले के पास आकर कूंच का हुक्म दिया· और आप एक
तर्फ़ घोडा फेंका उस वक़्त इस नेक बख़्त बादशाह·

फिर धाड़ मचाई • रोयी पीटी चिल्लाई • मगर कौन सु
नताहै • रात भर बादशाह रस्ता देखता रहा • लाचार बी
बेटों का हाथ पकड कर • काफ़ लेके तरफ़ आया • वहां कु
छ पता न पाया • धूर गई उडती देखी न याद में छोडले की •
ताकत • न बीबी के छोडने की दिल में ताब • सख़्त रहे ज
बाब न कोई आस न पास • लाचार लडकों को ले काफ़
ले के पीछे हुआ • रस्ता भूल गया • एक नदी पर पहुंचा •
डोंगे नाव का तो नाम नहीं • आदमी का काम नहीं • वाही
तवाही फिरा • कहीं घल बेडा • ना मिला • कुछ डूब डुबाने
का डर था • एक लडके को किनारे बिठाया दूसरे को कंधे प
र चढ़ा • पानी में उतरा • जब आधी दूर पहुंचा तो किनारे
का लडका भेडिया उठा ले गया बादशाह आवाज सुनकर
घबराया • फिर कर देखने लगा तो कंधे का लडका पा
नी में गिर पडा • बादशाह घबराया तो आप गोता खाने
लगा मगर ज़िंदगी बाक़ी थी किनारे पर आ लगा • दिल
में समझा बडे बेटे को भेडिया ले गया • छोटा पानी में डूब
गया • बीबी इस तरह छूटी आप सुखी वतन से फसे • दूसरे मु
सीबत में भी खुदा का शुक्र किया • एक शहर के पास
पौंचा वहां बहुत लोग खडे थे • बडी भीड देखी उस मु
ल्क का ये दस्तूर था कि जब बादशाह मरता तो कार बारी
वहां आकर बाज उडाते थे • जिसके सिर पर बैठे उसे बाद
शाह बनाते • उस दिन भी वो बाज उडा चूके थे बादशाह पौं
चते ही • वो बाज आकर सिर पे बैठा • दस्तूर के मुवाफ़िक़
तख़्त लाये इसने बहुतेरा कहा मैं इस झगडे को • छोड
के आया हूं • मुझे माफ़ करो • मगर लोग इसके सिर पर

दाज का बैठना अचरज समझ न दाज रहे· तेवर नाड गये· यहि चाल गये जब र दस्ती तरह पर दिखायास लामी की तोपे छुटी· नजरे गुजरी सिक्के पर नाम जारी हुआ ·दुहाई फिर गई· के जो जुल्म करेगा· गरदन मा रा जायगा राज करने लगा· मगर दिल सुस्त· शर्म के मारे किसी से हाल न कहता· जब बच्चे याद आते· न बसाय छातीसे लोट जाते ·जब उन लडकों का हाल सुनिये जब भेडिया· बडे बच्चे को लेके भागा तो उधर से एक शख्स तीर कमान लेकर आता थी ·उसने बच्चे को भेडिये के मूं से छुडाया· दूसरा जो गोते खाता था· एक म छली वालेने अपने जालमें उल·झाया· दोनो बे औलाद थे· और उसी शहर के रहने वाले थे जहां· लडकोंका बाप बादशाह हुआथा· अपने अपने घरमें लाये ·सुबहा न तेरी कुदरत·कैसे डाला· और क्यों कर निकाला· बादशाह जो बहुत बे चैन हुआ· तो वजीर को हुक्म दिया के दो लडके हमारे वास्ते ला· तमाम शहर के लडके पकडे आये· हाकम का हुक्म बिन आई मौत है वो दोनो भी आये· ईश्वर के नजदीक बिछडे मिला दे ने क्या बडी बात है· वजीर को येही दो लडके पसंद आये शिकल बदल गई थी ·सूरत और हो गई थी तबाद- शाहने पहिचाना ·न लडकोंने बाप जाना· और न समझे के हम दोनो भाई हैं ·मिल गये मगर जुदे रहे· बादशा ह बडी इनायत करता था· दोनो के इख्तियार वाले हुवे· वो सौदागर यही आया·पहिले बादशाह से रसाई थी सोचा·खूब·अब औरत राजी हो जावे गी· बादशाह के

मरने की सुनी तो उदास खबर हो गया लोगों ने कहा
ये बादशाह उस्से भी अच्छा है · बज़ीर सबब से मुला
कातकी · न इसे इसने पहिचाना · न उसने इसे जाना·
अक्सर आया करता था· एक दिन बादशाहने कही ·
के आज रात तू घर न जा · कुछ पूछना है · वो वेग्रस
गर सुस्त· बादशाहने पूछा · ये थोडा बे अदब हो चलाथा
हाथ बांधके अर्ज़की · के मेरे पास एक नाराज औरत है
उस्की चोकसी आप कर्ता हूं बहुत डरता हूं · ऐसा न
हो · के निकलके पर्दा फाइस करे · हिमायत नी तलाश
करे · बादशाह ने कहाके उस्का जिम्मा आज हमलेते
हैं· वोही लडके बडे मोदमिद होगये थे · उन्को हुक्म हु
वा के फोज ले करके जावे · और चोकसी करें·लडके स
लाम करके सोदागर के मकान पर गये · बागमें खेमा ल
गाथा· ये कुरसी बिछा बाहर बैठ गये · लोग इधर उ
धर खडे हो गये· जब आधी रात हुई तो एकको नींद
आने लगी · दूसरे ने कहा सोना मुनासिब नहीं · क्या जा
न क्या होगा · ऊंट किस कर वट बैठे · वो बोला कोई कहानी
कहो· जिस्से नींद उचट जाय ·उसने कहा जो हम पर बीती
है सो कहते हैं · अगर कान धर सुनो गेतो नींद क्या, क
ई दिन तक भूख प्यास पास न आवेगी · मै यमन ·
के बादशाह का बेटा हूं · मेरे बापने खुदा के नामपर
सल्तनत देदी · मेरा एक भाईथा उस्की शकल तुमसे·
मिलतीहै· बादशाहने अपनी बीबी को और हम दोनो को-
साथ लिया शहर से निकले रस्ते मे एक सोदागर हमारी
मांको फरेब से लेगया · हम दोनोभाई दोनों साथरहे· आगेमें

एक नदी मिली • सो बादशाह मुझको किनारे पर बिठा
छोटे को कंधे पर रख पार चला • मुझको भेडिया ने पक
डा • मैंजो चिल्लाया तो बादशाह खबराया • भाई कं
धेसे गिर गया बादशाह आप गोते खाने लगा • फिर
नहीं मालूम क्या हुआ • एक तीरंदाज ने मुझे भडिये से
छुडाया था • और मैं इस बादशाह तक आया • वो
रोके लिपट गया • और कहा दरया में हम गिरे • मछ
ली वालों के सबब से तिरे थे • फिर तो वो दोनों गले मिल
कर रोसे रोये के वो औरत चौंक पडी • पर दे पास आकर
हाल पूछने लगी • उन्होंने सब बयान कर दिया • वो पर्दा उ
लट लडकों से लिपट गई • कहा मैं सोदागर की कैद में
हूं • उसी दम खबर बादशाह को पोंची • सवारी भेजी बुल
वाया सबने पेहचाना • सोदागर कैद हुआ • दूसरे दिन
वो मारा गया • ये खबर यमन में पहुंची वहां उस हरा
मजादे ने बडा ज़ुल्म कर रक्खा था • वजीर ने उसे जहर
देके मारा • और बादशाह को लिखाके हुजूर के देख
ने के वास्ते तमाशहर वाले तडफ़ते हैं • बादशाह
कोभी मुल्क देखने का शौक हुआ • सफर की तैयारी
होने लगी • दीनों सलतनत मिली • बंदर ने ये कहा
नी कह कर कहा अपने कवक्त मतलब इस कहानी •
से येथा • के बादशाह खुदा पर रहा तो राज पाया •
लाल चीयों ने अपनी जाने गवांई • ये किस्से याद र
हेंगे • उन्हें बद कहेंगे • और इन बातों से नरम पड गई
बंदर को तसल्ली दी • कहा तू खातिर जमा रख • जब त
क के मैं जीता हूं • बादशाह को कभू न दूंगी • ॥

फाका कबूल करूंगी॰ फिर उसे खिला रोटी पानी पि
ला सो रही॰ तडके ही चिडीमार उठा॰ और बंदर के ले
जाने का इरादा किया॰ औरत ने कहा आज और किस्मत
आजमा॰ फिर जाल करला॰ जो रोटी मयस्सर आवे॰ तो कुछ
दुखी जान जाये॰ इस पर हंसा लगे॰ बद नसीबी आये
नहीं तो कलले जाना॰ वो बोला॰ तू इसके दमसे आगयी
बंदर बोला॰ के औरत तो खुदा पर है॰ तू मर्द होके बे
सबरी करता है॰ पाजी जोरू के गुलाम होते है॰ फिर
वो॰ पटक॰ फंदक॰ जाल॰ फटकी॰ उठा॰ लासा॰ कंपा
ले॰ टट्टी कंधे से लगा॰ घर से निकला या तो दिन भर ख
राब खस्ता हो कर दो तीन जानवर लाता था॰ उस दिन
कोई पहर में पचास साठ हाथ आये झटकी भर ग
ई॰ खुश हो कर घर आ कई रुपये को जानवर बेचे॰ आ
टा॰ दाल॰ नोन॰ तेल॰ लकड़ी॰ खरीद॰ थोडी मिठाई ली
भट्टी परजा॰ ठर्रा पिया॰ हाथ पाव फूल गये॰ फूलते॰ गीत
गाते घर का रस्ता लिया॰ मुफलिसी का गम भूल गये॰ जो
रूसे आते ही कहा अरी हनूमान जी के कदम बडे भाग
वान है॰ भगवान ने दया की॰ आज रुपये दिल वाये॰ इतने
जानवर हाथ आये॰ वो घरवाली बहुत हंसी पहले मिठाई बंदर
को खिलाई॰ फिर रोटी पका आप खा॰ कुछ उसे खिला पड
रही॰ बंदर बिचारा समझा॰ कोई दिन और जाल बचीअब
तो चीडिमार की बढती होने लगी थोडे दिनो में घर बार
कपडा॰ लत्ता॰ गहना॰ पाता॰ दुरुस्त॰ होगया॰ इत्तफा
कसे कोयी बडा सौदागर सराय में उस भटियारी के॰
घरमें उतरा॰ जिसकी दीवार तले चीडी मार रहता था॰

उस्के कानमें रोसी आवाज आई • के जैसे कोई लडका
प्यारी प्यारी बाते करता हो • भटियारी से पूछा यहां
कोन रहता है • वो बोली • चीडी मार • सौदागरने क
हा इस का लडका खूब बाते कर्ता है • वो बोली • लडका
बाला तो कोयी भी नहीं • फक्त नारू खसम रहते हैं • सौदा
गरने कहा • इधर आ देख • ये किसकी आवाज आती है •
भटियारीजो आई • लड के की आवाज पाई। वो बोला
इसकी आवाज में दर्द भरा हुआ है • उसको मेरे •
पास ले आ • बातें करूंगा • और तेरा भी मू मीठा
करूंगा • भटियारी चिडी मार के घर गई • देखा • बंदर
बातें करता है • उसे देख चुप हो रही • वो दोनों भटि
यारी के पाव पर गिरे • मिन्नत करने लगे • हा हा खा
यी • कहा • हमने इसे बच्चे की तरह पाला है • अपना
दुख टाला है • शहर में हंगामा हो रहा है • बंदर मारने
वाला बादशाह उतरा है • ऐसा न हो ये खबर उडते उडते
उसे पोंहचे • बंदर छिन जाये • हम पर खराबी आये •
वो बोली • मुझे क्या काम जो किसीसे कहूं • सथोरे में आके
सौदागर से कहा के वहां कोई नहीं है • उसने कहा दिवा
नी वो आवाज किसकी थी • जरा गोरसे सुन्ना के क्या मालूम
जवाब चोनमा कूल देती है • बलैयां लूं मुझे क्या गरज जो क
हूं बंदर बातें करता है • सौदागर खूब हंसा फिर कहा • तू सी
डन है • अरी कहीं बंदर बोला है • फिर बोली जी गरी
मर बर सदके गई • इसीसे तो मैं भी नहीं कहती • बंदर
बोलता है • सौदागर को खफ़ गान होने लगा • कैथे क्या
बात है • मकान पासथा • आप चला गया • देखातो •

एक औरत दूसरा मर्द · मुछंदर · तीसरा बंदर है · यकीन हुवा के यही बंदर बोलता था · मटि यारी सच्ची है · वो सौदागर को देख बंदर को छुपाने लगा · उसने कहा भेद खुल गया · भांडा फूटा · अब छुपाने से क्या हासिल है · बंदर हमें दो · जो चाहो इस के बदले लो · नही तो बादशाह से कह दूंगा · ये मारा जायगा · तुम्हारा क्या जायगा · वो दोनों रोने पीटने लगे · बंदर समझा अब जान नहीं बचती · इतनी ही जिंदगी थी · चिडी मार से कहा के किस्मत ने · इतनी मुसीबत पर भी सबर न दिया · यहां भी चैन न दिया · खैर · जो खुदा की मर्जी · मुझे हवाले करदे · आई · टलती नहीं · तकदीर के आगे · तदबीर चलती नहीं · चीडी मार ने कहा देखो बंदर की जात क्या बे वफा होती है · हमारी मेहनत पर नजर न की · तोते की तरह आंख फेरली · सौदागर के साथ जाने को राजी होगया · बड़ा आदमी जो देखा · तो हमारे पास रहने का दिल कुल पास न दिया · बंदर ने कहा · अगर न जाऊं · अपनी जान खोऊं · तुम पर खराबी लाऊं · आखर को रोपीट कर बंदर सौदागर को देदिया · और उसें कसम लीके बादशाह को न देना · अच्छी तरहे रखना · सौदागर ने बहुत सा रुपया दिया · बंदर को प्यार किया · सराय में लाया हाल पूछने लगा · बंदर ने कहा क्या पूछते हो · हजरत · ईश्क की बलाय रहे · जमाने की शिकायत है · लोगों का बेडा पार करने वाला · सुहताज है · न वो सिर है · न ताज · है मुसी बत में फसा हूं · कोई पूछने वाला नही · अपने हात से सिर बला लीहे · दुश्मनों की बन आई है · जिस्का मुझे फिक्र था ·

उस्को अब मेरा गमहे · मरने से हम इस लिये जान छुप
ते हैं के साथी जुदाई से मरे जाते हैं मुझको फरेब के जाल
में उलझाया · दोस्तों को मेरे दुश्मन के फंदेमें फसाया · अ
जब सैर है · जिधर देखो उधर अंधेर है · आज मुद्द
त बाद आपसा कदर दान मिला · दिल ठिकाने होगा तो
सब हाल कहूंगा · ये बात सुन कर सोदा गरकी आंख
से आंसू निकल पडे · समझा ये बंदर नहीं कोई बडा आ
दमीजादू से मुसी बत में फ़सा हे · खातर जमा रख · तेरी
जानके साथ मेरी जान हे · यही अब जीने का सामान हैं ·
बंदर को तसली हुई · किस्से कहानि या सुनाई · खूब खू
ब बाते बनाई · सोदा गर रात भर न सोया · खुब दिल खो
ल कर रोया · अब बंदर की बडी ताजीम होने लगी · म
गर होनी कब टलती हे · सोदा गर का ये दस्तूर था के ·
जो कोई नया आदमी उस के पास आता · उसे बंदर की
बाते सुन वाता · सब को फ़िक्र हुआ · हर जगे जिक्र हु
आ गली कूचे में ये चर्चा फेला के सोदा गर का बंदर बोल
ता हे · उस हराम जादे के कान मे भी ये बात पहुंची · स
मझा · ये वोही हे · इस को मारूं तो सही हे · चोबदार
बंदर के लेने को सोदा गर के पास भेजा · ये बोहोत घब
राया · और तो कुछ न बन आया · हात जोड के अर्जी की
के मेरे कोई · और ओलाद नहीं · इसे बच्चा सा लेकर बेटे
की तरह पाला हे · इस की जुदाई गुलाम की जान लेगी ·
आगे जो हजूर की मरजी · चोब दार यहां से खाली फि
रा · वोह राम ज़ादा आग होगया · और वहां के बाद शाह
को लिखा के जो आगती सलांवी गोंगा सलल नतचाहेतो

होतो · सौदागर से जल्द बंदर लेके भेजदो · नहीं तो ईंट से
ईंट बजा दूंगा · नामनिशान मिटा दूंगा · वो बादशाह
बड़े फिक्र में था · दरबार वालोंने समझाय के एक जा
नवर के वास्ते क्यों हज़ूर सैंकडों का खून करवावेंगे · हु
क्म हुआ के जिस तरह से बने सौदागर से बंदर लेकर
उसकी डेहुडी पर पहुंचादो · जब बादशाही फ़ौज सौदा
गर के घर पर चडे आई · बंदर हाथजोड़ के सौदागर से
कहा · मेरी तो मौत आई है · तकरार करने से कुछ फाय
दा नहीं है · वक्त आ पहुंचा · टाली टलती नहीं · मगर
यह डर है · के मेरी दोस्ती में · तुम्हारे ऊपर मुसीबत
आवे · तुम्हारे दुश्मनो की जान नजावे। हमेशा कोमे
रे ऊपर धब्बा रहे · खलकत भला बुला कहे · सौदागर
ने कहा ये क्या बात है · जो कहा वो सिर के साथ है ·
बादशाही आदमियोंने तगादा किया दिन थोडा रह
गया था · सौदागर ने रुपया देकर टाला · रातभरकी छु
ट्टी ली दूसरे दिन चलने की ठेरी तमाम शहर में मशहूर
हुआ सौदागर के पास एक बंदर था · कलवोभी मारा जा
एगा · ये खबर मल्का मेहर निगार को पहुंची · वोतो
जान आलम पर मरी हुई थी · समझी ये · बंदर न
हीं शाहजादा है · अफ़सोस कोस सी तजवीज की
जिये · जो उस बिचारे की जान बचे · दिलको मसोस
कर जोर जादेको · कोस पूंछा · सबेरे किधर से वो · सौ
दागर जायगा · ये तमाशा हमारे देखने मे क्योंकर
आवेगा · लोगोंने अर्ज़की · के हज़ूर केज़रो के के
नीचे से हर ऊर्फ का रस्ता है · ये सुनके तमाम ·

रात तड़पी · की नींद न आई · दो घडी रात से बगल
दे में आ बैठी · और एक तोता पिंजरे में पास रख लिया
गजर से पहिले बाजार में हुल्लड · तमाशा देखनेवा
लों का मेला सा होगया · सवेरे ही सौदागर निकाज :
पड़ · हाथी पर सवार हुवा · कमर से पेश कब्ज लगा
गोदमें दंदर दिल मरने पर कमर बांधे मजबूत चला
दंदर से कहा घबरा मत · जब बात चीत और रुपये
से काम न निकले गा · जोबन पडेगा वो करूंगा · आप
ने जीतेजी तुझे मरने न दूं गा · इधर सौदागर का घब
रा कर कहना था · के खलकत ने चारों तरफ़ से घेर
लिया · दंदर लोगों कि तरफ़ देख कर कहने लगा ·
साहबो दुनियां तमाशे की जगह है · एक आता
है · एक जाता है · गरम बाजार है · हर एक शख्स
खरीदार है · अपने काममें कजा है · जो चीज़ है बेफ
ना है · इस्से सब लाचार हैं · यहां सब बे इख्तियार
हैं · कोई किसी की अदावत में है · कोई किसी पर मर
ता है · हर एक किसी बखेडे में फंसा है · हर एक को
सूझता नहीं · क्या लेन देन होरहा है · सूद की उम्मेद
में सर नुकसान है · सीढी होने का सौदा है · उस्की कु
दरत देखो · मुझसे बे जबान की क्या जबान दी है · सुन्ने
वालों में · तुम्हारा चेहरा लिखा है · बातें सुन्ने को साथ
चले आते हैं ॥ अलग होना नहीं चाहते हो रहम खाते
हो · आंसू बहाते हो · येनो दया का रूप हैं · अब क्रोध
का रूप देखो · इसी बात चीत की धूम से · कम बख्त ज़ालि
म से मेरा मुकाबिला होना है · वो बेशक मुझे कतल करेगा

देगा · मेरे खून से अपना हात भरेगा · दोनों जहान में उस
का मूं काला होगा · जब उस्की दिल की कोठरी में उजा
ला होगा · मेरी जवान गोया मेरी मौत थी · दुनिया आरा
मकी जगह नहीं · दो दिन की जिंदगी के वास्ते · क्या·
क्या· सामान करते हैं · हवाके घोडो पर चढते हैं · ज·
मीन पर पांव नहीं धरते है · मूंउठा आंख बंद कर च
लते हैं · गरीबोंके सिर कुचल देहैं · आखर को अर
मान लेकर मरते हैं · ज्ञान उसके पीछे खोते है · जोदो
इज्जत से हात आये · बडी मुस्किल से जमा हो · कं
जूस पने से पास रहे · और फिर अफ़सोस · छुटजाय·
सिर पर हात धर कर रोते है · छाती पीट ते हैं · आखिर
को अमीर और गरीब दो गज कफन · और एक तक्ते ·
से जयादे नहीं मिलता · किसीने किमखाब या ताफ
ता पाया · किसीको गजी · गाढा · हात आया · किसी
ने संग मरमर की छत्तरी बनाई · किसीने दो अनलक
डी ही पायी · जमीन गज भर दोनों को मिलती है · सो
येभी अच्छे नसीब · नेक कमाई वाले गोर गढा
कफन पाते हैं · नहीं तो सैकडो हात रगड मरजाते
है · लोग दर गोर कह कर चले आते हैं · कुत्ते · बिल्ली
चील · कव्वे · बोटीयां नोच नोच खाते है · कोई पास
नही फटकता · अफ़सोस के सिवाय कोई · सिराने प
र नही रोता है · असबाब लुट · कोई पाईती नहीं होता है ·
कबरों पर कुत्ते · लोटते हुए देखते हैं · छत्रियों पर उल्लू·
बैठे रहाकरते है · चील · कव्वे · उल्लू · घोसले बना
ते हैं · फलके पास हमेशा · कांटा · देखा · खूब सूरतों

का रंग उडा जाता है · कोई रोता है · कोई हंसता है · दुनिया में येही मज़ा है · मुद्दतों सवेरे मुर्गे की आवाज़ न रंज उठाये · कभी · दम न मारा · शिकवा ज़बान पर न लाये · बरसों मुल्ला के अल्लाह अकबर के सदमें सहे · शुक्र किया · चुप रहे · नहीं तो गरज की आवाज़ ने दम बंद किया · मगर कभी जी पर न लीया · सोच के ; खूब सूरतों का मिलना भी एक सुपना था · उनका प्यार भी देखा तो गज़ब था · जीका · लुटना था · तमाम दुनिया में फिरे · कभी मिजाज पढी · कभी घंटा हिलाया · मुल्ला को सलाम किया · पंडित जीके पांव पडे · ग़ौरसे जो देखा तो दोनों कूट थे · हर एक अपने तई · बड़ा समझता था · और दूसरे को बुरा जानता था · दुनिया के कार खाने है · सफ़र करना है · सौतऱ्ह के खटके · हज़ार तरह का डर · फिरभी · वहां के हालसे · बेखबर है · यहां नजीने की खुशी · न मरने का गम करे · किसीको दुख नदे · मुसीबत जदे के आंसू पोछे · सिर पर हात धरे · तेरा मेरा सब भूल जाय · खुदा पर भरोसा रखे · सब में मिला रहे · और सबमें अलग · मुसीबत से नडरे · दौलत का क्या एतबार मुफ़लिसी की क्या शरम · एक दिन चलना हीहै · किसीके मरने पर क्या रोना · वो बेवकूफ़ है · जो रोते है · हां रोना उन पर है · जो जीने पर मरते हैं · रुपये का जमा होना · जवाहरकी तलाश में दिन का जागना · चांदी सोने की उम्मेद मे रात को सोना · खूब सूरतों से लिपटना · जिनको ये बात है · उनसे दुनिया काहेको छुटती है · हमे ग्याका दस्तूर है · अशराफ़

कीकिट्टी स्वार • बे व़कूफ़ उल्लू के पट्ठे सर दार • मगर ऐ
ऐसी नहीं है • कभी दूसरा पलटा भी हो जाता है • सच
ऐसी है • न अमीर होते दिन जाते हैं • न फकीर होते देर
लगती है • अजब सैर है • बडा अंधेर है • जिन के यहां
सौ सौ और दो दो सौ घोडे बंधते थे • हाति फूमते थे • वो
जूता उतार गठ बाते फिरते हैं । और जब वक्त आगया
तो फौज भी घरी रही • और रुपया भी पडा रहा • उसक
ा कोई बचा नहीं सकता • न दोस्त आडे आये • न
अपना मौत के पंजेसें छुडाये • अगर ये होता तो बडे
बडे लोग काहेको मरते • यहां कुछ नेकी करले • भूखेको
खिला दुखी को तसल्ली दे • यह तो कुछ काम आवेगा
और बाकी तो सब पाखंड है • अकारथ जायगा •
किसीसे मुहब्बत न करे • दिल न लगाये नहीं तो मुफ्रमें
जान खोनी पडती है • वो लोग अब कहां हैं • जो बात
के पूरे रहें • दुनियामें मत लब की मुहब्बत हैं • दि
ल्वीउल्फ़त को दिया लेके ढूढो न कभी थी • न है • ऐ
और न होगी • और थीभी तो खलील खां फ़ाकता
उड गये और जो होगी तो देखी जायगी • मगर अफ़
सोस समझते हैं • और फिर नहीं करते जवानी का नशा बु
ढापे में उतरता है • तब सिर पर हात धर कर रोता है • फि
र क्या होता है • फिर पाछे पछि ताये क्या • जब चिडी
यां चुग गई खेत • बंदर कीये बातें सुनकर लोग रोने ल
गे • अरथी की तरह हाथीके साथ होलिये • हरतरफ़ से हाय २
की आवाज आती थी • गरज के इसी तरह हाथी •
मल्का के झरोकों के नीचे पोंहचा • वो रात भर की •

खिड़ की ही में बैठी थी॰ सौदा गरसे बोली॰ एक दम भर ठहर जा॰ मैं भी इस की एक दो बातें सुन लूं॰ सौदागर ने॰ हाती रोका॰ मल्का ने कहा ऐ मुसी बत ज़दे॰ बेजबान घरसे दूर॰ अब हम किस लायक़ है॰ मगर तेरी मुसी बतसु ने क़ीउसंग है॰ बंदर ने आवाज़ पै छानी पहिले तो खूब रोया फिरजी को ठहरा के कहा मैनें अपने पांव में अपने हातसे कुल्हाडी मारी है॰ यार ने दगा बाज़ी कीहै॰ जिस का रोना हमें नागवार था॰ वोही हमारे लहू का प्यासा॰ कतलका खा दार है॰ सच है॰ नेकी का बदला बदी है॰ प्यारोंसे मिलने नपाये॰ आर मान लेके इस दुनि यांसे चले॰ दोस्तों का कहा नमाना वो आगे आया॰ अब पछ ताना पड़ा॰ वे मौत मरे॰ आप गये तो गये॰ दूसरों को अंजाम में फ साया॰ जिन के दिल को हातों में रख ते थे॰ वो जीने॰ ही मरे के बरा बर हैं॰ दुनिया दम मारने की जगा नहीं॰ किसीसे भेद कहना अच्छा नहीं॰ बंदर ने कहने तो कह दिया॰ मगर दिलमें डरने लगा॰ के ऐसा न हो उसहरा मजादे को खबर हो जावेतो और बला सिर पर आवे॰ सों च के यह बात बनाई॰ के ऐ मलका कोई कमाल से दु नि यांमें निहाल होता है॰ ये गुना: ज बान के सबबसे नाहक हराम जादे की बदोलत हलाल होता है॰ अब अब कुछ तद बीर बन नहीं आती॰ मौत का क्या डर है॰ हमारी हमीको खबर है॰ कोई घड़ी में मुफ़ जान जानी है॰ जो जानता है वो देखता है॰ जिसे खब र नहीं॰ उसे कहदो॰ तुम्हारे वास्ते घर बार से तबाह हुऐ॰ और तुम्हारे ही सबब से अब थोडी देरमें मौतका

मजा चखते हैं · तुम्हारी ही मुहब्बत की हर पर तो ह
म तहे · सैर देखने · वाले खडे हैं · गुल मच रहा है · भ
ला तुम भी तो कोठे परसे जरा तमाशा देख लो के प्या
रे कैसे मारे जाते हैं · कान नहीं हिलाते हैं · अबतो म
ल्का को खूब यकीन हो गया · के जान आलम यही है ·
जबाब दिया जान तेथे उनसे क्या हो सका · अन जान को त
कलीफ़ देने से क्या फ़ायदा · ये कहके तोते की गर्दन म
रोड़ · पिंजरा वाहर निकाला · बंदर की निगहे पिंजरे ·
पर पडी · समझा के मल्का पहिचान गई · यही फुर
सत का वक्त है · गड बड तो होई रही थी · किसीने देखा न
भाला · बंदर सौदागर की गोद में लेट कर · तोते के बदन
में गया · तोता फडका · मलका का जी खुशी से धडका
पिंजरा · अंदर खेंच लिया · सौदागरने · देखा · तो

बंदर मर गया • चाहा के आप भी मर जाय बदनामी
का किस्सा मिटाये • लोगो ने समझाया • के येतो सुक्र
करने की जगे है • रोने का मोका क्या है • इज्जत रही •
जान बची • बेटा मर जाता है तो मां बाप सबर के सिवा क्या
करते है • अगर बादशाह जबरदस्ती बंदर को छीन के मा
र डालता तो जान खोने की जगे थी • अब सबर कीजि
ये खुदा की मर्जी यही है • लोगों ने जोये देखा तो स
ब मिल के रोने लगे • सब कहते थे के बंदर अकलमंद
था सामने जाने की भी नौबत न आयी • सौदागर की
गोद में जान गवायी • ये खबर उस हरामज़ादे को
भी पहुंची • इस पर भी चैन न आया • लाश मंगवा जला दि
ल ठंडा किया • मिट्टी तक न छोडी • तब तसल्ली हुई • व
हां मलका पिंजरा ले बैठी • लोगों को पास से सर्का दिया •
मियां मिठ्ठूने हूं हूं अव्वल से आखीर तक हाल सुनाया •
मलका ने कहा खातिर जमा रखिये • खुदा चाहे तो जलदी
कोई सूरत हुई जाती है • यहां ये बात हो रही थी • के उस
हरामजादे की आने की खबर हुई ॥ मलका बाहर निक
ल आई • ताजीम की ; हमेशा ये मामूल था • के जब वो
आता मलका बात न करती • जलील होके लौट जाता •
इस दिन बात भी हुई • वो मरदूद समझा के बंदर का मर
ना मल्का ने आंख से देखा • इस्से दब गई • अब जल्दी
न करो आज कल में मामला हुआ जाता है • लेकिन पहि
ले • इसी से फ़ैसला किया चाहिये • मल्का के बाप से डरता
थी • उसके नाम से दम निकल जाया • जब रुखसत हो
ने लगा • मल्का ने कहा • एक बकरी का बच्चा खूबसूर

न सा हमें भेद दो · पालेंगे · रंज टालेंगे · याने चुप रह
ती थी · या आज बच्चा मांगा · ये बचा बहुत खुश हुए ·
उसी वक्त बकरी का बच्चा बहुत खूब सूरत भिजवा दिया
· दूसरे दिन जो आया तो मल्का और भी प्यार से बोली
उसके सामने बच्चे से खेला की दो तीन दिन यही सोच
त रही · एक दिन मल्का ने दबा कर बच्चे को मार अध
मुआ कर दिया · और चोब दार को दौड़ाया · के शा
ह जादे को जल्दी लेआ · कहना अगर देर लगावो
गे तो · जीता नपावो गे · ये सुन के वो उस तर्फ को रवा
ना हुआ · मल्का ने पिंजरा उठा · पलंग के पास रखलि
या · जब वो नाब कार सामने आया · मल्का ने बच्चा गो
दमें उठा · इस जोर से दबाया के वो मर गया · उस्का
मरना · और मल्का का · चिल्लाना · रोना · पीटना ·
कपड़े फाड़ना · बाहर निकल जाना · वो बोला · म
ल्का ऐसे हजार बच्चे मौजूद है · तुम क्यो रोती हो · म
ल्का ने कहा मैं कुछ नहीं जानती · तुम इसे अभी जि
लादो · जो मेरी खुशी चाहते हो · वो बोला · मुर्दा
भी कहीं जीया है · कभी · ऐसा किसीने किया है · म
ल्का ने रोकर कहा · वाह, तुमने मेरी मैना जिला
ई थी · जब मैं बिल बिलाई थी · ये दिलमें समझा ·
शायद शाह जादे ने ऐसा किया होगा · खुदा के कार
खाने हैं · मसल मशहूर है · (जैसा किया वैसा
पाया · रावन के वास्ते राम मौजूद है · वो घबराके
पूछने लगा · हमने मैंना क्यों कर जिलाई थी · मल्का
बोली तुम पलंग पर लेट गये थे · वो जी उठी थी ·

ये पनाभी ठीक मिला • मौनका वक्त नजदीक आया • क
हा बच्चा • गोद से रखदो • मल्का ने फेक दिया • वो पलंग
पर लेटा • अपनी जान बच्चे मे डालदी • वो उठ कर कूद
ने लगा • मल्का ने गोद में लिया • प्यार किया • वो सोचा
की • दो घडी मल्का की तबीयत बहल जाय गी • फि
र अपनी जान • को अपने बदन में ले आऊंगा • मतल
ब तो निकल आवे • ये न समझा के क्या घात है फरेब-
की बात है • खुदा को कुछ और मंजूर है • अब इस बद
न तक जाना बहुत दूर है • जान आलम ये तमाशा पिं
जरे में से देख रहा था • झट अपने खाली बदन -
में जान डाल के खडा हो गया • बकरी का बच्चा देखते
ही थर्रा गया • अंधेरा छा गया • समझा किस्मत अब ॥
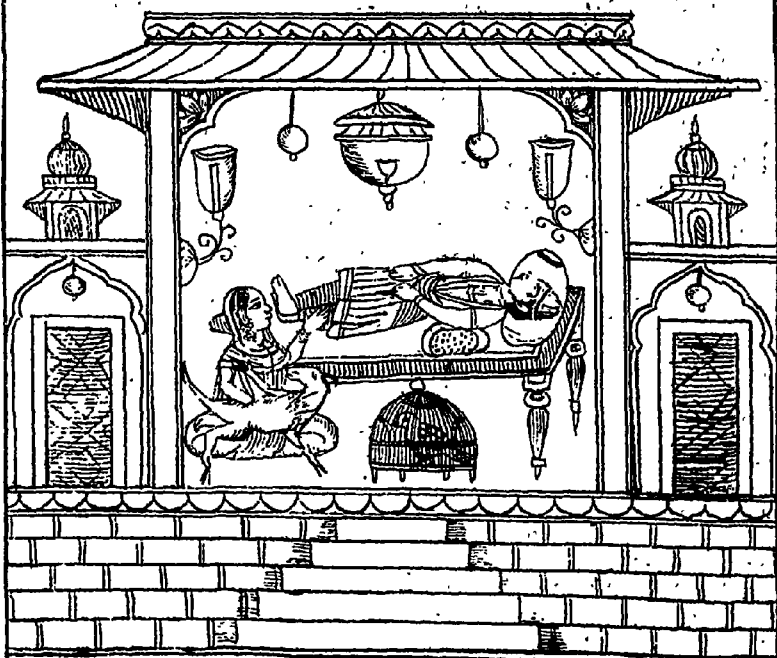
बुरी है कोई दम को गला है, और छुरी है · मल्का ने
जल्दी से तीन · अच्छर पढ के फूंके के वो दूसरे के बदन
में जान डालना भूल गया · फ़िर अंजुमन आरा को वुलाया
कहा · लो · साहब मुवारक हो · खुदा ने तुम्हारी हुर्मत औ
र आब को बचाया · बिछडे से मिलाया · ये आपका अहमः
क शाहज़ादा है · वो बकरी का बच्चा बेई मान वजीर ज़ादा
है · ये कह कर तीनों आशक और माशूक गले मिल मिल
कर रोये · जो जो अपनी अपनी थीं आई · मुवारक बादी दी
ज़ान आलम ने सोदा गर को वुलाके सब हाल कहा · और
खिलत इनाम दिया · फिर चिडी मार को और उस्की जो
रू को वुलाया · और उस्को वो होतसा रुपया और जवाहर
और अशरफी दी · और वहां के चिडी मारों का चोधरी ब ·
नाया · आखिर को सफर की तैयारी हुई · गजनफ़र शाह ने
नमाला · बडी मुश्किलसें राजी किया · दो चार दिन और दा
वतों में लगे · खूब धूम धडक्के के उडे · वो अपने इलाके तक सा
थ आया · लश्कर ने मजेसे पका पकाया खाया · फ़िर रुखसद
हुतो · और कूच मुकाम करते आराम से चले · ॥

॥ चरित्र १२

सच है दुनियां कुछ नहीं · जिसे आज हंसते देखा उसे कल
रोते पाया · जान आलम उसी जंगल में पहुंचा जहां वो हो
ज में कुदा था · मल्का और अंजमन आरा को वो सेर दि
खाई · होज के बराबर खेमा लगाया · दिन भर का थका
हुआ था · शाम की निमाज पड पलंग पर जा लेटा · यों
ही · आंख झपकी थी के · अंजुमन आरा की एक लोडी ब
द हवास दोडी आयी · कहा · हजूर की उमर ज़ादा ·

शाहज़ादी के दुश्मनों की तबियत बिगडी है • कलेजे में दर्द हो रहा है • वो तावीज दे दीजिये • धोकर पिला वे • प्यारी की तकलीफ़ सुनते ही • दिलवे चैन हुवा • कुछ तो नींद और कुछ बेचैनी • देखा न भाला तख्ती औरत के हवाले कर दिया • नकशे के देते ही • नकशा बिगड गया एक आवाज आई • कि ऐ जान आलम बहुत दिनों उडा फिरा किया • मुद्दत बाद आज फ़सा • ले हुशियार होजा ये आवाज थी के लशकर डर गया • वहा दुर थर्रा गये • महल में औरतों को गश आगये • जान आलम ने घबरा कर उठने का इरादा किया • उस जगे से हिला न गया देखा के आधा बदन पत्थर का होगया • जो बेठा था • बेठा था • बेठाई रह गया • जो खडा था • खडा ही रह गया हर तर्फ गुल शोर कुछ दुख कुछ हसी • तमाम फ़ौज आफ़त में फसी • खूब खलबली मची • नामर्दों की बाई पची तमाम लश्कर में क्या इनसान और क्या हयवान सबका नीचे का धड पत्थर का होगया • सब तर्फ मातम था • महल में औरतों की जारी • अंजुमन आरा की बेकरारी मलका की वातों से ज़मीन और आसमान कांपता था सूरज शरम से बादल में मूह ढाकता था • इसी तरह से तडका होगया • एक बहुत बडी काली घटा उठी • और उसमें से एक बडा • अजदहा मूसे आग के अंगारे फेंकता निकला • और उस पर एक औरत सवार शाहजादे के डेरे में उतरी • जान आलम ने जाना के जादूगरनी है • दिल में कहा सेर अपना दूर मौत करीब आई। किस्मत ने खूब सेर दिखाई • वो बोली • जान आलम कहां।

अब क्या इरादा है · जान आलम ने कहा · वोही जो था · उससे कहा अब वो तावीज और नकी कहां है · जिस के भरोसे पर भूले थे · अगर जिंदगी चाहते हो तो · मल्का और अंजुमन आरा को छोड़ी · नहीं तो · तुम्हारी बोटियां चील और कव्वों को डलवाऊंगी · जान आलम ने कहा हम आदत से लाचार हैं · बे वफाई से वाकिफ नहीं जो कहा सो कहा · जो किया सो किया · अगर मौत आई है तो कुछ इलाज नहीं · जीते जी तो बात नजाने देंगे · ये सुन कर जलील हो गई · गुस्से भभक गई · रंगत पलट गई · कुछ बुड़ बुड़ा कर जान आलम पर फूं का · पहिले तो आधा ही था अब गले तक पत्थर होगया वो अजदहा पर चढ़ कर · पुकारी के आज दिन और रात की और मोहलत देती हूं · और कलभी इनकार किया तो · तमाम लश्कर का खून तेरी गर्दन · पर होगा · ये कह कर वो हवा हो गई · जब तक शाह ज़ादा आधा पत्थर · था · शाह ज़ादियां खेमें से पुकार ती थी · वो जवाब देता था · इसकी आवाज उनके जीने का सहारा · था · अब तो गले तक पत्थर का होगया · दोनों चिल्लायीं · कुछ जवाब न आया · फिर तो मल्का ने सिर पीट लिया · कहने लगी · जितनी रोते है · उतना कभी हंसे न थे · चलो जंगल ही में जान देंगे · किसी को मालूम भी न होगा · मौत बद नामी से बचेगी · अंजुमन आरा बिचारी मुसीबत की मारी सबका मूं तक्ती थी · और रोती थी · चिल्लाया नहीं जाता था · घुट घुट के जान खोती थी खवास से सिर खोल के कहती थी ·

खवासे सिर खोल कहती थी· हाय हाय इस जंगलमें
हम लुट गई· वारिस से छूट गई· लोगों हम किधर
जायें क्योंकर इस बलासे निकलेंगे· कोई कहती थीहोना
न के कान बहरे· भगवान न करे· अगर जान आलम
के दुश्मनो का रूगटा भी मैला हुआ तो· शाहज़ादिया
खाक में मिल जायगी· जान गवावेंगी· हम इन के मा
और बाप को क्या मूं दिखायेंगे· इसी जंगल में सिर ट
करा कर मर जायेंगे· ये जादूगरनी कुरबान की थी· क
फन भी न देगी· योंही फेंक देगी· कोई सिर नंगी·
बाल बिखेर मदीने के तरफ़ मूं कर· चिल्लाती थी· को
ई कहती थी· के अगर हमारा लश्कर इस बलासे ब
च जाये तो· मुश्किलकुशा का घडा दुगना दूंगी· कोई बो-
ली· सिमाही के रोजे रखूंगी· कूंडे भरूंगी· सहनक खि
ला ऊंगी· किसी ने कहा· अगर जीती छूटी तो दर्गाह जा
ऊंगी· सबील पिला ऊंगी· ये हाल था के ईश्वर किसी
को न दिखाये· रोने पीटने के सिवा कुछ आवाज न आ
ती· थी· इत्तिफाक से मल्का के बाप का एक चेला· अ·
पने गुरू से मिलने को हवा पे उडा जाता था· रोने की आ
वाज· जो उस्के कान में पहुंची तो· नीचे उतरा· देखा के
आदमी जानवर सब पत्थर बने हुए हैं· पूछा ये· कौन
हैं· और इन पर क्या आफ़त है· मलका के नौक·
रोने सब हाल बयान किया· उसने जब ये सुना के गुरु
की बेटी पर ये मुसी बत पडी तो पाव तले की मीट्टी निक
ल गई· डेरे के पास आया· रोया· पीटा· चिल्लाया·
मल्का ने आवाज पहिचानी· कहा भाई· इस वक्त पर्दा कहां

ओर शरम किसकी अंदर आवे · वो आया तो · आंख:
से देखा · मलका कोभी पत्थर पाया · फिर मल्का ने ·
कहा · जादू गरनी ने हमारा काफला · तबाह कर दि-
या · उसने कहा के मैं उस जादू गरनी मुकाबला न हीक
सक्ता · वक्त थोडा है · कल बिल कुल फैसला हो·
जायगा · बगैर आपके बाप के आये कोई पनाह पा
वेगा · यह कह कर उडा · हवा को सैकडों कोस पीछे
छोड़ा · वो दौड तीथी · के हवाके घोडें की रपट उस्के एक
एक कदम पर सदके हो जाय · ठोकरों से आधीका·:
पतला हाल कर दिया · थोडीसी देरमें मल्का के बापके पा
स जा पौंचा · कपडे फाड डाले · ओर दुहाई देने लगा·
बुढे ने कहा खैर तो है · कुछ हाल तो कह · उसने कहा
शाम तक पहुंचना जरूर है · नहीं तो आर मान हीरहे
गा · बेवाली वारसों को कोई कफन भी न देगा · उस बुढे
ने आह भरी · ओर ठंडी सांस लेकर कहा · अफसोस शा
हजादे को इतना समझाया · पर उस्की समझ में न आया ·

कबित्त

एक आफ़त से तो मर मर के हुवाथा जीना
पड गई ओर ये कैसी मेरे अल्लाहे नई · :

वो बुढा उसी वक्त उड़ा ओर शाम की निमाज लश्कर में ·
आकर पढी · जान आलम के डेरे में आया · ओर बहु
त घबराया · फिर अञ्जुमन आरा के पास जाकर तस
ल्ली दी ओर वहांसे उठ मल्का के पास आया · ओर कहा
के तेरे नसीब ने हमारी · वज़े में फरक डाला · बरसों बाद
बाग से निकाला · मल्काने रोकर कहा · हजूर ये धम

काने का वक्त नहीं है · कुछ तज बीज कीजिये · फिर जो चाह
ना सो· कहना · वो डेरे के बाहर आया · और कुछ पढ
ने लगा · फिर आसमान की तर्फ देख के रोया · और कहा
के बुड्ढे की आरस तेरे हाथ है · कबर में पांव लटकाये बै
ठा हूं · तेरे सिवा कोई नहीं · तेरे सबब से सब मुशकिल
आसान · और सब आसान मुशकिल · ऐसा न हो के इसे
बुढापे में बट्टा लगे · मेरी डाढी की तर्फ खियाल करना · कलं
क का टीका न लगाना · इतने में लडका हुआ वो सब मं
त्र पढ चुका था · के वो औरत अजदहे पर सवार होकर
आई · पहले मल्का के बाप के पास गई · और कहा के·
ओ बुड्ढे सत्तरे बहत्तरे · तेरी मोत इस जंगल में तुझे खें
च लाई है · तुझे क्या मारूं · तू तो वे मारे मरा हुआ है·
नाहक की बदनामी क्यों लूं · चल जिधर से आया है · उ
धर ही को चलाजा · नहीं तो दम भर में मिट्टी में मिला दू
गी · बुड्ढे ने कहा ओ हराम जादी छिनाल तू अपनी·
चुल मिटाने के वास्ते हजारों को नाहक मारती है · मैं
क्या अपने प्यारों को मरते देखूं · मेरा क्या है · आज ना मरा
कल मरा · मसल मशहूर है · (आज मरा कल दूसरा
दिन) मगर जीते जी लोगों को क्या मूं दिखलाऊं गा ·
बराबर वालों से आंख छिपानी पडेगी · तू सत खसमी मुझ
से क्या लडेगी · ये सुनते ही अदृगरनी को आग लग ग
ई · आसतीन चढा छू छू करने लगी · बुड्ढा भी
बराबर से तोड किये जाता था · खूब छूट हुई · पिछला
पहरा · दिन बाकी रह गया · जब कुछ न हो सका तो वो·
शेर बनगई · उधर बुड्ढा भी दो लोट मार कर शेर बन गया·

उसने वह तेरी गीदड़ भब की · बनाई · मगर ये कब हुट
तेथे वो चिघाडे के जंगल गुंज गया · वो चील बनके
आसमान को उडी · बुढ्ढा भी बाज हो कर उसके पीछे
झपटा · और दिल में कहा · के ये हराम ज़ादी चढ़ी की
आडमें शिकार खेले जाय गी · कुछ भी हो · अवके
तो इसे जा दवावो · ये सोच कर उसे जा दबोचा · एसा
नोचा · के जान सन सनाई · वहुतेरी तडफी फडकी म
गर यहां तो मोत पंजे काड के पीछे पडीथी · दम भरमें
काम तमाम कर दिया · उस के मरते ही जंगल में मंगल ·
हुआ · लीजियो · दौडियो · मारियो · का · गुल मचा · आ
समान चकरा गया · जमीन थर्रा गयी · जंगल में अंधेरा
हो गया · जादू का कार खाना बिगड गया · शाम के वक्त
सूरज निकला · आधी बैठ गयी · जान आलम घबरा
उठो कर और कदम दवाये · बड़े मियाके पास आया ·
सबने देखा के किलेमें एक · औरत पडीथी · और ·
अस्सी नव्वे वरस की उमर झुकी कमर · आंखें फटी
बाल बिखरे रगे अलग अलग · हड्डियां · पसलियां ·
सडी गली · दांत के नाम से मूंमे तिनका भी नहीं · भा
डसा मूं · हात पुराने वडके डाले · ताड के पेड कीसी टां
गेंथी · सीना तंग · छाती यां पेट पर लटक ती · और पे
ट मास के लोथडो मे लिपटा हुवा · मगर मुट्ठी पत्थर का ·
दिल · खाल अलग · हड्डी अलग · काली बला रातको क्या
दिन को देखेतो डर जाय · सिर सफेद कलंक का टीका · ल
गाये लडके डरेके हमको काट नखाय · सिंदूर का टिका ·
दूसे दिखता मांगमें रोली भरी · वालों में नारियल का तेल ·

फटे दीदों में नदी दो की तरह · काजल रेल पेल · गहने के बदले सांप · विच्छू लिपटे · खो परी और हाड्डी योंके हारग लेमें पड़े · जादू का सिंगार किये मन हूस शकल बनाये चि त पडीथी · गोयाराय पिथोरा महल की कडीथी · जान आलम बडे मियां को साथ लेके डेरेमें आया · शाह जादी योंकी जान में जान आई · सहे लियों ने भी अच्छी सूरत वनाई · सव बुढ्ढे के पांव पर गिर पडी · उसने कहा अभी क्या है · येतो कुछ भी नथा · मुसी बत तो आगे पडे गी · जादू गरो का वाद शा ह जरूर आवे गा · वखेडा मचा वेगा · सुन के मल्का : कांपने लगी · बुढ्ढे ने कहा क्यों घव रानी हो · खुदाको या द करो · यह कह कर दो उड़द के दाने उसने दाहे वायें फे के · दो जान वर नयी शकल के पेदा हुए · हिरन का मू मोर का धड जवा हर के सींग हीरेकी आंखे पन्ने के पर · दो ठीकरी यों पर कुछ लिख के उनके सामने रक्खा · वो मूंमें लेकर उड गये · रात डर में कटी · तड़के ही आधी चली वि जली चम की · वादल गरजा · लपकर वाले डरे · बडे मि यां के पास · आकर खडे हुए · सांप का काटा रस्सी से डरता है · इतने में जादू गरोंके गोल आये · काले भुजंगे नंगे · ध डंगे · सवारों की कतार · पेद लोंकी मार मार · बडे मियां ने इनका परा जमाया · दूसरी तर्फ से जादू गनी · यां · ना गनो पर सवार आग उडाती · नारियल उछालती · छोटी २ फा डियां हाथों में जादू के जोर से कूदती · उछालती · लडने प र मरती · एक दूसरे को तकती · आमो जूद हुई · और उसी परेके सामने ठैरीं · जान आलम का जी उसको दे खके कुलवुलाया · फौज के सर दारों को बुलाया · कहा॰ ॰

आज बेढब मामला है · ये तमाशा देखने के लायक है · अगर जिंदगी है · तो फिर ऐसा काहे को देखें गे · औ र जो मरे · तोभी बहार है · हज़ारोंके मरने कोभी शादी कहते हैं हमारी फ़ौजभी चमक दमक के तैयार हो ये सुनते ही सफ़र मैना ने कुदाल फावडे · उठाये · जमीन बरा बरकी झाड झंकाड काट डाले · पलटनो के मोरचे लगे · तोपो द म दमें बधे · झाकी लगाई · सुरंग बनाई बारूद बिछा ई · सक्के ने छिड काव करना शुरू किया गोलंदाजों ने बाल चौमें पानी भरा · सवारो के परे · हाथि योकी हल के · उटोंकी कतार · चर कटो की लल कार · मारे मारो रकी पुकार · दाहा · बचाये · बांहा समाले · सब लैस दरेस होकर खडे थे · घोडे की कनोती से कनौती मिली · धौंसे पर चोट पड़ी · बहा दुरो की आखें खून कासा कटोरा · बात बात पर त लवार · अजब हुल पुकार · नामर्दों को होल हुआ · भाग ने का फिकर पडा · पेटमें खल बली मची · दस्त निकल गये · पेशाब से समंदर बन गये · जान आलम भी टेढी लगाये तलवार चमकाये · बरछा उठाये घोडा उडाये फौजके बरा बर आकर खडा हुआ · एक दफ़े ही चोब दार चिल्ला ये आज हीका दिन है · जवानो जिंदगी चार दिन है · को ई दुनिया में हमें शा नहीं रहा · नाम रह जाय गा · जोक रना है · आज करलो · कलके वास्ते कुछ दिलमें न रख ना · सूरमा ओंके दिल बढे · मूछों को तावदे तल वार को देखने लगे · मूछंका · सिर को हतेली पर रख लिया आपसमें छेड छाड करने लगे · देखें आज तल वार किस की काटती है · किस का लहू चाटती है · पहिले किस

की बर्छी चलती है · कौन छाती तानता है · कौन लोहा मानता है · देखें कौन सा ललकारता है · कौन डाटकर मारता है · और कौन ददा को पुकारता है · आज शाहजादे का निमक अदा करो · दुश्मनों का लहू चाटो · बुरा मनाने वालों का कलेजा काटो · अगर देव सामने आवे तो जान न पावे · देखें किसके हाथ खेत रहता है और कौन कौन खेत रहता है · दिल चलावो · ढालें अशरफियों से भरलो · आज ही तो आन बान है · यही तो तलवार और यही मैदान है · ये तो बहादरों का हाल था · अब ढिलकसरों की सुनो · मूपर हवाईयां उड़ती थी · भागने को घोडोंकी बागें मुडती थी · मूं नोचते थे · भागने की सोचते थे · पेट पकडे फिरते थे · दस्त पर दस्त चले आते थे डरके मारे बिन मारे मुए जाते थे · कोई कहता था · मियांजी है तो जहान है · नोकरी न मिलेगी तो भीख मांग खायगे · जान कहां पावें गे · हुर्मत गई तो गई · जान तो रहे गी · यही ना कोई ना मर्द कहे गा · आबरू गयी · जीतो रहेगा यहां बिगडी और कहीं बना लेगे · गोलियां बचा कर गालियां खालेंगे · लडने को सिपायोंने कमरें वांधी है कोसने को हम मोजूद है · कोसों भागने को आंधी है · जोखें लगाने में हमारे मा बाप भंग पीला तेथे · किसीकी फस्त खुली देख कर हमको गश आते थे · दोस्त हो या दुश्मन, हम तो सब की खैर मांगने वाले है · सब से पहिले भागने वाले है · गाली गलोज को लडाई समझे · लडाई भिडाई से कभी भिडके न निकले · उमर भरमें बदन में सुई भी · गडने नदी · गालिया खाके

जिंदगी देर की · बे गैरती का भला हो जिसने आज तक जान सलामत रक्खी · इस पर भी किसमत ने ये दिन दिखाये · खुदाने हमें हीजडा क्यों न बनाया · फौज में ये खलबली मच रही थी · उधर अंजुमन आरा एक टकने पर डेरे में चिलवन डाले सैर देखने लगी · इतने में शहपाल नौलाख · जादूगर साथ लेके · तख्त पर सवार हुआ · चालीस हजार अजदहे · तख्त को उठाये बडी धूम धाम से आया · और फौज के सामने अपना परा जमाया · काले झंडे निकाले · झांझ बजने लगी · उसका वजीर बडे मियांके पास आया · और हात बांधके कहाके कहनी नहीं सकती मगर शहपाल ने ऐसा कहा हैं के तुम्हारा जीना मरना बराबर है · बुड्ढे हो चुके हो · क्यों इनजवानों

इन जवानो का खून अपने सिर पर लेते हो· बडे मियांने जवाब दिया के उस हराम ज़ादे से कहदो के जितने यहां मरे गे· उन सब का खून उस छिनाल पर होगा· हम तो समझे· थे के तेरे घरमें वोही बुरी थी· मगर मालूम हुआ के एसों के वैसे ही होते हैं· तुझे सफेद डाढी की शरम न आई· के वो स रीसरा कलंक का टीका मीचा· तूतो उस्से भी जयादावे शरम निकला· अब कुछ बात चीत का काम नही· तलवार फ़ैसला कर देगी· देखें आज कौन जीतता है· और कौन कौन क फन काठी को तरसता है· वज़ीर उलटा फ़िरा और जोबुड्ढे ने कहाथा· वो शाह पाल से कह दिया· ये सुनते ही वो जल गया· पहिले तो कुछ पढ कर आग का अंगारा उस पर· मारा· फिर फ़ौज वालों को लल कारा· दो पहर तक एसी जमी के किसी ने देखा न सुनी किसीने जलाया· किसीने बुझाया· कोई पत्थर· बरसाता था· कोई काटे खाता था· जब जादू हो चुका तो तल वार चली· जान आलम ने बाग उठाई· फ़ौज सब तर्फ़ से सिमट के घिर आई· तल वार की बिजली चमकी· वहा रीकी लल कार ने बादल की गरजका काम किया· वो लोहा बरसाया के होश न आया· येतो ता ज़ा दम थे· वो दो पहर से लडते लडते थक गये· सैकरों पांवमें कुचले गये· घोडों की झपट में रुंद गये· इस वक्त जान आलम की तल वार देखनी थी· जिस पर पडी अलग अलग कर दिया· सिरको चीरक लेजे से उतर कलेजा चा ट पट कार जीनको चीर घोडेके कमर से निकल गई· यातो सिरथा या धड ही रह गया· जिस पर वार किया तो ए क के दो और दो को चार किया· ज़मीन हिल गई· आस

आसमान कांप उठा · मुरदे घबरा कर कबरोंके बाहर निकल आये जो अटका, उस मार लिया · भागतों का पीछा न किया · एक घडी भरमें लहू की नदी वह निकली लाशोंके ढेर लग गये · घोडे लहूमें तैरते थे कोसों तक मुरदोंकी सडक बन गई · आखर को शह पाल मारा गया पलक मारने में उस्का सिर उतारा गया · फिर तो जान आलम की फ़ौज टूट पडी · तू और में और गेरे पच कल्यान चपड कनाती जे बकतरे · उठाई गीरे रदवे खदवे मू पसारे · लूट पर टूट पडे · पर एक तिनका भी न जाने दिया · शह पाल की फ़ौज का क्या हाल · जिधर जिसके सींग समाया चला · गया · इतने में रे के आज तक लघ्घड गिद्ध कव्वे उनको षाते हैं · इतना खाया के हज़ारो जानवर हजा करके मर गये · तमाम खजाना और मुल्क जान आलम के हात आया · हृढ भालके वो तक्ती और तावीज भी पाया · बडे मिया अब रुख सेद हुए · और समझाया के बेटा एसा काम कभी न करना · देखभाल कर चलना · खुदा के दिन फिर ना दिखावे · तुमतो क्या । दुसमनो को भी ये वक्त न आवे · ॥

चरित्र १३॥

जादूगरके मारने के बाद जान आलम दो महीने उसी जंगल में रहा · बडे मियां अब अपने बाग को गये · थोडे दिन बाद जान आलम नेभी कूंच किया · चलते चलते एक दिन समुद्र के किनारे डेरे हुए · जान आलम अपनी प्यारीयों को लेकर लहरों की सेर देखने लगा · समुद्र गगन खल रहा था · इतने में एक जहाज दिखा · जान आलम ने जाना कोई वडा सोदागर है · जो ऐसे खूबसूरत जहाज में आता है · ५॥

जब जहाज किनारे लगा तो लोग उसमें से उत्तर के जा
न आलम के पास आये · और हात बांध कर कहा के हम
मल्ला हैं जो अमीर आता है उसे हम जहाज़ पर बैठा
कर · समुद्र की सैर दिखवाते हैं · जो किस्मत में होता है · वो:
इनाम पाते हैं · जान आलम के दिलमें आई के सैर करो · मल
का से कहा के चलती हो · उसने जवाब दिया के अभी तो ·
गम के भवर में फस हुये हैं · आप को और लहर आई · न
या ढकोसला सूढा · जान आलम ने कहा · सैरसे जी खुश हो
ता है · दिल बहल जाता है · घबराहट जाती है · चलो चार घ
डी जी बहलावे · नहीं तो बिचारे मल्ला नाउम्मेद हो जावेंगे ·
मल्का ने · कहा जो आप कहते हो वो सच है · घबराह
ट कैसी आरव कान कैसा · तुम्हारे दुसमनों को तो एक
बीमारी है · जिस्से आदमी पालँग सा हो जाता है · मालिक
रवो लिया है · मैने अंजुमन आरा से कई दफ़ा कहा · इस
मर्ज की दवा नहीं · पानी से दूना होता है · सिवा इसके मेरे वि
माग में कुछ खलल नहीं · जान आलम ने कहा खैर हम तो
सिडी हैं · अकेले ही जावेगे · तुम न चलो · बैठी रहो
आराम करो · मोहब्बत में ये कब हो सक्ता है · के प्यारे से अ
लग रहा जाय · उल्फत का यही हाल मालूम हो जाता है · सो
ना कसोटी पर चढता है · खरा खोटा निकलता है · लाचार
मल्का उठी · अंजुमन आरा साथ होली · जहाज़ पर चढे और
करने लगे · मल्काने अंजुमन आरा से कहा खुदा खैर करे ·
दुश्मन भी ऐसी सैर न करे · दिल घबराता है · लहर को देख
कर खौफ़ आता है · मेरा माथा ठिनकता है · जान डरती
है · चार घडी न होने पाई थी · के एक दफ़ै ही · आंधी चली ·

बद बान टूट गये · मल्लाओंके छक्के छुट गये · जहाज के टुकडे टुकडे · होगये क्या जाने कौन डूबा · और कौन बचा · किसको किसी को खबर नहीं · जान आलम एक तख्ते पर डूबता उछलता चार दिन बाद किनारे पर लगा · उठता बैठता चला एक बस्तीमें पौंहचा · वहां के लोग इसको देखकर दंग होगये हर एक पूछता था · (कौन हो क्या हो हूर हो या परीहो · तुम जान आलम ने ठंडा सांस भर कर कहा क्या बताऊं · मैं कौन हूं होश ठिकाने नहीं · बिछडोंसे मिलने को दिल बेकल है · पानी दाना मूंमे नहीं गया · साथी छुट गये ठिकाना पूछते हो क्या भला हम बेठिकानो का ·)

हिचकी लगती है · मगर पता नहीं लगता · किस ने दोस्त
छुड़ाये · दिया · क्या करूं कहां जाऊं · हाय मुसीबत · वाये कि
स्मत · ये सुन कर सब लोग रोने लगे · जाना कोई शाहज़ादा
है · सबीने खातिर की · अपने मकान पर ले गये · हात मूंधुला
या · लाखा लाये · खाना लाये जान आलम रोने लगा · और बोला ·
खुदा जाने मेरे बिछुड़ों का क्या हाल है · किसी को दाना पानी ·
मिला या न मिला · मैं भी न खाऊंगा · भूखा प्यासा मर जाऊंगा ·
लोगों ने कहा ये क्या नादानी है · खाने से तो जिंदगानी है ·
जो जीने जी हो तो किसी रोज बिछुड़ों से मिल जाओगे · और
जो न खाओगे तो भूखे मर जाओगे · कफ़न भी न पावोगे ·
लाचार सबके समझाने से दो एक निवाले गले से उतारे ·
पानी जो पिया हात पांव सनसनाये · गश आये · जब ज़रा
दिल ठेरा तो सब हाल कहा · लोग सुन कर रोने लगे · एक
ने कहा यहां से दो मंजिल एक पहाड़ है · वहां येक जोगी
रहता है · हज़ारों आदमी उस्के पास जाते हैं · जो मां
गते हैं · सो पाते हैं · आज तक कोई खाली न फ़िरा ·
जाते ही मनोकामना सिद्ध है · जान आलम ये सुन कर
के खुश हुआ · चलने का इरादा किया · लोगों ने कहा
ये क्या · करते हो · अभी तुममे दम नहीं · दो चार दिन यहां
ठहरो · नहीं तो रस्ते में ढेर हो जावोगे · जान आलम उनके
कहने से ठहरी गया · मगर दिल में चैन नहीं · पर होते तो उड़
के जाता · खुदा २ करके नौ दिन काटे · रात भर रोना · दिन भर
तड़फना · चार दिन में उस पहाड़ पर पहुंचे · वो बड़ा ऊंचा
था · फिरे बह रहे थे · नहरें जारी थीं · फूल फल लगे हुए ·
जानवर बोल रहे थे सैर देखता चला · एक जगे बड़े घने दा

पेडेथे · और एक पक्की क़बर बनी हुई · और मढी · देखी · वहां त्रिशूल गडा हुआ · खार वेकी झंडी लगी जब पास आयातो सौ सवासौ बरस का जोगी देखा डाडी पेट के नीचे लटकती · जटाये पावो पर पडी · आखें पलकों से ढकी और पलक भूंवों से मिली · बदन मे झुर्रियां पडी · और भभूत चढी · खार वेका लगोट बधा · हुक्का लगाये · अफीमी की शकल बनाये · शेर की खाल बिछाये · सोना न जागना · आसन मार · दुनिया से किनारे · पेट पीठ से लगा · टीका माथे पर चढा · कही चौकी पडी · कही · मुसल्ला बिछा · धूनी लगी · अजब सामान · नहिंन्दु न मुसलमान · एक तरफ़ बेला चमेली खिली · क्यारियां बनी · कही पीरों के ढेर · गुरु की छतरी मोलसरी के पेड · दरखतों की टहनियों में पिंजरे लटकते · तोतों का कही · (सत गुरु दत) पढना · कही · मैंना (नबीजी भेडियो) कहना · शेर की चौकी लगी · , लक्कड सुलग रहे · एक तर्फ भवानी का मढ · । तुलसी का पेड · कही दुर्गा · कही ढेर · एक तरफ़ भंडारा जारी · कढाई चढी · मोहन भोग बन रहा · कही पुलाव · कलिये की तैयारी · कही महंत वाल के · कही मुरशिद मुरीद · कोई जोग अभ्यास करता कोई · चिल्ले में बैठा · एक तरफ खंजरी बज रही · भजन होरहे · दूसरी तरफ़ दायरा खडक ताथा · ढोल बज रहा · जान आलम की पावकी आहट जो हुई तो · जोगी की आंख खुली · हातसे पलक उठा आंख मिलाई · लाल लाल चढी हुई · आखें से जान आलंको देखा · इसने झुकके

सलामकिया·उसने कहा·भला हो·बच्चा बडी मुसीबत उठाके यहां आया·गुरू भला करेगा·मुरशद की दुआसे ते रा कामभी हो जाय· तेरी अमानत मौजूद है·सवारी खडी है· हम जाने को तैयार हैं·जान आलम हक्का ब क्का होकर बैठ गया· जोगी उठके हौजमें नहा या·गेरुवा कपडे फेंक·सफेद ओढ अतर मल जा न आलम के पास आया· और कहाके एक दिन हम बडी मौजमें बैठे थे· गुरूने तेरे हाल से हम को खबर दी· एक शाह ज़ादा यहां आवेगा·उसका ज हाज़ तबाह हो जावे गा·यहांसे मतलब पावेगा·ये सु नतेही जानमें जान आगई·कहा जोगी जी तुम्हारे नामे से मेरी जान बची· नहीं तो कभीका मर गया होता॥

खूबसूरती भी अजब चीज है • अमीर गरीब सब
इस पर मिटी है • फकीर जान आलम को देख कर खुश हु
आ • समझाने लगा के अब रोना अच्छा नहीं ये दुनिया
है • कभी सवेरा कभी शाम, कभी प्यारे के गले में हाथ है •
कभी फिलगा है न खाट है • कभी फूल निकलते हैं • कभी
पत्ते तक झड जाते हैं • जो मजे करेगा वोही मुसीबत भी उठा
वेगा • जीसे तकलीफ है • वो आराम भी पावेगा • तुमने उन
दोनो भाईयोकी कहानी नही सुनी • जो जुडवां पैदा हुऐथे • प
हिले क्या मुसीबत उठाई • फिर गद्दी पाई • जो शाहजादी
हाथ आई • जान आलम ने कही क्यों कर • जोगी कहने ल
गा • ॥

कहानी ॥

एक शहर में दो भाई जुडवां पैदा हुऐथे • बडे लाड प्यारसे
पले आपस में बहुत हेल था • एक को दूसरे बगैर चैन
नहीं पडता था सीकार को नहीजाते थे • एक दिन जंग
लसें जाते जाते हिरन सामने आया • छोटे भाईने तीर
लगाया • निशाना चूक गया • हिरन कनौतियां बदल के
भागा • इन्होंने घोडे पीछे छोडे • शाम को बडे भाईनेतीर
जो मारा तो हिरन उग मगा के गिर पड़ा • इन्होने घोडे प
र से उतर उसे भून भान कर खाना सुरू किया • घोडेभी
घोडेभी थक गये थे • इनमें भी दम न था पानी पीकर बैठे
दम लिया • रात हो गईथी • चांदनी • छिटकी जंगल ब
हार दिखाने लगा • उन्होंने कहा • आजतो रात यहीं •
काटिये • ईश्वर के चमत्कार देखिये फिर दिल में कहा •
कि चांदनी की बहार तो किसी प्यारी के साथ है • अकेले तो
चांदनी काटनेको दौडती है • खैर • एक पेड के नीचे ॥

पड रहे· चांदनी तो साथ नथी· जी नही बिछा लिया·
घोडे वाग डोर से झटका दिये· बडे भाई ने छोटेभा
ई से कहा, हम तुम से तीन बाते पूछते हैं· और तुम्हा
री अकल देखते हैं· एकतो यहां से अपना शहर कितनी
दूर है· दूसरे किस तर्फ को है· और तीसरे आज कवाब
में जियादा मजा क्यों आया· उस ने कहा इसमें क्या मुशकि
ल है· हमारा घर यहां से सौ कोस है· क्यों के मेरा घोड़ा·
इसी चाल से सो कोस चलता है· और उत्तर की तर्फ है·
इन सितारों से मालूम होता है· खाने में मजा आया क्यों
के बहुत देर बाद मिला· मगर मैं एक नई बात कहता हूं·
और वो ये है· के कल बडे मजे होंगे· भाई ने पूछा के इ
सका क्या सबब है· वो बोला· आज हमने बडी मुसीबत उठा
थी· मगर दिल खुश है· ये कहके वो चुपका होरहा· ये
बात तो योंही रही· फिर दोनो ने कहाकि जंगल सुनसा
न है· आदमी का पता नहीं घोर लगता है· सांप आवे· वि
च्छू काट खाय· नींद और मौत बराबर है· पहर भर रात आ
चुकी तीन पहर बाकी है· डेड पहर में जागूं· और डेड पह
र तुम जागो पहरा दो· ये बाते दोनो को पसंद आई· पहिले
बडा भाई सोया· और छोटा समल बैठा· पेड पर दो जान·
वर बाते करने लगे· एक बोला के जो मेरा गोस्त खावे वो;
दो पहर बाद एक लाल उगले· और फिर हर महीने·
उस्के मूंसे लाल निकले· दूसरा बोला जो मेरा गोस्त खा
वे सो उसी रोज़ बाद शाह बन जावे· ये सुन के बहुत खु
श हुवा· तीर खैंच के मारा· दोनों छिद कर गिर पडे· उसी
वक्त भूने· जिस्के गोस्त में बाद शाहत का मजा समझा था·

वोतो आप खाया दूसरा बडे भाई के वास्ते रखा इत
नाखुश हुआ के कि रात भर आप पहरा दिया बडे भाई को
नलाया जब लडका हुआ तो वो उठा उसे वो वा गोश्त खाने
को दिया मगर कुछ हाल न बताया दो पहर के बाद लाल
छोटे भाई के मूंसे निकला दिलमें अफसोस कियाके चूक ग
या फिर सोच साच कर वो लाल वडे भाई को दिया रातका हा
ल कहा और हाथ बांध कर अर्ज की के ये लाल न जर है
थोडी देर में आप बाद शाह हुआ चाहते हैं वडा भाई वहु
त खुश हुआ दिलमे कहाके मेरा भाई बडा लायक वाला
है फिर कहाके सामने वस्ती मालूम होती है इस लाल
को यहां बेचें क्यों के अगर अपने शहर में बेचेंगे तो पक
डे जावेंगे तुम घोडे के पास रहो मैं अभी बेच कर आता हूं
ये कहके चला शहर दरवाजे पर बडी भीड दिखी उस
मुल्क का ये दस्तूर था के जब वहां का बाद शाह मरता
सब छोटे बडे वजीर के साथ तख्त ले कर दर वाजे के पा
स आते जो मुसा फिर पहिले आता उसे बाद शाह बनाते
इन दिनों में वहां का बाद शाह मर गया लोग तख्त लि
ये खडे थे ये पहुंचा उन्होंने तख्त पर बिठाया बादशाह बना
या उस दिन तो धूम धडक के में भायी का ख्याल न आया दूस
रे दिन तो जासूस भेजे कहीं पता न मिला चुप हो रहा राज
करने लगा वो लाल जो बेचने आया तो भाई की निशा
नी थी वो राज दर बार वालों को दिखाता सब उस्की
तारीफ़ करते इधर छोटे भाई थे बिचारा बडे भाई
का रस्ता देखते थक गया अचानक एक जानवर आया
और इसे पंजे में दवा कर ले गया घोडे जंगल में

भाग गये• वाहवा एक तो राज करे• दूसरा मुसी बतमें
पड़े• वोजान वर उड़ता उड़ता एक पेड़ पर बैठा• उसके नी
चे कुंवा था• पंजा जो खुला तो छुट कर कुएे में गिर पडा• इत
ने में वहां एक काफला आया• लोग वाग पानी भरने को आ
ये• ये चुपके से एक डोल में बैठ गया• लोगों ने खेंच लि•
या• जो देखता था वो ताज्जुब करता था• उस्से हाल पूछा
उसने सब बयान किया• वो उसे काफले में ले गये• और•
अपने सरदार को दिया• वहां ये रहने लगा• काफ़ला• चल
ते चलते मंजिल पर पहुंचा• महीना भी पूरा हुआ• इस
ने दूसरा लाल उगला काफाले का सरदार बहुत•
खुश हुआ• फिर सोंचा और उसे कैद करके कोतवाली
में भेज दिया के मेरा गुलाम है• इसने लाल चुराया जो
सजा चाहो इसे दो• कोतवाल ने काजी से पूछा के इसको क्या
सजा चाहीये• उसने कहा के इस्के हात काट डालो• मगर
उस शाहर का ये• दस्तूर था के जो तकसीर करता वो बाद
शाह की बेटी के सामने जाया करता था• क्यों कि बादशाह
तो बुड्ढा था• तमाम काम वोही करती थी• उस्के रूपका क्या•
पूछना• हजारों आदमी एडीयां रगड कर गये• मर• मगर
उसने किसी को पसंद न किया• अब तक कुंवारी थी• इस
जवान को शाहज़ादी के पास ले गये• उसने कोतवालको
बुला सब हाल पूछा जो कुछ गुजरा था• उसने सब हाल बया
न कर दिया• फिर वो इस्के तरफ़ फिरी• इसने कहा के सब स
चे है• आप मुझको सजा दीजिये• शाहज़ादी ने कहा आज
तक किसी चोरने• चौरी का इकरार नहीं किया• इसमें कुछ फी
है• कल सब कचेरी में हाजर हो• और ये हमारी डेहुडी•

पर कैद रहे • किस्मत जो खुली तो शाह ज़ादी का दिल इ
स की तर्फ़ आया • रात को बुलाके सब उससे हाल पूछा • इ
सने सिर से पांव तक सब कह दिया • शाहजादी सुन कर बहु
त खुश हुई • दूसरे दिन बाद शाह के सामने हात बांध कर
कहा के कोत वाल और काजी सब झूठे और जुल्म करते हैं •
नाहक इस बिचारे के हात काटते हैं • बाद शाह बुढ्ढे थे •
और बुढापे में अकल जाती रहती है • सोंचने लगे • शाह
जादी ने • कहा हात कंगन को आरसी क्या है • हजूर महीने
भर और कैद रक्खे • अगर इसने दूसरा लाल उगला तो
ये सच्चा है • नहीं तो बेशक इसका सिर काटा जावे • बादशा
ह को ने बेटी की बहुत तारीफ़ की • और जवान को अपने सा
मने कैद किया • और काफले के सर दार को शाह जादी ने कै
द में भेजा • दिन २ शाह जादी को उस की मुहब्बत बढती •
दिल बुरा होता है • जिस पे रे परे वोही जाने • इतने में महीना
होगया • जवान ने • सब के साम ने लाल उगला • लोगों को
बडा ताज्जुब हुआ • काफले के सर दार को गधे चढा पर के
शहर के बाहर निकाल दिया • सब लोग उस जवान को देख क
र खुश होते और आखिर को शाह जादी के खातिर से स
बने मिल कर बाद शाह से कहा • हजूर इसे अपनी नोकरी
में रक्खे • ये आपकी जूति था उठाये गा • बाद शाह भी राजी हु
ए थी • मान गया • थोडे दिनमें वो मूलगा के बाद शाह की मूछ
का बाल हुआ • हर महीने लाल उगल ता • और बाद शाह
के पास लाता • आखर को सबने सला कर २ बाद शाह से • क
हा के हजूर इसका ब्याह अपनी बेटी से करदो • दोनों का दि
ल आया हुआ है • अब रोकना मुना सिब नहीं ॥

बादशाह ने वडी धुम धाम से व्याह कर दिया· औरमजे उडने लगे· मगर जवान हर रोज बिला नागा बादशाहकी नौकरी में हाज़र रहता था· एक दिन उसके भाई का एलची वहां आया· इधर उधर की वाते होने लगी· जवाहर का जिक्र उठा· एक एलचीने कहाके हमारे बादशाह के पास एक ऐसा लाल है· के किसीने देखा न सुना· बादशाह के पासभी उगले हुये· लाल थे· आठ दस दिखाये· एलची देख कर घबराया· और कहा के ये लाल तो हमारे बादशाह के लालसे बिलकुल मिलते हैं· बादशाह ने कहाके ये मेरा लडका हर महीने लाल उगलता है· एलचीने जो देखा तो अपने बादशाह की और उसकी शकल एक सी मिलती हुई पायी· खैर वहां से रुखसत होकर अपने बादशाह के पास आया· वहां तो ये दस्तूर था· जब बादशाह तख्त पर बैठता था· तब वो लाल सामने धरा जाता था· एलचीको वही बात याद आई· और उसने हात बांध कर कहाके हुजूर क्या एक लाल को लिये फिरते हैं। जिस-बादशाह के मैं पास गया था· उसके पास लालका पुतला मौजूद है· ये बादशाह के बात समझ में न आई· फिर एलचीने कहाके उस बादशाह का दामाद हर महीने एक लाल उगलता है· औरविसकी और हजूरकी शकल बहुत मिलती है· अगर दोनों साथ बैठ जाय तो सगे भाई मालूम हो· ये सुनतेही यकीन हुआ के अब पता मिला· बेशक वो मेरा भाई है· उसी वक्त एक खत बादशाह के नाम लिखा· के आपके दामादसे मुझे मुलाकात करनी है· उसको जल्दी यहां से भेज दीजे· बडी मेहर·

वानी होगी · चुपके से एक खत भाई के नाम लिखा · औ
र सब पता बता दिया · एल ची ये दोनों खत लेकर आ
या · भाई ने भाई का खत देखा तो खून ने जोस किया ·
उसी वक़्त बाद शाह से रुख सत हुआ · और · चीके · ए
ल ची से साथ हो लिया · कहि दम भर न ठैरा · एल चीसे भाई
का हाल पूछा तब चला · मगर दुनिया कब चैन देती है · जब
शहर दस बारह कोस रहा तब जहाज तबाह होगया · वि
जिसकी आई थी वो रह गया · जिस की बाकी थी वह नि
कला · ये बात सब मे मशहूर हुई · भाई ने भी सुना · उसी
वक्त हज़ारों आदमी भेजे के जिस डूबते उछलते का पता
पाओ उसे जल्दी लावो · बहुत सा ढूंढा ढाढा · तो शाहजा
दी हालत आई · उसे बाद शाह के पास हाजिर किया · और भाई
के डूबने का हाल कह दिया · एक तरफ़ शाहजादी कोने मे बैठ ग
ई · दूसरे तरफ़ बाद शाह रोने लगा · वो जवान तक्त के सहा
रे बहता २ भूखा प्यासा गिरता पडता किनारे पोहचा · ज
ब ज़हाज़रा दम आया तो पूछता २ उस शाहर में घुसा · बा
द शाह को खबर हुई · सामने बुल वाया मगर मुशीबत ने
वो मूं बिगाड दिया था · के पहिचाना न गया · ॥

शेर ॥

(इतनी मुद्दत में मिला मुझसे वो धोखा देकर
याद भी जब मुझे उस यार की सूरत न रही ॥

वाहनी वाह अभी तो वो मजे करते थे · और अभी ये मु
सी बत पडी · शाहज़ादी को बुलाया · वो हिचर मिचर करने
लगी · वो बोला के पहर भर बाकी है · लाल उगलूंगा · तब प
हिचान · लोगी · बाद शाह ने जाना के ये बेशक सच्चा है

अगर झूठा होता तो पहर भर का नाम न लेता · शाहजा
दी बोली के तू बड़ा अकलमंद है · एक बात पूछता हूं अगर
उस का जवाब इसी वक्त देगा तो मेरा शक जाता रहेगा · भला
वो चीज क्या है · जिसे सब हिन्दु मुसलमान और किश्चन खुले
बंदो खाते हैं · मगर जो उस्का सिर काट डालो तो जहर हो जावे ·
कोई न खावे · और जो खावे चट मर जावे · जवान ने हंस कर
कहा शाहजादी · कसम है · क्या अच्छी बात पूछी है · सुनते ही
वो फड़क गई दौड़ के गले से लिपट गई · बादशाह ने क
हा हम तो कुछ न समझे · शाहजादी क्या समझ सामने हुई ·
जवान ने हात बांध के कहा हजूर वो चीज कसम है · उसे त
माम आलम खाता है · और सिर उसका (क) है उसे का
टा तो (सम) रहता है · और सम जहर को कहते हैं · उ
से कौन खाता है जो खो ता है वो मर जाता है ये सुन के
बादशाह ने भाई को गले लगाया · शादी याने बजने ल
गे · जवान ने लाल उगला और बखेड़ा नंदा मिटा · जिस
तरह ये बिछड़े हुए मिले इसी तरह ईश्वर हम को भी बिछ
ड़े हुए मिले · जोगी ने ये कहानी कह कर जान आलम से
कहा बाबा दलो · घबराने का काम नहीं · हम को सब
मालूम है मगर कह नहीं सकते · बोलने का हुक्म नहीं
मैं थोड़ी देर मे मरने वाला हूं मुझको गाड़ दीजो · ये कह कर
दो चार बाते बनाई · जान आलम ने कहा साईं ये किस्से देखा
जायगा · पत्थर का कलेजा कहां से आये गा · ये क्यों कर हो स
के गा · मैं तुम को अपने सामने गाड़ूं · फिर जान आलम
खूब रोया · जोगी ने कहा · बच्चा अब कुछ देर नहीं · प्यादा
आन पहुंचा है · नही तो हम भी तेरे साथ होते ।

है· नहीं तो हम भी तेरे साथ होते · भला फकीर का एक लट का सीख ले · साईं चाहे तो कहीं अटका न रहे गा · कबर में अपने साथ लेजा कर क्या करूंगा · तुझको बतादूं जो काम तो आवे · फिर एक तरकीब बताई · के जिस सूरत का ध्यान करो वोही हो जावे ये बात बना हर हर कर गुरु को नाम लिया · फिर कलमा जो पढा तो चल बसा · दम निकल गया · रमता राम था · आया आया · न आया न आया · जान आलम · रोया · चेले चाटे सब जमा हुये बहुतेरा चिल्ला ये · मगर जोगी न बोला · फिर जान आलम ने · उसके कहने के बमूजिब नहला धुला · कफन पहना कबर में रक्खा · फिर जो देखा तो · लाश भी नहीं है · कफन को फाड डाला · आधा चेलों ने जला दिया · और आधा मुरीदो ने गाढा · और सबने मिल एक को गुरु की गद्दी पर बिठाया · गद्दी पर बैठने की देर थी · कि वो चिल्लाया · कि जोगी दिखते नहीं मगर यही मोजुद है · पेड और पत्ते बोलते है · आख चाहिये सब कुछ देख लो · कोई मसजिद में सिर रगडता है · कोई मंदिर में हात जोडता है · ढूंढने वाला चाहिये, घर बैठे ही मिलता है ·

कबित्त

जिन ढूंढा तिन पाईयां गहरे पानी बैठ ॥
मैं बैरिन डूबन डरी रही किनारे बैठ ॥ १ ॥

दुनियां का मामला · समझ का झगडा · ये अच्छा वो बुरा · जहां देखो · वहां दाता मौजूद है · एक निराकार ज्योति स्वरूप को जानो · उसीसे सबको निकला · और उसीमें मिल जाय गा · दिल्को खुश रक्खो · जीने मरने के बखेडे में मत पडो हां को नहीं · और नहीं को हां है · दिल ईश्वर का घर ·

है· इसमें कुडा ककॆट न चाहीये· जितना साफ रक्खोगे· उतनाहिं मजा पाओगे·जान आलम ने ये·सुनके चलने का इरादा किया·उस महंत ने जो रोका तो दोचार दिन ठैर गया· फिर जिस तर्फजोगी ने बताया था·उसीतरफ़ चलनिकला·जब पहाड से आगे बडा तो एक दर्या मिला· बहुतेरा ढूढा· कहीनाव बेडे का थल बेडा न लगा·मगर एक लाल चमकता हुआ पानी में दिखा· उसके पास एक और दिखाई दिया· इसी तरह थोडी२ दूर पर इसने लाल बहते हुऐ देखे ·अबतो घबराया के ये क्या बात है· किनारे २ सेर देखता चला जब दो कोस निकल आया·तो एक बडा मकान दिखा· मगर अंदरजानेका रस्ता नही· लटका याद था·बुल बुल होकर दीवार पर जा बेठा ·देखातो बडा मकान है·बाग बहुत अच्छा लगाहे·मगर सुनसान न आदमी है न हवान·उसमें एक बंगला था·औरउस्में अंदर से एक नहर बहती थी·४ आदमी बनके नीचे उतरा·बंगले में गया·देखा तो जमुरद के पायौं का पलंग बिछा हुआ है ·और उस पर कोई दुशाला ताने सोता है· और बराबर या कूत कीतिपाई पर फूलोंका दस्ता रक्खा है· आधे सफेद· आधेलाल· जान आलमने दुशाला सर काया· तो· एक आदमी सूरत का घड नजर आया· अफसोस किया·के किस हरामजादे बेईमान ने ऐसा मोहिनी सूरत का सिर काटा·हक्का वक्का देखने लगा· छतपर आख पडी·तो छीकाल टका देखा·उसपर सिर भी रक्खा हुआ था· और सिरके नीचे नहर बहती थी और जितनी बूंदे लहूकी टपकती थी उतने ही लाल ४

वन ने ये· जाना के ये वेशक जादू का कारखाना है· पास जाके जो देखा तो अंजुमन आरा का चेहरा था· पहिचानते ही सिर पीट लिया· कपड़े फ़ाड डाले और अपने मार डालने का इरादा किया· के किसूको मालूम भी नहो फिर सोचा के जल्दी अच्छी नहीं· होज में कासा धोका न- होपहिले हाल तेहकीक करना चाहिये· वहु तेरा सोचा कुछ समझ में न आया इतने शाम हुई· आंधी चली· गुल मचा जान आलम ने जाना के यहां कोई देव या जादूगर आने वाला है· अब छुपना चाहिये· ये सोचा कर वो भौरा बन गया· और वहीं बैठ गया· इतने में एक देव भयानक सूरत बनाकर आया· वो सूंघता हुआ आया· और सफेद फूल तोड कर उसपरीको सुंघाया· सिर उछल कर बदन से जा लगा· अंजुमन आरा उठ बैठी· देव ने मेवा सामने रक्खा· मगर उसका दिल ठिकाने न था· चारो तर्फ देखता था· शाहजादी ने कहा खैर तो है· वो बोला खैर कैसा· और बैर किसका· आज तो यहां मानस गंध आती है· वो कहने लगी हमें तो आज तक जानवरकी पर्छाई भी न दिखी तूने आदमीकी बो पाई ये सब दिवानपन है· रात भर इधर उधर की बातें होती रही· सुबह को लाल फूल उसको सुंघाया सिर छीके पर जाता गया· घड़ पलंग पर रहा· देव दुशाला उडा चल दिया जान आलम ने चार घडी तक बडी मुसकिल से सबर किया फिर अपनी पहिली सूरत बनायी सफेद फूल तोड कर सुंघाया· अंजुमन आरा उठ बैठी शाहजादा चीख मार कर लिपट गया· दोनो बिछडे हुए ऐसे बिलप २ के रोये· के सारा बाग हिल गया· जान आलम अपना हाल बयान करने लगा· आधमी नहीं कहा था के अंजुमन

आराबोली में (किस्से कहूं जो कुछ के मुझ पर गुजरी ·) फिर दो
नों चिल्ला २ के रोने लगे · दुनियां के मामले में अकल कु
छ काम नहीं करती · हमेशा किसी की एक सी नहीं रहती ज
हां तदबीर का मन करे वहां तकदीर के हवाले करदे · हमने ·
हजारों दफ़ा देखा है · के लोग अपने मतलब के वास्ते गुल
करते हैं · मगर कुछ नहीं होता है · जब वो थक जाते हैं · और छो
ड़ देते हैं · तो काम अपना आप हो जाता है · ये दोनों तो रो ही र
हे थे · के एक बड़ा देव उड़ा जाता था · रोने की आवाज जो का
न में आई तो दिल पिघल गया · सोचा के किसी पर मुसीबत
पड़ी है · जो इस तरह बिलख २ कर रोता है · मगर यहां परन्
दा पर नहीं मारता · आदमी कहां से आया · बाग में पहुंचा ·
वो दोनो रोते रोते बेहोश हो गये थे · ढूंढता ढूंढता बंगले में
आया · देखा तो दोनो लिपटे हुए पड़े हैं · मगर चेहरे पर ·
रंग नहीं · दोनों चांद और सूरज को गहन लगा हुआ था
थोड़ा पानी उन पर छिड़का उन्होंने आंख खोली तो देव दि
खा · देव ने उठ कर सलाम किया · और कहा के मैं तुम्हारा
गुलाम हूं · मुझसे बिलकुल न डरना जान आलम ने · उठ
गले लगा लिया · वे हाल पूछने लगा · जान आलम तो
बड़ा बतूनिया था · गम कहानी कह सुनायी · ये सुन कर ·
रो दिया · और बोला · के तुम खातिर जमा रक्खो · अबके
जो हमारा मजारा आवे · तो · कैसी घिस घड़ी बताता हूं
जान आलम तो पांच था · वो लगा वट की और एसा शीशे
मे उतारा के उससे भाई चारा कर लिया · फिर सब मिलके बा
ग की सैर करने गये · इतने में वो देव भी आया तो देखा ·
शाहजादी · आदमी के साथ फिर रही है · और सफेद देव ·

हातमें हात दिये · साथ है · जल कर जान आलम पर क
पटा सफेद देवने वही उसका हात पकडा · फिर तो खूब धमा
चौकडी मची · जमीन के टुकडे उड गये · आखिर को सफेद
देव जमीं से लंगर उखाड़ सिरसे ऊंचा कर जमीन पर पटक ·
हात झटक छाती पर चढ बैठा जान आलम भी पास आया
बहुत सी तारीफ़ की · फिर कहा, अगर तुम खफा न होतो
मेंभी एक जोर करूं उसने कहा बिस मिल्ला : शाह
जादे ने एक हात कंधे पर करे धर · दूसरे से गर्दन पकड़
धडसे खेंच, जमीन पर धड से फेंक दिया · सफेद देवये देख
तेही · सपेद होगया · और वो बेहू मान जमीन पर अंटाचि-
त पड़ा रहा इतने में सपेद देवके नोकर भी आन पहुंचे ·

वड़ी धूम धाम की दावत हुई॰ सात दिन तो ऐसे ही जल
सों में कटे॰ आठवे दिन अंजुमन आरा बोली के मल्का के
बगैर खाना पीना हराम है॰ तुम्हारे अहसान हम पर
भीत है॰ इस सबब से कभी२ ईसी आज्ञा तीथी॰ नहींतो
शराब किसकी और कबाब कैसा॰ यहांतो दिल कबाद हो
रहाहै॰ देवने कहाके आप क्यों घबराते हो॰ मैं अपने
आदमी भेजता हूं पता लगाता हूं॰ जान आलम ने कहा
अपने ढूढने में जादा मज़ा है॰ अपना काम आपही खु
ब होता है॰ लाचार होकर उसने रुखसद किया॰ मगर आप
समें भुला कातके कौल करार हुऐ॰ अंजुमन आरा को रात
दिन मल्का का ख्याल था॰ के खुदा जाने॰ डूब गई॰ या॰ हमा
री तरह तबाह हुई॰ चार कोस दिन भरमे चलने॰ दो तीन
दिनमें छाले पड गये॰ अंजुमन आरा कभी दो कदम पैदल न
चली थी॰ ये बुंदेल खंडके से काले कोस उसने कहां देखे थे
फ़ल्ला गई॰ जान आलम से कहाके सब आपकी बदो॰
लत है॰ सबको छोड दिया॰ रुसवा हुई॰ मुसीबत उठायी॰ देखिये
अभी क्या होताहै॰ शाहजादा हंस कर चुपहो रहा॰ फिर तो
जोगी का लड़का बताया॰ और दोनो तोते बन कर नित न
दाना खाना॰ नया पानी पीते चले॰ कभी पेड पर बसे
रते॰ कभी खंडरोमें जा बैठते जो किसी को हसते दे
देते॰ ॥२३॥ चरित्र २४

अब उस मुसीबत का मारी मल्का का हाल सुनो
॰तीया में अच्छ[illegible] मी वन उ उते है॰ और बुरे
॰ ग धाती पाठी खान की क[illegible] पहने॰ और घो
कभी नहीं॰ तब उसका दूटा तो वो बिचारी॰

आरी डूबती तीर ती चली· उधर से कोई बादशाह जहाज प
र सैर देखता चला आता था· दूर से तख्ता बहता हुआ देखा ज
ब पास आया तो उस पर आदमी सा नजर आया· खुदा के
डर से उसके पीछे डोंगा· दौडाया मल्का में जान कहा· थी·
अंजु मन आरा और जान आलम के ध्यान में जी डूब गया
था· बे होस पडी थी· मगर कही मिट्टी डाले से चांद भी छुपा
है· हाती मरे पर भी भारी होता है· चेहरा चमक रहा था·
बादशाह ने गुलाब केवडा छिडका· इतर सुंघाया· बाजू
बांधा· और भोत से टोने टुटके किये· दो तीन· घडी में आ
खें खोली· देखा तो जहाज पर हूं और एक बिगाना आ
दमी सिराने बैठा है· शरम से सिर झुका लिया· तमाम ब
दन पसीना पसीना होगया· बादशाह ने पूछा के आपका
नाम क्या है· ये बडी मुसीबत में पडी एक तर्फ़ से शरम
दबोच ती थी· दूसरी तर्फ़ लाचारी मसोस ती थी· वे
जबाब दिये क्यौं कर बनती है· होले से कहा के मैं तबा
ह जली ल और खुवार हूं दिल को टुकडे हो गये· बुराई
पंजे झाड कर पीछे पडी है· राह भूली है· और क्या जाने क्या
[illegible]ती हूं बादशाह के टप से आंसू टपक पडे· जाना के
शाहजादी है· खाना मंगवाया मगर मल्का ने खाया·
तो बादशाह ने गिड गिडा के कहा के आप खाना खा
र घर का पता बताईये· जब आपस में दम आवे
वहां पोंचा दूंगा· मल्का ने कहा के जिसके पल्ले
तो· जंगल में भटक २ कर इसी में पानी गायब
र तुम हमारी काम तमाम करो और वही·
बखेडा मिटे· झगडा चूके तुम्हारा बडा

अहसान होगा॰ उसने कहाके फिर ऐसी बात मूसे न नि
कालना॰ नही तो मेरा खून तुम्हारी ही गर्दन पर होगा॰
लाचार॰ मल्का ने मूं कूठा किया॰ दो चार दिनमे हिलने
फूलने लगी॰ वे सहारे उठ बैठ नीची॰ जहाज चलते चल
ते उस बादशाह के शहर में पहुंचा॰ मल्का को एक बडा
महल मिला लोंडियां॰ बादियां, आया, ददा, सब आनमौ
जूद हुई॰ शाहजादी योंकी तरह रहने लगी॰ एक दिन
बादशाह ने कहा के तुम छुपाती हो मगर हमें मालूम हुआ॰
के तुम शाहजादी हो॰ हमारी तुम्हारी मुलाकात इस बहाने से
बधीथी॰ नदी नाव संजोग॰ अब तुम मुझको अपने नोकरों में॰
धर लो॰ जो कहोगी सो करूंगा हांजी का नोकर रहूंगा॰
मल्का ने जबाब दिया के मैं ने तमाम उमर मे बादशाहत का
नाम भी न सुना॰ आप को खुदाने बादशाह बनाया है॰ सो उ
सी धुन में रहा करते हो॰ बिल्ली को सुपने में भी छीछडे ही दिख
ते हैं॰ मैं तो एक मुसीबत की मारी आफसी हूं॰ खुदा जाने कोन
हूं और किस तरह यहां तक आई हूं॰ मेरी तर्फ क्या देखते हो॰ क्या
कुनबे में कोई और नहीं है॰ अगर मेरा खून लिया चाहते हो तो इ
खतियार है॰ यहां नहीं बोल सक्ती तो क्या हुआ॰ खुदा के॰
सामने पल्लाह पकड लूंगी॰ इस वक्त तो तुम्हारे बस में हूं
जो चाहे सो करो॰ और जो मेरी खुशी मंजूर है॰ तो बरस दिन
तक मुझ से न बोलो॰ शायद मेरे वारसों का पता मिले॰ कोई
डबा तीरा चला आवे॰ मुआ जीता फिरे नहीं तो फिर जो तेरे दि
लमें आवे सो करना बादशाहो के यहां जुल्म नहीं होना है
और यूं तो मुझे इख्तयार है॰ दीवे के नीचे अंधेरा॰ मशहूर
है॰ बादशाह ने सोचा के डूबा हुवा भी कही तीरा है॰

इतने और सबर करो · पलख मारने में बरस हो जाय गा · फिर अपने आप मान जायगी · ये सोच कर मल्का से कहा के भोत खूब जी नाच नचावोगी सो नाचूंगा · मगर जो खफा न होगी तो · एक बात में कहूं और वो यह है के मै कभी २ आप को देख जाया करूंगा · मल्का ने इसे गनीमत जाना · बादशाह और कैदी का फरक सब को मालूम है · अब ये ठैरि के पांचवे छटे दिन पहिले जो खोजा आकर खबर कर आता · फिर बादशाह आता · और दो चार घडी बैठ इधर उधर की बात कर चला जाता · अब ईश्वर की देखिये · मल्का के महल के सामने बाग था · फूल खिले · हौज भरे · नहरे जारी · फव्वारे छूट रहे · चबूतरे बने · क्यारियां अजब बहार दिखाती थी · मालने आठ पहर इधर से उधर और उधर से इधर · फिरती थी · कही उखाड़ा और कही जमाया · कोई · बोती और कोई जोतती · किसीने फूल उठाया · और किसीने फल तोडा · कोई खुरपे से · घास छीलती · कोई टूटा झडा पत्ता · गिरा पडा · कांटा क्यारी से निकाल ती थी · दरखतों पर जानवर बोलते थे · सब अपने हाल में मस्त कोई किस को न पूछता · मल्का सवेरे और शाम यहां आया करती और वे इख तियार रोती · बेलों को देख कर जान आलम के बाल याद आते · तो सिर को धुनती और आसमान के तरफ देख कर कहती · ॥

कवित्त

वो दिन खुदा करे के खुदा भी जहांन हो ॥ १॥
अपना किस्सा गैर की यहां दास्तान हो ॥ :: ।
कभी फूलों से बातें करती · और कभी फूल को खिलने हुए

देख कर फ़ट के रोती और दिल से कहती (जल तुफ़िया, इस्ज़रे से के बिल कुल धुवा नहो ।) वो वेई भान क्यों इतना तपडपता हे अब मेरे पास क्या रहा क्या दूं और करूं ॥

कबित्त॥

॥ अब क्या रहा है जिसपे के दुश्मन का गम करे
हमतो बुरों की जान को पहिले ही रो चुके ॥ ॥

इसी तरह मल्का दिन काटती अगर सोचो तो दुनियां कुछ नहीं एकसा हाल नहीं रहता मसल मशहूर है ईश्वर की माया, कही धूप कहीं छाया कभी बुल बुल बोलती है कभी कव्वे कावें कावें करते है पहिले वो कभी यार मिलता नहीं और जो मिले तो किसी न किसी सबब से अलग हो जाता है इस सहारे पर लोग जान देते हैं और जी बेच कर रोग मोल लेवे है एक दिन मल्का बाग मे बैठी थी और अंजुमन आरा और जान आलम का ख्याल आया एक हीव फे वे राग छाया एक पेड़ के नीचे जा खूब दिल खोल कर रोयी शाम का वक्त था जान वर बसे रा लेते थे पेड पर एक तोता भी बैठा था उसने जो इसे रोते देखा तो बोला के शाहज़ादी खैर तो है इतना क्यों रोती हो मल्का और भी रोई और कहा कि वारे किस्मत अबतो जान वर भी मुझ पर अफ़सोस करने लगे बंधी बात है के जब कोई किसी की मुसीबत का हाल पूछता है तो दिल उमंग आता है मल्का ने वे इख्तियार रोकर कहा ऐ जान वर तुझे क्या बताऊं वे कस हूं कोई कहने सुन्ने वाला नहीं ना आगे नाथ न पीछे पगाहे कोई वाली वारस नहीं अगर जमीं फट जाय तो उसमे समा जाऊं गैरों में आफ़सी छाती पर मूंग दले

जाते हैं· तोते ने कहा यहां मुहब्बत की बू आती है· तुम्हा
री·बातों से छाती फटी जाती है· खुदा वास्ते अपना हालतो
कहो·मल्का ने सब कह दिया·सुन्ते ही· तोता जमीन पर
गिर पडा·मल्का घबराई·कि ये क्या हुआ· समझाने
आया था· अजब ही ढेर हुआ·लेने के देने पडे घडी भ
र में· तोते को होश आया· तो वो बोला के ए मल्का
मैं वोही कम बख्त तोता हूं· जिसने अंजुमन आरा का
जिक्र सुना·कर जान आलम को तबाह किया· और बा
की हाल तो तुम्हें मालूम है· मल्का ने उसे गोद में उठा
या· और यहां तक रोयी के बेहोस हो गई·माल ने
दौडी आई· के आज क्या है; जो मल्का को गस पर गश
चले आते हैं· जब होस मे आई तो·तोते ने कहा के ज
मा खातिर रक्खो·जान आलम और अंजुमन आरा·
जीते हैं और एक ही जगे है·फकत तुम्हारा ही ख्या
ल है·मैंने ये बात नजूमियों से पूछी थी· अब बुरे दि
न गये· और अच्छे आते हैं रात की रात तोता वहीं·
रहा·सुबह को रुखसत हुआ· मल्का ने एक पर्चा लि
खकर दिया· और कहा के शाहजादा जहां मिले ये ख·
त निशानी देकर जो कुछ देखा है·जबानी कह देना·तो
ता वहां से उडा और खूब जंगल और शहरों की खाक छा
नी·एक दिन शाम को वक्त वो थक कर एक पेड पर बैठ
कर रोने लगा·उसी वक्त जान आलम और अंजुमन आ
रा तोते की शकल बनाये उसी पेड पर आये तोता उन
का मूं तकने लगा· और फिर खूब रोया· अंजुमन आरा
ने कहा·जान आलम देखना ये तोता रोता है· शायद हमा

री शकल देख कर इसे रोना भर आया · तोता बातें समझता था · बोला के खुदा तुम्हें वो रंज न दे जो हमपे है · दुश्मन से दुश्मन का भी ये हाल नहीं · एक सख्स गैरों में जाके फंसा उसकी बातों से छाती फटती है · अगर जरासा हाल कहूं तो पत्थर पानी होकर वह जाय · जान आलम ने कहा वो कौन है · तोते ने सब कहानी कही · अंजुमन आरा मल्का का नाम सुन कर खिली · दोनों ने सूरत बदली · तोता पहिचान कर पांव पर गिर पड़ा · शाहजादे ने गलेसे लगा लिया और कहाकी उस दिन के बिछुड़े आज मिले · कुछ मल्का का हाल तो कहो · तोते ने वो खत दिखाया · अंजुमन आराने आखों में लगाया · सरनामा ही देखने से मालूम होता था · के घबराहट में लिखा है · क्यों के अंजुमन आरा की जगे जान आलम और जान आलम की जगे अंजुमन आरा लिखाथा · लिखते २ जो रोई थी तो खत भरा हुआ था · और एक एक बात दो २ तीन २ दफे लिखी हुई थी · खैर खत खोला उसमें लिखा था के ऐ मेरे प्यारे खुदा तुम्हें सलामत रक्खे · दिलका हाल क्या लिखूं उमर थोरी है · और कहानी बड़ी · अगर मेरी जिंदगी चाहते होतो अपनी सूरत दिखाओ · नहींतो पछताओगे तुम ने देरकी और हमने जान दी · फिर कुछ हात न आयेगा · मिट्टी के ढेर के पर खाक उड़ाओगे · कभी इतना न हंसे थे · जितना अब रोते हैं थोड़ा सा दम और बाकी है · क्या करूं कहांजाऊं किस्से कहूं · किसको सुनाऊं आठ पहर तेरी शकल आंखके सामने है · अगर ये हाल मालूम होतातो तुझसे बातें करने की आदत न डालती · ॥

कवित्त ॥

जोमें ऐसा जानती कि पीत किये दुख होय
नगर ढढोरा फेरती के पीत न कीजो कोय ॥

मेरे तडप नेसे पडोसी घबराते हें॰ महल में बैठी हूं मगर जह
ल खाना मालूम होता है॰ जिन आखोंमें तुम आंसू की बूंद
न देख सक्ते थे॰ उनसे लहू के दर्या बह गये॰ ॥

कबित्त॥

तुमने हमारी पर खबर ली॰ ॥
छाती पत्थर की कौंजी करली ॥

जब तुम्हारी बाते याद आती हें॰ नींद उड जाती है॰ बचैनीकी
रात पहाड मालूम होती है॰ काटे नही कटती॰ चारपाई काट
ने को दोडती है॰ सुपने मेंभी नींद नही आती॰ खाना
पीना हराम होगया॰ जो सिर आपके घुटनो पर रहता॰
वो पाटियों पर पटकती हूं॰ सितारे मेरे जागने के गवाहे॰ जोइ
स्काभी यकीन नहीतो मसजिद के मुल्ला ओसें पूछो॰ जिनकीनींद
मेरे सबब से हराम होगई॰ मुर्गी को में चिल्ला के जगाती हूं॰ ज
ब हमतुम साथ थे॰ तोये हमे जगाते थे॰ अब हुम मन मानता
बदला लेते हें॰ दिलमें है के थोडा सा जहर लेकर खालूं क्यों
के तुम वहां और में यहां॰ ऐसे जीने का क्या मजा है॰ अगर जी
ते जी मिलेतो सब दुखडे॰ कह सुनाये तो लाचार है॰ यही अ
रमान लेजायेगें आठ पहर यही मांगती रहती हूं के तुम्हा
री शकल देखूं के दिलको चैन आये॰ मोत का डर जाय॰ और
स्या लिखूं॰ जिसदम जान आलम और अंजुमन आराने ये ख
त पढा॰ दिल टुकडे २ होगया॰ आंसू टपक पडे॰ तमाम
रस्ते पानी पानी होगया॰ रातभर तो वही रहे॰ सवेरे तो

चरित्र १५

दस्तूर है के खुशी के बाद गम और गम के बाद खुशी · होती है · एक के पीछे दूसरा लगा हुआ है · इन बिचारों नेबडी मुसीबतें उठायी · बारह बरस बाद कुडी केभी दिन फिरते हैं · इनकाभी दरिद्र गया · मल्का का ये दस्तूर था · के रोज शाम को उसी पेड के नीचे आकर रोया करती · इस दिन भी मामूल के मुवाफिक आईथी · और अपने आप से कह रही थी · के होटो पर दम आगया · मगर अब तक पता नहीं · अब क्या मिल ना होना है · ये कह रही थी · के तोतेने आकर सलाम किया · वो खुश होकर बोली · किरो मेरे प्यारे · क्या खबर लाया तोते ने कहा खबर देने वालोंको खिलत और इनाम मिलते हैं · पहले ये बताईये आप मुझे क्या दीजियेगा · मल्का ने कहा जल्दी बता क्या हाल है · नहीं तो अभी दम उलटता है · तोते ने कहाके जो आप कहो वो सच · मगर ऐसी खबर जल्द नही कहते हैं · तोता कभी कुछ और कुछ कभी कहता कभी मल्का खुश होती और कभी बेचैन होकर खूब रोती · विधर अंजुमन आराजा न आलम घबरा रहे थे · झट सूरत बदली और सब गले मिल मिल के रोने लगे · इन कि आवाज से लोडियां बादियां जमा हुई · देखती थी · सदके हो · तीथी · सच है · खूब सूरती भी अजब चीज है · बेगानाभी एकदफे अपना होजाय है · यहा बुड्ढे और लड़के बराबर हैं · बुढ्ढियाभी सूस की हड्डी लिये फिरती है · हंसते हंसते बारादरीमें आये · तोतोने अपने दुखडे रोये तो तोको येबात बुरी लगी · कहाये झगडा छोडो गडे हुए मुर्दे न उखा

हो · हंसी [illegible]

मल्काने तोते से कहाके जो दोस्त नादान है वो दुश्म
न से कुछ कम भी नही. हम तो शाहज़ादे के हाथ से
तंग आगये. दो तीन दफा तो अपनी बेवकूफी की सज़ा
पा चुका है आप मुसीबत में पडा और हमको मुफ़ में तबाह
किया. आगे आगे देखिये क्या होता है. इस के बाद कमरे में
बैठ दो दो प्याले शराब के उडे. तबले पर थाप पडी. नाच
होने लगा. वहां के बादशाह को भी खबर हुई. उसने क
हा वाहवा: एक तो थी दो और आये. फिर दो हज़ार सवा
र पहरे पर भेज दिये. बाग को घेरलें कोई बाहर न जावे
पावे. जान आलम को खबर हुई. कहा कुछ डर नहीं. सवे
रे समझ लेंगे. अब तो तबले पर थाप पडने दो. रात भर स
वार घेरे खडे रहे. यहां मजा आता रहा. गुल शोर उडते
रहे. जब तडका हुआ तो. जान आलम न्हाया. और तख्ती
निकाल कुछ पढता हुआ बाहर निकला जो घेरने आये थे
आप घिर गये. पांव पर गिर पडे गुलाम हो गये. बादशाह
को खबर हुई और फौज भेजी. इनपर भी जान आलम ने.
दो अच्छर फूंक दिये. फिर तो ये हाल था के जो आया उसने
कढाई चाटी. (चल बुद्दू मोरी का राह) फिर तो मशहू
र हुआ के ये कोई बडा जादूगर है. तमाम फौज उस के
साथ होगई. बादशाह को गुस्सा जो आया तो अकेला
ही लडने वो निकला. तलवार चली. दो एक जख्मी हु
ए. फौजने बादशाह को जीता ही पकडा. जान आलम के
हवाले कर दिया. उसने छाती से लगाया बराबर बैठाया
और कहा के हम तो आपके यहां महमान आये हैं तुमने
दावत के बदले अदावत की. उस का मजा. चखा.

सैर देखी · मगर तुम्हारा मुल्क हमें न चाहिये · ये तुम ही को मुबारिक रहे · हम तो मुसाफिर हैं · आज यहां कल वहां · बादशाह शरम के मारे मर गया · और कहा के आपही सलतनत के लायक हैं · मेरा कहा सुना माफ़ करो · फिर बडी धूमधाम से दावत हुई · हजारों आदमी जान आलम को देखने आये · बाग में आठों पहर मेला लगा रहना · सब मिले मगर जान आलम के लश्कर का पता नहीं · चारों तर्फ मासूस भेजे · चालीस मंजिल पर पता लगा · मगर किसीसें जान न थी · जान आलम का नाम लेले रोते थे · बडी मुसीबत से सब जान आलम के पास पहुंचे · अपना हाल कहा · इनाम पाया · फिर वहांसे कूच हुआ · खूब तबले खडग ने शरावे उडती · ॥

१६ चरित्र ॥

एक दिन एक जंगल में पहुंचे · पूसका महीना था · जाडे के मारे जानवर घोंसलों में जम गये थे · भूखें प्यासे मरते थे · किसीका होट नहीं मिसल सकता · ये हाल था के जहां मूंसे बात निकली के होटों पर जम गई · जोरू खसम साथ सोये तो लिपटे ही रहे · पहाड मारे वर्फों के जमे हुए थे ये जंगल कशमीर को मात करता था · विलायत के पहाडोंको नाम धरता था · लुजोंने बटेरे पकड ली · कव्वे लूलोंके हात आये · लंगडे हिरन बांध लाये · ओस पत्तों पर पडी और जमी गई · आग पर लोग सदके होते थे · हीन्दु और मुसलमान पारसीयोंका दम भरते थे · आफ्ताकतो क्या मा शरूक ठंडे सांस लेते थे · दांत से दांत बजता था · हो हनीलम को शमाते थे · वो पाला पडा के तमाम लश्कर ·

को जाढा चढ़ आया · तिरछे ऐंठे जाते थे · तल-वार · खड खडाने की जगे दांत कड कड़ाते थे · चक मक बे कार सांप के पत्थर आग न देते थे · के चुवेकी मिट्टी आ लाव समज लोग फूंकते फूंकते हाय तेथे · पर वीजने को चिराग समज हातमें उठा लिया · सबने जोरू वोको याद किया · जाडेकी मिसल मस हूर है · (जीवेंगेवो जो सोवेंगे दो ·) जान आलम ने कहा अब तो यहीं डेरे होने दो · फिर अंजुमन आराको बुला · बोतल की डाट खोली · खूब ऊडाई · फिर नशे की तरंग में सूझी के मल्का · ओर · अंजुमन आरा मुझ से भीन अ लग रहीं है · औरत का क्या एत बार · वे धाक इनोनें · कही धब वा खाया है · ये जो समाई ये तो आपस में जली कटी बाते होने लगी · बात बढ गई · हिन्दी म सल है · (हांसी मे खांसी । ·) तो ना उडती चि डिया पेछान ताथा · बोला · हजूर आप का खि - याल कहा है · मजे के वास्ते शराब पीते हैं · आ पर को बहक गये · नहल सके · शराब पीना रा सो बेसो का काम नहीं · सांप को खिला ना पड़ ता है · भीन से इसमें बह गये · यही तो मर्द और ना मर्द मालूम होता है · योतों सभी भट्टी पर जा कर दो पैसे का ठर्रा पी आते हैं · फिरकी चड़ में लोट ते फिरते हैं · मैंने बहुत सा ज़माना देखा है · मै एक कहानी कहता हूं जरा कान धर कर सुनो तो · सब ✕ तुम्हारे वहिम जाते रहे गे · जान आलम ने कहा के जल्दी कह · तोता बोला · ॥

कहानी॥

एक मुल्क में एक बडा बडा धर्मात्मा राजा था॰ उसके श हर में दो भाई थे॰ एक तो शहर का काजी और दूसरा मुफ़ ती था॰ जाहर में बडे भले मानस और ईमान दार मालूम होते थे॰ बादशाह ने मुफ़्ती को किसी काम के वास्ते वाहर जाने का हुक्म दिया॰ वो अपनी औरत अपने भाई को सौं प गया॰ काजी कभी कभी उस औरत के पास जाता था कहीं आंख जो पड गई तो और ही समाई॰ वो औरत बडी खूबसूरत॰ और बडी पतीव्रता थी॰ एक दिन काजी ने उस्से सवाल किया॰ मगर उसने न माना॰ काजी घबराया॰ कि बात की बात गई॰ और हंसी की हंसी हो गी॰ यह भाडा जरूर फुटेगा॰ कुलियां में गुड न हीं फोडा जाता है॰ ये सोचा कर वो बादशाह के पास गया॰ और कहा॰ कि मेरा भाई॰ अपनी औरत मु के सौंप गया था॰ मगर मैंने उसे दूसरे के साथ पकडा है॰ बादशाह ने काजी समझ कर कहा कि तुम्हें इख़ तियार है॰ जाओ सो करो॰ काजी उसे अलग ले ग या॰ और कहा कि अब भी मान जा॰ नहीं तो॰ बुरा हो गा॰ वो कब॰ इस गीदड भपकी से डरती थी॰ एक न मानी और मरने को तैयार होगई॰ वो॰ हराम जादा उस जंगल वाहर ले गया॰ और नौकरों से कहा कि इसे खूब पत्थरों से मारो ये हाल देख कर हजारों आदमी कांपते थे॰ आखिर को सब चले गये॰ ईश्वर के बडे कारखाने हैं॰ उस औरत को चोट तक भी न लगी॰ शाम को उसने पत्थर सरकाये॰।

और वटिया वरिया जंगल को चली गई· वहां एक फ़क़ीर रहता था· और उसका एक छोटा बच्चा था· उसने लौंडे ५ पालने में रइस्को रक्खा· उस फ़कीर का एक गुलाम बड़ा हराम ज़ादा और सैतान था· उसने जो जवान परी औरत देखी· तो फूल गया· बहुतेरा· उतार चढ़ाव दिये मगर वो: ढब पर न चली· उस हराम जादे ने उस फकीर के लवैडे को मार डाला· और इस विचारी पर तोहमत रक्खी· मगर फक़ीर नें कुछ न कहा· चुपका होरहा और वास अशर्फ़िया देकर उस औरत को रुख सत किया· वो चलते चलते एक शहर में पहुंची· वहां एक आदमी को मुश्के बांधे लिये जाते थे· औरत ने पूछा कि इसकैं ने क्या गुनाह किया है· लोगो ने कहाके इसे २० अशर्फ़िया एक की देनी है· और इसके पास देने को कुछ नहीं: इस लिये हम इसे फांसी देने को लिये जाते हैं· उस औरत को रहम आया· और उसने वो वीस अशर्फीयां दी· ये बद माश छूटते ही· औरत पर गिरा· और कहाकि मैंतो तेरे साथ चलूंगा· तूने मेरी जान बचाई· मैं तेरी गुलामी करूंगा॥ इस वहाने से सात हो लिया· चलते चलते एक नदी मिली वहां वो: औरत नहाई· और कपड़े बदले· इतने में दो जहाज आये· लोगों ने जो इसे देखा तो हक्के बक्के रह गये· उस हराम जादे से पूछा के औरत कौन है· उसने· कहाकि मेरी लोंडी है मोल तोल होने लगा बहोत से रुपये लिये और औरत को किसी वहाने से जहाज पर चढ़ा आप चल दिया· उस जहाज पर दो सोदागर थे·

ओदानों दूस पर भिड़ी हुई तू तू मैं मैं होने लगी आखिर को यह ठहरी किये औरत अभी माल के जहाज़ पर रहे और जब असबाब बिक चुके तो जिसे पसंद करे वो ले थोडी देर में आंधी चली सौदागरों वाला जहाज डूब गया और माल वाला बचा और इसी पर वोह औरत थी चलते चलते उसी शहर में पहुंचे वो: जहाज वहां आया जहां इस बिचारी पर पत्थर पडे थे अब और सैर देखो जिस ने इसे बेचाथा वो: यहांके बादशाहका बकसी हुवा फकीर का गुलाम वज़ीर था मुफती भी सफरसे फिर आया मगर जोरूकी फिकमें पडाथा इसी शहर में एक बडा ऋषी रहता था भगवान ने उसको हुक्म दियाकी इस जहाज पर हमारा भक्त है बादशाह वजीर वकसी काज़ी और मुफ़ती उनके पास जाकर जो कसूर किया है उससे कहा है जोवो माफ़ करदेवे तो हमसे भी माफ़ किया नहीं तो अभी सब मटिया मेल हो जाय गे ॥ उस ऋषी नेयेहाल बादशाह से कहा के बादशाह सब को साथ लेकर जहाज पर आया और वोह औरत परदा छोड कर हो बैठी बादशाह से कहाकि मैने तहकी बात नहींकी और योंही मुफती की जोरू को काजीके हवाले कर दिया औरत ने कहा महाराज क्षमा करें फिर मुफ्ती ने कहाकि मुझको अपनी औरत की तरफ़ शक है ॥

वो बोली तू अभी चुप रह · फिर काजी ने · कहा के मेरे कहने से उस औरत पर पत्थर पडे थे · वो बोली के तुझ पर भी महा राज सहाय करे · फिर उस फ़कीर वाला · गुलम हा आया · और कहा के · मैने लडका मारा और · औरत पर तोहमत लगाई · उस ने कहा के तेरे ऊपर भी महा राज दया करे · अब सब के बाद बकसी आया · और मगर · उसकी जान न बकशी · और कहा के जिस थाली में खाना उसी थाली में छेद करना किसने बताया है · फिर पर्दा उठाया · और मुफ़ी से कहा के तूने मुझे पैछाना · आज तक तो बर्क हुई हूं · अब ये माल मता तू ले · और में कोने में बैठ कर अल्ला २ करूं · सब लोग इसे देख कर दंग हुऐ · और बादशाह सलामत भी अपना सा मूं लेकर उलटे फिरे · तोता ये कहानी कह कर बोला के जो पूरे हैं वो पूरे ही हैं · तुम सबको एक लाठी हांकते हो · पांचो उंगलियां बराबर नहीं होती · ये सुनते ही जान आलम का नशा हल का हुआ · और वो मल्का और अंजुमन आरा के पांव पर गिर पड़ा · और बोला के मैने बहुत सा फक मारा · और २ गुखाया · मेरा कसूर माफ़ करना · मैं घोडे पर सवार हूं · जान बूझ कर नहीं · कहा · चमडे की जबान तो है · फिसल गई · फिर सब मिल कर खूब हंसे और आगे को कूंच हुआ · ॥

---

१७ चरित्र ॥

चलते चलते जान आलम अपने शहर में पहुंचा • दो कोस पर डेरे डाले • वहां वालों ने जोये धूम धाम देखी • तो जाना के कोई गनीम आया है • वजीर ने बाद शाह से जाकर कहा के जिस दिन से जान आलम गया था • उसके मा और बाप रोते २ अंधे हागऐथे • पीड और पेटकी मुहब्बत ऐसी होती है • बादशाहीका किसको गम था • नाम के वास्ते लकीर पीटे जाते थे • बाद शाह ने वजीर से कहाके मैं तो आप मरा हुआ हूं • जो जी चाहे वो ले ले • मुझे कुछ काम नहीं • वज़ीर ये सुन कर जान आलम के लश्कर में आया • अब तो ये और ही जान आलम थे • बात बात पर फुंकारें भरते थे • फ़ौज भी बहुत सी साथ थी • वजीर ने बिलकुल न पहचाना • और कहाके हमारे बाद शाह का आंख अंधी हो गई है • बेटे का पता नहीं मिलता मौतको दोनो हाथोंसे बुलाते हैं • मगर वोभी • तीतेरा बाईस बताती है • अगर आपको बाद शाहत लेनी है तो लीजिये • कहां कोई कहने सुन्ने वाला नहीं है • जान आलम वजीर को खिलत दे कर रोया • और कहा के गोदके पाले को अभीसे भूल गये • आप बाद शाह के पास जाईये • और मेरे तर्फ से सलाम के बाद कहिये के गुलाम हाजर है • वजीर पहचान तेही पांव पर गिर पडा • जान आलम ने गले लगा या • फिर वजीर घर रुपटा और बाद शाह को मुबारक बाद दिया • और कहाके इस शहर के नसीब जागे • हमारी दुआ कबूल हुई • बाद शाहने कहा • (मेरे को मारे शा मदार •) क्यों मेरे जखमोंके ऊपर नमक छिडकता है • ये बातें होई रहीथी के जान आलम

महल में आया · बडा रोना पीटना मचा · और तों ने गुल मचा या · मा बापने बेटे को गले लगाया · दोनों की आंखें खूली ॥ बाद शाह उसी वक्त सवार हो कर वह वो से मिलने आये) शहर वाले साथ आये सवारी उलटी फिरी · दोनों लश्कर अर्द लीमें थे मल्का औ र अंजुमन आरा के डोले पर जवाहर अशर्फि यां लुटाई · हरी के गाल सेठ साहू कार बन गये · जान आलम की माने जो मल्का और अंजुमन आरा को देखातो बलायें लेने लगी · दूसरे दिन मल्का और अंजुमन आराने बाद शाह से कहा अगर हजूर का हुक्म होतो हम माह लकर से मिल आवे। बादशाह ने कहावोब डी मुफट हे · जाकर पछताओगे · मिया मिठु भी मोजूद थे · वेसे बोले · पछताने की क्या बात है · अपना पन में आते जाते हैं दो कहते हैं दो सुन्नत ही है · बाद शाह चुप हुआ · शाहजादी यों ने सवारी मंग वाई · तोता पहिले से मोजूद हुआ · और झुक कर सलाम किया · वेठा उसने शरम के मारे सिर झूका य लिया · इतने में सवारी भी आन पहुंची · अबतो माह लक को उठना पडा गले मिल मिला कर फिर बैठ गई · अंजुमन आरा तो गो वर गणेश थी · बुत सी बैठ गई · मल्का आठो गांठ कुमेद थी · बोली शाहजादी हमारा तुम्हारा दावन चोली का साथ है · तुम हमारी · ... कुछ फिक्र मत करो · हम दांत काटी रोटी · खाने वाले हैं · ...ने में तोता अंजुमन आरा के सामने आया · और माह लक से कहा के हजूर अब फर्माईये · सच्चा कौन है · और झूठे के मूं में क्या है · और तो क्या कहू आपकी तकरार की बदौलत ये चां दके टुकडे जान आलम को मिले · मेरे सबब आपको शरम हुई · झूठे के मूं मे घी शक्कर हो · मल्का मुसकुराई · मगर

शुकबहत्तरी
मतबअ इलाही मच्छूरां के प्रबं
ध से छापी गई

श्रीगणेशायनमः

अथ सुकबहत्तरीभाषा

स्लोक

प्रणम्य शारदा देवी दिव्य ज्ञान समन्वितां
मनचित्त विनोदार्थ क्रियते शुकबहत्तरीं॥१॥

पृथ्वी के विषें एक चंद्र कला नाम नगर था राजा विक्रमसेन राज करता था वहां हरिदत्त नाम सेठ बसते रहे ताके सुरसुंदरी नाम स्त्री रही ताके पुत्र मदन ताको रतन सेठ की वेटी प्रभावती सों व्याह किया सो रूप लावन्य युक्ता सो मदनसेन व्यासक्त आसक्त वहुत हुआ देख कर पिता मन में चिंता करने लगा पुत्र व्यापार नहीं करता स्त्री से आसक्त रहता है इससे खराब होगा यह समझ कर चिंता करने लगा इस हेत में जो बात प्रगट भई सो कहते हैं चित्त दे सुनो एक विदेशी ब्राह्मण था विक्रम नाम सो वो गंधर्व पर्वत को गया उस पर्वत में एक सिद्ध देखा महा तपेश्वरी तप करता है जाकर दंडवत किया तब सिद्ध ने बहुत आगत स्वागत किया तब विप्र ने कहा एक वस्तु अपूर्व मोकों दीजिये किस वास्ते कि जो पृथ्वी पर अटन कर्त्ता कथा वार्त्ता पर चित्त लगाता नहीं और जो ऐसे ऋषीश्वर के पास से न पाऊं तो कहां से पाऊंगा जो ऋषी की सेवा करे तो उत्तम है निर्फल नहीं और श्लोक पढ़ स्तुति की। श्लोक। अमोघा वासरे विद्युत् अमोघं निशि गर्जितं॥ अमोघा च सतां वाणी अमोघं सिद्ध दर्शनं। १। ऐसा ब्राह्मण ने कहा तब सिद्ध ने विचार के ध्यान किया उस वक्त एक सुआ एक सारो सिद्ध को दृष्टि आई उन दोनों की जन्मांतर की बातें जानिवे में आई कि ये दोऊ गंधर्व हैं कोई ऋषीश्वर के शाप से तोता योनि पाई है

और ऋषीश्वर अनुग्रह किया जो पृथ्वी के विषे मनुष्य भाषा किया
प्रभावती आगे रात्रि को उपदेश करे अंत वह सुवा गंधमादन प
र्वत पर जायगा तव शरीर को छोडेगा फिर गंधर्व होजायगा अ
व शुक अपना शरीर वेचे मुहर ५०० को तो या ब्राह्मण को दिव
वे तो पाप से छुटे ऐसे सुवा सुवटी को देव ऋषि ने कहा कि अरे
शुक तू इस ब्राह्मण के संग जा और मुहरन को दान कर तेरा भ
ला होगा इतना सुन शुक हाथ पर आन बैठा तव ऋषि ने उस
ब्राह्मण से कहा अरे ब्राह्मन तू इसे लेजा तुझे कोई ५०० मुहर दे
उसे दीजियो मेरी आज्ञा से तेरा भला होगा ऐसा जब कहा त
व वह ब्राह्मण सुआ को ले आज्ञा मांग के चला बाद इस के
वहुत देशांतर फिरा शुक ने कथा वार्ता वहुत किया ऐसे वार्ता
कहते विक्रम ब्राह्मण चंद्रकला नगर विषे आया हाथ में पिंजरा
लिये हुए श्रीदत्त की हाट के आगे विश्राम किया तिसके पीछे वहुत
श्लोक शुक सुंदर कहत भया अपूर्व वार्ता हित उपदेश शास्त्र पुराण
वेद कला ज्ञान विज्ञान कहने लगा तव वह श्रीदत्त शुक की कथा सु
नकर वडा प्रसन्न हुआ और यह सोचा कि जो यह ब्राह्मण मुझे
सुवा दे तो मैं मांगूं और जो द्रव्य चाहे सो दूं यह विचार ब्राह्मण
से वोला हे तपस्वी यह शुक सारो मुझे दो तव ब्राह्मण वोला कि
जो ५०० मुहर मुझे दे तो मैं दूं तव सेठ वोला हजार मुहर ले तव
ब्राह्मण वोला ५०० से कम ज्यादा नहीं लूंगा मुझे सिद्ध की
यही आज्ञा है तव साहु वहुत प्रसन्न हो उस ब्राह्मण की
आतिथ्य सेवा की और ५०० मुहर दीं वहुत सा खुश कर शु
कसारिका ले अपनी चित्रसाली में रक्खा वह रातिदिन क
हा करे एक शुक ने सेठ को देखा तो वहुत उदास है शुक वोला भ
हे सेठ तू उदास क्यों कर है तव सेठ वोला कि मेरा वेटा मदनसेन

है अपनी स्त्री प्रभावती सें बहुत आसक्त है क्षण भर उससे जुदा नहीं होता इस से मुझ को बड़ा क्लेश है और मैं तो बहुकृपा से र राजा विक्रमसेन की बेटी का व्याह है उस ने यह आज्ञा दी है कि तुम देशांतर को जाके रत्न वस्त्र आभूषण अनेक भांति के लावो अगर न जाऊं तो राजा दंड दे और जाने की सामर्थ्य नहीं इससे अति चिंता में रहता हूं तासों शुक अव कहो सो करूं तव शुक बोला कि पिता सोच मत करो मैं मदन को बोधन करके तुम्हारे पास लाऊंगा ऐसा कह के मदनसेन के घर गया जाकर आशीर्वाद दिया मदनसेन प्रभावती ने वडा आगवस्वागत किया तव शुक ने अनेक वार्ता किया और कहा कि पुत्र वही उत्तम है जो माता पिता की आज्ञा माने और जो न माने तो नर्क पडे सो ऐसा वेद शास्त्र कहता है ऐसे सुन मदनसेन एकांत में शुक से बोला कि पिता को किस वात की चिंता है सो तुम कहो तव शुक बोला कि एक कथा सुनो एक चंपावती नाम नगरी रही वहां सत्यशर्मा ब्राह्मण रहता था धर्मशीला भार्या उसकी थी जिस के बेटे विद्यावंत गुणवंत थे परंतु माता पिता की आज्ञा न करते देशांतरों को गये विद्या बहुत पढी महा तपस्वी हुए तीर्थ यात्रा बहुत किया एक दिन तीर्थ को जाते थे राह में धूप लगी तव सिरस के नीचे खडे हुए उस वृक्ष के ऊपर वगुला वगुली वैठे थे सो वगुली तपस्वी के मांथे पर वीट की तव तपस्वी को क्रोध हुआ देखतेही दोनों भस्म हुए तव ब्राह्मण आगे चला मन में सुख भया तपस्या पूरी हुई यह विचार के देश को गया एक ब्राह्मण के घर जायके कहा भिक्षा देही यह वात ब्राह्मन की स्त्री ने सुनी भिक्षा देने चली उसी वक्त पति ने जल मांगा वह पतिव्रता थी इस से जल लेके पति को

दिया पाछे भिक्षा ले ब्राह्मण को देने लगी तब ब्राह्मण ने क्रोध किया कि मैं शाप देऊंगा तब ब्राह्मणी बोली रे तपस्वी मैं बगु ली नहीं हूं जो अपनी तपस्या दिखावे ऐसा कह बहुत सा भिड़ का तब ब्राह्मण ने जाना कि मैं जो पाप किया इससे प्रसिद्ध हुआ यह जान लज्जित हुआ भिक्षा लिया तब ब्राह्मणी ने कहा तू पापी है तुझे तपस्या का फल नहीं तब ब्राह्मणी बोली तू बार णसी जा तहां एक धर्मव्याधी नाम एक कसाई रहता है उस के पास जा मूर्ख वह तुझे ज्ञान उपदेश करेगा सब बात को निर्णय बतावेगा यह सुन ब्राह्मण वहां गया धर्मव्याधी सों खबर किया वासों मिला देखा तो वह मांस वेंचता है और हाथ लोहू में भरे हैं साक्षात यमराज का रूप है देख कर राम राम कहने लगा और यह कहा कि ब्राह्मणी ने तुम्ह पास भेजा है मुझे धर्म उपदेश करो तब उस कसाई ने बहुत सत्कार किया ब्राह्मण को घर में बिठाया फिर मा ता पिता का सेवा किया आज्ञा मांगी जो मुझे आज्ञा हो तो ब्राह्मण की सेवा करूं तब आज्ञा दिया कि ब्राह्मण को जिस में संतोष हो सो करो सेवा बहुत किया भोज न कराया चित्त स्थिर हुआ तब ब्राह्मण ने ज्ञान पूं छा कि ब्राह्मणी को ज्ञान किस तरह से हुआ और तु म को किस तरह हुआ सो कहो तब धर्म व्याधी बोला हे विप्र प्रथम तो अपने कुल का जो धर्म हो सो करे पराये धर्म को त्यागे नीके प्रकार धर्म साधे माता पि ता की सेवा करे सब को समान जाने राग द्वेष त्यागे माता पिता को ईश्वर जाने यह जान कर भव को ध र्म को ज्ञान है सो करे और ब्राह्मणी अपने धर्म को

जाने है साधन करती है आज्ञा पालती है पतिव्रत पालनो स्त्री को बडो धर्म है इस से उस को त्रिकाल ज्ञान है अरु तू ब्राह्मण माता पिता को त्याग गृहस्थाश्रम को त्याग किया है पितर देवतान को त्याग है इतने पर तप कियो सो क्या भयो तेरा पाप मिटा नहीं तेरे बोलने से भी पाप लगता है तू हमारे अतिथ आया इस से बोलना पडा अन्यथा तेरा मुख देखना योग्य नहीं तू माता पिता को त्याग कर आया है फिर ब्राह्मण बोला हम को उपदेश करो तब व्याधी एक श्लोक बोला। न पूजयंति ये पूज्यान् अमान्या न्मानयंति ये। जायंते नियमा नास्ते मृता स्वर्गं न यांतिते। १। इतना व्याधी बोला बोधन हो भयो तब ब्राह्मण नमस्कार कर अपने घर आया व्याह किया गृहस्थ धर्म में रहने लगा माता पिता की सेवा ईश्वर समान करने लगा यह कथा सुन मदनसेन कहने लगो कि जो माता पिता कहेंगे सो करूंगो वचन न टालूंगा इस तरह शुक के कहने से पिता पास गया नमस्कार किया पिता ने आदर बहुत किया पुत्र को देख निहायत खुश हुआ हरिदत्त बोला हे शुक जिस के सत्पुत्र हो उस को चिंता किस बात की है इतना सुन पुत्र बोला हे पिता तुम को चिंता किस बात की है सो मेरे आगे कहो तब हरिदत्त ने कहा कि राजा विक्रमसेन की बेटी का विवाह है तिस से राजा ने आज्ञा दी है कि बाहर देशांतर जाके भूषन वस्त्र रत्न ले आओ आज से नवमें दिन विवाह है इस से चिंता है कि पांच सात दिन पहिले आना चाहिये द्वीपांतर से लावना अपने समान राजा कोई नहीं कैसे करैं जिसे मैं वृद्ध हुवा यह बात सुनकर विनती किया कि जो मुझे आज्ञा हो तो मैं सच करूंगा तब सेठ निहायत खुश हुआ इस के बाद पिता पुत्र

राजा के पास गये राजा से विनती किया कि जो हम को आज्ञा हो सो करैं तब राजा ने फरमाया अरे सेठ तुम रत्न माणिक मे ती देशांतर से ले आओ आज से उन्नीस दिन ब्याह के हैं तिस से पांच सात दिन पहिले आन पहुंचो तब मदनसेन ने कहा जो आज्ञा हुई है सो करैंगे और मेरी इच्छा से रत्न उत्तम ला ऊंगा तो राजा का सेवक तब राजा ने उन को दो सिरोपाव दिये उन्हों ने बहुत दिलासा दिया बहुत सा द्रव्य दिया जितना मांगा घोडा रथ प्यादा बहुत दिये आज्ञा दी कि सुबह होतेही सिद्ध करो विलंब मति करो आज्ञा हुआ तब सेठ मुजरा कर घर आया लेकिन सनेह से पुत्र के चिंतावान हुवा तिस के पीछे मदन सेन अपने घर आया प्रभावती से कहा कि मैं परदेश चलूंगा तू शील से रहना कोई बुरा न कहे सो करना मैं बहुत दिन में आऊंगा यह वार्त्ता प्रभावती सुन मूर्छा गई मदनसेन बेसन किया और उसको चेतन्य किया तब प्रभावती ने कहा कि मैं भी चलूंगी जो यहां तुम विन रहूंगी तो प्रान न रहेंगे और दंड देतिस से स्त्री की आज्ञा नहीं तब प्रभावती ने कहा कि मैं अकेली किस तरह रहूंगी तब मदन सेन ने कहा सुवा सारो तुम्हारे पास रहेंगे कथा वार्ता रात दिन कहेंगे चिंता मत करो तब प्रभावती बोली जो आप की आज्ञा हो सो करूंगी मदन सेन पिता माता के पास आया और कहा कि सारो सुवा मुझे दीजे तब पिता ने दिये अपने घर ले आया प्रभावती ने परम संतुष्ट होकर राजी भई तब मदन सेन शुक से कहने लगा मैं परदेश जाता हूं इस से बातें अच्छी २ करते रहियो और सब तरह रक्षा कीजो कथा वार्ता सों बहत्तर दिन बिताओगे पीछे एक वार्ता कान में कही कि नवयोवना है इसका भरोसा नहीं स्त्री जात है स्त्री के

चरित्र कोई जानता नहीं कोई बुरे का संग मत करने दीजो तिस से रक्षा कीजो तुम सर्वज्ञ हो शुक ने कहा चिंता मत करो तब मदन सेन रात्री को विनोद बहुत तरह से किया प्रभावती को मन प्रसन्न किया पाछे मदन सेन सुबह होतेही माता पिता को दंडवत कर परदेश को गमन किया उस समय एक श्लोक पढा ॥ दैन्यं पृथु हयहृ यमर्जुनेनासा कुंतलयं भरतेनलं रामं ध्रुवो वैस्मरति प्रयाणे तस्यार्थसिद्धिं कुशलं भवंति ॥१॥ इस तरह मन में कहते देशांतर को जाते भये जाकर रत्नादिक वस्त्रादिक लिये और जो राजा ने आज्ञा किया था सब कुछ लिया और इधर जो कौतुक घर में भये सो सुनो राजा विक्रमसेन का बंधु विजयसेन वह बत्तीसलक्षण और सुभग था और बहुत गुणवान शीलवान कामदेव की मूर्ति विद्यावान था एक दिन घोडे पर चढ महादेव के दरशन को चला उसे जो देखे मोहित हो जावे मध्यान्ह के समय निकला हरदत्त सेठ के महल के नीचे खडा हुवा उस वक्त प्रभावती की नजर पडी देखतेही बेहाल हुई काम के वस हुई सिर के बाल न्हाय सुकाती थी सिर का पानी उस के ऊपर पडा तो विजय सेन भी ऊपर को देखने लगे और प्रभावती पर नजर पडी तो देखतेही वह भी कामकर पीडित हुवा प्रभावती काम का तीर मार चली गई और विजसेन भी इश्क की चोट खाय चला गया और दोनों के चित्त में अति यादगारी की लगन लग गई तब विरह के दुख से विजय सेन ने एक श्लोक पढा ॥ किं करोमि क्व गच्छामि रामो नास्ति महीतले ॥ कांता विरहजं दुःखं एको जानाति राघवः ॥ १ ॥ इसी तरह बार बार पढता और जो चीज देखता उस में प्रभावती की सूरत देखता ऐसे बस किया कि कहीं चित्त नहीं लगता और

किसी से कुछ नहीं कहता और दिल में विचारता कि रुपये
खर्च जो चाहै सो ले प्रभावती की कोई मुलाकात करा दे ऐ
सा रातदिन दिल में सोचता और फिकर करता और प्रभावती
भी इसतरह जी में चाहती और रातदिन सोच में रहती और विरह
के वियोग में रहती। श्लो॥ सुवेषं पुरुषं दृष्ट्वा पितरं भ्रातरं सुतं॥
योनिः स्खलति नारीणां सत्यं सत्यं वदाम्यहं॥१॥ ऐसा प्रभावती का
मन काम के वस भया और जहां पर विजसेन महल में चिंता से बैठा
था वहां पर एक मालन फूलों की डाली हारों से भरी ऊई ले आई औ
र वह फूल विजयसेन के आगे रक्खे और उस मालन का नाम मोहनी
था विजयसेन ने उन फूलों को लिया परंतु भीतर की उदासी से कु
छ खुशी न मालूम ऊई तब मालन बोली कि मैं तुम को उदास देख
ती हूं और नहीं जानती तुम्हारी तबीयत उदास क्यों है सो हम से क
हो अगर किसी स्त्री के हेत में हो तो हम से कहो और आज्ञा दो जिसे
ले आऊं क्योंकि मुझे मोहिनी मंत्र आता है जिस पर नेह लगा है उसे
मोह करले आऊं तब विजयसेन ने बड़ी खातिर की और यह पूछा
कि मेरे मन की बात तूने किसतरह से जानी तब मोहनी बोली हे वि
जयसेन मैं ने तुझे देखा कि मन तेरा उदास है विरह करके दुखी
इस से मैने जाना कि किसी स्त्री पर आसक्त ऊआ है और यह बात
मन में जानती थी और एक दिन उसके यहां गई भी थी सो वह
भी चाह में अति दुखी थी तब मैं ने उसे पूछा तब उसने कहा
कि विजयसेन के इश्क में दुखी हूं तब मैने कहा विजयसेन के पास
गई थी वह स्त्री के मोह से बऊत दुखी है तब मैने कहा कि मैं मालन
हूं जिसको तू चाहै अभी लाऊं यह सुन विजयसेन अपने हाथ का
गहना दिया और कहा कि प्रभावती मेरे मन में निहायत बसी है उ
से तू मिलावे तो जो मांगे सो दूं तब मैंने करार किया तुझे जरूर मिला

दूंगी सो मैं ने जाना कि तुझे भी उसकी चाह है तो परमेश्वर अच्छा
करेंगे और तेरी भी मुराद पूरी होगी जब ऐसा कहा तब प्रभावती नि
हायत खुश हुई और यह कहा कि मुझ से यह काम पूरा होगा तब
ऐसा सुना तो सारिका बोली इस मालन को घर से जल्दी निकालो
बड़ी हरामज़ादी है तब सुवा बोला आदमी के पास आदमी आते हैं
तू कौन है तू काहे को बकती है सारों ने मालन का तिरस्कार बहुत
किया मदनसेन के वचन को प्रतिपाला परंतु जानवर हैं इस-
की कौन माने तब सुक विचार के बोला कि सरदार के पास माल
न और नायन ये बहुत आते हैं इससे चिंता नहीं सारों ने कहा
चल तू समझता नहीं तू खुशामद की बातें करता है खुशामदी मन
राखने की बात करता है मैं तुझ से सच कहती हूं ऐसी आखुसयें बा
त करते हैं तब मैना बोली चुप कर रहो तब मालन बोली प्रभावती
मन में खुशी रहो जो आज्ञा करोगी तत्काल बजालाऊंगी स्नान
करो फूल पहिरो मनोर्थ सिद्धि करो और मदनसेन की चिंता छोड़ो
हम राजा की दासी हैं कभी घर कभी बाहर हमारा यही काम है तेरी
आज्ञा में हूं जो तू कहेगी सो करूंगी यह जब कहा तब दलगीरी
संबदूर हुई और स्नान कर गहना पहर फूल पहन खाना खा
या और सोलह सिंहार किये गद्दी पर बैठी मोहनी आगे बैठी
और यह कहने लगी कि आज मुझे बड़ी खुशी हुई तब प्रभावती
बोली कि तुझे किस बात का दुख है तब मालन बोली कि तुम अप
ना दुख कहो तो मैं भी अपना दुख कहूं तब प्रभावती की सखी
बोली कि स्वामी तो परदेश है यह जोबन रस रंग जाको चाहि ल
गी हिये सो दुर्लभ सखी संग॥ श्लोक॥ स्त्रक्चन्दनागंरागलज्जा
कररूह परवसो जय्या प्रिय सह विषय मपि मां मरणां शरणां दु
ह रूपं॥१॥ इससे मरणा भला है ऐसा सखी बोली कि इस मन बसंतु

अपना दुख बयान कर दूती बोली कि इस समें बसंत ऋतु हैं और तू नवयौवना है तुझे देखे मुझे बडा दुख लगता है इस से अगर मेरा कहना माने तो एक बात कहूं तब प्रभावती बोली जो तेरे मन में बसता है उसे मैं जानती हूं राजा के प्रधान का बेटा विजयसेन तेरे मन में बसता है मालन ने कहा जो कहे तो तुझे मैं उस से मिला दूं प्रभावती ने कहा मुझे अगर उससे मिला दे तो तुझे बहुत सा द्रव्य दूं मालन बोली जहां पर तू कहे वहां उसे ले आऊं तब प्रभावती बोली अरी मालन तू विजयसेन के पास जा कर यह कह आज पहर रात गये सिंगार कर शहर बाहर एक शिवालय है तू वहां आइयो और मैं भी वहां चलौंगी ऐसा संकेत बा को तुम कहना तब दूती प्रसन्न हुई और प्रभावती ने उसे पांच मुहरें दीं वह लेकर विजयसेन के पास आई और कहने लगी कि आज प्रभावती को प्रबोधा है और उसने कहा है कि पश्चिम तर्फ एक देवल है और वहां सुनसान है वहां उसे लाऊंगी अब तू अपना मनोरथ पूरा कर यह बात सुनतेही बहुत खुश हुआ अपने गले की मोतियों की माला उतार के मोहनी को दी तब उसने कहा मैं तो काम कर आई परंतु इसमें बहुत से विघ्न हैं देर मत करो क्योंकि उस के यहां दासी शुक मैना बहुत हैं लेकिन मैं जहां तक बनेगा तेरी मुलाकात कराऊंगी ऐसा कह दूती फिर प्रभावती के पास आई देखे तो नख सिख से सिंगार किये बैठी है पान खाये शोभा की राशि बन गई है और कह रही है कब मोहनी आवे और कब मैं मिलने जाऊं मोहनी को देखतेही आनंद हुई कि जो चाहती थी सो बात हुई इतने में देख कर प्रभावती बोली हे मालन आई मैं तेरी बाट देखती थी मालन बोली मैं तो तेरी दासी हूं तेरा हुकम बजाया ले चल अब देर

मत कर इतना सुन परपुरुष से विलास करने चली और दूती का हाथ पकड़ लिया और चौक में आई और चाहे कि जावे तब सारिका बोली कि प्रभावती तू कहां जाती है यह तो दूती है इसका नाक कान काटना चाहिये और परपुरुष के पास जा ना न चाहिये मदनसेन तुझे क्या कहेगा और हम से क्या कह गया था तू भूल गई और मैं मदनसेन के आने पर समझूंगी तुझे उस से छुड़वा दूंगी वह आदी अपनी ओर कर लेगा उस वक्त तु झे बहुत रंज होवेगा इससे तू मेरी नसीहत मान तू बड़े घर की वह बेटी है इतनी सुन प्रभावती बोली अरे ये रांड कम अकल तु झे क्या सिखावती है देख शुक तो नहीं बोला तू मरा चाहती है तब मैना बोली मैं तेरी बिहतरी की कहती हूं और सच कहती हूं मैं तुझे जाने न दूंगी तब तो प्रभावती को गुस्सा आया पिंजरे में हाथ डाल मैना को पकड़ मार डाला तब चली तो कुत्ताने कान फड़ फड़ाया उसे भी लात मारी इतने में बिलाई आ पड़ी उसे भी ला त मारी तब प्रभावती क्रोध किया शकुन अच्छा नहीं हुआ उस वक्त शुक को चिंता भई कि अगर मैं बोलता हूं तो सारो की गति होगी और जो नहीं बोलता तो प्रभावती निहायत काम के आसक्त हुई मद करके अंधी हो रही है इसे आगा पीछा दिखाई नहीं देता। श्लो क॰। नैव पश्यति जन्मांधो कामांधो नैव पश्यति। नैव पश्यन्मदोन्म त्तो अर्थी दोषो न पश्यति।१। इससे प्रभावती कामांध हुई है किस तरह समझे ऐसे मन में चिंता करने लगा और जो न कहूं तो वचन मेरा जाता है तिस से ऐसा करो जिस में न जाय और मेरी बात भी रहे और मुझे मार भी न डाले और दूती को भी खुशी कर तो गंधर्वी। श्लो॰। उपपन्नेषु कार्येषु बुद्धिरेव गरीयसी बुद्धि हीन वि नश्यंति यथा ते सिंह कारकः।१। उपपन्नेषु कार्येषु बुद्धि ही

रेवगरीथसी। वनेसिंहमदोन्मत्त घ्राणांके न निपातितः। २। इस तरह मन में विचार करने लगा उस वक्त सुक बोला जिस कामको जाती हो सोई सिद्ध होय आप पधारिये यह सुक संबंधी वचन सुन प्रसन्न हो प्रभावती बोली हे सुक मैं परपुरुष से आनंद भोगने जाती हूं सुक ने कहा युक्त है याने बिहतर है परंतु यह काम कठिन है निंदित है कुल की स्त्रियों को योग नहीं व्यभिचारिणी को जोग है तुम्हें न चाहिये तब प्रभावती बोली क्यों न जाऊं तब सुक कही मैं कैसे कहूं आपकी इच्छा हो सो करो अगर एक काम करो जारी बेजारी जानती हो तो जाइयो और नहीं जानती हो तो मत जाइयो और जाओगी तो बहुत दुख पाओगी तब प्रभावती ने कहा जारी क्या और बेजारी क्या सो कहो तब सुक बोला जो कोई परपुरुष सों रति करे और कोई आन पहुंचे तो उसको जवाब कैसे देवे जिस में अपना ऐव ढके और लज्जा बचे नहीं तो बड़ा दुख होता है तू भले कुल की बेटी भले कुल में ब्याही राजी सों काम करेगी तो दोनों कुल की लाज रहेगी और तू दुख न पावेगी जब ऐसा सुकने कहा तब तो मन में विचारा और सुक से कहा हे सुक क्या करूं जो तू कहे सो करूं तब सुक बोला कि उस वक्त बुद्धि उपजे तो जाय जैसे हरिदत्त ब्राह्मण की स्त्री लक्ष्मी उसका नाम उस वक्त उस की जो बुद्धि उपजी और अपनी लज्जा राखी जो ऐसी बुद्धि उपजे तो जाना पराये पुरुष पास नहीं तो पराये पुरुष से प्रीत न करे तब प्रभावती सुक से पूछने लगी कि लक्ष्मी कोन से बुद्धि किया सो कहो तब सुक बोला कि आप जाय अपना काम करें चिंता को थिर करो तब तुम से कहों प्रभावती ने कहा मुझे बड़ा अचंभा हुवा है तब सुक कहने लगा कि दूती को विदा

करदेउ तब प्रभावती ने अपने हाथ की अंगूठी देकर विदा किया और यह कहा कि कल आवना चलूंगी और आज मैं बात सुनूंगी तब दूती नायक के पास गई अंगूठी दिखलाई औ र कहा कि कल आवने को कहा है तब प्रभावती बोली शुक अब कहो तब शुक बोला जारी तो यह है पराये पुरुष से रति करे और बेजारी उसका नाम है जो करके पछिताये अपनी लाज राखे कोई जाने नहीं तब काम सही इस बात के सुनने की इच्छा हो तो सिंगार उतारो चोकी पर बैठो एकांत मन करो तब मैं कहूं प्रभावती ने सिंगार उतार चोकी पर बैठी तब शुक ने प्रथम कथा का आरंभ किया सो कहते हैं ॥

प्रथमकथारंभः

एक चंद्रावती नाम नगरी है तहां भीमसेन राजा राज करता था व हां मोहन नाम सेठ रहता है तिसका बेटा सुधन्वा बहुत प्रवीन गु णवंत है उस देश में हरदत्त नाम कायस्थ तिसकी स्त्री लक्ष्मी नाम है और जैसा नाम है तैसाही रूप और महाप्रवीन है तिसके पीछे एक दिन सुधन्वा ने लक्ष्मी को देखा मन में लालसा आई विचारा कि इससे रति कीजिये ऐसा विचार दूती के घर गया और उससे पूछा कि तेरा नाम क्या तब दूती बोली कि मेरा नाम सोपवास है सुनमा सोपवा स मेरा एक काम है लक्ष्मी के विषय मेरा चित्त लगा है सो उस से मिलाय दो तब दूती ने कहा मैं उसको संकेत स्थल के बीच उसे लाऊंगी तू चिंता मत कर तेरा काम पूरा होगा ऐसा कह दूती लक्ष्मी के घर गई और उस वक्त हरदत्त न था जाकर बैठी मा सोपवासनी ने लक्ष्मी को उपदेश किया और रुपये का ला लच दिया तब वह मन में चलायमान हुई कि पर पुरुष की रति करें जो श्याम के वक्त में यह संकेत को लेगई

जा बैठी सुधन्वा को राजा ने बुलाया सो वह राज घर गया औ
र वहां आने का वक्त बीत गया दूती से बोली क्यों न आया तब
दूती बोली कि राजा की आज्ञा से काम में लग गया इस से नहीं
आया फिर लक्ष्मी बोली और एक काम कर जो कोई अच्छा
सा हो तिसे ले आ मेरा मन अत्यंत चाहता है यह सुन दूती
चली तमाम गांव में फिरी कोई मन में आवे नहीं हरदत्त लक्ष्मी
का भरतार मिला उस को ले आई और जानती न रही जिस से
आई जब भरतार मिला खड़ा हुआ देखे तो अपना भरतार है त
ब बहुत सोच किया यह शुक ने प्रभावती से पूछा उस वक्त भ
रतार से उस ने क्या कहा और कैसे मुकरी सो कहो तू कह अपनी
तेरी दासी कहे या और कोई कहे तब प्रभावती बोली हम नहीं जा
नती तुम कहो तब शुक ने कहा जो तू आज जाने का इरादा न करे
तो मैं कहूं तब प्रभावती बोली मैं न जाऊंगी तब बोला तो इस का उ
त्तर सुनो जो दूती पर पुरुष जान लाई सो उसका भरतार रहा तब उ
सने मन में एक बात उपजाई देखते ही छाती माथा पीटने लगी
बहुत अपघात किया तब पति ने देखा तो अपनी स्त्री है अपघात कर
ती तब बोला अरे लक्ष्मी यह क्या करती है तब लक्ष्मी बोली कि तू मे
रे आगे झूठ बोला जो मैं पर स्त्री के बुलाने पर बुरा कर्म नहीं
करता यह जान तेरी परीक्षा के वास्ते दूती पठाई और तू पर
स्त्री जान कर आया है सो मैं ने जानी कि तू निर्बुद्धि मुख देखने
योग्य नहीं यह सुन लक्ष्मी के पायन परा अपने घर ले आया शु
क बोला साहूकार की जो ऐसा जवाब करे अपने को बचा
वे जो तू ऐसा काम करे तो लक्ष्मी कैसी बुद्धि उपजे तो जा
उ नहीं तो मत जाउ यह सुन सेठ की बहू उठ पलंग पर सो
रही ॥ २ ॥

द्वितीय कथा २

फिर प्रभावती दूसरे श्याम के वक्त सोलह सिंगार कर पान खाय
दूती का हाथ पकड़ जब चली तब शुक से बोली हे शुक मैं परपु
रुष के सुख को जाती हूं शुक बोला अच्छी बात है परंतु जैसे देवी
ने जौन सी बुद्धि की सो कीजो तब प्रभावती ने कहा सो कहो तब
शुक बोला अपना मनोर्थ करि आवो तब कहूं सुचित्ताई से सुनो
प्रभावती बोली सुन के जाऊंगी तब प्रभावती सब सिंगार क
रे चोकी पर बैठ गई तब शुक बोला एक नंदन नाम नगर है
तहां चंद्रवती राजा था तिसका बेटा राजशेष रहे तिस की बहू
शशिप्रभा थी सो वह एक दिन सेठ का बेटा वीरसेन तिस को
देखा दोनों को काम की रति लगी और इश्क के मैदान में चूर हो
गये खाना पीना छोड़ा और दिल में बिचारने लगे कि अब क्या
करें तब उस की दाई से जाकर मुलाकात की यशोदेवी उसका
नाम था उससे कहा कि राजकुमार की बहू से मेरा मन लगा है उ
स से मिला दो तब तोता बोला हे प्रभावती वह किस तरह मिली
तब प्रभावती बोली तुम्हीं कहो मैं नहीं जानती तब शुक कहने ल
गा कि दाई यशोदेवी को अपने वश किया तब शशिप्रभा सिंगार
कर अपने महल में बैठी थी उस समय यशोदेवी शशिप्रभा
के महल में गई राम २ किया और बोली कि शशिप्रभा तेरी सुंद
रता को देख मेरे मन में बहुत दुख होता है तिस्से एक बात कहूं
जो तेरे मन में आवे शशिप्रभा बोली तू कहेगी सो करूंगी तब
दाई बोली कि तेरा जीना धिक्कार है जो पराये पुरुष का सुख नहीं
जानती जब इस सुख को जानेगी तब बहुत प्रसन्न होगी तब रा
जा की वधू बोली तू बतावे सो करूं ऐसी अच्छी जल्दी कहो

तब दाई ने कहा बचन देतो कहूं तब प्राणि प्रभाने वाचा दिया। तब दाई खुश हो बोली एक वीर सेन पुरुष तेरी इच्छा करता है तू उसका मनोरथ पूरा करतैसे परन्तु तब दाई एक उपाय बताया कि मैं अपने घर जाती हूं तू जब सवार होतब मूर्छा खा गिर पड़ियो काहू की औषद से नीके मत हूजो पाछे मैं आके तुझे अपने घर लेजाऊंगी और मनोर सिद्ध कराऊंगी यह कह कर आई और जाकर वीर सेन को खबर सुनाई कि तेरा मनोरथ सिद्धि होगा तू अब चिन्ता मत कर सवेरे काम होगा वो अकस्मात मूर्छित हो गिरी सब को बड़ा सोग ऊवा कि अचानक क्या ऊवा सबने झाड़ फूंक कराया दवाई दी मगर अच्छी न ऊई तब तो नगर मे ढंढोरा फेरा जो कोई प्राणि प्रभा को अच्छा करे तिस्को बऊत कुछ मिलेगा तब ऐसा कहा तब दाई बोली कि मैं नीके करोंगी जो मेरा काहिना करो तो अच्छी होय यह बात सुन राजा से कहा कि यशो देवी ऐसा कहती है जो मेरा कहना करो तो अच्छी होय सुनतेही राजा ने बुलाई और फरमाया जो तू कहे सो करें यशो देवी बोली जो ऊकम पाऊं तो कहूं राजा बोला जो तू कहेगी सु मुझे कबूल है तब दाई बोली कि जो तुम नीके कराया चाहते हो तो मेरे घर आठ दिन ताई रहने की मरजी करो तो नीकी होय तब राजा ने फरमाया अपने घर इसे लेजा राजी की आज्ञा पाय अपने घर लेगई वीरसेन वैश्य अपने मन में प्रसन्न ऊवा आठ दिन तक भोग विलास किये बाद आठ दिन के प्राणि प्रभा अपने महल में आई राजा देख बऊत खुश ऊवा कुंवर भी बऊत राजी ऊवा यशो देवी को बऊत द्रव्य दिया इस तरह सुकने प्रभावती से कहा ऐसी बुद्धि हो तो जाउ यह सुनि पलंग पर जा सोई रही॥३॥

अथ तीसरी कथा का प्रारंभः ॥ ३ ॥

फिर तीसरे दिन प्रभावती वैसाही सिंगार कर चली पर पुरुष के मिलने को उस वक्त सुक से पूछा कि मैं जाती हूं परपुरुष से रत करने तव सुक वोला कि निस्संदेह पधारो मनोरथ पूरा करो पर राजा सुदर्शन कैसी बुद्धि उपजे तो जाउ तव प्रभावती वोली राजा सुदर्शन कौन था और कैसी बुद्धि थी सो कहो तव शुक वोला कि एक विलास नाम नगरी थी तिस्का सुदर्शन नाम राजा था तिस्के गांव में विमल नाम वनिक वस्ता है तिस्की स्त्री एक तो सुर सुन्दरी एक रूमानि है महा सुंदरी को अव कुटिल महा धूर्त काम के आसक्त ऊवा मन में विचारा कि क्या करों किस्तरह से आवे तव अंविका के मान्दिर में जाकर वऊत सेवा किया तव देवी प्रसन्न ऊई और वोली कि वर मांग मैं प्रसन्न ऊई तव धूर्त वोला जो विमल वानिये का सा रूप दीजे तवदेवी ने कहा तथास्तु ऐसा ही होगा कहते मात्र विमल का सा रूप वन गया कुटिल धूर्त भी घर गया और दूत फाकन विमल अपने घर न था उस वक्त घर में वैठ दास दासिन को खुश किया घर में रहने लगे और कहा कि मेरा सा रूप वना विमल वानिया कोई आवे तिस्को वैठने ने देना ऐसा कह घर रहने लगा स्त्री न के साथ अपना मनोरथ सिद्धि किया पीछे विमल विचारा आया कि ये धूर्त ने मोकों वंचना कीनी अव का उपाय करों तव घर के पास आया तव धूर्त ने उसे देखा तो गारी देने लगा कि मेरे घर तू क्यों आया है फिर उन दोनों में वडी लडाई ऊई शहर के लोग जमा ऊए दोनों की वातें सुन वडा आश्चर्य ऊवा कि घर किस्का है दोनों के रूप समान हैं तव दोनों राजा के पास गये राजा ने न्याय किया तव शुक ने पूछा कि हे प्रभावती उस धूर्त को किस

तरह से निकाला सो बताओ प्रभावती बोली मैं नहीं जानती
कहु तब शुक बोला आज न जाओ तो कहूं प्रभावती बोली आज
न जाऊंगी तब वोः बोला राजाने विमलकी दोनो स्त्रियां बुलाई जुदी
बुलाके उनसे पूछा कि कहो तुम्हारे बाप का क्या नाम है और माता
का क्या नाम है और ब्याह हुवा घर आई तबरितु समे तुम्हें विमल
ने क्या दिया तब उन दोनों ने सब आहिवाल कहा और राज मैं लि
खलिया विमल से पूछा उसने भी वही कही सब बात मिली
पीछे धूर्त से पूछी उस्की एक बात भी ना मिली तब उस धूर्त
को गांव से निकाल दिया और विमल को उस्की दोनो स्त्रि
यो समेत उस्के घर विदा किया वोः अपने घर गया ये प्रभाव
ती जो ऐसा गुन हो तो जाउ नहीं तो मत जाउ फिर सो रही॥

चौथी कथा का प्रारंभः

फिर चौथे दिन प्रभावती सिंगार कर पराये पुरुष से रत करने
चली उस वक्त शुक से पूछा हे शुक मैं पराये पुरुष से सुख चा
हती हूं इस से जाती हूं शुक ने कहा बहुत अच्छा लेकिन गोविं
द ब्राह्मण ने बडे की आज्ञा न मानी तो बहुत दुख पाया तब
प्रभावती बोली गोविन्द ने बडे का काहना क्यों नहीं माना
और किस्तरे दुख पाया सो कहो तब शुक बोला कि एक भद्रावती
नाम एक नगरी थी वहां का प्रतापसेन राजा था राज्य करता
था उस गांव में सोमप्रभु नाम ब्राह्मण बस्ता था और पंडित बहुत
था तिस्की शोभा नाम स्त्री थी तिस्की मोहनी नाम बेटी थी सो वोः
विषकन्या थी सो सब जानते तिस्को कोई ब्याहे नहीं पिता
को इस्से बडा सोग हुवा कि क्या रे आखिर को देशांतर गया
और एक गांव में जाकर गोविन्द नाम ब्राह्मण से मुलाकात
हुई उसे कहा कि मेरे एक मोहनी बेटी है वोः तुझे देता हूं त-

व्याह कर ले वडत सुन्दर ऐसी कहीं नही लेकिन विष रूप दूत
ना सुन कर कवूल किया परंतु भाई वंधों ने मना किया किजे
तू विवाह करेगा तो वडत दुख पावेगा परंतु उसने किसी कीव
त न मानी एक तो स्त्री का लालच दूसरे धनका ऊवा व्याह
किया ओर द्रव्य लिया अपने घर आया तो मूर्छ कन्या थी अ
पने स्वामी को देख वडत दुख पती एक दिन पति से कहा
कि मुझे मेरे वाप के पऊंचा दो जव ऐसा कहा तव गोविन्द उसे
ले चला तव राह में आया तो स्त्री से कहा तू यहां वैठ मैं कर आऊं
आप तो काम करने को गया उस वक्त एक विष्णुनाम ब्राह्मण अ
था स्त्री को देखा तो महा सुन्दरी है मन में काम पीड़ित ऊवा ओ
र मोहनी भी काम के वस ऊई मन में विचार ऊवा कि इस्से भोग कीं
जिये क्यों कि वडत चतुर है उस वक्त मोहनी को वडत मन से पा
न लोंग इलायची दिया गोविन्द ने भी आदर किया मह से उत
गोविन्द वोला यार तू महल के पास वैठ मैं काम कर आऊं इतना
कह कर गोविन्द तो गया उस वक्त विष्णु दास महल सेले भागा पीछे
गोविन्द ने पुकारा कि हे विष्णु दास खड़ा रहो वाने जवाव न दिया त
व तो दोड के आप आया आपस में वडत लड़ाई ऊई इसी त
ह से लड ते लडते राजा के घर गये ओर पुकारा किया मेरी स्त्री लिये
जाता है तव राजा के प्रधान ने न्याय किया तव प्रभावती से सुक वो
ला कि प्रभावती कहो उस प्रधान ने क्या न्याय किया तव प्रभावती
वोली हे सुक तुम कहो मैं नहीं जानती सुक ने कही तू आज न जा
य तो कहूं तव उसने कहा न जाऊंगी तव सुक वोला हे प्रभावती
बुद्धि सेन मंत्री ने उस कन्या विष को वुला के पूछा जिस
दिन तेरे पति गोविन्द से संग भया था उस दिन क्या भया था
उस कन्या ने सव हकीकत कही पीछे गोविन्द से पूछा

उसने भी यही बात कही इन दोनों की बात ठीक मिली उसको ध
क्के देके निकाल दिया तब प्रधान ने कहा स्त्री गोविन्द की है और
प्रधान ने गोविन्द कहा जो तू इस स्त्री को रक्खेगा तो तेरा मरण
होगा इस्से तू इस स्त्री को छोड़दे कि शास्त्र भी ऐसा कहता है
श्लोक। वेदं षान रतं नष्टं कुपठितं मूर्खं परिव्राजकं रिद्धं का पुरुषं
हयं गमरयं स्वाध्याहीनं द्विजं। प्राज्यं वाल नरेंद्र मात्रि रहितं मि
त्रं छला न्विषिणं भार्यां यौवन गर्वितां परतां मुंचंति शीघ्रं वु
धा१ इसतरह गोविन्द ब्राह्मण को समझाया परन्तु उसने वि
ष कन्या को त्याग न किया वहां से उठके आगे को चला व
हां एक मनुष्य नजर आया उस से विष कन्या ने कहा तू जो
इसे मारडाले तो तेरे संग चलूं जब इसतरह कहा तब तो इस
ब्राह्मण को मारडाला इस से कहता हूं जो कोई कहता है अच्छी
बात और जो न माने तो गोविंद का सा हाल हो इस बात को सुनसे
रही

पांचवीं कथा का आरंभ ५

फिर पांचवे दिन प्रभावती सिंगार करके चली उस वक्त शुक से
पूछा हे सुक मैं पराये पुरुष का स्वाद लेने जाती हूं शुक बोला
अच्छी बात है परन्तु वाल पंडित कैसी बुद्धि हो तो जाना यो
ग है तब प्रभावती बोली वाल पंडित की कैसी बुद्धि थी औ
र क्या बात उस ने करी तब शुक बोला अगर आज न जाओ तो
कहूं तब प्रभावती बोली न जाऊंगी तब शुक कहने लगा कि उज्जैन
नगरी राजा विक्रमाजीत राज करते थे राज कला रानी को बहुत
प्यार करते क्योंकि वोः बहुत सुन्दर थी सो राजा के मन में एक
दिन ये आई नीरुत थार में एका दिन भोजन करें यह विचार क
रके राणी को बुलाया पास बैठाया दोउ प्यार में भोजन करने बै
ठे जीमते राणी ने पूछा यह क्या बात है राजा ने कहा कि यह

मछकी तरकारी है यह सुन राणी वङत गुस्साऊई कि राजा में पतिव्रता हूं पर पुरुष को स्पर्श करती नहीं यह आप क्या कारते इस से राजा वङत खुश ऊवा उस वक्त पर ईश्वर की मरज़ी से मछ हंसा तव राजा को आश्चर्य ऊवा और कहा कि म्रतकमच्छ है क्या कारण जो हंसा इतनी वात विचार आरज में खड़ा ऊवा और दरवार में आकर यह अचरज सवसे पूंछा कि म्रतकमछ को हंसा याने हसने का कारण कहो तव सारी सभा वोली कि महाराज यह माया ईश्वर की है हम लोग तो यह जानते नहीं जिस आगम की गम है सो जाने तव ऐसा सभी ने कहा तव राजा ने सव विद्याविसारद को वुलाया जव ब्राह्मण आया तव राजा ने पूंछा कि मछ हंसा सो कहो तुम्हारा नाम जव विसारद है सो अपना नाम सार्थक करो यह सुनि ब्राह्मण वोला यह अजान वात है देवताओं को दुर्लभ है तिस्से शास्त्र देख के कहेंगे आज से पांचवें दिन इसका उत्तर देंगे तव राजा ने कहा पांचवें दिन न कहोगे तो वेइज्जत करूंगा नगर से निकाल दूंगा तव ब्राह्मण वोला जो आज्ञा करोगे सो करेंगे ऐसा कह ब्राह्मण घर आया और निहायत सोच में होकर शास्त्र में देखा लेकिन इसका उत्तर न पाया तव तो मन में दूना सोच ऊवा कि अवप्रतिष्ठा गई और देश भी छूटा और देश से न जाऊंगा तो प्राण जायगा ऐसा विचार अन्न जल त्याग किया तव वेटी वाल पंडित की पिता को दुःखित देख कर हे पिता इतना सोच तुम काहे को करते हो मेरे आगे सव वृतांत कहो तव वाल पंडित ने सव वात कह सुनाई और कहा मुझे इसका उत्तर नहीं आता तू कहे सो करूं तव वेटी वोली पिता शास्त्र की वात जो है सो तुम से छानी नहीं परन्तु त्रिया चरित्र का विचार तुमने ना किया तव

ब्राह्मण बोला। वीरराजा ने मुझे बुलाके पूछा कि ये मच्छ क्यों हं
सा सो कहो उसका उत्तर कोई न आया इससे चिन्ता है यह वा
त सुन बेटी बोली कि पिता यह बात तो कुछ है नहीं इसकी चिन्ता
तो मत करो राजा से जाके यह बात कहो कि इसका उत्तर मेरी बे
टी देगी यह सुन कर ब्राह्मण बहुत खुस हुवा और राजा के पास ग
या सब वृतांत कहा। फिर राजा ने बाल पंडित से कहा मच्छ क्यों
हंसा सो कहो तब बाल पंडित ने हाथ जोड़ राजा से कहा मह
राज आप राजा हैं फिरते देर नहीं तिस्से कहा नहीं जाता उस वक्त
श्लोक पढ़ा। काके सत्यं प्रोच्चे द्यूतकारेषु सत्यं क्लीबे धैर्यं मद्यपेत
त्वचिंता सर्पे क्षांतिस्तु कामो विशांति राजामित्रं केन दृष्टं श्रु
तं वा १ उस वक्त सब पंडितों ने कहा। त्यजे देकं कुलस्यार्थे ग्राम
स्यार्थे कुलं त्यजेत्। ग्रामं जनपदस्यार्थे आत्मार्थे पृथ्वीं
वीत्यजेत् २ तब पिता मन में विचार किया कि इस का उत्तर
न आवे तो मारा जाय इस्से देशांतर जाइये बेटी के कान में क
हा तब बेटी बोली। श्लोक। विद्यावतां महात्मानां शिल्पनार्थं
वशेषतु सुरानां सेवकानां च नाश्रयः पार्थिवं विना १ इतना क
ह पिता को समझा कर राजा से बोली महाराज तुम ब्राह्मण के
आश्रय हो लेकिन स्त्री के चरित्र का जानो पूछने योग्य नहीं परं
तु भारत में कहा है। श्लोक। राष्ट्रकोहरया हेन एकादशाच भूपतिं
पंचानामपि यो भार्या न सा एकांति मानुषी। १। बोले हे बाल
पंडित तूने कहा सो मैंने जाना परंतु इसका उत्तर अवश्य देना
चाहिये मन में संदेह मत कर मैंने माफ किया तब उस समय
बाल पंडित सभा में सब बात विचार कर यह श्लोक क
हा और बोला मच्छ यों हंसा सुनो। श्लो०। राज्ञी स्पृशति नोम
स्यान् मतानपि महा सती पुरुषाख्या सती राजन् हसता

सफरी क्रवं॥१॥ परिमाव्यस्तया राजन् स्तोको थेयं सदाहि मूढपाररायया देव यदि पच्छति मापुनः २॥ इसतरह बाल पंडित की पुत्री कह अपने घरगई बाद इसके सभाकेलोग उन श्लोकों के अर्थ का विचार किया तो राजा का माक्रहे सो तो बात रूठी है इस से बाल पंडिता से पूंछे तो यह विचार कर चुप होरहे कि कल पूंछेंगे इसतरह प्रभावती से कहा बाल पंडिता ने दूसरे से कही थी सो फिर कहो यह सुन सो रही॥५॥

छठी कथा ६। फिर छठे दिन सिंगार कर पर पुरुष के पास चली उस वक्त सुक बोला हे प्रभावती बालपंडिता ने राजा को कैसा समझाया सो कहो तब प्रभावती बोली मैं नहीं जानती तुम कहो तब सुक बोला हे प्रभावती तुम चित्त दे सुनो जब दूसरा दिन हुआ तब राजा ने बाल पंडिता को बुलाया और पूछा कि हे बाल पंडिता उस का अर्थ कहो तब बाल पंडिता बोली कि राजा उस का अर्थ मत पूंछो जो पूछोगे तो सुमंत नाम बनिक की स्त्री पद्मिनी से पश्चाताप होगा तिससे पूंछो मत तब राजा ने कहा पद्मिनी के पश्चाताप किस तरह हुआ सो कहो तब बाल पंडिता बोली हे राजन् चंद्रावती नाम नगरी थी तिसका राजा चंद्रप्रभा तिसके गांव में सुमति नाम बनियां रहता था तिस की स्त्री पद्मिनी है सो वह सेठ धन हीन हुआ और बुद्धि हीन हुआ यहां तक लकडी बेचने लगा बहुतदिन गुजरे कि ऐसा पानी एकदिन बर्षा कि लकडी न पाई सबेरे बन से फिरते २ एक मंदिर मिला देखा तो श्री गणेशजी का मंदिर है और तेलसिंदूर खूब लगा है मन विचारा कि बिभुक्षिताः किं न करोति पापं ऐसा विचार के बोला कि मूरत फाड़के आज बेचके कुछ लीजिये ऐसा मन में सोच किया कुल्हाड़ा ऊंचा किया कि इतने में श्री

गणेश जी प्रसन्न हुए और कहा कि सुमंत जो वर मांगेगा सो दूंगा तब सुमंत बोला कि दो दिन से फाके से हूं भोजन देउ तब गणेश जी ने कहा पांच रोटी और गुड़ घी इस द्वार में से ले जाया कर परंतु यह बात किसी से कहियो मत जो कहेगा तो उस दिन से न मिलेंगी यह कह पांच रोटी दीं सुमंत घर ले आया और भोजन किया ऐसे हमेशः ले आवे और भोजन करे एक दिन सुमंत की स्त्री पद्मिनी ने अपनी पड़ोसिन मंदोदरी को एक रोटी दी देख कर वह बहुत खुश हुई और एक दिन पूंछने लगी कि हे सखी यह रोटी कहां से आई है तब पद्मिनी बोली मैं नहीं जानती मेरा घरवाला हमेशः लाता है मंदोदरी ने कहा तेरा धनी कैसा प्यार करता है जो तुझे यह बात न बताई जान पड़ता है कि तू उसको प्यारी नहीं है तब बोली कि आज पूंछूंगी मंदोदरी ने कहा कि तू संसार संजोग समय हठ करके पूंछना ऐसी बातें कर घर में आई राते के समय पति सों इस तरह बोली कि आज पूंछती हूं जो तुम न कहोगे तो मेरे तुम्हारे लड़ाई होगी तब पति बोला जो तू पूंछेगी सो कहूंगा तब बोली कि यह रोटी रोज कहां से लाते हो तब बोला प्यारी यह मत पूंछ जो पूंछेगी तो पछतावेगी वह सुनकर बहुत गुस्सा हुई उसने विचारा कि कहों तो मुशकिल न कहों तो जो भवितव्यं भवित्येव होनहार अमिट है आखिर को पति बोला कि मैं एक दिन लकड़ी को गया देखा तो मूर्ति है और सेंदूर लगा है तब विचारा कि मूरत फाड़के बेचूं यह सोच कुल्हाड़ा उठाया वहीं गणेश जी प्रसन्न हुए जो वर मांगे सो दूंगा तब मैं ने कहा जीव का दान कीजिये तब बोले कि पांच रोटी हमेशः लिया कर परंतु कहेगा तो न दूंगा तब मैने कहा कि काहे को कहूंगा यह करार किया उसी दिन से मुझे रोटी देते हैं यह सुन दूसरे दिन मंदोदरी से सब वृत्तांत कहा मंदोदरी ने अपने भरतार से सब हाल कहा और

यह कहा कि तु मजाउ भरतार कुल्हाडा लेकर गणेश जी के पास ग
या और कुल्हाडा उठा कर मारने लगा तब गणेश जी बोले जो
तू कहेगा सो करूंगा इतने में वह वानिया आया और उस को
देखते ही गणेश जी ने हाथ उस का बांध कर खूब लकडे से मा
रा इस में उस की स्त्री ने देखा कि देर भई पति नहीं आया चलि
के देखूं जाकर देखा तो बंधा है तब पूछा कि किसने बांधा है तब
पति बोला कि मेरे वचन ने बंधवाया है जो मैंने तेरे आगे
कहा तब पद्मिनी ने श्रीगणेश जी की बहुत स्तुति करि के
प्रसन्न किया गणेश जी बोले कि तेरे भरतार को रोटी मिल
ती थी तूने मंदोदरी को दिई अब तेरा भरतार मुझसे रोटी लेक
र मंदोदरी को देवे तो छोडूं पद्मिनी ने कहा जो कहोगे सो करूंगी
इस सुमंत को छोडो फिर पद्मिनी बहुत पछिताई स्त्री पुरुष
और मंदोदरी का भरतार आपने घर आया तब बाल पंडिता बोली
राजा अर्थ पूछोगे तो ऐसे ही पछताओगे इस तरह प्रभावती से
शुक ने कहा कि तू भी पछतायगी यह सुन प्रभावती सो रही॥

सातवीं कथा॥ फिर सातवें दिन प्रभावती सिंगार करे पर
पुरुष से रति को चली शुक ने कहा जाती हो तो बाल पंडिता ने रा
जा को क्या उत्तर दिया वैसा जवाब आवे तो जाउ नहीं तो मत जाउ प्र
भावती बोली बाल पंडिता ने राजा को जो उत्तर दिया सो तुमही कहो
शुक बोला बैठो तो कहूं प्रभावती बैठ गई शुक कहने लगा राजा ने
बाल पंडिता को बुला के फिर पूछा मच्छ क्यों हंसा पंडिता बोली
कि राजा स्वर्ग की वेश्या का सा पश्चाताप होगा राजा ने कहा वह
बात कहो बोली कि राजा वक्र नाम नगर था तहां वीरसेन राजा
राज करता था वहां सब ब्राह्मण बसते थे उसने बिचारा कि पिता
का उपजाया धन कहां तक खायंगे इस से आप भी कुछ कमाइये

तोभि इतर है ऐसा विचार करके परदेश को चला वहां जाकर एक वन खंड देखा और वहां जोगेश्वर लोग बहुत है तिन के आगे हाथ जोडकर प्रणाम किया और खड़ा रहा इस तपसी की ताली लगी थी दोपहर के बाद जो ताली खुली देखा तो एक ब्राह्मण खडा है जोगेश्वर बोले क्यों ब्राह्मण ऐसे हो तब विप्र बोला हे तपस्वी मैं द्रव्य चाहीं नहीं मैं तो अनिथ हो आप के दरशन की अभिलाषा थी तिससे आया हूं तब तो ब्राह्मण को देख बहुत खुश हुवे और योग वढा दिया और यह कहा कि पांच सो मुहर देगा किसी से कहना मत और जो बतावेगा तो बात जाती रहेगी और मेरा मेरे पास आजायगा ऐसा कह जोग वडा दिया ब्राह्मण प्रणाम कर आगे चला रत्नापुरी में गया जहां स्वर्ग का नाम वेश्या रहती है उस वेश्या से आशनाई किया और उस के घर रहने लगा उससे भोग करे जो द्रव्य पावे उसे दिया करे सिद्ध की आज्ञा से द्रव्य का टोटा नहीं एक दिन वेश्या ने विचारा कि यह धन कहां से लाता है तब विप्र से पूछा कि तुम द्रव्य कहां से लाते हो तब उसने सब गति कही सुन के विचारा जोग वडा किसी ढब से लीजे इतना विचार अपने मन में बात रक्खी जब यह ब्राह्मण सूत गया तब कमर खोल लेलिया और प्रभात होते ही वह देखे तो जोग वडा नहीं तब तो वडा सोच किया पीछे शहर में पुकारा कि वेश्या ने मुझे लूट लिया इस तरह कहता २ राजा के द्वार पर गया और पुकारा तब राजा ने वेश्या को बुलाया वेश्या की माता बोली महाराज ब्राह्मण झूठा है इसके द्रव्य कहां से आया मेरी वेटी के ऊपर आसक्त हुवा है झूठा तूफान लगाता है योग वडा इसके पास न था यह बात निहायत वुरी है ऐसा कह ब्राह्मण को झूठा किया और जोग वडा उसी मुनीश के पास गया वेश्या के पास भी न रहा इससे हे महराज मैं सांच

कहोंगी तो ब्राह्मण और उस वेश्या की सी गति होगी जोग बडा भी गया और प्रीत भी न रही इस से वह वात जाने दे हव न कर और प्रभावती से सुक ने कहा तो सर्ग के शव की कथा कही राजा से विदा मांगी अपने घर को गई प्रभावती सुन के सो रही॥७॥

आठवीं कथा ८

आठवें दिन प्रभावती सोलहा सिंगार करके पर पुरुष के साथ रति को चली उस वक्त सुक से कहा हे सुक मैं जाती हूं तव तोता बोला श्रेष्ठ वात है परंतु वाल पंडिता ने फेर केजो राजा को उत्तर दिया सो कहो प्रभावती वोली तुम्ही कहो मैं नहीं जानती तव वोला कि राजा ने वाल पंडिता को वुलाया और यह कहा कि अर्थ वताओ तव वाल पंडिता ने एक वात और कही कि राजा एक विक्रम नाम वनियां तिस की सुंदरी नाम स्त्री थी सो वहुत व्यभिचारणी थी जैसे वह स्त्री अति भ्रष्ट भई उसी तरह होंगे जो इसका अर्थ सुनोगे फिर राजा ने कहा मछ क्यों हंसा सो कहो तव वाल पंडिता ने एक वात और कही कि राजा त्रिपुर नाम नगर था वहां का विक्रम नाम राजा था उस गांव में सुंदर नाम वनियां है उस के सुभग नाम स्त्री थी सो व्यभिचारिणी पराये पुरुष विन रहै नहीं एक दिन भरतार वजार को जाता था उस वक्त उस का गुण जाना स्त्री को वो भ घर में जर के गया जव वो गया उस वक्त घर सूना भया जिस घरी दूती आई स्त्री ने विचारा कि उस पुरुष से संकेत है तिस से मुझ को ह दिया फिर उस स्त्री ने दूती से कहा कि मैं उसके पास जाती हूं पाछे से घर में आग लगो कर आइयो यह कहि आप तो गई और दूती ने घर में आग लगा दिया और चली गई पीछे से भरतार आया जो देखे तो जरता है तव पूछा कि किसने आग लगाई है तव परोसन ने कहा तेरी स्त्री ने आग लगाई है इतनी

बात सुन कर स्त्री को त्याग दिया और वह सुभगा देवी के मंदिर में गई थी सो वाह ने तिरस्कार किया अतो भ्रष्ट हुई और बहुत पछिताई इसी तरह हे राजा अर्थ पूछ कर पछ ताओगे ॥ इतनी बात सुन प्रभावती सो रही ॥

नवीं कथा ९

फिर प्रभावती नवें दिन सिंगार करके पर पुरुष के साथ रति को चली उस वक्त शुक से बोली मैं जाती हूं तव शुक बोला अच्छी बात है परंतु बाल पंडिता ने राजा को जवाब दिया सो सुन कर जाइयो प्रभावती बोली अच्छी बात है कहो तवे शुक ने कहा कि राजा ने बाल पंडिता को बुला के कहा कि वह वार्त्ता कह तब बाल पंडिता ने बहुत समझाया परं तु राजा के मन में न आया तब पंडिता बोली जो पुष्पहांस मुंह तिसका परवार बुलावो वह हंसेगा तब उसके मुंह से फूल गिरेंगे वह बात प्रसिद्ध है तुम को मत्स्य हंसे की बात समझावेगा तब राजा ने उस को बुलाया सब कुटुंब आन हा ज़िर हुआ उस वक्त स्त्री पुरुष बहुत इकट्ठे हुए किस बात मन में आश्चर्य है कि फूल कैसे झरेंगे सो देखें तब राजा ने कहा हे बाल पंडिता पुष्पहांस हंसता क्यों नहीं तब बा लपंडिता ने कहा कि इस के मन में भय है कि मैं ने क्या अ पराध किया है कि जिस से हंसता नहीं तब राजा को बहुत दिलासा दिया और यह कहा कि महतो बाल पंडिता की ओ र देख के हंसो कि राजा अजहूं न समझे ऐसा कहके हंसा उस वक्त फूलन को ढेर हो गयो बाल पंडिता हू हंसी तब रा जा बोला बहुत क्यों हंसा तब महंता ने राजा से कहा परका छिद्र प्रगट न कीजिये। श्लोक ॥ अर्थनाशं मनस्तापं गृहे दुश्चरितानि

निच। वचनं चापिमानंच मतिमान्न प्रकाशयेत्।१। महाराज इतने में न समझो तो प्रगट कर कहता हूं कि मेरी स्त्री पर पुरुष से रमन करते देखी तिस से मुझ को बहुत हंसी आई काम लीला को देख हंसी आई देख राजा मैं हूं सो तिस को तेरी रानी को बहुत अचरज हुआ कि इस के आगे फूलों का ढेर हुआ है रानी को राजा देख फूल मारा फूल के लगते ही मूर्छा आई उस वक्त महता ब्राह्मणी की तरफ़ देखा कि यह मूर्छा नहीं आई इस को काम व्यापा है तिससे गिर पड़ी है तब महता बहुत हंसी बोली कि एक विसाला नाम नगरी तहां केराजा सुदर्शन नाम तिसके गांव में विमलनाम बनियां है सो इस को पहले भी कह आये वही है।९। दशवीं कथा १० ॥

दशवें दिन प्रभावती सिंगार करके पर पुरुष के पास रतिको चली सुक से बोली मैं जाती हूं सुक बोला अच्छी बात है परंतु सिंगार देवी कीसी बुद्धि हो तो जाइयो तो प्रभावती बोली सिंगार देवी ने कैसी बुद्धि की सो कहो सुक ने कहा राजापुर एक नगर है तिसका राजा रत्नेश्वर दैत्य नामा है मुग्ध उसके गांव में वसता था तिसकी स्त्री सिंगार देई महा व्यभिचारिणी रही एक दिन दैत्य नाम बुद्धि का बेटा लेवे को गया था उस वक्त सिंगार देवी ने सक थार को बुलाया तिस से काम क्रीड़ा करने लगी नग्न हो कर उस में पति को आते देख और यह विचारा कि या कि ऐसा किया जिस से लज्जा रहे उस वक्त नग्न हो पति के सामने नाचने लगी तब भरतार ने कहा यह क्या भया जो नाचती है तब सिंगार देवी बोली कि ऐ मूर्ख मेरे पैर में कांटा लगा है मैं भागा देवी हूं तू नहीं जानता तैने मुझे दुख दिया मैं तेरी स्त्री को मारडालंगी इतनी बात सुनते ही मल उठा लिया और भागा तिस वक्त अपने यार

से भोग कराय के उसे सिखावन दिया आप कपड़े पहर के बैठ र
ही इतने में भरतार आया स्त्री से पूछा कि देवी तू नग्न होके क्यों
नाचती थी तब बोली कि हे भरतार मुझे तो खबर नहीं कि क्या
बात हुई वह देव माया हुई इस से मैं कुछ न जानी इतनी सुन
कर भरतार की चिंता मिट गई इस तरह सिंहार देवी केसी करे
तो जाउ नहीं तो मत जाउ इतनी सुनके फिर सो रही॥

ग्यारहवीं कथा ११

फिर ग्यारहवें दिन सिंगार कर पान खाय के चली उस वक्त सु
क से बोली हे सुक मैं जाती हूं तब सुक बोला कि जो रंभा ब्राह्म
णी तरह चतुर रस आवे तो जाउ तब प्रभावती बोली कि सो कह
क्या हुआ तब सुक ने कहा कि एक भांडलीपुर नगर था
राजा भीम नाम राज करता था तहां त्रिलोक नाम एक ब्राह्मण
था तिसकी रंभा नाम स्त्री थी और व्यभिचारणी थी पर पुरुष
से प्रीत बहुत करती परंतु भरतार के भय से कोई कुछ कह न स
कता था एक दिन पानी भरने को गई तहां एक पथिक आ
वते देखा रूपवंत गुणवंत और जवान है उसे देख उसके मन
में आई कि इससे रति कीजिये उस के मन में भी आई कि रंभा सों
रति करों तब रंभा ने कहा पथिक मेरे संग आओ लेकिन कुछ
न बोलियो मत मेरे चरित्र देख उसका भी मन राखो और तेरा भी
रंभा ऐसे कहि घर ले आई उस वक्त घर के पति ने पूछा ये कौन
है तब उसने घड़ा धर बोली कि मेरी मौसी का बेटा विद्याविलास है
मुझ से मिलने को आया है तब ब्राह्मण बोला इनको बैठाओ अ
च्छी तरह से भोजन करावो स्त्री ने वैसेही करा इतने में राति
हुई त्रिलोक ब्राह्मण घर का धनी ऊपर जाकर सोता रहा और वि
द्याविलास नीचे सोता जब पहर रात गई जब रंभा विद्याविलास

के पास आई और कहा कि अपना मनोर्थ पूरा कर तब ब्राह्मण बो
ला कि तूने कहा मेरा भाई है अब कैसे करें इस में दोष लगता है इससे
नर्क गामी होता है तूही अपने मनमें विचार कर वहिन कर भोग करूं
ये बात कभी न होगी भोग न किया पर वह न मानी रंभाने कहा। श्लो०
यनोहि दुर्लभा रामा पितृभर्तृ परायणा। पितृमई मातृभूत्वा भेक्षव्या
कामनी नरैः।१। हे मूर्ख कामनी दुर्लभ है माता पिता भर्ता जिनकी
रक्षा करे सो आप से आवे और भोग न करे सो नर्क गामी होता है। श्लो०
कामनीं स्वयमायातां योन भुंक्ते नितंवनीं। सोवस्यं नरकं याति तत्र
श्वासतो नरः।१। काम पीडित स्त्री आवे और पुरुष भोग न करे
तो नर्क में जाय अरे ब्राह्मण तू बडा मूर्ख है आगे प्रद्युम्न ने माता
की वेटी से भोग किया यह तो आगे से चला आता है इससे देखे
नहीं इतना कहा पर उसके मन में न आई तब रंभा को गुस्सा आ
या और ये कहा कि देख तो मैं क्या करती हूं इतना कह चोक में आ
ई ऊंची आवाज से रोई और कहा कि देखरी परोसन मेरे भाई को
त्रिदोष हुआ जो मरजाता तो मेरे माथे अपयश होगा इससे सब
देखो इसके घर के कहेंगे कि इसने मारा होगा इतना सुनके ब्रा
ह्मण को दबक गया तब रंभा आग लेकर दीवा जलाया आगसे से
का इतने में पति आया और परोसी सब आये अरी रंभा तू काहे को
रोती है तब बोली मेरे भाई को त्रिदोष आगया है इस से रोती हूं आग से सेका
तब अच्छा हुआ है इस बात को सबों ने सच जाना फिर सब से कहा
कि तुम लोग घर जाउ अब अच्छा होगया सोता है सब को बिदा किये
अपने नाम से इस तरह एक महीना रख और अच्छी तरह भोग
कराया पाछे सब से बिदा हो कर अपने घर आया जब २ आवे
कोई पूछे नहीं इस तरह की तेरी बुद्धि हो तो जा नहीं तो मत जा यह
सुन सो रही।।२१ बारहवीं कथा १२

फिर वारहवें दिन प्रभावती सिंहार कर पर पुरुष के भोग करने को चली तब सुक से वोली हे सुक मैं जाती हूं तब सुक वोला अच्छी वात है पर भोगा कुम्हारी ने जैसा अपने भरतार को जवाव दिया वैसी करतूत है तो जाउ नहीं तो क्यों लाज गंवायो तव प्रभावती वोली उस ने कैसा उत्तर दिया सो कहो तब सुक वोला कि एक नवलग्राम है तहां नरपति नाम राजा है तहां महाघन नाम कुम्हार वसता है ताकी स्त्री का नाम भोगा है अति व्यभिचारिणी एक दिन उसका भरतार घर नहीं था उस समय एक पुरुष को वुलाय वासों रति करने लगी ताही समय भरतार आया तव वहां करी जो वाको वावल पर चढ़ाय दियो नामी वरयो वरतु डर को मारो खिसल परो और भागो वा समय पति वोलो यह कौन है स्त्री से पूंछो तव स्त्री हंसी कि आज वड़ो अचरज भयो ये जो मनुष्य है याको राजा के आदिमी पकरने को आये थे तव ये भागो कछु न वनी तव अपने घर में आय छिपो इतने में तुम आये उन जानो वेई आये तव वावल पै चढ़ो हलवलाय के कपड़ा हू न पहर सको ता सों मोकूं हंसी आई तव कुम्हार वोलो तूं साँची है सुक वोले ऐसो जवाव तुरत आवे तो जाउ इतनी सुन प्रभावती सो रही १२

तेरहवीं कथा

अब तेरहें दिन प्रभावती कामक्रीडा को चली और सुक सों कही हे सुक मैं जाती हूं सुक वोला अच्छा परंतु निरतक ब्राह्मण कीसी वुद्धि उपजे तो जाउ नहीं तो मत जाउ तव प्रभावती वोली सो कहो तवसुक वोले कि विपावंत नाम राजा हतो तहां राव ब्राह्मण नामकामी हतो एक दिन तलाव गयो तहां एक रूपवंत वनी ती देखी वासों कह्यो मोसों रति कर तव वाने नाहीं की तथापि पीछे गयो वारीत स्त्री का घड़ा उठाइवे को पास गयो वा समय कुच मर्दन कि

यो अवुधन कियो वडी वार ताई ताही समय वानियां आय गयो देखा तो कही ये काम अछो नहीं है खवर परैगी मैं दरवार में पुकारेंगो तदनो ब्राह्मण डरो और अपने आसन पास गयो वितर्क नाम ब्राह्मण सों कहो जो मैं कुकर्म करता वने नीसे उस का धनी आया उनकही राजा के आगे जाय पुकारोंगे तासों तुम्हें पूंछता हूं कि मैं कहा करों तव वितर्क कही कि हां हां कहियो और वच २ कहियो यह वात सिखाई ताही समय राजा के आदमी आये पकर ले गये जव वहां गयो तव सव पूंछो तो हां हां करो फिर वच २ करने लगो तव सव ने कहा कि यह वावरो है याको सुभाव यही है तासों कछु मत कहो जो ऐसो मन आवे तो जाउ इतने सुन प्रभावती सो रही॥ चोधवी कथा १४

फिर १४ वें दिन प्रभावती सिंगार कर रति करने चली तव सुक बोला जाती तो हो परंतु जा रीआवे तो जाउ जैसे वल्लभा ने साहस करा तव प्रभावती बोली क्या साहस किया सो वताओ सुक ने कहा एक प्रतिष्ठा नाम एर तहां का राजा देवपाल तहां सुभकरन नाम वानियां तिस की स्त्री वल्लभा थी एक दिन सुभकरन स्नान को वैठो ताही समय वल्लभा एवार सों संकेत कहती तव पति सों चतुराई सों बोली जल नहीं है नहायगो काहे सेक हो तो तलाव सों भर लाऊं तव पति वोलो अच्छी वात है इतने में वल्लभा चली सो संकेत अर्थ लगाई जासों मनोर्थ हतो सो पूरो कियो तामें पहर एक लग्यो इसने विचारी जो मैं अव जाऊंगी तो कहेगो तू कहा रही तव कहा उत्तर देउंगी तासों यह विचारी जो वहुत आदमी पानी भरते हों तहां चालिये विचार कर वहां गई देखे तो वहुत भीर है उहां भरने लगी ताही समय गिर पडी इतने में सुभकरन को कहने लगे कि तेरी स्त्री

गोहर में गिर पडी है तब तो रिस मिट गई है वहां को चला देखे तो सोंच है तब निकार के पूछा कि कैसे गिरी वल्लभा बोली जो मो को लाज बहुत थी यहां भीड हवी तासों गिर पडी याते यह सकल गो सुनके घर ले आयो हे प्रभावती ऐसो साहस होय तो जाउ इतनी बात सुन सो रही॥

पंद्रहवी कथा १५

फिर १५ वें दिन प्रभावती सिंगार करे पर पुरुष के पास रवि को चली तब सुक से बोली हे सुक मैं जावी हूं सुक बोला अच्छा पर सिंगारदे पाणी सी मति उपजे तो जाउ तब सुनकर प्रभावती बोली कहो तब सुक बोला एक नागपुर नाम नगर है ताको राजा नरसिंह महतो ताके गाव में धनपाल बनिया है ताको वधू सिंगारी नाम है बडो चतुर परंतु धनी मूर्ख था ओर पुरुषन को बुलाय रति करे परंतु पति न जाने एक दिन अपने पति को जिमावत हती सो समय आयो जानो तब बारी में सो झांकी ताही समै नेत्र सो समस्या कोकि तू चल मैं आई यह कह ताही समय बुद्धि उपजाई जो पांव सों घी डारि दियो सब गिर गयो ता समय देखि पति बोलो जोरू चोंके घाउ जो तो ले आइयो ता समै घी के मिस चली गई वासे नीके प्रकार रति कियो पहर एक बीतो तब मन में विचारी कि पति रिस करेगो तब बुद्धि विचारि के चोहट में वेरी गोदी में धूर बहुत भरी ता में घीव डारि दियो और रोवत चली आवत ही देखी तो भरतार बहुत कोप कियो इतने में जो देखे तो स्त्री रोती आई है तब तो रिस उतरि गई और पूछा तू क्यों रोवती है और तेरी गोद में क्यों धूर भरी है तब स्त्री कहने लगी जो तुम ने कहो सो वगले आवती सो दोरी गई जाके सौदा लिया लेकर चली ताही समय ठोकर लगी सब गिर धूरे में मिल गयो जब उठावन लगी तासों देर लगी जब न उठो तब ले सब समेट लाई यह बात सुनि रिस दूर भई तासों प्रभावती

जो ऐसी बुद्धि उपजे तो जाउ नहीं मत जाउ इतना सुन प्रभावती सोर ही ॥१५॥

सोरहवीं कथा १६

फिर सोरहवें दिन प्रभावती सिंगार कर पर पुरुषसों रति को चली ता समय सुकसों पूछी हे सुक मैं रति को जाती हूं तब सुक बोला कि अच्छी बात है परन्तु रुक्मनी कीसी बुद्धि उपजे तो जाउ तब प्रभावती बोली कैसी बुद्धि उपजी सो कहे तब सुक बोला एक बिसला नाम नगरी विजै सेन राजा राज करता था तिस के गांव में धर्मदास सेठ वसता है ताकी स्त्री रुक्मनी भरतार सों कपट कर अति नेह राखे जो वो जाने पति व्रता है अपने धर्म में सावधान है एक समय भरतार परदेश को गयो पाछे वसंत ऋतु आई कामोद्दीपन भयो ता समय दूती को बुलायो और कहा मैं रति करना चाहती हूं कोई पुरुष ले आ अच्छा तब दूती कही अच्छी बात है यह कहे किसी पुरुष को ले आई वह बड़त चतुर थी देखकर बड़त खुश हुई सनेह कीनो वह नित्य आवे रति करे बड़त प्रसन्न रहे एक दिन मित्र सों लड़ाई भई गुस्सा भई ताही समय रुक्मनी की चोटी काट लई फेर जात रहो ताही दिन भरतार आयो तब पूछो कहो राजी हो इहां बैठो तब कही जो न्हाइ आऊं पूजा कर आऊं तब बैठोंगी ऐसा कह पूजा को घड़ी २ लगाई पास आई भरतार सों मिली तब भरतार पूछो जो चोटी कहां तब स्त्री बोली जो तुम परदेश गये थे सो देवी को मानो जो मेरा पति जा दिन आवेगा ता दिन तेरी पूजा करौंगी सो पूजा कर चोटी चढ़ाई तब तुमसों मिली भरतार खुश भयो जो ऐसी पतिव्रता है और मोको बड़त चाहत है ताते प्रभावती ऐसी बुद्धि उपजे तो जाउ नहीं तो मत जाउ इतनी कथा सुन प्रभावती सोरही।

सत्तरहवीं कथा १७

सत्तरहवें दिन फिर प्रभावती सिंगार करके भोग को चली तासमें शुकसों बोली हे शुक मैं रति को जाती हूं तव शुक बोला अच्छीवात परंतु साहवदे को नेवर उतार लियो तव वुद्धिकरी फेर लियो जो है सो वुद्धि हो तो जाउ तव प्रभावती बोली कि केसी कीसे कहो तव शुक बोलो एक विसाल नाम नगरीथी तहां विजय सेन राज करते हतो वहां समरत नाम वानियां वसत हे ताकी स्त्री जयंती ताको पुत्र गुणाकर नाम वड़ा चतुर प्रवीण हे निसंक काहू को संका नहीं सव घर के जानें पर पुरुष सों रति करे एक दिन पर पुरुष सें रति करती हती ता समय ससुरो जाय पांव को जेवर उतार लियो साहवदे जानी जो ससुरो उतार लेगयो तव आप सांची होने के लिये भरतार पास आई सोई रुरुकोर के जगायो तव उठो तव वोली मैं तुम सों क्या कहूं परंतु कहो चाहिये जो तुम्हारा वाप जेवर उतार लेगया मैं तुम्हारे पास सोती थी यह वात सुन के क्रोध भयो जो वहू सों ऐसी हंसी क्या यह तो वात लाज की थी तव जाय आपने वाप सों कही जो तुम को ऐसी न चाहिये जो वहू के पांव को जेवर उतार लियो लाज नहीं आई तव पिता सुन लज्जित भयो और यह कहो जो यह वात काहू सों कहियो मती मैं चूको इतनी कह के वर दियो वेटा ले गयो वहू को दियो और कही काहू सों कहियो मत देखो ऐसी निर्लज्ज ससुर को लाज आई परंतु वहू को लाज न आई जासें प्रभावती जो ऐसी वुद्धि उपजे तो जाउ इतनो सुन सोरही॥

अठारहवीं कथा १८

फिर अठारहवें दिन प्रभावती सिंगार कर पर पुरुष के पास चली और शुकसों पूंछी मैं जाती हूं तव शुक बोलो वहुत अच्छहे परंतु सगा विगारी की सो वुद्धि उपजे तो जाउ तव प्रभावती बोली केसे सो कहो तव शुक बोलो विशाल नाम नगरी विस्नु सेन राज करता था

तिसके गांव में वल्लभ वानियां रहता था तिसकी स्त्री सुगंधिका महा व्यभिचारिणी थी चौहटे में रहे उसे सब कोई जाने काहू के सारे नहीं रखी देवस पुरुष सों रति करे काहू को कहो माने नहीं सदा वाहर सोवे सब ने कहा पर माना नहीं तब सब मिल राजा पै पुकारे कि हमारी बहू मानती नहीं तब राजा को हुक्म भयो जो कोई रात्री को वाहरे रहेगा सो राजा का सजावार होगा यह नगर में डौंडी फेरी सुगंधिका तो सदा वाहर रहे जब यह बात सुनी तब तो रात्रि घी४ पांच ताईं रही यार से मिलाप करि याके आई तो पति ने किवार देलिये बहुतेरा पुकारी परंतु कोई बोलो नहीं तब उसने बुद्धि उपजाई जो तुम नहीं खोलते तो मैं पडुंगी ऐसी कह एक वडा सा पत्थर लेइके कुए में डारा बुनिया के भरता ने धमका सुना कि कुए में परी यह सुन किवार खोला वाहर निकस कुवा देखने लगो ताही समय सुगंधिका घर में बैठी किवार दे लिये और सोर ही तब भरतार पुकारो कि किवाड खोल बोली नहीं खोलूंगी बहुत वार ताईं पुकारो तब यह कही जो आज पीछे मेरो नाम लेय नहीं तो खोलूं तब भरतार बोलो कि नाम नहीं लेउंगा हाथ जोड पांव पड़ा वचन दिया तब घर में आवन दिया तासों प्रभावती ऐसी बुद्धि उपजे तो जाउ इतनी सुन सो रही ॥

उन्नीसवीं कथा १९

फिर उन्नीसवें दिन प्रभावती सिंगार कर पर पुरुष से भोग करने को चली शुक सों पूछी हे शुक मैं जाती हूं तब सुक कही जो तेरे मन में आवे सो कर शास्त्र तो यह कहता है। श्लो० दृष्टिपूतन्यसेत्पादं वस्त्रपूतपिवेज्जलं। सत्यपूतवदेत् वाक्यं मनःपूतं समाचरेत ।१। जो मन में आवे सो करो परंतु गुनाढ्य नामा ब्राह्मण मन की सी जान्यों कियो तैसे तुम हू करो यह सुन प्रभावती कही

सो कहो तब शुक बोलो हे प्रभावती एक विशाला नाम नगर विज यसेन राजा राज करता था वहां जाऊक ब्राह्मण ताकी स्त्री सरूपा थी ताको छुराकर माता पिता को छोडकर परदेश गयो जयंती नगरी में जाय पहुंचो बनजारा को रूप धर लियो जो मैले वस्त्र एक थैला में खांड लगाई शहर में फिरने लग्यो तब लोगों ने जाना कि बनजारा है तहां एक मदन वेश्या है ताकी दासी ने पूछा तू कहां से आया वह बोला मैं बनजारा हूं खांड बेचने को भाव पूंछत हों राजा सों मिलोंगे जगात देखें तब तो दासी जानो जो धनपात्र है ये जान आदर कियो और घर में राखो वहीं रहो वेश्या जानो धाना ढ्यहे यासों द्रव्य लीजिये यह जान सनेह कीनो रात को संग सोई पहर एक रात रही तब वाको जेवर रुपये २००७ को उतार लियो और भागो देश को गयो जब सबेरो भयो मदना वेश्या जागी देखे तो खांड को थैलो हो वह नहीं है और गले को जेवर नहीं है बहुत सोच कियो पछताय बैठ रही जो ऐसी बुद्धि हो तो जाउ नहीं तो मत जाउ इतनी सुन सो रही।

बीसवीं कथा २०

फिर बीसवें दिन प्रभावती पर पुरुष सों रति करने चली ता समय शुक सों पूछी हे शुक मैं जाती हूं शुक ने कहा अच्छा परंतु गोभिल्ल वीसावो केसी बुद्धि हो तो जाउ बोली सो कहो तब शुक जी बोले एक परमवती नगरी है वहां का राजा पुरुषोतम उसके गांव में दरिद्र बनिया चोरी को पैठो वहां देखा तब गजी वांसफिरत है कछु न मिला केवल चार सेर सरसों पाई ता समय धनी जागो पुकारो ताही समय राजा के सिपाही आये चोर पकरो पास निकसी राजा के पास गये सब जगह कहत फिरे जो चोरी करेगा ऐसी गति होगी तब गोभिल नांच २ हंस २

कहा मैं न मरोंगो मेरी रक्षा वडी भई तव राजा सुन अचर
ज मानोजे मरे क्यों नहीं तव राजा ने पूछा तू कोंन मरेगा
पराये धन मूसा तू मारा जारा जाइगा तव यह वोला मह
राज तेरा व्याह भयो तव पांच सेर सरसों वांधी थी अव पां
च सेर भई तासों वडी रक्षा है तव राजा वोलो यह चोर
नहीं चली है याको छोड देउ राजा की आज्ञा से छोड़ दिया प्र
भावती जो ऐसी वुद्धि उपजे तो जाउ इतनी सुन सो रही॥

२१ वीं कथा

फिर २१ वें दिन प्रभावतीं सिंगार कर रति को चली तव सुक वोला
जो जावो तो खोचा वनिये की सी वुद्धि उपजे तो जाउ नहीं तो म
तेजा प्रभावती वोली सो कहो तव सुक कहने लगा एक करह
र नाम नगर है गुणप्रिय राजा है तां गांव में सोज वनिया वाकी
स्त्री कतिका है पतिव्रता है परंतु वाकर परोसन महा गरीव है
परंतु साडा के मन में नहीं तासों कहे वनें नहीं एक दिन सो ढायना
की सेवा को गयो ता समय परोसन गई किसी से आगन कीनो
ता समय स्त्री ने वुद्धि विचारी कि कुछ इनको दीजिये वोली कि
भाई यो निठाई वाड़ अरु मोहर दो लेउ पर एक काम हमारो क
रो सहर में ऐसे पुकार के कहो एक वेल चरत है ई को कोई धनी हो
य सो लेजाय इतनी वात कहु आवो तुमारा गुन मानेंगे इतनी सु
न जाय पुकारो ताही समय सोढा की स्त्री सुनी मन में चिंता कीनी
जो वडो अनर्थ भयो विचारी जो यक्ष के मंदिर में से वरू की परोस
न कर्म सोंपरो यह जानि वुद्धि उपाई अपनी नंद की मतई जगा
य साथ लीनो और लरका गोद में लियो सव कहे जो कहां जाती है
तव वोली यक्ष की पूजा के लिये जाती है सवने कहो अच्छो का
ले है जाउ ताही समय दोऊ जनी यक्ष के मंदिर में गई।

वहां देखे राजा की चौकी है तव भीतर जान लगी तव चौकी
र वोले राजा के चौर या में हैं तू जाय मत तो वो ली उन सें मे
रो काम नहीं में अकेली पूजा कर आवेंगी तव चौकी दार
हो आछे जाव करो तव कहो भलो है। इतनी कह ननंद को
लड़का देगई देखे तो परोसन वैठी है तव अपने कमरा वाको
दियें वाके आप पहर वाको वाहर काढ़ स्त्री पुरुष वहां
व घर आये सवेरे राजा को खवर भई जो मन्दिर में घिरे
लावो तो कोतवाल गयो देखे तो स्त्री पुरुष हैं
उपजी यह क्या वहुत कायल भयो सीख दे अपने घर गयो।
तासों प्रभावती ऐसी बुद्धि उपजे तो जाउ ये सुन सो रही २१

बाईसवीं कथा का प्रारंभः २२

वाईसवें दिन प्रभावती वोली कि हे शुक में जाती हूं तव शुक वोले
एक नटनी को सो जवाव आवे तो जाउ तव वोली कैसे शुकने
कही समर समर मती के तट पर शंख पुर नाम नगर है वहां सु
दर्शन वहां का राजा है तहां सुरादय नट रहे ताको स्त्री कोलिका
गरीव रहे ताके मित्र सुंदू करण ब्राह्मण नदी के तट वाको घर
है महा देव को पुजारी रहे एक दिन परोसन के संग पानी को
गई पाते पाछे देखने को चलो। तव कोलिका परोसन से क
ही जो पार जाउ यार है वासों भोग कर आऊं तुम घर जाउ
ऐसा कह घड़ा पै चढ़ तिरती २ पार गई वासो कोलि कर प्रसन्न
कियो पाछे घर आई आते ही देखो पाते परोसन के
सों खड़ो है अव आंखन संज्ञा सों वताई तव कोलिका सों
वोली कोलिका तू अच्छी वात कीनी शिव के दर्शन
पाते की उमर वढी मोको वहुत चिन्ता थी पांच दिन
ताई जाइ तो वृद्धि पावे तव कोलिका वोली जो पाते जी वेतो

१० दिन जाऊंगी तब ये बात पति ने सुनी प्रसन्न भयो जो मेरी
री स्त्री पतिव्रता है ये जाने जो जाउहै प्रभावती सुनसोरही

तेईसवीं कथा २३

फिर तेईसवें दिन प्रभावती राति को चली सुक से कहा हेसु
क मैं जाती हूं आछो मंदोदरी केसी बुद्धि उपजे तो जाउ बो
ली कहो सो कथा तब सुकनो कही एक प्रतिष्ठा नगर है तहा
हेम प्रभा राजा है तहां यशोधन सेठहै ताके मोहनी स्त्री ता
की बेटी मन्दोदरी सो कांति नगरी व्याही है। शिव वत्स सेठसे
एक दिन सेठ सासरे आयो कोई दिन ससुरार में रक्खो स्त्री
के गर्भ रहो पांच मास को भयो एक दिन मन में आई कि
मोर भक्षण कहो एक दिन राजा मोरे को खाई बेरी चुगाइ
र बुलायो पकड़ मारके कबाब कर खायो जब ध्यान को स
मय भयो तब राजा को बेटो बोला मेरा मोर कहां आदमी
देखत फिरे पायो नहीं कुंवर ने डोंडी फिराई कि जिसने मोर
लिया सो राजा का गुनहगार है यह पता बतावेगा ताको
लाख टका इनाम इतनी दूती बुलाई तब कुंभिका दूती हजू
र में आई तब हुक्म भयो मोर का पता दे तब दूती कहा आ
ठ दिन में पता दूंगी यह कह सलाम कर घर आई विचारी
मालन का भेष कर तलाश करूं फूल ले घर २ फिरने ल
गी फिरते २ श्री वत्स के घर आई मन्दोदरी बेटी थी जहां जा फूल
धर सनेह करने लगी मन की बात पूंछी सब सोः कही जो धूर्त के ल
क्षण हैं श्लो० मुखं पद्म दलाकारं वाचा चंदन शीतलं हृदय कर्तरी
युक्तं त्रिविधं धूर्त लक्षणं १ सो तासों पूंछी तेरो मन काहे पै है सो लाउं धौर
मांस में चित है सो कहो ऐसे कह श्लो० कहा एण: कुरंगो शशीन: तितरोला
भैतल मूर्सिभिकौरमावमेशमासगुणधिका १ इतने जो कहो सो लाऊं मन्दोदरी

बोली मोको नाहीं चाहिये तू काहे को खाइ मन्दोदरी बोली मोरको
खाया है दूती बोली मोर कहां पायो मन्दोदरी बोली राजा को मोरखा
यो मार खायो ये सुनके कुटनी राजा पै गई महाराज मैं पतास
ई हूं यह सुन राजा बोला वृतांत कहो कुटनी बोली यशोधर सेठकी
बेटी वाने मोर खायो ये सुन राजा के मन नहीं आई वासों ऐसो का
म नहीं य तू झूठी है मन्दोदरी मेरे सामने कहे तो जानूं दूती बोली सा
मुने कहाय दूंगी ये पिटारी में राजा को लेगई मन्दोदरी के आगे धरी
और ये कही मैं तीर्थ को जाती हूं यामें मेरो माल है तुम धरि राखो यह
कह मजूषा के सिर पर हाथ फेरा कहने लगी तूने मोर कैसे खायो सो म
न्दोदरी सब हकीकत कुटनी बोली मजूषा सुनो तब मन्दोदरी जानी य
में कुछ है तब कहा अरी तूने सांच जानी मैंने सुपने की बात कही
ऐसो देखो तब जागी इतनो सुन कुटनी को मन बिगर गयो मजूषा
को लेके निकरी राजा के घर आई राजा गुस्से हो कुटनी के नाक का
न काटलिये इतन बुद्धि उपजे तो हे प्रभावती जाउ इतनी सुन सो रही
चौवीस्वी कथा २४॥ फिर चोवीसवें दिन रात को चली शुक से पूछा मैं
जाती हूं शुक बोला अच्छी बात परंतु मीडिका सो उत्तर आवे तो जा
उ तब बोली समझा के कहो शुक बोला उमिला गांव में दानसील
राजा है तामे सोमदास कर सुनी है ताकी स्त्री मीडिका सो मह
ग़रीब राह चले एक दिन सोमदास खेत गयो वाके खाने को भात
रोटी ले चली सो राह में सूरपाल यार मिलो वासों भोग कर
ने लगी रोटी भात धरन लागी मन में विचारी कउवा लेजाइ तासों
ऊंची टांगि राखी इतने में मूलदेव मणवादी आयो रूख सो भात उ
ठायो और ऊंट के मेंगन भरदिये रात होचुकी तब देखी नहीं वैसी ग
पति के आगे राखो जो पति देखे तो ऊंट के मेंगन हैं पति बोला
कहा तब मीडिका बोली रात में सुपना देखो सो तुमको भाखो नहीं तास

ऊंट का लेंडा लाई इनके खाने से कष्ट मिटेगा इतना सुनलेंडा खाये स्त्री को सती जाना जो इतनी बुद्धि हो तौ जाउ इतनी सुन सोरही

पच्चीसवीं कथा २५

फिर २५वें दिन प्रभावती बोली हे सुक मैं जाती हूं राति को सुक ने कहा अच्छा परन्तु धूर्त कुटनी कैसी बुद्धि उपजे तौ जाउ प्रभावती सो कहो शुकेनोक्तं चंपापुर नाम नगर है सुदर्शन राजा हैं चंगा र सुंदरी सखी राम चन्द्र प्रधान चन्द्रसेन साहु प्रभावती भार्या ता को राम सिंह वर्ष को वेटा था तहां कुटनी वाश में रहे हरामजा दी है ताको साहु बुलायो कहो तुम्हें हजार मुहर देवेंगे जो मेरे वे टा को विचक्षण करदे तो खुश करों यह सुन कुटनी बोली शाहजी तेरे बेटा को ऐसी पढ़ाऊं जो हारे नाहि ये कह जो हर मुहर लीनी औ र बेटा को लीनी अपने घर गई वर्ष राखे अपनी कला सिखाई प्रवी न किया पिता को सौंपो पिताने प्रवीन जान संगल दीप व्यौहार को भेजो वो गयो वहां कलावती वेश्या हती वाके घर एक वर्ष रहा बद्ध चतुर त भयो तव एक दिन राम सिंह वेश्या से कही ऐसी वेश्या कोई नहीं जो के मुझे वस करे तूने वस कीनो ये सुन कलावती अपनी मांसे कहा जो ऐसा कहत परंतु महा धूर्त है वस नहीं यासे कोई तरह द्रव्य ली जै। ये अपने घर जाइगो या सो प्रपंच कीजे जव ये जाय तव तू कहिये मैं भी चलूंगी और नहीं तो प्राण जायगा ऐसे विचार कीजो इतने में राम सिंह आयो और कहा मैं अपने देश को जाता हूं ऐसुन रोवनल गी मोको भी ले चल नहीं तो प्राण त्यागन करेंगी यह विचार कीनो वाकी महतारी आई यों कही तू काहे को करत है ताही समय रामसिंह विचारे कि याने विचारी है सो करेगी तासों द्रव्य का लालच छोड़ दीजे इ त्यादि अपने घर गयो पुत्र को देख पिता बोलो खेद मत कर अच्छी है ऐसा कह पुत्र को धीरज दयो तव पुत्र संगल दीप की बात कही तब पिता पुत्र को समझाय

पाछे कुटनी को बुलाया वो: कि मेरा पुत्र संगलदीप को गया था सारा द्रव्य दे आया भला पढ़ायो सो हमारी वने सुफली क्व कुटनी बोली मेरे संग पुत्र पठायो देखो कैसे काम कर आऊं कलावती लीनो सो द्रव्य लाऊं इव नी कह संगलदीप को सिधारी तहां कुटनी चांडाली को भेष कियो पहले रामसिंह को समझाये एक दिन रामसिंह कलावती के बैठो हो कुटनी चांडाली को भेष धरवे वेश्या के घर गई देखो तो वो वेश्या पलंग पर बैठी है देखते ही आगे आई ठाढी भई और बोली शाह के बेटे मेंने अब तोको पायो तू बडो चोर है मेरा द्रव्य चुराया खवर में राजा सों पुकारूंगी दोऊन बंधाऊंगी ये कही पूंछो वेश्या तू कौन है रामसिंह बोले मेरी माता है याको मूस केलाओ तो को दिया ये कही तव कुटनी को भीतर बैठायो वाके पायन परी वाही समय कुटनी ने लात दीनी तबतो हाथ जोडे और कही द्रव्य देतो छोड़ं वाने द्रव्य दीनी लेकर घर आये बेटा और द्रव्य शाह को सोंपी जो ऐसा जवाब आवे तो जाउ दूतनी सुन प्रभावती सो रही २६॥

सताईसवीं कथा प्रारंभः २७

फिर सताइसवें दिन प्रभावती रात को चली शुक सों बोली मैं जाती हूं शुक बोला आछो परन्तु सोरठों कैसी बुद्धि उपजे तो जाउ तब कहो कहो कैसे तब तोता बोला शंख पुर नगर है तहां सोमेश्वर राज करता है तहां धन सेठ ताकी स्त्री सोहनी अति चंचल है कोई नगर में छोडो नहीं परन्तु दिया हित ब्राह्मण सों नित्य क्रीडा करनी तब पति ने क्या किया अकेला छोडा नहीं तब सोहनी ने दूती को काहे पठायो मित्रसें ये कहियो कि तू आइयो रातको क्रीडा करेंगे एक दिन ब्राह्मण रात को गया देखे तो स्त्री पुरुष सोते है तो कहा काम कियो एक ओर पति दूसरी ओर आप जा सोयो तासमय पति छाती पर आप हाथ धरके देखे तो दूसरो

हाथ है हाथ पकर चोर कर पुकारो और कही दीवा करो स्त्री बोली मोकूं डर लगता है और तू हाथ को पकडी वो तो भाग गयो पति दीवा ले आया देखो तो पड़ा को हाथ है तदखिसियानी हो सोहनी बोली स्वामी यहां चोर नही तुमको भ्रम भयो वात बनाय दीना पति चुप रहो ऐसी माति हो तौ जाउ इतन वात सुन सो रही॥२७

अट्ठाईसवीं कथा २८॥

फिर अट्ठाइसवें दिन प्रभावती सुकसो वोली में रति करने जावी हूं सुक वोला अेष वात हे परंतु देवकी कासा उत्तर देउतो जाउ तव वोली कैसे भई तव सुक वोला कुसुम नाम पाढ कुंवर पाल राजा है असकरन कुनवी मूर्ख है ताकी स्त्री वड्डत गरीव प्रजा करण ब्राह्मण से आसक्त एक दिन सवने कुनवी से कही तेरी स्त्री ब्राह्मणसे है सुन संकेत रूष पे चढ वायो देखने लगी देवकी अभा दोउ रमण करत हैं दुष्टजान ऐसा कर्म करता है देवकी ब्राह्मण को छोड़ नहीं तो वड्डत क्रोध भयो रूष से उतरो तो पति को देख वार भागो तव देवकी वोली जो पति क्या है जो तेरे देख रातकर गयो अकार छुडावा नहीं तो पति वोला में तो न देखो स्त्री कही या में भूत है जो मोसों कुकर्म कीनो पति वोलो मोसों लडे तो भूल नहीं तो रूष स्त्री वोली में रूष पर चढती हूं यह कह रूष चढी पुकारी लो या में देव है जो समझलो तो पुकार के कहो तो ब्राह्मण भूत को रूप धर कुनवी को पछाड़ा ऊपर से वोली यही मेसों भोग कियो यो सुनते ही ब्राह्मण वो भाग गया स्त्री उतर आई पति वोलो जो सांची है ये कह घर सोहे प्रभावती ऐसी वुद्धि हो तो जाउ इतना सुन सो रही २९

तीसवी कथा ३०॥

तीसवें दिन प्रभावती रति को चली शुक से कहा जाती हूं शुक बोलो मंगल अस्तु मूल देव मंत्र वादी उत्तर आवे तौ जाउ बोली कहो शुक बोलो एक समान है तामें भूत दौरत हैं एक कर दूसरो उतार दोउन में झगरा परो दोऊ आपस में यह कहें जो अपनी अपनी स्त्री की अच्छी करतहै कोई तामें नहो तास मध मूलदेव मंत्र वाही आयो तासों दोऊ बोले हमारा झगड़ा तुम चुकावो मूल देव बोला तुम्हारा झगड़ा क्या है तब कहा स्त्री कौनकी अच्छी तब विचारी सांची कहूंगो तो खायगो तासों मनमे विचारी और ये कही जाको स्त्री प्यारी वाकी स्त्री प्यारी अच्छी है तब दोऊ राजी भये तब सो ऐसी बुद्धि होजाउ सुन सो रही॥३०॥

इकतीसवीं कथा ३१

फिर इकतीसवें दिन प्रभावती रति को चली शुक बोले जाउ परंतु सुबुद्धि काग की सी मति हो जाउ तब बोली कहो शुक बोला मगध देश में पंचक वन वहां अनेक दिन तो चंपा के रुष पर बुद्धि काग और वाके तरे चित्राग हिरन रहे दोनों में प्रीति थी वहां हिरन को काहु स्यार ने रुष्ट पुष्ट देख अपने मनमें विचार किया यासों प्रीति करों तो याको मास खैबे को मिले यह विचार हिरन के पास आ बोला मित्र तुम कुशल रहते हो मृग कही भाई तू कौन है वाने कही हों क्षुद्रबुद्धि स्यार हूं या वन में मित्र कर हीन हों निरबंधु अकेला वस तहों आज तिहारो दरशपायो मेरे जी में जी आओ अब तिहारे पायन तरे रहिहों संग लगो सांझ भई तब सुरंगो अपने आश्रम को चलो आयो साथ भयो निदान चले २ यहां आये जहां मित्र जाको काग है स्यार को काग ने देखा मित्र यह कौन है मिर्ग कही ये स्यार है और मोसो मित्रताई करतहे काग कही परदेशी से मीत न कीजे कही

है जाको सील सुभाव है आश्रम न जानिये तासों प्रीति न कीजि
ये और नीति तो यों है कि अपने घरमें वास न दीजे ये वातसुन
स्यार क्रोधभयो बोलो मित्रजा दिन हिरन से मित्रताई करीवा
दिन तिहारो कुलसुभाव कहा जानत हो जो मिलवैठो ताते अपनोप
रायो कहनो मूरखन को काम है पंडितन कोतो सब अपने ही है
जैसे मृग हमारो मित्र तैसेई तुम और भलो बुरो व्यवहारही से जाना
जाता है मृग कही मित्र विवाद क्यों करत हो जिते दिन रहे तितेई दि
नसही अपनी२ चिन्ता सब उदर की करत है ऐसी भांति वहां रहन ल
गो एकादिन स्यार ने कहा भाई मृग हमतेरे लिये जौ का खेत देख
आये हैं सो मेरे साथ चलियो सो गयो चरने लगो रोज ऐसे जाय
चरे एक दिन खेत के रखवारे ने हिरन को देख फंद रोप्यो जो चर
न को गयो फंद में परो कहो अव मित्र विन कोन निकारे है स्यार
फांसी देख खुशी भयो मेरे कपट को फल आन मिलो रखवारो मां
स लेगो हाड़ फेंके गो हाड़न को हम खावेंगे ये खुशी मृग ने
जानी मेरे दुखसे व्याकुल है पर यह न जानी कपटी है और स्या
र को दृष्टि देख मृग कहो तू नाहक फडफडात है और ऊवा सो ऊ च
जाल तो तांत का है और आठ दिन को उपवास है सो रांल से के सव
रे और व्रत होतो चिंता नहीं बहुत विचार किये इतने में रात विती
त भई और वहां सुबुद्धि काग जागो मृग को देखा नहीं रात को न
हीं आयो अब कहीं देखो यह कह चलो आगे देखे जाल में फं
सो है काग कही मित्र यह क्या है सुना है तू मेंतेरो कहो न मा
नो ताको फल है काग कही तेरा मित्र कहां है मृग कही वो मे
रे मांस का लोभी यहीं होगा काग कही आपने सो साध
सुभाव सब ही को जाने दुष्ट जात का यही सुभाव है जो वातें क
रे भलाई की वा दबुराई करे हितकी रीत सों प्रीति न करें क

पट कारी कुमारग वतावें अवसर पाय घात करें जैसे माछूर पीठ पाछे पीठ आय कान सूं लाग समय पाय डंक मारे तैसे ही दुष्ट मनुष्य ताते में कहत हों वैरी को विश्वास कवहू न कीजे ऐसी वात सुन मृग ठंडी सांस ले वोलो जो झूठी वात कहें और कोवु री करत हैं तिनको भार पृथ्वी कैसे सहत है ऐसे वतलाते थे तो तों रखवारो आव देखो कागने कहा मृतक होरह जव में पुकारो त व भागियो यह सुन वैसाही किया रखवारो मृग को देख वोले यह तो मर रहो याको कहा मारें आगे परो जान वंधन खोल उठावे त्योंहीं काग वोलो मृग भागो तव रखवारे ने ख्याल कर ल करी मारी सो [illegible] मूड में लगी लाग नहीं स्यार प्रमात मरो और ठौर कहा है कि तीन दिन तीन रात तीन मास तीन वर्ष में पुन्य पाप का फल मिला है ऐसी बुद्धि हो तो जाउ इतना सुन सो रही॥

वतीसवीं कहानी ३२

फिर वतीसवें दिन प्रभावती ने सुक सों कही मैं जाती हूं सुक वो लो अच्छी वात है परंतु धूर्त कैसी बुद्धि हो तो जाउ वोली कहो सुक वोले जो पिंगल नाम एक सिंह वन में रहिता है महदुष्ट है वहुत जीव नाश करता है ऐसे वहुत दिन जव भये वहां के जीव सव दुखी भये सव हाथ जोड विनती कर वोले महार ज तुम हमारे राजा हो हम वहुत दुखी हैं तासो एक जीव नित लीजे और सव की रक्षा कीजे सिंह ने मानी सव सुखी भये नि त्य अपनी वारी से जाय सिंह खुशी भयो एक ससा को औसर आयो स साने मन में विचारो याको वध कीजे ऐसे विचार सवरो दिन वित यो जव सांझ भई तव वो गयो जो देखे तो सिंह वहुत भूखो है वासों क्रोध करो ता समय ससा आगे जायके खड़ो भयो तव सिंह वोलो देर कहे लगाई तव वोलो महाराज मैं आयो हों मो पर क्रोध केहें पर कान्हे

मैंने अपराध किया है परन्तु विपति सुनो मैं आप के पास आवत
हों तासमय राह में देखो तो कुवा पर एक सिंह राजत है तब मैं डरि
यो इतने में मोको घेर लियो मैंने हाथ जोडे कि राजा पिंगल के
पास जाता हूं तब उन कही पिंगल कौन है जो मेरे आगे ठाडो
रहै तामों मैं तुम्हें जाने न दूंगे तब मैं विनती कीनी और सोगंद
खाय के आयो हूं मो करो और यह तब तो तुम्हारो राजा शरीब
मारवे वारो है मेरे पास आवे तो मैं समझाऊं यह सुन के पिं
गल नाम सिंह उठ के गर्जे और बोलो कहां है तब ससा कुआ
पै ले गयो और कह्यो कुआ में है ये सुन सिंह कुआ में झांके
ज्योंही अपनो प्रति बिंब देखतेही बहुत गर्जना की सो कुवा में कू
दो देख ससा बहुत प्रसन्न भयो सब निर्भय हुवे इतना सुन सो रही

चौतीसवीं कथा ३४

फिर चौतीसवें दिन प्रभावती राति को चली सुक से पूछा मैं जा
ती हूं सुक बोले रंभिका केसी बुद्धि हो तो जाउ बोली सो कहो सु
बोले शंख पुर नाम नगर है सिद्धेश्वर राजा जाको शिव पूजा से
अति रत है ताके गाव में एक शंकर माली है ताकी स्त्री रंभिका
सुन्दर है परपुरुष से भोग करती फरती है एक दिन शंकर माली
के पिता को श्राद्ध हो तादिन अपने कुटुंब बुलायो ताही दिन रंभने
अपनो यार न्योतो वडे भा सवारो मध्यान के समय जारो आये ति
न्हें स्नान कराये बैठाये तिन के आगे खीर खांड धरी सो बैठे नीके
खाय ता समय वनिया के बेटा ने खीर को फूंदीनी सो सबने सुनी
जान्यो यहां सांप है यह जान जारो माने तब तो शंकर स्त्री सों पूं
छो ये कौन है स्त्री बोली जाको सराध करत हो सो तुम्हारे पुरुष
हैं ते अच्छा आद्ध जहां सो दर्शन दियो तब शंकर प्रसन्न भयो
ऐसी बुद्धि हो तो जाउ नहीं तो मत जाउ इतनी बात सुन सो रही॥

पेतीसवीं कथा का प्रारंभः

फिर पैतीसवें दिन प्रभावती राति को चली सुकसे पूछी मैं जाती हूं सुक बोला श्रेष्ट बात है परंतु गुणदत्त कीसी मति उपजे तो जाउ बोली सो कहो तोता बोला मनोरा नगर है मनोहरदास राजा ताके गाव में गुणदत्त बानियां है सो निर्धन रहे तेल को व्योहार करत है एक दिन तेल बेचने को धीरपुर में गयो तहां सागरदत्त सेठ है ताके घर गयो सेठ बोला ले आ यह सुन तेल बेंच दियो हमारे तेल मन पांच है तूं लेगा सेठ बोला ले आ यह सुन तेल बेंच दियो तब तो सागरदत्त ने कहा तो आज अबेर है तुम रहो यह कही तब वाके घर रहो रातको सागरदत्त अपनी दूकान पर सोयो यहां गुणदत्त ने कहा करी जो रात्रिको उठ वाके घर में गयो वाकी स्त्री सों हंसन लागो तब वा स्त्री ने कहो अपनी मुंदरी मोंह दे तो तोसों भोग करों यह जो कही मुंदरी दई और वाको भोगो सवेरा भयो तो विचारो अपनी मुंदरी ले वाकी विचार की सो सेठ पास गयो सेठ से बोलो मैं तो सो व्यवहार नहीं करहों जो तेरी स्त्री मेरे हात की मुंदरी मंगाई सो देत नाहीं ये सेठ सुनी आदमी को आज्ञा दीनी तू याकी मुंदरी यदि दिवायदे आदमी गुणदत्त के घर में गयो साहनसे कही याकी मुंदरी देदो मुंदरी लेके आयो जो ऐसी बुद्धि उपजे तो जाउ नहीं तो को धक्का खाइ ॥ ३६ ॥

सैतीसवीं कथा का प्रारंभः

फिर ३७ वें दिन प्रभावती सिंगार कर राति को चली तोता बोलो जातो हो परंतु माधोदास कीसी मति हो तो जाउ बोली कैसे सुक बोलो एक ब्रजखंड नगर है ताको ब्रज नाम राजा है तामें माधोदास है सो वो बडो वाचाल है जुवा सदा खेले एक दिन ब्राह्मण देशांतर गया एक गांव में जवासो लियो तहां सुदर्शन दास बनिया वसत है तासों मिले वो ब्राह्मण को बनिया ने घर में अपने राखो और वनेनी व

हा चंचल है सदा आनंद में रहती परंतु लोभन बहुत थी तासे
यह जानी इस ब्राह्मण पास द्रव्य है यासों प्रीति कीजे तो आ
वे यह जान बहुत प्रीति कीनी एक रात्रि को ब्राह्मण को बुला
यो भोग कीनो ता समय यह कही यह मुंदरी हमको देउ य
ह सुन को मुंदरी दीनी पाछे सवेरो भयो तब अंगूठी मांगी
हम को देउ तब यह विचारी वह न आवेगी साहसे कहनो॥ श्लो॰ पा
ठाति काग मन काल मयारयं तो सोदस्मरज्वर मराति पियासते
पतिर्प्यंत वल्लभजना धरग लोभा तस्वा कथ्यते कवि वरे रमिसार के
ति१॥ याते साहसों कहनो उचित है यह विचार साहसों बोलो
अरे साह तेरी स्त्री मेरी मुंदरी देत नाही मैं राज में पुकारोंगो तब शाह
जी बोले कैसी है ब्राह्मण बोले तेरी खाट को पायो फटो हुतो वामें गि
र पड़ी तब काढी सो देखने को मांगी सो अब देत नाही यह सुन
साह विचारो जो राजा के पुकारेगा तो राजा दंड देगा ये विचार अ
पनी स्त्री सों कही ब्राह्मण की मुंदरी दे याको माल राखनो यो
ग्य नहीं यह दुष्ट है येक ह समझाय मुंदरी दीनी ब्राह्मण ले ग
यो ऐसी भांति हो तो जाउ यह सुनि प्रभावती सो रही॥ ३८वी
कथा का प्रारंभः॥ फिर अड़तीसवे दिन प्रभावती राति को चली शु
क से बोली मैं जाती हूं शुक बोला अच्छी बात है परंतु लाला बनिक
कैसी भांति उपजे तो जाउ बोली कहो तब तोता बोला एक कुंदनपु
र नगर है तहां भीमसेन राज कर्ता है मधुर बनिया है ताके द्रव्य ब
हुत रही सो निर्धन भयो विश्वास कोई ना करे भूखे मरन लागो
घर की वस्तु गहने धर परदेश को चलो जाके कमायो बहुत द्रव्य
लायो सब को देनो चुकायो एक परोसन के घर लोहे के बासन
धर गयो सो आय परोसन बोली मूंसे ले गये ये कही सुन चुप
एक दिन वाको बेटा दुकान पर जाय थो सो दुकान पर बैठाय राखे

कोई जाने नहीं तब गांव में डौंडी फिरी जो कोई सेव को देखा हो तो वताइयो जव सवनने कही भूधरने पूछो तववुलाय भूधरको पूछो तवभूधर वोलो लरिका को चील ले गई ये वात कोई माने नहीं तव दरवार में गयो जाय के सव कही कि पांच वर्ष के वालक को चील केसे लेगई या कों मारो तवभूधर वोलो जो आज तांई महाराज लोह मूसान ने खायो है जो मूसा ने लोह खायो तो लरिका को चील ले गई तव भूधरने कहो तव सवने कहो परोसी ने लोह को सव असवाव दियो भूधर ने वो लडका दियो ऐसी मति हो तो जाउ इतना सुन सो रही॥ ३८ वीं कथा का प्रारंभः॥ फिर ३९ वें दिन प्रभावती राते को चली सुकसे वोली में जाती हूं सुक वोलो आछी वुद्ध कैसी मति हो तो जाउ यह सुन वोली कहो तोता वोलो एक नवल पुरा पाटन है तहां नर वाहन राजा है ता गाव में नीच वसत हैं एक बुद्ध दूसरो कुवुद्ध है दोऊ कमाई को चले वहुत कमाई की घर को आये जव गांव के नज़दीक आये एक जगह सवरो गाड आये अपने २ घर लेगये॥ जव सात दिन वीत गये सुवुद्धि वोले हे कुवुद्धि कहो तो आछी वात है ऐसे कहि दोनो कहां गये जो देखे तो धन नहैं तव आपस में लडने लगे सुवुद्धि कहै तूने लियो कुवुद्धि कहे तूने लियो ऐसे रुगरत २ राजा के पास तव राजा ने पूंछो तुम्हारी द्रव्य साथीदार कुवुद्धि वोलो वनदेवी साहीदार है तव राजा कहे जो हम सो कहेगी सुवुद्धि वोलो वन देवी सवन के आगे कहेगी तव राजा ने कहो कल चलेंगे ये सुन अपने घर आये कुवुद्धि ने अपने वाप सों कहो जो वन में एक रूख है उसमें तुम जाय वैठो जव हम कहें वनदेवी द्रव्य किनने लिया तव तुम कहियो सुवुद्धि ने लिया तव तुम कहियो सुवुद्धि ने लियो यह कहोगे तव द्रव्य वचेगी ऐसे कहि दूसरे दिन वहां वापको वैठाओ इतने में राजा आ

यो गांव के सब लोग आये वा समय राजा पूंछो कि वन देवी याको
न लियो है ये सुन कुबुद्धि को बाप बोलो जो सुबुद्धि लियो है ऐसा
वाचा २ दियो ये सुनि राजा बोलो जो कुबुद्धि चोर है तब सुबुद्धि
सो है महाराज एक घरी चुप रह्यो तब कुट्टी जो भली बात है दूत
नी कही सुबुद्धि या रूष के आस पास कांटे की वाड करी आगल
गा दी तब तो कुबुद्धि को बाप पुकारो जो मैं जरत हौं मोको का
दियो राजा सुनी वाको पूंछो तब जो कही कुबुद्धि लियो राजा ने कुबु
द्धि को बांधा और वाको द्रव्य दियो जो ऐसी बुद्धि हो तो जाउ बुद्धि
इतनी सुनि सो रही॥३९॥ ४० वीं कथा का प्रारंभः॥ फिर ४० वें
दिन प्रभावती रति को चली शुक बोलो जाती हू तो विद्याधर ब्रा
ह्मण की भांति कीजो तो जाउ प्रभावती बोली सो कैसे तब शुक
बोलो एक चंपावती नगरी है मदन राजा है ताकी स्त्री सिंगार
सुंदरी ताकी बेटी मदन सुन्दरी है सो राजा को बडी प्यारी है
ताके गरे में एक फोरा भयो सो अच्छो नहीं हो तब राजा ने डोंडी
फेरी जो मेरी बेटी को अच्छी करेगा ताको लाख टका दूं ऐ
से यों बात सुनी तब ब्राह्मणी महाभिल कहो मेरो धणी हा
ल जानत है ये सुन राजा के लोग पकर राजा के पास लेग
ये ब्राह्मण भाजन लागे इसें बांह गही राजा देष के बोले हे ब्रा
ह्मण मेरी बेटी को देख के नीकी करो तो लाख टका दूं ये कही
बेटी को देख ब्राह्मण मन में विचारो कछु करे विना छुटना
नहीं यह विचार रूठो लेप देन लागो वासो नीकी भई ग
रे को फोरा फूट गयो राजा प्रसन्न भयो लाख टका दिये
ब्राह्मण ले अपने घर आयो प्रभावती सो रही॥

४१ इकतालीसवीं कथा॥

फिर ४१ वें दिन प्रभावती रात को चली शुक सो मैं जाती हूं

शुक बोले आछो परंतु बाघ मारी की सी मति हो तौ जाउ बोली
कहो तब शुक बोले स्वस्ति पुर नाम नगर तहां देव दत्त राजा है
ताकी स्त्री अति रौद्र है ताके दो पुत्र है एक २ वर्ष का दूसरा ७ व
र्ष को एक दिन राजा रानी सौं लड़ाई भई रानी अपने बेटा को
ले बाहर चली तौ एक उपाय मन में आयो जो दोनों लड़का को
रुवाय दीनो आप माथो उघारि के बोली अरे लरिको क्यों रोवत
हो मैं तुम को एक बाघ मार देउं वाको तुम खाउ ठाकुर ने जो कही
आय पहुंचे यह सुन चीता बाघ भागे ये रानी घर को अपने आई
तासों ऐसी बुद्धि है तो जाउ इतना सुन प्रभावती सो रही ४१॥

बयालीसवीं कथा ४२

फिर बयालीसवें दिन प्रभावती राति को चली शुक से बोली मैं जा
ती हूं शुक बोले अच्छा परंतु विष्परजानी कैसी मति उपजे तौ जाउ
बोली सो कहो शुक बोलो हंस पुर नाम नगर है राजा हंस ताको पुत्र
सिंगार सुंदर है परंतु नपुंसक है ताकी भार्या रतन सुन्दरी है सो वो
काम पीडित है और बहुत चंचल परंतु वाकी कुछ चले नहीं काहे तें जो
राजा वो: वाके दर्वाज़े में पांचसो आदिमी बैठे रहें तासों कछु बस
लागे नहीं एक दिन नगर में विष्परजनी नायन राजा के महल में
आई आइ के रतन सुन्दरी के पास बैठी देखे तौ रतन की सुन्दरी
दुखित बैठी है तब ये नायन बोली जो तो कूं ऐसो कहा दुख है
तब वो: बोली मेरे पति नपुंसक हैं तासों दुखी हैं जो तू कोई पुरुष को
लावे तौ मेरो मन प्रसन्न होय सुनके नायन बोली मैं लाउंगी इतनो
कह शहर में आई बहुत तलाश कीनी परंतु कोई क़बूल न करे का
हे को रानी है राजा जो जाने तो मार डारे यातें कोई क़बूल न करे त
ब प्रधान का बेटा बोला मो को रतन सुन्दरी को मिलावे तौ तेरे
गुन मानो परंतु मेरे घर लावे तो वाको मनोरथ आछी तरह पूरा होय

सुन कर नायन रानी पास गई रानी से वृतांत कहो तवरानी बोली
मैं कैसे जाउ इहां तो पांच सौ प्यादा वैठे तव नायन कही तू मेरा
कपरा पहन ले और वाके पास तू जा मैं यहां रहोंगी यह सुन रानी
नायन के कपरा पहन अच्छी तरह से भोग विलास कियो ऐसे
कितेक दिन ताईं काम चलो एक दिन कुंवर ने रानी को पुकारो
यह नायन बोली तव तो कुंवर आइ उस्का हाथ पकरा देखे तो हा
थ भारी है तव विचारो येतो कोई और है इतनो विचार छुरी काट
को नाक काट लियो परंतु यह बोली नहीं कुवर मन में विचारो संसा
रखुरी कहेगो यह जानि और ही सो रहो तो नायन अपने घर गई
पिछवारे पति को पुकारो एक छुरा कहे इसने फेंका थे रोई अरे तूने
यह क्या किया वो दौड़ देखे तो उस्की नाक कट गई घर आई रानी
घर को गई भोर होते ही राजा जो देखो बहुत लज्जित भयो सो ऐसी
बुद्धि हो तो जाउ नहीं तो मत जाउ इतनी वात सुन सो रही ४२॥

तेंतालीसवीं कथा का प्रारंभः

फिर ४३ वें दिन प्रभावती राति को चली बोली हे सुक में जाती हूं अ
च्छी कनक सुन्दरी कैसी वुद्धि हो तो जाउ बोली कैसे सुक कही
एक सुभ पुर नगर है सुंदर सिंह राजा रतन सेन कुंवर ताकी क
नक सुन्दरी प्रधान के वेटा सों रति करे एक दिन कुवर आयो दे
खो स्त्री प्रधान के वेटा सों रति करतो जान्यो याके लक्षण आछे न
हीं स्त्री की नाक काट ली तव कनक सुन्दरी किवारे वंद करके सो
रही ससुर आयो जान्यो किवाडे खोलो बोलो नहीं बोली मेरी नाक
वे खता काटी यह कह सूर्य से विन्ती करी मेरी नाक आछी क
रो आछी भई जो ऐसी वुद्धि हो जाउ ये सुन सो रही ४३॥

४४ वीं कथा का प्रारंभः

फिर ४४ वें दिन प्रभावती राति को चली में जाती हूं कहा अच्छा

परंतु चपला ब्राह्मण कीसी बुद्धि उपजे तो जाउ बोली कहो सुक बोला शंखपुर नगर है शिवराज राजा है ताकी भार्या सुभ सुंदरी तहां चारों वर्ण सुखी हैं परंतु एक ब्राह्मण चंपा नाम है ताकी स्त्री कनकावती है बेटा बहुत हैं तीनों आदमी की बुद्धि न्यारी २ है एक दिन एक काम में गयो फिरत रह्यो एक ब्राह्मण मिलो धर्मशील नाम है एक गाय नित्य ब्राह्मण को देते है सो पांचा को ले आयो भोजन करायो एक नाव दीनो पांचा अचरज कियो मन में विचारो ब्राह्मन सौं बोला मैं पूछत हूं जो तुम्हारो द्रव्य कितको है सो रोज पुण्य करत हो तो ब्राह्मण बोलो मैं एक दिन घर से निकसे एक स्त्री हती सेत कपडा पहरे माथे एक गिरी भरा हती आवत देखा ब्राह्मन मन में बहुत खुश भयो जो शगुन आछो भयो तो बोले हे ब्राह्मण हे लक्ष्मी हो तो को घर ने चल तेरो भलो होगो ऐसी कही तब तो मैं नमस्कार कियो घर ले आयो बहुत पूजा कियो वो प्रसन्न भई यह वर दियो जहां तू खोदे तहां द्रव्य निकलेगो इससे मैं रोज पुण्य करत हूं यह सुन विदा मांगी याको घर लायो अब यह जो कोई स्त्री मिले ताके पायन परे कहे मेरे घर पर पधारो ऐसे निरंतर अन्न न खाय राति से उठे अनघट जाय ऐसो पांच सात दिन भयो घर के कहें यह कहा करे पांचो बोली तुम नहीं जानत हो यह कह एक दिन देखे तो एक स्त्री स्वेत कपडे पहरे घर को चली वह उसको नमस्कार कर अपने घर ले आयो पूजा कियो पायन परो घर की रोवन लागी तो गढा खोदो अकुमि करो नहीं डोकरी को बैठाई पांचो के घर आयो वाको पांव पंचानन सों धोयो घर के मानस को कहा सो प्रभावती ऐसी मति हो तो जाउ नहीं तो मत जाव इतना सुन सो रही॥ ४८॥

४९ वीं कथा।

फिर ४६ वें दिन प्रभावती रति को चली शुक से बोली मैं जाती हूं शुकने कहो तब शुकने कहा अच्छा जाउ परंतु बाघमारी कीसी बुद्धि होतो जाउ बोली कहो तब शुक बोले बाघ यह है जो बाघ भाजते जामें एक भाजतो जातहे तहां एक स्यार बोले तुम कों भाजत हो तुम्हें कौन काडर है बाघ बोले एक बाघमारी पीछे आतीहे ताके डर सों भगे जात हों तब स्यार बोलो मामाजी वाको तो मार खाइ ये बाघ बोलो तू जाव मैं तो न जाउं जो मैं आगे चलूं तू पीछे आवो जो तू जाय भग तासूं मैं तोको गले में बांध ले चलूंगो स्यार बोलो बाघ नगर सों बांध के चालो इतने में वो रानी देखे तो स्यार और बाघ आवतेहैं सो मन में विचारी अब के खांइगे तासों कछु बुद्धि को उपाय कीजे तब बेटा सों बोली अब एक तमासो देखो तो जायह सालको हमसों कहि गयो तीन बाघ लाउंगो तामें एक लायो तासों बडो हरामजादो है बाघ ने सुनी भाजो रे स्यार भाजन मोको मरवायो तासों बडो दुष्ट है यह कह भाजो स्यार तुरत डरगयो रानी दोउन बेटा को घर लाई ऐसी मति हो तो जाउ फिर सो रही

४७ वीं कथा॥ फिर ४७ वें दिन प्रभावति रति को चली शुक बोले गले बंधे स्यार की सी मति हो तो जाउ शुक बोलो जब बाघ भाजो स्यार पै भाजो न गयो चोट लगी स्यार हंसो बाघ बोलो तू कैसे तो आयो स्यार बोलो बाघमारी को मेरे लहू मीठो लगे है तासों दूर ले आयो बच्चो नहीं तो खाय जातो तासों मोको छोड़ देउ नहीं तो वाको गेरी बास आवेगी दोउन को खायगो बाघ सांच मानी स्यार को छोड़ दियो सो ऐसी मति उपजे तो जाउ इतना सुन सो रही॥ ४७॥ ४८ वीं कहानी॥

फिर ४८ वें दिन प्रभावती रति को चली शुक सों पूंछो मैं जाती हूं शुक बोलो अच्छी बात पर कुस ब्राह्मण की सी

बुद्धि हो तो जाउ कहो तब शुक बोलो विसालपुर पाटन में शत्रु मदन राजा है ता गांव में कृष्णदास ब्राह्मण बसत है सो महासुन्दर है चतुर है ताको मा बाप छोड दिया कोई स्त्री वाको जीत न सके अपनी स्त्री सों भोग करे और वेश्या सों भोग करे प्रतपाय प्रभावती बोली ऐसो वामे का गुण है तो वह यों बोलो याके गुण सुन कृष्ण दास काम को स्वरूप है एक मंत्र स्तंभन को आवत है तासों जीतत है एक वेश्या ने सुनो एक दिन कृष्ण दास मिलो वासों वार्त्ता करी जो मो सों रति करी मैं काहू ऐसो मदन देखो जासें रति करे तब कृष्णदास बोलो हम करेंगे वेश्या बोली लाख टका देऊ तो करन दूंगी क़बूल करे यह कहा हारे तो मैं लेउ कहा अच्छी बात है यह कह रात जब भई रति करन लागी एक पहर भई तब वेश्या दुखी भई यह कहा मैं हारी तू जीता और अपनी माको बुलाय कही याको द्रव्य देडारो नहीं तो मेरा प्राण जायगा महतारी बोली अपनी रोज़गार है जो यह प्रसन्न होय सो कीजे इतने में पहर दिन की तो दऊने कायल भई कृष्णदास बोले मोको दूनो द्रव्य दे तो छोडूं ऐसे कही डोकरी रूप पर चढ़ कुरग को सी आवाज कही सवेरो भयो तो वाह एक यो देखो तो रात पहर है वासों कही वाने अपनी बहन को सुवाय दी एक पहर वासों भोग कीनो वेश्या ने कही अपनो द्रव्य लेउ मेरो द्रव्य ले के पधारो जब अपनो और उस को द्रव्य ले आयो ॥ ४८ ॥

४९ वीं कहानी।

फिर ४९ वें दिन प्रभावती रति को चली शुक से कहा जाती हूं शुक बोलो कगरा के पति के सी करो तो जाउ सो बोली कहो शुक ने कहा एक विन्ध्य नगर है विजयसेन राजा है तहां ब्राह्मण हरदास ताकी भार्या कगरा सो वह महा कलहारी पति को सदा दुख देय वाके घर में पीपर को वृक्ष है ता में एक भूत है सो एक दिन वृक्ष से

उतर के वन को गयो वहां एक भूत बड़ा है तामें रहन लागो एक दिन हरदास स्त्री में लड़ाई भई हरदास निकसो वन में गयो जा वड़ के नीचे बैठो वह भूत देखे तो हरदास आयो है तब नीचे आके भूत वोले कि हरदास आज बड़ो काम भयो जो हमारे पाहुनो आये तासों यहां भोजन कीजे ये कह मिठाई दीनी और कह्यो तुम हमारे बड़े मित्र हो तुम निर्धन रहे अब तुम एक काम करो जो तुम्हारे द्रव्य आवे एक मृगावती नगरी है तहां मदनसेन राजा है ताकी बेटी मृगलोचनी है ताके मैं लगो हों ताके बाप ने बहुत इलाज किये परंतु मैं छोड़ो नहीं सो तोकू धन दिवायो चाहिये तातें तू वहां जाय मारो दे मैं छोड़ दूं ये कही तो हरदास मृगावती गयो वहां देखे तो गांव में डोंडी पिटी है जो राजा की बेटी को अच्छा करे आधा राज पावे तब हरदास आडो दियो नीकी भई तब हाथ जोड़े जो आप आज्ञा दें बहुत भांति आधीनी की तब तो भूत प्रसन्न भयो अपनो बल मांगो हरदास ने बल दियो बेटी नीकी भई तब आधो राज दियो बेटी दीनी भूत वस कियो अपनो मनोरथ सिद्ध कियो जो ऐसी बुद्धि हो तो जाउ ये सुन सो रही। ४९।

५० वीं कथा

फिर ५० वें दिन प्रभावती तैयार भई तब सुक बोलो जो केसो की सी मति ही हो तो जाइयो बोली हे सुक सो कहो तो ता बोलो राजा को सब को भूत ने दुःख दिवायो ताको भोग आछी तरह कियो और केशव नाम यह कियो जो ऐसे मंत्र वाही को एक दिन करुणावती नगरी को राजा गये राजीन की स्त्री सुलोचना को यही भूत लगो तब सवन कही केशव ब्राह्मण आवे तो नीक हो इतनी राजा सुनी आदमी पठाये आय के केशव को ले गये केशव देखा वही भूत है तब वाके कान में कही जो कंगरां मो कों बहुत दुख देत है ताके डर सों भाजा हों अब शरण तेरी आयो हों जब मेरी रस

कौरिये सुन भूत बोलो रे तेरी वह सदा कीनी पीछा करै मत वा केशव को स्त्री को ऐसे डर है तासों भूत जात रहे रानी नीकी भई राजा प्रसन्न भयो बहुत द्रव्य भयो अपने घर गयो इतनी सुन सो रही ॥

५१ वीं कथा

फिर ५१ वें दिन प्रभावती रति की इच्छा कर चली सुक से पूछा जाती हूं तोता बोले सुकडालके सी अकल हो तो जाउ बोली कैसे सुक बोलो नंदनपुर का राजा मदन कुंवर सुकडाल जाको प्रधान सो धर्मात्मा बुद्धिमान नीत में बहुत प्रवीन सबको वस किया तब राजा अपने मनमें विचारो काहू दिना मार न डारे याको तासें क़ैद कीनो और मंत्री बैठायो सो काम करैं एक दिन बंगाले के राजा ने इनकी परीक्षा के लिये घोड़ी पठई उनको वकील आयो आय राजा को मुजरो कियो सो अर्ज करी हमारे महाराज ने २ घोड़ी पठई है यामें बेटी कौन है सो परीक्षा देऊ महीना १ की आज्ञा तब तो राजा सबन पूंछे परंतु कोई न बतावे महीना बीत गयो तब राजा को बड़ो संदेह भयो जो यह बात न बतावें तो वह कहेगा कि राजा की सभा में कोई अकलमंद नहीं ऐसे बहुत सोच कीना तब सुकडाल को याद किया वह बतावेगा और की सामर्थ नहीं तब सुकडाल बुलायो आयो राजा ने बहुत आदर कियो वाको सिरोपाव दियो दंड माफ़ कियो और आज्ञा कियो जो सभा को तू उरन आयो बता तू याकी परीक्षा इतनी सुन हुक्म मानो माथे चढ़ाई लियो घोड़ी दोऊ बुलायकर जीन दोउन पै धरायो और दोऊ बहुत दौरायेजब पसीना चलन लागो तब ठाडी कीनी ताही समय घोड़ी अपनी बेटी को श्रमित जान माथो संघन लागी कह्यो जो यह बेटी यह माता ऐसी परीक्षा कीनी राजा बहुत खुश भये दोऊ घोड़ी बंगाले में गई बंगाले का राजा बहुत प्रसन्न हुआ इतनी सुन सो रही ॥ १ ॥

५२ वीं कथा

फेर ५२ वें दिन प्रभावती रति को चली शुक से कहा मैं जाती हूं बोला सकडाल के सी बुद्धि हो तो जाउ बोली कैसे तोता बोला एक दिन अंबधर राजा सभा में बैठा था एक लकडी सो वह लकडी रंगीन हती सुंदर थी सो वीरपुर ले वीरसिंह राजा ने पठवाई हती परीक्षा के लिये सो वकील कहो इन को परीक्षा कर देऊ अच्छी है कि बुरी तब राजा सबन को दिया किसी ने आछी कही न बुरी इतने में सकडाल आयो आय राजा को सलाम कीनी तब राजा बोलो कि दीवान यह लकडी राजा वीर सेन ने पठाई है परीक्षा के लिये सो बताओ तब अहता बोलो ये बडे आदमी बैठे हैं इन सों पूछो राजा बोले तुम हीं कहो इन को पानी में डारो बहते में आछी होगी ठहर जायगी बुरी होगी चलेगी इतनी सुन सो रही ॥ ५२ ॥

५३ वीं कथा

फेर ५३ वीं दिन प्रभावती रति को चली शुक सों बोली मैं जाती हूं शुक बोलो गंगला डोगर कीसी करे तो जाउ बोली कैसे शुक बोलो एक चमत्कारपुर नगर है तहां चिंतामन राजा है ताके गांव में गंगलो ब्राह्मण है सो ब्राह्मण विदर्भ देश की देवी की यात्रा को गयो साथ बडो गयो राह में चोर मिले तिन को देख भागे तासमय गंगलो ब्राह्मण को गाजा टर पडो वो न भाजो इतने में नजदीक आयो देख रहो पर छूटो नहीं तासमय गंगलो भकरो भाई बोलो कहां है गागलो बोलो कहो जो चोर लूटत हैं ये सुन कमठा चढाइ अरु हाथ में लियो जो चोर कितने हैं जो हजार होइ तो दो बान मारों जो वेग कहो मैं यह विद्या द्रोणाचार्य जी पै पढी जो एक बान मारों ये सुन चोर भाजे वो घर आये इतना सुन सो रही ॥

५४ वीं कथा

फिर ५४वें दिन प्रभावती सिंगार कर चली सुकसे बोली मैं जाती हूं बोलो जैसे स्त्री केसी केसी मति हो तो जाउ सुक बोलो सत्यपुर नाम नगर था सत्यसेन राजा इंद्रमन राजपुत्र ताके ४ यार हे एक दिन सबने विचारो देशांतर को चालिये देखें हमारे भाग्य में है या नहीं ये विचार निकसे बहुत दूर पहुंचे विचारो कहा उपाय कीजे तब समुद्र के पास गये समुद्र की सेवा की ११ दिन तब तो सागर प्रसन्न भयो और कही जो वर मांगो तब चारों बोले जो हम निर्धनी हैं हम पै ऐसी कृपा करो जो धनाढ्य हों इतनी समुद्र सुन के चार मानक दिये सो प्रसाद कृपा करि दियो सो चारों बांट लिये समुद्र कहो एक मानक अष्ट भार स्वर्ण देगा जो ऐसी सुनी तो प्रसन्न भये वहां से आज्ञा मांगी घर को चले राह में विचारी जो कोई मिलेगो तो कहा करें सो एक काम कीजिये बनियां को सोंप दिये॥ ५४॥

५५ वीं कथा

फिर ५५ वें दिन प्रभावती चली सुक बोलो जाउ जैसे राजा के बेटे प्रधान ने उत्तर दियो ऐसी मति होतो जाउ तब सुक बोलो इलावती नाम नगरी है जलंधर राजा सुशील प्रधान ताको बेटा बुद्धिवंत है सुशर्मा ताको नाम है वो राजा के मन माने नहीं प्रधान ने अर्ज की मेरे बेटा बड़ो प्रवीन है तासे याकी परीक्षा कीजिये बिचारो एक डाबे में राखो भर के प्रधान के बेटा को दियो और कही दमनक देश जाउ मदन सेन राजा के पास जाय के वे देउ वाको जवाब लावो प्रधान के बेटा सलाम करि चलो गयो राजा को सलाम कीनी और डाबा दियो राजा डाबा खोलो जो देखे तो वामें राखी है देखते ही बहुत क्रोध किया कहो ये हाथी हमको क्यों पठई है हम सो ठट्ठा कियो है तो प्रधान को बेटा हाथ जोड़ बोलो महाराज रसा आप को बताय पठावनी है महाराज यज्ञ किये ते सो आप को

पठाई है सो सुन बहुत प्रसन्न भयो सिरोपाव दियो बहुत कुछ नज़र कियो और हाथ जोड़ के यह कह्यो मो पर बड़ी कृपा की यह कह विदा कियो प्रधान को बेटा राजा पास आयो सलाम कियो हाल कह्यो राजा बहुत खुशी भयो ऐसी मति हो तो जाउ सो रही।

५६ वीं कथा

फिर ५६ वें दिन प्रभावती रति को चली शुक बोला जाती तो हो पर श्रीधर ब्राह्मण की सी मति हो तो जाउ बोली कहो शुक बोले वर मुकट नगर है तहां चिंतामणि राजा है ता गांव में श्रीधर विप्र है तहां एक मोची चंदन बसत है तासों श्रीधर ने अपने जूती बनवाई यह कहो मैं तुम्हें खुशी करोंगे यह सुन जूता बनायो ब्राह्मण अधेली देन कहो परंतु खुश न भयो तो चौहटे में आय बोलो चमार राजा के बेटा भयो तू खुशी है कि नहीं तब मोची विचारे नहीं तो मारो जाउं यासें कही खुशी हों ब्राह्मण बोलो मैं ने खुशी कियो इतना सुन सो रही॥

५७ कथा

फिर ५७ वें दिन प्रभावती रति को चली शुक बोले जाउ परंतु धर्मदास की सी मति उपजे तो जाउ बोली कैसे शुक बोले एक चक्रधीर नगर है तहां मनोहर राजा है ताके मानसिंह प्रधान है जाके गांव में एक शील नाम ब्राह्मण है सो महा धनवंत है ताके धर्म एक गुमाश्ता है सो वो नित्य उगाही कर रुपया ले चलो तब राह में चार चोर वाको मिले देख मन में विचारो ये चोर हैं मैं अकेलो ये धन छिड़ाय लेंगे विचारो कला करो तस में जक्षस्थान देखो तहां जाय धन धर दियो कहो महाराज ये द्रव्य फिर आयोगो फिर तो चाहे कहो तो चेर जानो ये पंछ को द्रव्य है तासों मैं मान वाको द्रव्य नहीं लियो उठ गये तो बनियां द्रव्य ले अपने घर आयो इतना सुन सो रही॥

५८ वीं कथा

फिर ५८वें दिन प्रभावती सिंगार कर रति को चली शुक बोलो शुभ करन केसी मति हो तो जाउ सो बोली कहो शुक कही एक धारा नगरी में भोज राजा है सुमति नाम प्रधान बहुत प्रवीन है एक दाव भोज राजा की रानी चंद्र रेखा बहुत चंचल ताको मन पंडित सों घटको शुभकरन अति सुंदर आसक्त भयो एक दिन रानी रतिसमय अ चले दोस्त पंडित के गई सो बहुत प्रसन्न भये भोग किये ऐसे बहुत दिन बीते एक दिन रतिको चलीता समै नष्ट चार्यों को राजा निकरे आगे रानी पीछे २ राजा या या भांति चले तब पंडित यार बोलो रानी भीतर गई भोग किये राजा घर आयो पलंग पर सो रहे कितनी देर पीछे रानी आई पलंग पर सो रही सबेरे भयो राजा सभा कीनी पहर १ पाछे सबको सीख दीनी पंडित को राखो रानी को बुलायो कथा वारता कही आप रा प्रसन्न भयो तब रात की बात पूंछी है पंडित राति को कौन सी बात करी मोसों सांच करो तब पंडित मन में जानी ये जान चुको और रानी हूं भी जानी पंडित ने विचार के एक श्लोक कहो। श्लो। उग्राग्राहा भुरन्वंतो जलमतित्य नालंवने कोमकीउतीदुर्गमिथ्याति मनाप्रस्भा रभो रोहाति व्याति याति विशो: वर्णे रत्नकुले पाताल मेका कीनी कीर्त्तिस्ते मदनाभिरामहतकं मन्ये त्वं योषितां।।१।। श्लोक सुन राजा संतुष्ट भये पाछे मन में विचारो ऐसो पंडित फिर मिलनो नहीं स्त्री तो बहुत मिलेंगी तासों याको दीजे यह विचार बहुत धन दियो मन में संतोष भयो ऐसी मति हो तो जाउ इतनी सुन सोरही॥

५९ वीं कथा।

फिर ५९ वें दिन प्रभावती रति को चली शुक बोला जाती तो हो परंतु दुःसाला केसी बुद्धि हो तो जाउ बोली कहो शुक बोला लोहपुर नगर है लोक पाल राजा है ताको भीमसेन मंत्री है ताके दुःशीला भार्या जो महा गरीब है वाके ४ लगायन सो ये सूत बेचने को

पदमावती नगरी को चली राह में १ गणेशजीको मंदिर है वहां ये चारों जाय दंडवत किये एकतो बोली जो मेरे सूत में द्रव्य मिले तो मैं तुम्हारा भाग धरूंगी दूसरी बोली मैं आपको धूपदीप करेंगी ओर बोली मैं भेट करेंगी४ बोली आपु सों नग्न हो होकर आलिंगन करेंगी ऐसे कह पदमावती नगरी गई आय सूतवेचो सब को नफा भई ऐसे संग सब चली फेर गणेशजी के पास आई आयके अपनी २ कही कीनी ओर दुःशीला नग्न होके गणेशजीको लिपट गई ओर चुंबन कियो तो गणेशजीको काम जाग्यो आलिंगन कियो चुंबन करी होठ मुख में लियो छोडे नहीं वह स्त्री घर गई दुःशीला के पति सों कही तेरी स्त्री के होठ गणेश जीके मुखमें है छोडत नाही तो वो दौरो देखे तो सांच है नग्न है पतिभी नग्न होके स्त्री सों रति करन लागो सो देख गणेशजी हंसे सो मुख पकगयो अपने घर स्त्री पुरुष आये ऐसी मत होजाउ इतना सुन सोरही॥

६० वें दिन की कहानी

फिर ६० वें दिन प्रभावती रति को चली बोली शुक मैं जाती हूं बोलो आछो परंतु रुकमनी कीसी मति होतो जाउ बोलो कहो कहां धनपुर नाम नगर है वहां धनेश्वर राजा है धनपाल प्रधान ओर पुत्र कुवर सेन सो बडो धनुर्धारी शब्द वेधी याकी स्त्री रुकमनी सो स्त्री पुरुष तीर्थ यात्रा को गये राह में बटोई महा सुंदर देखो स्त्री की नजर बैठी पति ने जानी स्त्रीको मन चलायमान भयो ओर व्यभिचारी याको लेजाउं तो धर्मसाधन न होगो यासों अपने घर आयो यात्रा को गयो नहीं परंतु स्त्री को बहुत डाटना करत है एकदिन रातको स्त्रीको सांखी तब स्त्री बोली मनमें जोतेरे पुरुषातन से आगे रति करै तो मेरा नाम है सो आधीरातगये पति सों बोली मैं स्त्री धर्म सों कुपास नरखनी चाहिये मोकूं छोड दे सो पतिने छोड़दी

और वाहर ले गयो वाहर गई तो एक यार मिलो अंद केनीचे वासों रति करन कही पति सों वोली तुम शब्द पर वाण मारत हो ये वडहै याके शब्द होत है तापे वाण मारो ताने वाण मारो लागो और वाण चलाये पाछे देखन गयो तहां देर लागी याने यार सों भोग करायो और वाकी मुंदरी लीनी पहिरी इतने में पति न आयो जो देखत यारसें वोली जो देख मेरो तमासो वन में रति कीनी तोहूं पति न माने तो सुंदरी दिखाई देखतही वडन आरमाथो और कही स्त्री को चरित्र को ऊ जानत नाहीं सो प्रभावती इतनी बुद्धि हो तो जाउ ये सुन सोरही

६१ वीं कथा ॥ फिर ६१ वें दिन प्रभावती रति को चली तव तोता वोलो जाउ परंतु मानक देवी केसी मति हो तो जाउ वोली कहो शुक वोला जयस्थल नगर यशोधर राजा जयचेत प्रधान ताके गांव में वैशाख नामा कुनवी है ताकी भार्या मानक देवी सो गरीव है ताके सूरपाल यार वासों नित रति करै एक दिन खेत को चली पानी लेकर तहां राह में यार मिलो वासों भोग करावन लागो पहले भी कह आये हैं॥ ६२ वीं कथा।

फिर ६२ वें दिन प्रभावती रति को चली शुक वोले जाती तो हो पर रतन देवी कीसी मति उपजे तो जाना श्रेष्ठ है वोली कैसे शुक वोले एक शंखपुर नगर है तहां शंखचूड राजा है एक वनियां तहां है ताकी स्त्री रतन देवी सो एक दिन अपने यार सों कही जो मेरी विद्या देखि पति के संग सोवत रहूं और यार से काम कराऊं एक दिन पीतम के संग सोरही और यार आयो उसे भी एक ओर सुलायो फेर सुखकर यार सों काम करायो जव काम हो चुको तव योनि में से निकासो तासमय वाके पति की पीठ सों इन्द्री लगी तो स्त्री पुकारी जो चोर है इतने में पति के हाथ में यार को लिंग आयो उसने खेंच के पकरो स्त्री सों कही जो तू याको पकरे तो मैं दीवा वार लाऊं वह

कही स्त्री के हाथ में पकराय के दीवा को गयो ताही समय यार को छोड़ के वडोथा की जीभ पकर लीता समय पति दीवाले आयो दे खे तो पडोवा की जीभ लीनी कहे यह कहा तब हंस कर बो ली पति ढिग जो ऐसी काहू की लिंग पकरावोगे तो याही प र ओर २ करत हे पति ढिग स्यानो भयो ऐसी बुद्धि हो तो जाउ।

६३ वीं कहानी

फिर ६३ वें दिन प्रभावती रति को चली शुक बोले जाउ परंतु शंभु ब्राह्मण की सी मति हो तो जाउ सो कहो शुक बोला सिद्धपुर नाम नगर शिवभक्त राजा सुंदर नाम प्रधान तामें शंभुनाथ ब्राह्मण हे महा प्रवीण हे एक समय तीर्थ यात्रा को चलो राह में स्त्री सुंदर मिली परंतु वो लखे मन रहे दोऊ सामूं भये काम व्यापा ब्राह्म ण कहो आवो रमण करे स्त्री बोली विना लिये न करोंगी विप्र के पास सो रतो कुछ न था वाने अपने गरे की कंठी दीनी पाछे भोग कियो काम हो चुको कंठी मांगी में अपने शरीर बेच के लीनी हे सो न दूंगी याको झगरो परो तब वाने कहा काम कियो जो वाके खेत में से सिरा तोर के भाज्यो हां पुकारी ब्राह्मण खेत मेरो लूट लियो जाता हे आगे शंभु पाछे स्त्री चले २ गांव में आये गांव को चोधरी बोला जो कहा हे शंभु बोला महाराज में ब्राह्मण हों तीन दिना को भूका सो ईड़ सि रा मांगे सो ना दीने में अपने हाथ तोड लीने इसने मेरी सोने की कंठी उतार लीनी सो सिरा को मोल लेहु ओर कंठी मेरी दिवाय दीजे वहां कामावती को पिता हता सो वेटी पास सों कंठी दिवाय दीनी॥

६४ वीं कथा

फिर ६४ वें दिन प्रभावती रति को चली शुक बोला जातो तो हो प रंतु सजयानी कीसी मति उपजे तो जाउ वोली कहो शुक बोला जल्ले धरपुर नगर हे जोगसेन राजा जनार्दन महतो देवो दास वनक

ताकी भार्या सजयानी है सो छिनार है जाके दो सौ यार एक दे दोना म यार हे, सो नित्य आवे सजयानी वहुत प्यारी है यह वात धनी जाने कीने स्त्री दुष्ट है ताकी परीक्षा कीजे कहो मैं गांव होय आऊं यह कह दिक रहो रात भई तव देदो आयो भोग कियो इतने में धनी आयो जान के यार सों वोली रे तू मोसों लड़ो ओर यह कही जो उवा पतिके दृ न याही वेर देही ऐसी कही वहुत गारी दई इतने में देदो धनी को दे ख ओर वहुत करन लागो अरे रांड मोको भैंसो देऊ तव स्त्री वोली रेग री काहे को देत मेरो धनी आवे तव लीजो ऐसी कही वाको काट इतने में धनी आयो देख वहुत खुश भयो सो ऐसी वुद्धि हो तो जाउ॥

६५ वीं कथा

६५ वें दिन प्रभावती रात्रि को चली शुक वो ले जावो परंतु श्यामवती केसी वुद्धि हो तो जाउ वोली सो कहो शुक कहन लागे एक संभलपु र नगर है जस राजा नरपति प्रधान ताके गांव में एक सुभकरन र जपूत है ताकी स्त्री श्यामा महा गरीव है एक दिन सुभकरन चाकरी गया दो कोस पै डेरा किया और घर में स्त्री अकेली १ रामरंगी लौंडी पास है जब संध्या भई तव श्यामा बोली हे राम रंगी हे कसो राइ अभ रलेजा किसी उत्तम पुरुष को लेआ। सुन दासी चली सो ऐसी वुद्धि हो तो जाउ सो रहो

६६ वीं कथा

६६ वें दिन सिंगार कर चली तव शुक वोले प्रसन्नता से जाउ परंतु कुसमावती कीसी मति उपजे तो जाउ सो कहो तव शुक वोले चक्रावती नगरी इन्द्रसुहास राजा अमरकुंवर धनद नाम प्रधान ता गांव में विरम वनिया ताकी वेटी कुसमावती पुरुषोत्तम को व्याही थी एक समय पुरुषोतम दास देश को गयो आठ वर्ष रहो द्रव्य कमायो यहां कुसमा वती दिन १० सील प्रतिपालो पाछे निसंक भई मन में आवे सो क रे एक दिन अमोला दासी सों वोली मो को काम व्यापो है कोई

ले आओ मन प्रसन्न होय ये कही ममोला वोली गुस्से न हो तो कहूं बोली कहो ममोला वोली कि एक गांव में कामावती वेश्या रहती है वाके यार को व्योहार है तासें तुम्हारो मतलब है वहां जाउ तो ऐसे पुरुष से मिलेगी सो वोली आज तमासो देखिये सबने कही जो आछी वात है यह सुन ५ मोहर ले वेश्या के घर गई जाके वेठी वेश्या मोहर दीनी और कही जो आछे से आछी स्त्री आवे तब वेश्या लोंडी को और कुसमावती को बुलाइयो जो जरूर आइयो तब लोंडी कुसमावती को सलाम करी वोली कि वीवी आपु को बुलाया है कुसमावती वोली जो कि आज सेठ आवेंगे मैं केसे चलूं सो तू जायु काहि वाको विदा किया कामावती सब हकीकत कही वोली जो तू ये कहो कि मो को चाहे तो आमनी तो मत आवे सुन लोंडी गई तब हाल कहो कुसमावती गई वाने सेठ के पास पठई देखे तो पति अपना है सेठ देखे तो स्त्री अपनी है कुसमावती बात छिपाके वोली कि सेठ जी ऐसे काम करे मैं आज नाई काहू को मुख देखो नहीं तुम परस्त्री सों आसक्त हो अब हो मैं सुनी कि सेठ कामावती पास गये है तासूं आन देखो अब घर चलो यह कही तब सेठ बहुत खिस्यानो घर को आयो सो ऐसी बुद्धि हो तो जाउ इतना सुन सो रही॥

६७ वीं कथा।

फिर ६७ वें दिन प्रभावती रात को चली वोली मैं जाती हूं शुक वोले जाउ राजा जैसे मित्र को दुख भाजो तैसी बुद्धि हो तो जाउ वोली क्या शुक वोले एक जेपुर नगर है मनरंजन राजा मनोहर कुंवर कुमे ओछ प्रधान तामें एक श्रीपाल सेठ है वाको वीर राज बेटा बडो प्रवीन वाकी स्त्री मदन मंजरी सो अति रूपवंत है परंतु पर पुरुष गामिनी एक वनियें से सदा रति करे एक दिन श्रीपाल मृत्यु पायो ताको बेटा एक दिन जेठ के महीने में सिकार को गयो वन में जाय साथी बिछुर गये

भूखो प्यासो दुखी हो एक बनियां मिलो वाने चबेना दीनो खायो पानी पियो जब वा बालक से कही तेरे पास कछु रुपये हैं तब वाने कही हां ४०० रुपये तब राजा ने चार बात कही १ राह में अकेले नहीं चलिये और २ कहे सो करिये स्त्री के आगे गुप्त न कहिये और तोको दुख परे तो मेरे पास आइयो ऐसे चार बुद्धि दीनो चार सौ रुपया लीनो तब राजा बोलो मैं तो पास से रुपया लीने हैं सतायो दीनो ह्वां गो राजा अपने घर गयो बनिया अपने विचारो अकेले न चलिये तिसे एक सहेलो मिलो विचारो सो साथ लियो उहां ते चलो आगे गयो एक बड़ के नीचे जा बैठो तहां एक सर्प निकसो सो काटवे को जव ही तब ही से रड़ो निकस सर्प को मारो इतने में बनिक जागो देख कहन लागो यह रुपये की बुद्धि काम आई इतना सुन सो रही॥

६८ वीं कथा

फिर ६८वें दिन अमीदनी रति को चली छुकवाले जाती हो परंतु जो वीर राजा गांव में गयो तहां के लोग २ मिले और यह कही जो परदेशी एक कहा हमारा बूरो यह मरगयो है ताको वहां लेय आवो तब बनियां विचारो जो पंच कहें ताको कबूल करै तांधी पानी में वह बहायो वा मृतक की कमर में मुहर की वसनी हती सो खोल अपने बांध लियो सांझ को गांव में आयो पंचन ने विचारो जो परदेसी हमारी आज्ञा मानी ताको कछु दीजे और रहिवे को एक घर दीजे यह सुन पटिकाने कोह्रे ये जान १०० रुपये दिये तहां दोला खाट है तहां वीर राजा आइ सोय भए आधी रात गई कि शब्द भयो कि पड़ो २ यह सुनो तब वीर राजा बोलो कि पड़ भाई पड़ सी वैठो होयगो सो सही इतने में सुवर्ण को पुर्ष गिरो मह के आगे तब तो उठाय लीनो कोपरा में घर रा खो उठ अपने घर

की राहली ऐसी मति उपजे तो जाउ इतना सुन सो रही।
फिर ६९ वें दिन प्रभावती चली तोता बोला अच्छा परंतु एक कथा
सुन वनियां तीसरी बुद्धि भूलो सो सुन बोली कहो तोता बोलो वीर
राजा सोने को पुरुष ले आयो स्त्री देखो सोह किया सब बात
पूछो सो वनिक ने कही राजा की बात भूल गयो इतने में एक कासद
आयो बद्धाग दीनी तुमारे बोल जो ६० आइ पहुंचे वो कासिद वह
तयार लाई बात की इतने में वीर राजा पूंछो आप वस्तु आई है
कासद बोलो ककडी के बीज है तुरत उपजे सेठ के मन में आई
तुरत बोये पहर में उपजे प्रसन्न भये अपनी स्त्री को बुलाय तमासा
दिखायो स्त्री बोली जो यह दोनों ऐसी देवें सो कभू सुनी नहीं इतने
में स्त्री को यार आयो तासों कही जो मेरे माल के आठ बेल आये हैं
और एक बीज को टीको आयो है सो तुरंत बोवे तुरंत उपजे तुरत
खाय वाको तमासा दिखाऊं ककडी खवाई स्त्री वंत प्रसन्न भयो अ
रु कहो जो अब तुमसों मिलाय रहो सो तू मेरे घर आवे तो सही
नहीं तो नहीं ये कही तो स्त्री बोली जो कोई उपाय करे तो आऊं तब
श्रीवंत बोलो जो बीज तेरे हैं सुन बीज को कराव ऐसे कह कुछ बीज
ले अपने घर गयो और बीज हते सें करा खे जब सवारी भई तब वीर
राजा कपडे पहन राजा के भेट ले गयो और सेठ बोल को हासिल हो
गयो और श्रीवंत आगे जाय बैठो ताही समय सेठ जाय सा ला
म कीनी राजा बहुत महत भयो बात पूछी भेट लीनी यह बोले कि
सेठ अपूर्व वस्तु कोई आई होय तो दिखावो तब वीर राजा बाज ले
मुंह के आगे राखे और जो कहो तुरत बोये तुरत उपजे ऐसी वस्तु है
तब राजा बोलो जो अब ताई जो जाने नहीं कहा जानियें झूठ साच
तब श्रीमंत बोलो जो हम में कहो पहिले बोवे वीर राजा सुनी कहो
जो तुहा व कहे सो कबूल है तब श्रीमंत बोलो जो यह बीज उपजे तो

मेरे घर को यह धनी और न उपजे तो मैया के घर को धनी ऐसी होइ बांधी जब वो उपजे नहीं तब श्रीमंत जीत्यो वीर राजा हारो बहुत खिस्यानो पडो घर आयो विचारो जो अब बहुत दुख पडो ऐसो विचार घर आयो विचारो जो पहर रात गये राजा सो मिलो छीभाई अरु राजा पकरो जो तो को बहुत भीड पडी तासों आयो तब सेठ बोलो जो महाराज दोबात आप की देखी तामें बहुत लाभ भई और एक बात में चूको ताको यह फल भयो है ये राजा सुनी घोरक के ऊपर सवार होय के आयो आय के देखो जो स्त्री को प्यार यह कहत है मैं तो ले चलो जाउंगो यह कह घर ले गयो सवारे भयो तो लोग तमासे आगे सेठ को मलिबहू की श्रीमंत जीतो है सो ले जावेगो इतने में वीर राजा आयो देखो तब बोलो मेरी कही नहीं मानी सो यह फल पायो यह कह श्रीमंत को नाक काटी सहर से निकार दियो सेठ को और व्याह कीनो ये सुन प्रभावती सो रही॥

७० वीं कथा

फिर ७० दिन प्रभावती राति को चली शुक बोलो जाउ परंतु गगरी सुनारी के सी मति हो तो जाउ बोली सुनाओ शुक बोलो चंडिलपुर नगर है तहां अर्जुन राजा चिंतामनि प्रधान ता गांव में वीरम सुनार वसत है धन वंत ताने सोरह व्याह किये सो सोरहों गरीव हो सोरह वरष की भई तब पुत्र को व्याहन लगी एक दिन परोसन घर आई देखत हरामजादी है बोली रे गांगला तेरी स्त्री हरामजादी है सुनी बोली नहीं स्त्री बोली जो या गांव में कुटनी है परोसन बोली ये रउ पाका है ये सुन परोसन सों बोली आप जाउ हमारे पति आवेंगे जो पराये हाथ पार मंगावे तो सुनारी ऐसे वार मनि वकहीं मेर व्याह है वासों इनाते पठवो तो अच्छो वरह गाइ वीवजाइ बोली मागि तो बहुत बोलो अब इन को बिगारो सहत हो तासों अपने घर

जाइ कही तव ती वहन सिसकरी उठ गई तव तो गांगली रोवन लागी जो मो को वंदी वानो कियो हे काहू के नहीं जान देत हे तव गांगली ने घर में से तो ली रसोई नालियो ओर वीडा १ वांधे तामें रखो एक पुरुष चलो जात हे वाके आगे डार दीनी ओर रुका एक में लिखी जो सडक फयां कुटनी को दीजो ये वात जान ओर कुटनी के ले चली ओर ये कहो तो को वुलायो हे कहि वसंत लाल अपने घर गयो पाछे कुटनी १ मासा सोना लेके वाही सुनार के आई ओर कहा पसदे वोले वोतदाम ले कहो ये भीतर गई गांगली से मिली गांगली सों कही तू एक काम करि हे जाति हों पाछे से यह कहियो ये नजर लगाइ गई सखी के घर को दाम ले गई पाछे गांगलो कहो लोट गई हाय २ करने लगी पति वोलो कहा भयो कहो ये आई नज़र लगाई पूछो जो कोन सी हे जो सडक फाफा हती याको वेगला मो को नीका करे सुनार सडक फाफा के घर गयो ओर कहा ते री भोजाई मरत हे वेगि चलिये जो वोली राति को समो हे जो कोई मेरे घर में ते ले जाइ तो कहा करूं तासें सवारे आऊंगी सुनार वोलो काम याही वेर को हे दूती वोली माल को माठ हे जो माथे धर ले तो मैं चलूं ये सुन के वोलो आछो वसंत राज को माठ में धरि मोडो वांधि माथे धारे दियो संग आप गई जाइ कही तू वाहर जा मैं उपचार करत हूं सुनार को तो काढि दियो वसंत ओर गंगालो दोऊ राति भरि भोग कियो मास एक ताईं सुनार के घर में रही पेट आछो भयो रुपया दस दे विदा किया ओर मांठ मांथे धरि पठाई आयो ओर राह में सांड लड़न मिले सो धक्का लागो माठ गिर परो वामें से वसंत निकरो निकसत सुनार को पकर लियो कि मैं जो साध कर तहां तो मो पर माव पटको ये कह पांच कर लीनी मैं राजा पर ले जाऊंगा इतने में कुटनी ने हाथ पकर लीनो तो यामें को माल कहां तव

तो सुनार को मुंह विगर गयो रूपये दीने और पायन परो फे र आय गांगली के पैरन परो जो तेरो फंद कोन जानो जो ऐ सी मतिहो तो जाउ इतना सुन सो रही॥

७१ वी कहानी

फिर ७१ वें दिन प्रभावती फिर सिंगार कर रति को चली शुक बोला आनंद से रति करो परंतु सिद्ध रीह कीसी करो तो जाउ बोली केसे शुक बोला चंद्रावाती एक नकरी है सत्यव्रत राजा त छे दो प्रधान एक तो सिद्धरीह दूसरो सिद्धवरनि एक दिन दोनों से विगरी तव सिंधुराजा के पास गयो वे वहुत आदर कियो वहुत दिन एक दिन धर्मदत्त वडा राजा सो फोज लेइ सिंधराजा पै चढि आये मुलक में वडो उपद्रव कियो सिंधराजा वहुत टालो कियो प माना नहीं तव सिद्धरोहन ने पठयो वहुत भेंट दीनी और यह कही जो कोई तरह यह जाय सो करो तव दोऊ प्रधान आये रा जा सों मिले वहुत वतलाये परंतु एक वात मन में आवे नहीं यह कही सो अपनी वेटी देऊ और लक्ष मोहर दे तो जाऊं नहीं तो यापरो जो इतनी कही तव प्रधान वोले महाराज यह आसान है जुद्ध दोउन को वुरो है सो ये वात आछी नहीं तासों आप पधारो हुकम मानो और राजा को द्रव्य कोठार में न कहते जो ताला वाडो है जो आवे सो पुराय करत है जो आप की ... है तो आपु पुराय लेहु तव राजा कहे ते आछो वात है तव लाख रूपये लेके हाथ में दिये याने जो हमारे राजा को पुन्य तुम है यह सुन राजा प्रसन्न भयो अपने कटक ले घर गयो प्रधान यहां अपने राजा के पास आये इतनी अगले प्रधान राजासों कही जो इसने वुरी कीजो आपको धर्म दे आयो इतनी सुन राजा वहुत को पकियो तव दोऊ वोले महाराज ऐसे पुन्य जाय तो को दिद्रव्य जोजे हम

राजा को बुरा बुलाइ दे तासों रात नाहीं जब ऐसो कहो तब तो राजी रा
जा भये सो हे प्रभावती ऐसी बुद्धि हो तो जाउ इतना सुन सो रही ॥

७२ वीं कथा

फिर ७२ वें दिन प्रभावती रात को चली शुकसों बोली जाती हूं शुक
बोले जाउ परंतु जारी बेजारी करि आवे तो जाउ बोली कहो
शुक बोले सुंदर नाम नगर तेज बंत राजा श्री बंत कुंवर जे पाल
प्रधान सो श्री बंत कुंवर एक नाई सो जारी वे बात प्रसिद्ध भ
ई कि राजा को नाई को यार कियो सब ने कही ये प्रीति अच्छी
नहीं परंतु माने नहीं कहा कियो जो देश से निकारो साथ ना
ई को लियो तब माता ने चार लड्डु बनाइ के दिये वामें रत्न
धर दिये जब मारग गयो तब भूख लागी तब लड्डु खाय लिये
दो नाई को दिये जो तोड़े तो रत्न निकसे तो पूंछे तेरे रत्न कैसे
जो कहो कोई नही कुंवर जानी नाहीं झूठा है जो कहो सो भ
ली जो कही थोरी सो चोरी नाई बोलो सो बुरो भली तो एक
डोकरी मिली सो छाना बीनत हती सो नाई कैसे बोलत हैं
डोकरी बोली हे राजा मैं सब के पीछे छाना बीनत हों कुंवर
बीरे सांचो सांचो अरु झूठो झूठो बेरा को पालको कियो सो
बेटा बहू की आज्ञा में चलने लगा घोड़ा पे चढ़त है और
हजारन को द्रव्य है सो मैं कहा कहो तुम देखत हो सो अस
झूठा अस झूठा सो सांचो इतने मैं नाई बोलो जो तो हारो मैं
जीतो तासों होड देउ कहि छुरी से आंख काढ़ लोनी सब के
लेके चला गया पाछे कुंवर बहुत दुखी होके आम्रराणों के नीचे
आवेदी एक नाई राजा के देश को गयो वहां रतन भुंजायो खान
लाग्यो कुंवर के नीचे पडो वड के ताके नीचे सारस पक्षी पे सु
वो जनो तहां कुंवर को रात हो गई तब तो रोवन लागो तब

जिनावर आपस में कहन लागे जो यह हमारी वीट आंखिन में लगावे तो अच्छी अभी होंय फिर आपस में पूंछी कि जो कुछ और भी गुण है तब कही अठारह कोढ़ हैं सो भी नीके होंय यह सुन सबरी वीट बटोर कर कपड़ा में वांध लीनी आंख में लगाई आंख नीकी हो गई तब आगे चला वाही गांव में नाई हतो वहां को राजा कोढ़ो हतो कहो जो मेरो कोढ़ नीको करे ताकों अपनी बेटी देऊं और आधो राज देऊं ये सुन कही जो मेरी औषधि लगावे तो नीक होय राजा सुनी बुलायो आते ही औषधि लगाई राजा नीको भयो बेटी बिवाही आधो राज दीनो एक दिन कुंवर बजार को निकरे तहां कुंवर को नाई ने देखा तो विचारो जो मो कों देखेगा तो मार डारेगा तासों याको मारिये ये विचारो जो कि ये सवेरे ही गाव में उडाई कि यह मेरे घर के नाई को बेटा है गांव में शोर भयो नाई को बेटा राजा को जमाई यह बात श्रीचंद राजा ने सुनी नाई के विचारा जो अपराध लागी तासों मेरे ये विचार बुलाये चांडाल और कहो जो तुम गांव के बाहर तौला गरम करि जो कोई पूछे डार दियो आज्ञा दीनी इतने में जमाई आयो राजा को मुजरो कीनो और अर्ज की मो लाइक काम हो सो फरमाइये राजा बोलो शहर के बाहर देख आवो कहा होत है ये सुन स्त्री के पास गयो कहा कि राजा यह कही है स्त्री बोली कि आज शनिश्चर वार है नहाय के जाओ यह नहायो महादेव की पूजा करी देर भई इतने में एक सेठ को जमाई बाहर निकरो वाने जाय पूंछी यह कहा है उस को पकड़ कड़ाह में डाल दियो पाछे राजा को जमाई गयो देखे तो यह भयो है तब तो आय राजा सों कही राजा ने कही आप

कौन हो तब कह्यो मैं राजा को बेटा जैवंत हूं सब हाल कह्यो तब राजा प्रसन्न भयो नाई को सूली दियो है प्रभावती जो ऐसी बुद्धि हो तो जाउ इतना सुन सोरही ॥

फिर ७३ दिन एक बटोही ने आन कह्यो कि सेठ का बेटा आय पहुंचो ये सेठ सुनी इनाम दीनो बेटा आयो मुजरा कीनो पिता छाती सों लगायो सब हाल पूछो राजदेव सेठ राजा के पास गयो रत्नादिक सब नजर किये राजा देख बहुत प्रसन्न भयो खिलत दे बिदा कियो घर आय प्रभावती के पास गयो मिलो सब हाल पूछो जब भीतर को चले शुक बोले चिरंजीव कह्यो मदनसेन राम राम किया कुशल पूछी और पूछी सारो कह्यो तब शुक बोलो यह कथा पहर दो की है तो आप सोवो प्रसन्न हो मदनसेन सोया जब प्रभावती जा बैठी मदनसेन आछी तरह भोग किया प्रसन्न भई शुक को पिंजरा मंगायो तब प्रभावती शुक को नमस्कार कीनी कही जो ७२ दिन मेरो धर्म रह्यो सो तेरे प्रताप सों सो ता समय मदनसेन एक श्लोक बार२ कहा। श्लोक। असारे खलु संसारे सारं सारंगलोचना। तदर्थं धनमिच्छंति तत्त्यागेन धनेन किम् १। ऐसे स्त्री को बखान करन लागो शुक कह्यो स्त्री सों अनुराग करना वृथा है। श्लोक। अनुरागो वृथा स्त्रीषु स्त्रीणां गर्वो प्रयेतिच। प्रियोहं सर्वदा तस्या ममैषा सर्वदा प्रिया। १। या भांति बार२ शुक कहन लागो और मदनसेन रस की बात कहे मदनसेन बोलो शुक पहलो श्लोक पढ़ो हतो सो फिर के पढ़ो शुक बोलो अनुराग वृथास्तुव इतनी सुन मदनसेन बोलो जो कहा उपकार है सो हमसो कहो प्रभावती बोली। श्लोक। सुलभा पुरुषा स्वामिन् सततं प्रियवादिनः। अप्रियस्यच वाक्यस्य वक्ता

श्रोनाच दुर्लभः ।१। स्त्री एक स्रोक सुनतेही। अवला चा
मित्र निस्पृहा गुण वर्जिता। कुटिला तामस अज्ञा यथा
तो ।१। कुर्वंति तावत् प्रथमं प्रयाणि यावन्न जानंति वरं
ज्ञात्वाय मा मनमथ। आसवद्धं ग्रस्थामिषं मान मिवो
समुद्र वीची सुभावासं वचनं संध्या भ्रमेष मद्दूत्ते रागा
तार्था: पुरुषं निरर्थकम् निपीडितालक्तवं वित्त्यजंति। ३
जो तू पधारो ता पाछे एक घडी तो विरह भयो ता पाछे ए
ई वह मोको प्रवोधी तव में उन्मत्त भई कछु दीखे नहीं ये
मे आवे जो और सों भोग कीजे ये विचार सिंगार कर चल
समय सारो वोली मोको बुरी लगी मैं ने मार डारी ता
शुक सों पूंछी शुक ने ७२ दिन तक कथा कह दिन विताय दीने
और मेरो धरम राखो शुक के प्रसाद से इज्जत और धरम र
हो ऐसे रही यह कही तो शुक की वडाई कीनी मदन सेन
कहो शुक तुमसो चतुर कोई नहीं तुम्हारे प्रसाद सों मोको
स्त्री प्राप्त भई यह स्तुति कीनी तव शुक वोले मदन सेन कहो तु
म अपने पिता सों मोको सीख दो घर को जाऊं काहे से मैं गंधर्व
हूं ऋषीश्वर के शाप सूं सुक भयो हो अरु येहे अज्ञा दिये ते जो
मृत्यु लोक को जाऊं हां प्रभावती को ७२ दिन कहो सो मदन प
र्वत को जाऊं तव मदन सेन हरदत्त सेठ पास गयो पिंजरा लिये
हरदत्त वोलो शुक उदास काहे शुक वोलो आप के पास रहिके
कोई उदास न होगो यह कह के विदा भये पर्वत को गये देह को
ही गंधर्व भये स्त्री पुरुष सुख सों स्वर्ग लोक में भोग करन
लागे इहां मदन सेन और प्रभावती सुख सों आनंद भोग क
रन लागे ॥ इति श्री शुक वहत्तरी कथा समाप्तम् ॥
संवत् १९३७